UNIVERSITY OF TORONTO
3 1761 01246375 8

UNIVERSITY OF TORONTO
LIBRARY

WILLIAM H. DONNER
COLLECTION

purchased from
a gift by

THE DONNER CANADIAN
FOUNDATION

Digitized by the Internet Archive
in 2007 with funding from
Microsoft Corporation

http://www.archive.org/details/rajniticollectio00lalluoft

RĀJNĪTI

A

COLLECTION OF FABLES

ORIGINALLY TRANSLATED FROM THE

HITOPADEŚA

INTO THE BRAJ LANGUAGE

FOR THE USE OF THE COLLEGE OF FORT WILLIAM.

NEW EDITION

Prescribed as an alternative text-book for the Proficiency Examination in Hindi

REVISED AND ANNOTATED

BY

PANDIT GOBIN LAL BONNERJEE, B.A., KAVIRATNA,

Sanskrit and Bengali Examiner, Board of Examiners, also Member and Hindi Examiner, Central Examination Committee, Bengal,

UNDER THE SUPERVISION

OF

MAJOR C. L. PEART, I.A.,

Secretary and Member, Board of Examiners.

Published by Authority.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1915.

PK
3741
H687
1915

CALCUTTA:—PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

PREFACE.

The Third Edition of the Rājnīti, which was published by the Board of Examiners in 1883, is now out of print, and this is practically a reprint of the same, as far as the text is concerned, though a few alterations have been made here and there to make it more into line with the original Sanskrit. The new feature of this edition is the supplementing of the text with copious notes explaining all difficult words and constructions, historical, mythological, and ethnological allusions, and illustrating the dialectic peculiarities, both structural and grammatical, of the Braj language.

G. B.

अथ कथा आरम्भ।

दोहा।

कवि बासी गृह कूप कौ कथा अपार समंद ;
तैसी यै कछु कहतु हौं मति है जैसी मंद।

श्री गंगा जू के तीर एक पटना नाम नगर ; तहां, सब गुन निधान, महाज्ञान, पुन्यवान, सुदरसन नाम राजा हो। वाने एक दिन काहू पंडित तें द्वै स्लोक सुनें, ताकौ अर्थ यह है, कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै, अरु गूढ़ अर्थनि कौं प्रकाशै, तातें सब को आंखि शास्त्र है, जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं, सो आंधरौ है ; अरु तरुनापन, धन, प्रभुता, अविवेकता, ये चारौं एक एक अनर्थ की करनिहारी हैं ; अरु जहां ये चारौं हौंय, तहां न जानियै कहा होय! यह सुनि, राजा अपनें पुत्रनि की मूर्खता देखि, चिंता करि, कहनि लाग्यौ, कि ऐसे पुत्र भये कौन काम के? जे विद्या करि हीन, अरु धर्म सों रहित, ते पुत्र ऐसें, जैसें कानी आंखि देखिवे कौ तौ नाहीं, पर दुखनी आवै तौ पीर करै। कह्यौ है, "पुत्र ताही कौं कहियै, जाके जन्में तें कुल की मर्य्याद होय" अरु यौं

तौ संसार में मरकै को नाहीं उपजतु है? पर सज्जन अरु विद्यावान जो पुत्र बंस में होतु है, सो पुरुषसिंह है; जैसें चंद्रमा तें आकाश शोभा पावतु है, तैसें वा पुत्र सेां कुल। जाकौ नाम गुनौन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यौ गयौ, ताही कौ माता कौं बांझ कहतु हैं। अरु दान, तप, सूरता, विद्या, अर्थलाभ में जिनकौ जस नाहीं भयौ तिनकी माताअें ने केवल जनवे ही कौ दुख पायौ है, पै पुत्र कौ सुख नाहीं देख्यौ। कहतु हैं कि, "जिननि बड़े तीर्थनि में अति कठिन तप ब्रत किये हैं, तिनके सुत आज्ञाकारी, धनवान, पंडित, धर्मात्मा होतु हैं।" ये छह वस्तु संसार में सुखदायक हैं; सदा धन की प्राप्ति, शरीर आरोग्य, स्त्री तें हित, नारी मिठबोली, पुत्र आज्ञाकारी, अरु विद्या तें लाभ।

इतनौ कहि पुनि राजा बोल्यौ, कि मेरे पुत्र गुनवान होय तौ भलौ। यह सुनि, कोऊ राजसभा में तें बोल्यौ, कि महाराज! आयु, कर्म, वित्त, विद्या अरु मरन, ये पांच बात देहधारी कौ गर्भ ही में सिरजी हैं, तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति; जैसें श्री महादेव जू कौ नग्नता, अरु श्री भगवान कौ सर्प सय्या; तासेां चिंता मति करौ, जौ तिहारे पुत्रनि के कर्म में विद्या लिखी है, तौ विद्यावान हैंायगे। पुनि राजा कही, यह तौ सांच है, पर मनुष कौं परमेश्वर नें हाथ अरु ज्ञान दयौ है, सो विद्या साधन के अर्थ; जैसें एक चक्र कौ रथ

न चलै, तैसें बिन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय; तातें उद्यम सदा करिये, कर्म कौ ई आसरौ करि न बैठि रहिये। कह्यौ है कि, "जैसें कुम्हार माटी ल्याय जो कछु करयौ चाहै सो करै, तैसें नर हू अपने कर्म समान फल पावै।" कर्म तौ जड़ है, वासें कछु न होय; उद्यम करता है; तासें करता कर्म कौं प्रेरै, तब भलौ बुरौ करता कर्म के संयोग तें होय। अरु केवल कर्म कौ ई आसरौ करि बैठि रहनौ कपूत कौ काम है। अरु जाके माता पिता सुत कौं विद्या कौ उद्यम न करावैं, ते शत्रु जानियै। कह्यौ है कि, "मूढ़ पुत्र पंडितनि की सभा में शोभा न पावै; जैसें हंसनि में बगुला न सोहै'।,

आगै राजा ने यह बिचारि, पंडितनि कौ समाज करि कह्यौ, हे पंडितौ! तुम में कोऊ ऐसौ पंडित है, जो मेरे पुत्रनि कौं नीतिमार्ग कौ उपदेश दै नयौ जन्म करै! कह्यौ है, "जैसें काच कांचन की संगति पाय मरकत मनि जनाय, तैसें साध की संगति में बुद्धि पाय मूरख हू पंडित होय; अरु नीच की संगति में नीच।"

संगति कीजै साध की हरै और की व्याधि;
ओछी संगति नीच की आठौं पहर उपाधि। (दोहा)

तहां राजा की बात सुनि, विष्णुशर्मा वृद्ध ब्राह्मन, सकल नीतिशास्त्र कौं जान, वृहस्पति समान, बोल्यौ, कि महाराज! राजकुमार तौ पढ़ायवे योग्य हैं, अयोग्य कौं विद्या न दीजियै; क्योंकि वह पढ़ै तौ सिद्ध न होय, अरु जौ

सिद्ध होय तौ अनीति बिशेष करै, विद्या कौ गुन छांड़ै, औगुन दृढ़ करि गांठि बांधै; तातें कुपाच कौं न पढ़ाइयै; जैसें बिलाव कौं नवौ नवौ भोजन खवाइयै, तौहू बिलूरवे कौ घात न तजै; पुनि कोटि जतन करि बगुला कौं पढ़ाइयै, पर सुआ सौ न पढ़ै; जौ मुनि धर्म में निपुन होय, तौ हू माछरी मारवे कौ घात अधिक सीखै। महाराज! तिहारे कुल में तौ निर्गुनी बालक न हौंय, जौं मनि मानिक की खान में काच न उपजै। हम विद्या बेचत नाहीं, तुम तें कछु लेतु नाहीं; पर तुम्हारी प्रार्थना है, यातें हौं तिहारे पुत्रनि कौं सहज सुभाव ही छः महीनें में नीतिमार्ग में निपुन करिहौं।

यह सुनि राजा दृढ़ ब्राह्मन विष्णुशर्मा तें बोल्यौ अहो! पुहुप की संगति तें, देखौ, नान्हे कीट हू सज्जननि के माथे चढ़तु हैं, तातें तिहारे सतसंग तें कहा न होय? जैसें पाथर कौ प्रतिष्ठा किये सब मनुष देवता करि पूजैं; पुनि उदयाचल परबत की बसन सूरज के उदै भये सर्व वस्तु सूरज समान ही दीसै; सुसंग तें नीच की हू प्रतिष्ठा होय।

कीट भृङ्गी ऐसें उर अंतर, मन सरूप करि देत निरन्तर।
लोह हेम पारस के परसे, या जग में यह सरसे दरसे। (चौपाई)
सेस सारदा व्यास मुनि कहतु न पावै पार;
सो महिमा सतसंग की कैसे कहै गंवार? (दोहा)

तुम मेरे पुत्रनि कौं पंडित करवे जोग हौ, ऐसें वा

राजा ने विनती करि, ब्राह्मन कौं अपनें पुत्र सौंपे; तब वह विप्र राजपुत्रनि कौं लै एक ऊंचे मंन्दिर में जाय बैठ्यो। कोऊ समें पाय कह्यौ, सुनौं महाराजकुमार!

काव्य शास्त्र आनंद तं रसिकनि के दिन जात;
मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात। (दोहा)

हौं मित्रलाभ की कथा कहतु हौं, क्यौंकि मित्रलाभ में लाभ बहुत है; कि एक चित्रग्रीव कपोत, औ कछुआ, हिरन, अरु मूसा, ये परम मित्र हे; तिनके मिलन औ कर्म कहतु हौं, कि जे असाध्य हैं, निधन हैं; पर बुद्धिवाननि तें उन सों प्रीति है, तिनके काज ऐसें सिद्ध होतु हैं, कि जैसें काग, कछुआ, हिरन मूसा के भये। यह सुनि राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है? तहां विष्णुशर्मा कहतु है—

गोदावरी नदी के तीर एक सेमल कौ रूख; तापै सब दिस कै पंछी आय विश्राम लेतु हे। एक दिन प्रात हो, लघुपतनक नाम काग जाग्यौ; वह एक कालरूप व्याधी कौं दूर तें आवतु देखि, चिचायकरि कहनि लाग्यौ, आज भोर ही कौ बेला अधर्मी दुराचारी कौ मुख देख्यौ, सो न जानियै कहा होय! ऐसें विचारि, लघुपतनक काग उड़ि गयौ। कह्यौ है कि, "उतपात की ठाम पंडित चतुर न रहैं, मूरख भय सोग बैठ्यौ सहै।" इतेक में व्याधी नें रूख तरै चांवर के कनिका डारि, तापर जाल पसार्‌यौ! तहां चित्रग्रीव कपोत कुटुंब समेत उड़त उत

आय कढ़्यौ। तिन में तें एक पंछी देखि बोल्यौ, इन चांवरनि कौं हौं चुग्यौ चाहतु हौं। चिचग्रीव कही, अरे! या वन में चांवर कहां तें आये? यह कछु कौतुक है, यातें ये मोकौं नीके नाहीं लागतु। सुनौं! जौ तुम इन चांवरनि कौ लोभ करिहौ, तौ वैसें होयगी, जैसें कंकन के लोभ सेां एक पथिक दहदल में फंसि, बूढ़े बाघ कौ अहार भयौ। यह सुनि पंछियन कही, यह कैसी कथा है? तब चिचग्रीव कपोतराज बोल्यौ—

हौं एक दिन वन में रह्यौ, तहां यह देख्यौ, जु एक बृद्ध बाघ पानी में न्हाय, कुश हाथ में लै, मारग में आय बैठ्यौ। इतेक में एक बटोही ब्राह्मन आय कढ़्यौ; वानें जब पंथ में नाहर बैठ्यौ देख्यौ, तब भय खाय व्हांहीं ठिठक्यौ। याहि भयातुर देखि बाघ बोल्यौ, अहो देवता! हौं जो गैल में बैठ्यौ हौं, सो पुन्य करनि के हेतु; अरु मो पास सोंना कौ कंकना है, सेा श्री कृष्णार्पन देतु हौं, तू लै। यह सुनि, वह अपने मन में बिचार्‌यौ, कि आज तौ मेरौ भाग जाग्यौ दीसतु है; पर ऐसे संदेह में जैवौ जोग नाहीं; क्यौंकि बुरे तें भलौ वस्तु ह्वै पाइये, पै आगै दुख होय; जौ अमृत में बिष होय तौ मारै हौ मारै। पुनि ऐसें ह्वै कह्यौ है कि, "बिन कष्ट द्रव्य हाथ नाहीं आवतु; अरु जहां कष्ट, तहां फल है; जैसें, जहां माया, तहां सांप; अरु जहां पुष्प, तहां कंटक; बिन दुख

सहे सुख नाहीं।" यह बिचारि, ब्राह्मन ने वासेां कही, कहां है वह कंकना? वाने हाथ पसारि दिखायै; तब बिप्र कैां लोभ आयै, अरु बोल्यौ, अरे! तू व्याध कौ करनहारौ, मैं तेरौ विश्वास कैसें करौं? नाहर बोल्यौ, अहो! एक तै मैं प्रातस्नान करि दाता होय बैठ्यौ हैां; दूजै, वृद्ध भयै, तातें नख दांत अरु इंन्द्रियन कै बल हू नाहीं; अब मेरी प्रतीति क्यों न करै? कह्यौ है, "यज्ञ, वेदपाठ, दान, तप, सत्य, धीरज, क्षमा, निर्लोभ, ये आठ प्रकार कहे हैं, ते पाषंडी तें न हैांय।" हैां तै अपने अर्थ के लिये दियै चाहतु हैां; अरु बाघ मास खातु हैं, सो मेरै नाहीं; पर न जानतु है सो कहतु है; जैसें कुटनी काहू कैां धर्म कै उपदेश देइ, तै हू लोक न मानैं, अरु ब्राह्मन हत्यारौ हू मानियै; तातें तू सांचै है; मेरी देह वृद्ध भई, अरु या काया तें मैं बहुत पाप किये हैं, यह समझ सब पाप तज धर्मशास्त्र मैं पढ्यौ अरु सुन्यौ है। प्रानी कैां ऐसै चाहियै, कि जैसै अपनै जीव प्यारौ है, तैसै ही सब काहू कै जानै। अरु चार प्रकार तें दान देतु हैं, धर्मार्थ, भयार्थ, उपकारार्थ, स्नेहार्थ; सो नाहीं; मैं केवल तोहि दुखी जानि देतु हैां। श्री कृष्णचंद ने हू राजा युधिष्ठिर तें कह्यौ है, कि दान दरिद्री कैां दीजै तै अधिक फल होय; क्योंकि औषध अरु पथ्य दुखी कैां देतु हैं, सुखी कैां नाहीं; अरु जो देश काल पात्र देखि दान देतु हैं, सो दान सात्विकी

कहियै; तातें ब्राह्मन! तू सरोवर में न्हाय आ, औ सुच होय दान लै। वाकी बात सुनि लोभ कौ मार्‌यौ ज्यौं वह सरोवर में उतर्‌यौ त्यौं दैं में फंस्यौ; जब कीच तें पांव न काढ़ि सक्यौ, तब बाघ हौलैं हौलैं वाकी ओर चल्यौ। ब्राह्मन कही, अहो! तुम काहेकौं आवतु हौ? बाघ कही कि, तू पानी में ठाढ़ौ रह, तोपै प्रयोग पढ़वाय, कंकन दै, स्वस्ति शब्द सुनैंगो। यह कहत कहत, पास जाय, वाकौं फंस्यौ देखि, नरहटी धरी। तब बिप्र अपने मन में कहनि लाग्यौ, कि दुष्ट कौं धर्मशास्त्र वेद कौ पढ़िवौ कछु काम न आवै; क्यौंकि अपनौं सुभाव कोऊ नाहीं तजतु; जैसें गाय कौ दूध सुभाव ही तें मीठो होतु है, कछु वाके खैवे पीवे तें नाहीं। अरु जाकी इंद्री मन बस नाहीं, ताकौ क्रिया ऐसें, जैसें हाथी कौ स्नान, उत न्हायौ, इत फेरि ज्यौं कौ त्यौं; तातें मैं भलौ न करी जो बाघ की प्रतीति करी; सब अपने कुल व्यौहार तें चलतु हैं। यह बिचार करै, तौ लौं नाहर नें वाहि मारि भक्षन कियौ। तातें हौं कहतु हौं, कि बिन बिचारे काम कबहू न करियै।

बिना बिचारै जो करै सो पाछै पछिताइ;
काम बिगारै आपनौं जग में होत हंसाइ।
जग में होत हंसाइ चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान रागरंग मनहि न आवै।
कहि गिरधर कविराय दुख कछु टरत न टारै;
खटकत है जिय मांहिं कियौ जो बिना बिचारै। (कुंडलिया)

कह्यौ है, "पचायौ अन्न, पंडित पुत्र, पतिव्रता स्त्री, सुसेवित राजा, बिचार करि कहिवौ अरु करिवौ, इनतें बिगार कबहू न उपजै।" यह सुनि, एक परेवा बोल्यौ, अहो! या डोकरा की बातें आपदा में कहां लौं बिचारैं! ऐसें संदेह करियै तौ भोजन करनौं हू न बनें; क्यौंकि अन्न पानी में हू संदेह है, ऐसौ बिचार कर्‌यौ तौ सुख सों जीवन हू न होय। कह्यौ है कि, "तृपावंत, असंतोषी, क्रोधी, सदासंदेही, जो और के भाग की आस करै, अति दयावंत, ये छहौं सदा दुखी रहैं।" इतनो कहि, वह परेवा चांवर चुगन उतर्‌यौ वाके साथ सब उतरे; तब चित्रग्रीव ने बिचार्‌यौ, कि इनकी लार जो होय सो होय, पर साथ छोड़नौं उचित नाहीं। कह्यौ है, "मनुष अनेक शास्त्र पढ़ै, औरन कौं उपदेस देइ, पर लोभ आय घेरै, तब बुद्धि न चलै।" आगै बिनके साथ चित्रग्रीव हू उतर्‌यौ; अरु जब वे पखेरू जाल में आये, तब वाने जाल की जेवरी खैंची, सब बझे; तद जाके कहे उतरे हे, वाकी निंदा करनि लागे ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि, "सभा में सब तें आगै होय काम करै, जौ संवरै तौ सब कौं फल समान होय; औ बिगरै, तौ दोष वाही कौं देइ जो आगै बढ़ै।" वाकी निंदा सुनि, चित्रग्रीव बोल्यौ, अरे! याकौ दोष नाहीं; जब आपदा आवतु है तब मित्र हू शत्रु होतु है; जैसें बछरा के बांधिवे कौं गाय की जांघ ही थांभ होतु है।

बधिक बध्यौ मृग बान तें रुधिरौ दियौ बताय ;
अति हित अनहित होतु है तुलसी दुरदिन पाय ।

यथा,　ज्योतिष आगम जान सब भूत भविष्य बर्तमान ;
होंनहार जब होति है उलटि जातु है ज्ञान ।　(दोहा)

तातें बंधु सो, जो आपत्य में काम आवै ; औ भई बात कौ पछितायबौ, कपूत कौ काम है, यातें धीरज करि छूटनि कौ उपाय करौ । कह्यौ है,

"बीती ताहि बिसारि दै आगे की सुधि लै ;
जो बनि आवै सहज में ताही में चित दै ।
ताही में चित दै बात जोई बनि आवै ;
दुरजन हंसै न कोई चित्त में खेद न पावै ।
कहि गिरधर कविराय यहै करि मन परतीती ;
आगे कौं सुख होय समझ बीती सो बीती ।"　(कुंडलिया)

पुनि कह्यौ है कि, "आपदा में धीरज, संपदा में बिनय, सभा में बचन चतुराई, संग्राम में पराक्रम, जस में रुचि, पढ़िवे में बिसन, ये महत पुरुषन के सुभाव हैं। अरु पुरुष कौं छः दोष सदा छोरे चाहियैं, निद्रा, अधीरता, भय, क्रोध, आलस्य, सेाग।" इतनौ कहि, पुनि चित्रग्रीव बोल्यौ, अब सब एकमति होय बल करौ, या जाल कौं लै उड़ौ । ऐसें कह्यौ है, "थोरे ऊ मिलि एकौ करैं तौ बड़ौ काम सिद्ध होय ; जैसें घास मिलाय जेवरी बांटैं, तासों हाथी बांध्यौ जाय ।" यह सुनि, सब बल करि जाल लै उड़े ; अरु व्याधी ने दूर गये देखे, तब मन में कह्यौ, अब हों सब एकमति हैं ; उतरिहैं तब देख लैउंगौ । जद जाल धरती में न गिरयौ, तद बधिक निरास होय बैठ्यौ। तहां

पखेरू चित्रग्रीव सों कहनि लागे, अहो राजा! व्याधी तौ हमारे मांस की आस छोरि बैठ्यो, पर अब जाल सों कैसे कढ़ैं? चित्रग्रीव कही, अरे! सुनौं, या संसार में माता पिता अरु मित्र ये तीनौं सुभाव ही तें हित करतु हैं; तातें एक हमारो मित्र हिरन्यक नाम मूसा विचित्र बन में गंडकी नदी के तीर रहतु है, तहां चलौ, तौ वह हमारे बंधन काटिहै। ऐसें बिचारि, इंदुर के द्वार कौं चले; अरु वहां हिरन्यक हू अपने द्वार पर बैठ्यो हो, सो परेवानि कौं आवतु देखि बिल में पैठि चुप ह्वै रह्यो। तब चित्रग्रीव कही, मित्र! बाहर आओ। मित्र कौ बोल पिछानि, बाहर आय, बोल्यो, मेरे आज बड़े भाग, जो मित्र चित्रग्रीव ने मो पै कृपा करि आय दरसन दियौ! अरु जाल में पखेरून कौं देखि कह्यो, मित्र! यह कहा है? उन कही, बंधु! यह पूर्वजन्म कौ पाप है; जाके भाग में जैसा लिख्यौ है, ताकौं तैसौ फल मिलतु है; अरु रोग सोग बंधन औ दुख अपने किये कर्म कौ फल है। कह्यौ है,

"होत उदोत प्रभाकर जौ दिस पच्छिम तौ कछु धोखो नहीं है;
फूलै सरोज पहारनि मांहिं औ मेरु चलै तौ चलै कबहौं है;
पावक सीतल होत समें इक मोतियराम विचारि कही है;
अंक मिटैं न लिखे बिधि के यह वेद पुरानन मांहिं सही है।" (कवित्त)

यह सुनि, मूसा चित्रग्रीव के बंधन काटनि लाग्यौ; तब चित्रग्रीव कपोतराज बोल्यो, हितू! पहिलै मेरे

संघातीन के फंद काटौ, ता पाछै मेरे काटियौ। ईंदुर कही, प्रीतम! ये बंधन कठिन, मेरे दांत कोमल, तातें पहिलै तेरे बंधन काटि, ता पाछै कटैंगे तो और के काटिहौं। चित्रग्रीव कही, मित्र! यह नायक कौ कर्म नाहीं, जो अपने साथीन कौं बंधाय आप छूटै; यासें पहिलै ये छूटि लेंय, तौ हमारौ छूटनौं बनै। पुनि मूसा बोल्यौ, भाई! अपनी छोरि पराई बात कहनी, यह नीति नाहीं। कह्यौ है कि, "दुख पायकै धन राखियै; धन दै स्त्री की रक्षा कीजै; अरु धन स्त्री जाय तौ जानि दीजै, पर अपनकौं राखियै; क्यौंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पदार्थ प्रान के राखे रहैं, अरु गये जांय।" बहुरि चित्रग्रीव कही, मित्र! नीति तौ ऐसें ही है, पै पंडित होय सो सरनागत वत्सल चाहियै। कह्यौ है, "पराये हेतु धन प्रान दीजै, क्यौंकि एक दिन तौ शरीर कौ नास होय, तातें और के निमित्त आवै तौ यासें कहा भलौ है? यातें तू मेरे अनित्य शरीर राखिवे कौ जतन छांड़ि, अरु नित्य अविनासी जो जस, ताके राखिवे कौ उपाय कर। कह्यौ है, "अनित्य देह तें नित्य जस पाइयै, अरु मलीन तें निर्मल वस्तु; तातें शरीर अरु जस में बड़ौ अंतर है। यह सुनि, हिरन्यक संतोष करि बोल्यौ, हितू! तोहि इन सेवकनि के सनेह तें त्रिलोकी कौ राज बूझियै। यह कहि उन सब ही के बंधन काटे, अरु कही, बंधु! तुम अपनी बुद्धि के दोष तें

बंधे, पर अब मन में दुख जिन करौ। कह्यौ है कि "पंछी एक जोजन तें भूमि पर्‌यौ अन्न देखै, पर जाल न देखै।" तातें तिहारौ मति कौ ऊ दोष नाहीं; क्यौंकि चंद्र सूर्य्य ह्न ग्रहपीड़ा पावतु हैं; अरु गज भुजंग ह्न बंधन में परतु हैं; पंडित निर्धन होतु हैं; अरु समें पाय पशु, पंछी, नभचर, जलचर ह्न, परबस होय दुख पावतु हैं; जो भावी में होय सो बिना भये नाहीं रहतु। ऐसें हिरन्यक ने चित्रग्रीव कौं समझाय, मनोहर बचन सुनाय, खवाय प्याय, कुटुंब समेत बिदा कियौ; अरु आप ह्न बिल में गयौ। तब लघुपतनक काग जो प्रात ही व्याधौ कौं देखि भाग्यौ हो, वाने ये समाचार पाय, अपने मन मांहिं कही, कि संसार में मिचाई बड़ौ पदार्थ है, देखौ मित्र कौं ठौर काम आयौ! यह बिचारि, रूख तें उड़ि, मूषक के बार जाय बोल्यौ, अहो हिरन्यक! तुमकौं मेरौ प्रनाम है, अरु तुम्हें बड़ौ जानि मिचाई करनि आयौ हौं। यह सुनि, हिरन्यक बोल्यौ, अरे तू को है? इन कही, हौं लघुपतनक नाम काग हौं। यह सुनि, हिरन्यक हंसि करि बोल्यौ, मोसों तोसों कैसी मिचाई? अरे! शत्रु सों मिचाई करनौं बिपत्त कौ मूल है; अरु हम तिहारे भक्ष, तुम हमारे खानहारे, यातें जहां मिचाई बूझियै तहां करौ, अनमिल संग न होय; अरु जौ होय तौ वैसें होय, जैसें स्यार ने बंधायौ हिरन कौं, अरु छुड़ायौ काग ने। काग बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां मूसा कहतु है;

मगध देस में चंपक नाम बन, वहां अनेक दिन तें एक चंपा के रूख पर सुबुद्धि नाम काग, अरु वाके तरै चिचांगद नाम हिरन रहै; उन दोऊन में अति प्रीति ही। तहां हिरन कौं एक दिन काहू स्यार ने हृष्ट पुष्ट देखि अपने मन में बिचार्‌यौ, कि यासें प्रीति करौं, तौ याकौ मांस खैवे कौं मिलै। यह बिचारि, हिरन के पास आय बोल्यौ, मित्र! तुम कुशल तें हौ? मृग कह्यौ? भाई! तू को है? पुनि हरवे तें उन कह्यौ, हौं क्षुद्रबुद्धि नाम स्यार हौं, या बन में मित्र करि हीन निरबंधु अकेलौ बसतु हौं; आज तिहारौ दरसन पायौ, मेरे जी में जी आयौ; अब तिहारे पायन तरि रहिहौं ऐसें बातन लगाय, वाके संग लाग्यौ; सांझ भइ, तब कुरंग अपने आश्रम कौं चल्यौ, अरु वह ऊ साथ ह्वै लियौ। निदान चलतु चलतु वहां आये, जहां मृग कौ मित्र काग हो। स्यार कौ देखि काग बोल्यौ, मित्र! यह दूसरौ तिहारै साथ को है? मृग कह्यौ, यह क्षुद्रबुद्धि नाम स्यार है, औ मोतें मित्राई कियौ चाहतु है। काग कह्यौ हितू! बेग परदेसी अनजान सें प्रीति न कीजिये। कह्यौ है कि, "जाकौ सील सुभाव आश्रम न जानियै, तासें मित्रता न करियै।" अरु नीति तौ यौं है, कि वाकौं अपने घर में बास ह्वै न दीजै; न जानियै कैसौ होय? जैसें अनजाने बिलाव कौं बास दै, दीन गौध पंछी मार्‌यौ गयौ। मृग बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां काग कहतु है;

गंगा जू के तीर गृध्रकूट नाम परबत, तहां एक पाकड़ कौ रूख, वाके खोडर में एक अति बूढ़ौ गीध रहै। तहां और पंछी अपनैं चुनि ल्यावैं, ता में तें थोरौ थोरौ गीध कौं हू बांटि दैं, जासें वह जीवै; अरु वे पंछी चुगवे कौं जांय, तब गीध उनके छौंनानि की रखवारी कियौ करै। एक दिन, दीरघकरन नाम बिलाव पंछीन के सिसु खैवे कौं वा रूख पै चढ़्यौ; वाकौं देखि, वे छौंना पुकारे; तब गीध ने उनकी पुकार सुनि खोडर तें मुंड निकासि कह्यौ, अरे! यह को है? तब बिलाव गीध कौं देखि डरि, अपने मन मांहिं कहनि लाग्यौ, कि जौ यहां तें भाजिहौं तौ यह पाछै दौरि मारैगौ; यासें याके पास गये ही बनै। यह बिचारि, सरल सुभाव होय, गीध के पास आय, दंडवत करि, बोल्यौ तुम बड़े हौ। गीध कही, तू को है, अरु इत क्यौं आयौ है? दूर रहि, ना तौ अब ही मारतु हौं। बिलाव कही, स्वामी! प्रथम मेरे आवन कौ कारन सुनि लेउ, ता पाछै जो मन मानै सो करियैगौ। मैं ने ब्रह्मचर्य्य ब्रत पालन कियौ है, अरु चांद्रायन ब्रत कौ मेरौ नेम है; अब हौं गंगा जू स्नान किये आवतु, गैल में पंछीन के मुख तें तिहारी बड़ाई सुनी, कि तुम ज्ञान चरचा में निपुन हौ, तातें तुम सों धर्म उपदेस सुनिवे कौं आयौ हौं। अरु बिचार ऐसौ है, कि जौ कोऊ दिन ऐसे साध की संगति में रहौं तौ पवित्र होंउं। कह्यौ है,

"हिय तें मिटै असाधपन लहै अगाध विवेक;
लाल जु संगति साध की हरै उपाध अनेक।" (दोहा)

मेरौ तौ यह मनोरथ है, या पर मार्‌यौ चाहौ तौ मारौ। कह्यौ है, "गृहस्त कौं ऐसौ चाहियै, कि बैरी कौ बैरौ ह्वै अपने घर आवै तौ ह्वै वाकी पूजा करै।" जैसें वृक्ष कौं कोऊ काटनि आवै, तौ वह वाहू पर छांह करै; यातें बूढ़े के घर बालक ह्वै पाहुनौ आवै, तौ सेवा जोग है, अवस्था कौ बिचार कछु नाहीं; पाहुनौ घर आवै, ताकौं सब तें बड़ौ करि मानियै, यथायोग्य पूजा कीजै। जौ और कछु घर में न होय, तौ मीठे बचन, तृन कौ बिछौना, सीतल जल दै, अति हित कै मिल बैठै; अरु इतनै ह्वै न करै, तौ जाके घर तें अतिथि निरास जाय, वाकौ धर्म लै जाय, आपनौ पाप दै जाय; यातें साधु निर्गुन ह्वै पर दया करतु हैं; जैसें चंद्रमा सब ठाम प्रकाश करै। गीध बोल्यौ, बिलाव कौं मास तें अधिक रुच होति है, अरु ह्यां पंछीन के सिसु रहतु हैं, ताते तो सों हौं कछु कहि नाहीं सकतु; पर जौ तू यहां रहै, तौ इन छौंनानि तें कपट जिन कीजौ। यह सुनि, बिलाव ने भूमि में हाथ छुवाय, कान हाथ धरि, कह्यौ, स्वामी! मो तें ऐसो कब ह्वै न होय, धर्मशास्त्र पढ़ि सुनि मैं बैराग दसा गही है; अरु जीवहिंसा बड़ौ अधर्म है, सब शास्त्रनि में वर्जित है। कह्यौ है, "साध कौं ऐसौ चाहियै, कि परायौ अपराध सहै, सब कौं पालै, सो स्वर्ग

लोक पावै; यामें संदेह नाहीं; क्योंकि धर्म सदा सहाय होय," अरु जाकौ मास खाइयै, सो तौ जीव ही सेां जाय, खानिवारे कौं छिन एक जीभ ही कौ स्वाद; तातें अपनौं सौ जीव सब काहू कौ जानियै। कह्यौ है, "जौ बन के कंद, मूल, फल, फूल, पात सेां पेट भरै, तौ जीवहिंसा काहेकौं करियै?" ऐसें कहि, प्रतीति बढ़ाय, बिलाव गीध के समीप रह्यौ। कोऊ समय पाय, दै चार पंछीन के छौनानि कौं पकरि ल्यायौ। जब वे सिसु पुकारे, तब गीध बोल्यौ, अहो दीरघकरन! इन बालकनि कौं तू काहे ल्यायौ है? वाने कही, स्वामी! मेरे बालक मोतें बिछरे हैं, ताके हेतु इन ते दिन कटौ करतु हौं। ऐसें कहि, जद अपनौं मनोरथ साध्यौ, तद बिलाव व्हां ते परायौ, अरु पंछियन आय अपने बालकनि के हाड़ चाम गीध के खोडर समीप परे पाये; तब उननि जान्यौ, कि हमारे छौंना इन पापी विस्वासघाती चंडार ने खाये। ऐसें समझि, सबनि मिल, गीध कौं जीव सेां मार्‌यौ। तातें हौं कहतु हौं, कि बिन जाने मिचाई कबहू न करियै।

यह बात सुनि, स्यार क्रोध करि बोल्यौ मिच! जा दिन तुम हिरन सेां मिचाई करी, ता दिन यह तिहारौ कुल सुभाव कहा जानतु हो, जौ मिल बैठ्यौ? यातें अपनौ परायौ कहनौं मूरखनि कौ काम है; पंडित कौं तौ सब अपने ही हैं; जैसें मृग हमारौ मिच, तैसें

तुम हू; अरु भलौ बुरौ तौ व्यवहार ही तें जान्यौ जातु है। हिरन कही, मिच! विवाद कौं करतु है। जितेक मिल रहैं, तितेक ही भले। काग कही, भाई! तुम जानौ। इतेक में सब अपने अपने उदर की चिंता कौं गये, अरु सांझ कौं आय इकठे भये। याही भांति वहां रहनि लागे। कितेक दिन पाछे, स्यार ने हिरन कौं एकलौ पाय कह्यौ, मिच! हौं तिहारे लये आछौ हस्यौ कोमल जव कौ खेत देखि आयौ हौं, जौ मेरी गैल चलौ तौ दिखाऊं। या रीति कपट करि, वाकौं कुमारग में ल्यायौ, अरु वहू कुबिसन कौ मार्यौ लोभ करि वाके संगही उठि धायौ। ऐसें नित वाके संग जाय जाय, खाय खाय आवै। एक दिन वा खेत के रखवारे ने हिरन कौं आवतु देखि, फांद रोप्यौ। ज्यौंहीं यह चरवे कौं पैठ्यौ, त्यौंहीं बझ्यौ; तब मन में कहनि लाग्यौ, कि मिच बिन मोहि या संकट तें को निकारिहै? अरु इत स्यार वाकौं फंस्यौ देखि, नाचि नाचि, मन में कहनि लाग्यौ, कि मेरे कपट कौ फल आज मिलैगौ; जब रखवारौ याकौ मास भक्षन करैगौ तौ हाड़ चाम में जो मास लपट्यौ रहैगौ, सो हौं खाऊंगौ। यह तौ या बिचार में नाचि कूद रह्यौ हो, अरु मृग ने जान्यौ, यह मेरौ ई दुख देखि ब्याकुल हो, हाथ पांव पटकतु है; पर यह न जान्यौ, कि दान कौ लोभी नटुवा कौ भांति कला करतु है। आगै स्यार की दसा देखि मृग कही, भाई! मेरे

निमित्त तू एतौ खेद कौं करतु है? कह्यौ है, "आपदा में काम आवै सो हितू; रन में जूझै सो सूर; दरिद्र में स्त्री की परीक्षा लीजिये, दुख में बंधु जांचिये।" ऐसें मृग ने कह्यौ, तद स्यार ने निकट जाय देख्यौ, कि यह तौ कठिन बंधन में पर्‌यौ है, तातें मेरौ मनोरथ शीघ्र सिद्ध होयगौ। ऐसें बिचारि बोल्यौ, भाई! यह जाल तौ तांत कौ है, अरु मेरै आदित कौ उपास है, सो दांत करि कैसें काटौं? जौ और व्रत होय, तौ कछु चिंता नाहीं; पर रवि के व्रत कौ तौ यह बिचार है, जो भंग होय तौ सब पाछली काष्ठा निरफल जाय; यातें आज तौ यह बात है, काल सकारे जो मोतें बनैगी सो करौंगौ। ऐसें कहि, व्हां तें उसरि परै होय बैठ्यौ। इतेक में निसा बितीत भई, अरु व्हां सुबुद्धि नाम काग जाग्यौ; सो चिचाय करि कहनि लाग्यौ, कि राचि मिच मेरौ नाहीं आयौ, अब कहूं खोजौं। यह कहि, व्हां तें चल्यौ। आगै जाय देखै तौ जाल में बझ रह्यौ है। काग कह्यौ, मिच! यह कहा है? उन कह्यौ, हितू! मैं तेरौ कह्यौ न मान्यौ, ताही कौ यह फल है। पुनि काग कह्यौ, वह तेरौ नयौ मिच कहां है? इन कह्यौ, वह मेरे मास कौ लोभी व्हां हीं होयगौ। बहुरि काग कह्यौ, भाई! साध जन अपनौ सौ सुभाव सब काहू कौ जानै, अरु दुष्ट कौ जातीय सुभाव है, जो वातें करै भलाई, तातें वह करै बुराई। कह्यौ है, "दुष्ट बिन बुलाये, आय पहिलै पाय परै, पाछै

कानाबाती करै; हित की रीति सेां प्रीति जनाय, कपट करि कुमारग बतावै, अवसर पाय घात चलावै;" जैसें माछर पीठ पाछै आय, कान सेां लागि, समें पाय, डंक मारै, तैसें ही दुष्ट मनुष; तातें हैां कहतु हैां, कि बैरी की बिस्वास कबहू न कीजै। ऐसें हू कह्यौ है,

"बैरी, बंटूआ, बानियां, ज्वारी, चोर, लबार;
बिभचारी, रोगी, रिनी, नगरनारी कौ यार।
नगरनारी कौ यार, भूल परतीत न कीजै;
सौ सौ सेांहैं खाय चित्त एकौ नहीं दीजै।
कहि गिरधर कबिराय धरै आवै अनघैरी;
हित की कहै बनाय जानिये पूरौ बैरी।" (कुंडलिया)

इतेक बातें सुनि, मृग लांबी सांस लै बोल्यौ, जे झूठी बातें कहि और कौ बुरौ करतु हैं, तिन कौ भार पृथ्वी कैसें सहति है? ऐसें बतराय रहे हे, इतेक में रखवारौ आवतु देख्यौ; तब वायस ने कुरंग तें कही, अब तू आंखि फिराय मृतक होय रहि, जब मैं पुकारौं, तब उठि भजियेा। यह सुनि, उनि वैसें ही करी। रखवारौ आय, हिरन कौं देखि, बोल्यौ, यह तौ आप ही मर रह्यौ है, याहि कहा मारौं? आगे, वाहि मर्यौ जान, बंधन खोलकै, चाहै कि वाहि उठावै; त्यौंहीं काग बोल्यौ, अरु हिरन उठि भाग्यौ। तव रखवारे ने खिस्यायकैं लौठिया घाली, सो स्यार के मूड़ में लागी, अरु लागत प्रमान ही मर्यौ। ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि, "तीन दिन तीन रात, तीन पक्ष, तीन मास, तीन बरस में, पुन्य अरु पाप कौ फल मिल रहतु है।"

इतनी कथा सुनि, लघुपतनक काग ने हिरन्यक चूहा सों कही, मित्र! जौ कदाचित मैं तुम्हें खाऊं तौ पेट हू न भरै, यातें तुम से मित्र धरमात्मा साधु कौ बुरौ काहे करिहौं? क्योंकि चित्रग्रीव सहित सब पंछी जब जाल में परे, तब तुमनि सहायता करि उनके जीव बचाये। कह्यौ है कि, "अपने कार्य्य सिद्ध करिवे कौं सज्जन तें मित्राई करिये, तौ एक दिन काम आवै;" तातें हौं तिहारौ पठंगौ लियौ चाहतु हौं, कि कबहू मेरे दुखमें सहायता करिहौ; या कारन आयौ हौं, तुम और मत जानौ। पुनि मूषक बोल्यौ, कि चंचल सों मित्रता कबहू न कीजै;

काग रु भैंसा कापुरुष स्वान भेड़ मंजार;
इन पांचनि के बिस्वास तें आपुनि जैयै हार। (दोहा)

यातें इन सबनि कौ बिस्वास कबहू न करिये; बैरी मिल्यौ रहै, ताके हित पर न भूलिये। कह्यौ है कि, कैसौ हू तातौ पानी होय, पर अग्नि कौं बिन बुझाये न रहै; निबल सबल न होय; अनमिल बात कबहू न मिलै; जैसें पानी में गाड़ी, अरु भूमि पर नाव, न चलै।" पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "स्त्री तें मर्म की बात न कहिये; जौ कहिये, तौ बिरोध न करिये; करिये तौ जीवन की आस न राखिये।" कोऊ ऐसें हू कहतु है,

"साईं ये न बिरुद्धिये कबि पंडित गुरु यार;
बेटा बनिता पौरिया यज्ञकरावनहार।
यज्ञकरावनहार राजमंत्री जो होई;
बिप्र परौसी बैद आप कौं तपै रसोई।

कहि गिरधर कविराय यहै कैसी समुझाई;
इन तेरह तें तरह दिये बनि आवै सांई।" (कुंडलिया)

बहुरि काग कही, प्रीतम! जो तुम कह्यौ सो सब मैं सुन्यौं; पर मेरौ यह बिचार नाहीं जो तुम तें द्रोह करौं; अरु जो तुम मोसें प्रीति न करिहौ, तौ तिहारे बार पर उपास करि करि प्रान तजौंगो, मोहि राम लक्ष्मन जू की आन है; क्यौंकि असाध की मिचाई थोरे ई दिननि में टूटै; जैसें माटी की पाच फूटिकै न जुरै; अरु साध की प्रीति ऐसें है, जैसें सुबरन कौ पाच, बेग न फूटै; अरु जो फूटै, तौ फेरि संधै। औ कितेक सज्जन पुरुष नारियर की भांति रहतु हैं, कि ऊपर तें तौ कठिन, अरु भीतर कोमल; पुनि दुष्ट जन ह्वै की बेर की सी रहन है, कि ऊपर कोमल, अरु भीतर कठोर; तातें सज्जन अरु दुष्ट जन सुभाव ही तें जान्यौ जातु है, कछु रहन तें नाहीं; अरु पवित्र, दाता, सूर, संकोची, सेही, निर्लोभी, सत्य-वक्ता, साध होतु हैं, असाध न हैंय; यासें तुम ही कह्यौ, कि साध जन पाय को न प्रीति करै?

या रूप की बातैं सुनि, हिरन्यक मूसा बिल तें बाहर निकस बोल्यौ, कि तेरे बचन सुनि मैं अति सुख पायौ; जैसें कोऊ लूअ कौ मार्यौ, स्नान करि, चंदन सब अंग पर चढ़ाय, शीतल होतु हैं, तैसें मेरौ हियौ ठंढौ भयौ। कह्यौ है, "छः प्रकार तें प्रीति बढ़ति है, लैवौ, दैवौ, गुह्य कहिवौ, सुनिवौ, खैवौ, खवायवौ। अरु ये सेह के दूषन हैं, सदा मांगवौ, अप्रिय बचन कहिवौ, मिथ्या भाषवौ, चंच-

लता, अरु जुआ, सेा तो में एक हू नाहीं; यासेा हौं तेरौ सुबिचार देखि प्रसन्न भयेा, आज तें तू मेरेा मित्र है। इतनी बात कहि, काग कैं द्वार पर बैठाय, मूसा बिल में गयेा, अरु व्हां तें कछु खैवे की सामग्री ल्याय, खवाय, आप हू वाके पास बैठ्यौ। ऐसें वे दोऊ व्हां रहनि लागे।

एक दिन काग कही, भाई मूसा! या ठौर तेा अति कष्ट सेां अहार जुरतु है, यासेां वहां चलेा, जहां बहुत चुगेा, सुख तें खैवे कैं मिलै। पुनि मूषक बोल्यौ मित्र! कह्यौ है कि, "जो सयानेा होय, सो आगलेा पाय धरि पाछलेा पग उठावै;" तातें प्रथम ठौर बिचारौ, ता पाछे यहां तें चलेा। वायस कही, बंधु! मैं नीकी ठाम बिचारी है, कि दंडकारन्य बन में कर्पूर नाम सरोवर; तहां मंथरक नाम कछुआ मेरौ मित्र है, सो बड़ौ पंडित धर्मात्मा है। कह्यौ है, "औरन के धर्म उपदेस दैन कैं सब पंडित हैं; पर आप धर्ममारग में दृढ़ता राखें, ते बिरले जन होतु हैं;" तातें मित्र! वह हमकैं भली भांति राखि रक्षा करिहै। कह्यौ है, सुनैां, "जा देस में अपनी बड़ाई, मित्र, विद्या की प्राप्ति, सुसंग, गुनबिचार, अरु तीरथ हू न होय, तैा वहां बसिवौ उचित नाहीं।" मूषक कही, हितू! वहां मोकैं हू साथ लै चलेा। ऐसें बतराय, दोऊ कछुआ पै गये। इन्हें देखि कच्छप बोल्यौ, मेरौ मित्र लघुपतनक आयेा। इतनैां कहि, आगू बढ़ि, शिष्टाचार करि, आदर सेां पाय पखलाय, आसन पर बैठाय, पूजा करनि लाग्यौ;

तब कौआ बोल्यौ, मित्र! याकी पूजा बिशेष करि करौ; यह बड़ौ धर्मात्मा हिरन्यक नाम मूसा सब चूहन कौ राजा है, याके गुन की स्तुति करिवे कौं मेरौ मुख नाहीं; जौ सहस्र मुख तें शेषनाग जू कहैं, तौ कहि सकैं। इतनौ कहि, चित्रग्रीव की सब कथा सुनाई; तब मंथर ने वाकी पूजा करि पूछ्यौ, आपु कौ बास कहां? अरु यहां आवनौं कैसें भयौ?

तब मूसा कहनि लाग्यौ; चंपानगरी में सन्यासियन कौ मठ, तामें चूराकरन नाम सन्यासी रहै; सो जो भिक्षा मांगि अन्न ल्यावै, वह ऊंचे आरा में राखै, वा अनाज कौं हौं कूदि कूदि खाऊं। कितेक दिन पाछै, वाकौ मित्र बीनाकरन नाम सन्यासी तहां आयौ; चूराकरन वासों बात करै, अरु लकरी धरती में खरकावै; तब बीनाकरन कही; तू जो मेरी बात नीकै चित दै नाहीं सुनतु, सु तेरौ मन कहां है? पुनि उनि कही, गुरुभाई! हौं तौ तेरी बात हियौ दै सुनतु हौं, पर यह निगुरौ मूसा मेरौ भिक्षा कौ अन्न सब खातु है, मोहि दुख देतु है, याहि लालच लाग्यौ; भाई! याकौ कछु उपाय करौ। बीनाकरन बोल्यौ, याकौ कछु कारन है; ज्यौं एक तरुन स्त्री ने बूढ़े पुरुष कौं आलिंगन चुंबन करि, जार कौं छिपायौ, त्यौं यह मूसा हू बिन कारन नाहीं कूदतु। चूराकरन कही, यह कैसी कथा है? पुनि बीनाकरन कहनि लाग्यौ;

गौड़देस में कौशंबी नाम नगरी, ता में चंदनदास एक

बनियां; उन वृद्ध अवस्था में, धन के मद सों लीलावती नाम और महाजन की बेटी व्याही; सो काम की अधिकाई तें थोरे ई दिननि में जोबनवती भई, तब वाहि अनखांवनो लागै; जैसें विरहिनि कौं चंद अरु घाम के तांसे कौं सूरज न सुहाय तैसें तरुन स्त्री कौं बूढ़ो स्वामी हू न भावै; क्योंकि वृद्ध कौं दर्प कहां? कह्यो है, "ज्यों बालक कौं औषध न रुचै त्यों वह हू वाहि नीकौ न लागै; पर बुढ़रा बातें अधिक प्रीति करै।" कह्य है, 'जो नारी पति के साक्षात और पुरुष सों बातें करै, सो निस्संदेह परकीया होय।" कहतु हैं, "इतनी भांति सों परकीया होति हैं; बाल होय जाकौ पति, वृद्ध होय, कुरूप होय, बिदेस होय, पास न रहै, हित न करै, असंतान होय;" नारी इतनी भांति विभचारिनी होति है; अरु मद पीवै, कुसंग में बैठै, पति के औगुन और सों भाषै, घर घर डोलै, अति सोवै, नित तन मांजै, सदा सिंगार करति रहै, राच परधाम बसै; ये नारीन के दूषन हैं। अरु जिन के सयान नाहीं, ढिठाई नाहीं, और पुरुष सों न बोलै, लाज बहुत, ते स्त्री पवित्र जानियै। कहतु हैं, "नारी घृत समान, अरु पुरुष अग्नि सम, तातें इन कौ संग भलौ नाहीं" पुनि कह्यो है, "बाल अवस्था में पिता रक्षा करै; तरुनाई में पति रखवारी करै; वृद्धपन में पुत्र सावधानी तें राखै; तौ स्त्री कौ धर्म रहै, नातौ नष्ट होय।"

आगै एक दिन वह लीलावती बनियां के पुत्र साथ

अपने घर में आनंद करि रही ही, यामें वाकौ पति बाहर तें आयौ। ताहि आवतु देखि, बेग ही खटिया तें उतरि, सनमुख धाय, आलिंगन कियौ। वाके देखिवे कौं तौ द्वै आंख हीं, पर एक सें दीसतु न हो; अरु जामें दीसतु हो, ता पै चुंबन कौ मिस करि, उनि मुख राख्यौ, औ जार कौं बाहर निकारि दियौ। कह्यौ है कि, "जो बृहस्पति तें विद्या पढ़ै पर उत्पात की ठांव वाह्न की बुद्धि स्थिर न रहै, अरु कछु न बनि आवै सो नारी छिन ही में उपाय करै।" आगे लीलावती कौं आलिंगन करति देखि, एक दूसरी स्त्री नें कारन बिचारि, वाहि डांट्यौ, अरु कह्यौ, ऐसौ काम फेर जिन कीजो। तातें मूसा के कूदवे कौ कारन मैं जान्यौ, कि याके बिल में माया है; क्योंकि धन बिन बल नाहीं होतु। कह्यौ है,

"कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय;
वह खाये बौरातु है, यह पाये बौराय।" (दोहा)

ऐसें कहि, सन्यासियन मिलकै मेरे बिल तें सब धन काढ़ि लियौ; ताके दुख तें हौं बल हीन भयौ, अरु मन में उत्साह हू नाहीं रह्यौ, क्योंकि देह में जो बल हर्ष होतु है, सो माया तें; अरु धनहीन तें कछु न बनै। कह्यौ है, "धनहीन पुरुष संसार में मृतक समान है।" जब द्रव्यहीन भयौ, तब निबलाई तें मो पै चल्यौ न जाय। पुनि चूराकरन सन्यासी मोहि देखि बोल्यौ, कि यह मूषक अब सीधौ भयौ; जैसें ग्रीषम ऋतु में नदी बलहीन होति है, तैसौ ह्वै गयौ। कहतु हैं, "द्रव्यहीन की मति

स्थिर न रहै, जा पै धन, सो ई बड़िवान, पंडित, ज्ञानी, दानी, बली, चतुर, कुलीन, गुनी है; अरु पुत्र बिन घर सून्य, विद्या बिन हृदै; औ दरिद्र कौं संसार सूनौ लागतु है।" पुनि देखो, धन गये कैसौ ह्वै सुरूप होय, पर कुरूप ह्वै जातु है। ऐसी बातें वा गुसांई की सुनी, तब मैं ने अपने मन मांहिं विचार्यौ, कि अब यहां रहनौं जोग नाहीं। कह्यौ है,

"मंत्र...औषधी दान मान अपमान;
मर्म द्रव्य गृहछिद्र ये प्रगट न लाल बखान।" (दोहा)

जौ कहिये, तौ मिथ्या अपनौं भर्म गंवैये; जब देवता असंतुष्ट होतु है, तब जो उद्यम करै सो निर्फल जाय; अहंकारी कौं ह्वै बात, जैसें धतूरा कौ फूल, कै तौ भूमि पर्यौ सूखै, कै महादेव के माथे चढ़ै; तातें भिक्षा उपाय करि जीवौ जोग नाहीं; छपन तें मांगिवौ, औ मरवौ, समान है।

मान सनमान कौ पयान होतु पहले ही यद्यपि निपट
गुनी गिर ह्वै तें गरुवौ।
कहै कवि देव बार बार जस उचरतु चुटकी देतु लागै
कुटकी तें करुवौ।
अति ही अजानबाहु तऊ तन थोरी दीसै मन मांहिं
लसै जौं हिंडोरे कौ सो मरुवौ।
छन ह्वै तें तूल ह्वै तें पैन ह्वै तें फूल ह्वै तें मेरे जान सब ही तें
मांगवौ है हरुवौ। (कवित्त)

पुनि चूराकरन तें बीनाकरन कहनि लाग्यौ, कि पराधीन भोजन, द्रव्य दै व्याह, विद्या करि हीन, प्रदेस कौ बास, कारोया गौ, पराये घर सोंनौं; ऐसे मनुष कौ जीवन

मरन समान है। कह्यौ है, "लोभ तें चित डुलै कष्ट पावै मरन होय, लोक परलोक जाय।" जब वा गुसाईं ने ऐसे बोल कहे, तब मैं ने बिचार्‌यौ, कि हौं लोभी, असंतोषी, आत्मद्रोही हौं; तातें मेरी संपति गई, अरु संतोषी की संपति कबहू न जाय; जे संतोष करि अघाने हैं, तिन कौं जैसौ सुख है, तैसौ असंतोषी कौं नाहीं। कह्यौ है, "जिन तृष्णा न राखी, काहू कौ सेवा न करी अधीन बचन न भाषे, बिरह की पीर न सही, अधीरता न की, ऐसे पुरषनि तें सौ जोजन धन दूर रहतु है; अरु संतोषी कौं हाथ की वस्तु कौ हू आदर नाहीं।" ऐसौ बिचारकै हौं निरजन बन में आयौ; तिहारौ आश्रम स्वर्ग समान पायौ। कहतु हैं, "यह संसार विष कौ रूख है, या में दै फल मीठे कहतु हैं; एक तौ काव्यरस, दूजौ साध कौ संग।"

इतेक बातें सुनि मंथरक कछुआ बोल्यौ, मित्र! धन में बड़ौ दोष है, एक तौ अनेक दुख पाय इकठौ कीजै, दूजै प्रान तें हू यत्न करि राखियै; ऐसौ धन काहेकौ भलौ? कह्यौ है, "जे अपनौ सुख छांड़ि, पराये लयै द्रव्य उपजाय राखैं, ते ऐसें जैसें मोटिया मोट बाहि मरैं, अरु भोग और ही करैं;" ऐसें तौ सब धनवान ही कहावैं; क्यौंकि दान भोग में तौ नाहीं। यातें दरिद्री औ धनी समान; पर धनवान कौ एक और दोष, कि वाहि गये कौ सोच सो निर्धन कौ नाहीं। पुनि कह्यौ है, "चार बात संसार में आय मनुष तें हीनी कठिन हैं; प्रिय बचन सहित

दान, गर्व बिन ज्ञान, क्षमा समेत सूरता, त्याग लियै धन;" यातें धर्म कौ संचय करियै अति लोभ न करियै; जैसें एक स्यार अधिक लालच करि मार्‌यौ गयौ। हिरन्यक बोल्यौ, यह कैसी कथा है? कछु आ कहनि लाग्यौ!

कल्यानकटक नगर में भैरव नाम व्याधौ, सो एक दिन बिंध्याचल के बन में गयौ हो; सो ह्वां तें एक मृग मारि, कांधे लियै आवतु हो, गैल में एक सूकर आवतु देखि, या ने लोभ करि, वा पै बान घाल्यौ; सो सर तौ वाकै लाग्यौ। पर मरतु मरतु वाने या हू कौं आ मार्‌यौ। इहिं बीच, एक दीरघराव नाम स्यार क्षुधित ह्वै आय कढ़्यौ, अरु इन तीननि कौं ह्वां परे देखि, विन अपने जी मांहिं बिचार्‌यौ, कि अहार बहुत पायौ, याहि अनेक दिन लौं खाऊंगौ, अरु अपनी काया पुष्ट करौंगौ यह बिचारि वह स्यार बधिक के पास जाय, ज्यौं पहिलै धनुष की जेह खानि लाग्यौ, त्यौं हीं जेह टूटि छोर छुटि, वाके कपाल में लाग्यौ अरु ततकाल प्रान देह तें निकरि भाग्यौ। जंबुक जीव सों गयौ, मांस सब ह्वां हीं धर्‌यौ रह्यौ; तातें हौं कहतु हौं, कि अति लोभ करि संचय न करियै; अरु जो धन पाय न खाय, न देय, ताकौ द्रव्य जौलौं जीवै तौलौं रहै; मरे पर वाके धन जन के और ही गाहक होतु हैं; जीवतु भर देखि देखि मन रंजन करै, मरै पै वाके काम कछु न आवै। यातें खाइयै, लुटाइयै, सोई अपनौ; क्योंकि यामें स्वारथ परमारथ दोऊ रहतु हैं।

इतनी बात कहि, पुनि कच्छप ने मूसा सों कह्यो, कि अब तुम गये द्रव्य कौ सोच जिन करौ; क्यौंकि जो वस्तु पायवे जोग न होय, ताकौ यत्न पंडित चतुर नाहीं करतु हैं। तातें मिच तुम चिंता मत करौ। कह्यौ है कि, "विद्या पढ़े तें सब पंडित नाहीं होतु हैं; जे क्रियावान, ते ई पंडित है; जैसे रोगी कौ रोग औषध कौ नाम लिये न जाय, खाय तब ही जाय; तैसें बिन उद्यम, बिचार किये धन ह्न न आवै; आंधरे के हाथ दीपक कहा करै? अपनी आंख की जोति बिन प्रकाश न करै।" पुनि कह्यौ है, "दांत, केस, नख, नर, स्थान छूटे तें सोभा न पावै; अरु सिंह, सूर, गज, पान, पंडित, गुनवान, औ जोगी, ये जहां जहां संचरै, तहां तहां आदर बढ़ावैं।" कहतु हैं, "जैसें कुआ में दादुर, सरोवर में कंवल, आप ही तें आवैं, तैसें उद्यम किये लक्ष्मी ह्न आवै; दुख सुख चक्र की भांति फिरतु है, अरु जे पुरुष साहसी, सूर, ज्ञानी, उद्यमी हैं, तिन कौं दुख नाहीं व्यापत।" कह्यौ है कि, "कैसा ह्न पंडित, गुनी तपसी, सूर, बंधु, धनवंत, होय, पर लोभ किये अनादर ही पावै; गुनवान सुभाव ही तें बड़ौ; जैसें कंचन कौ आभूषन, जौ कूकर के गरे बांधैं तौ ह्न सुहावनौं लागै।" तातें हौं कहतु हौं, कि धन कौ सोच न करियै; क्यौंकि जब माता के गर्भ में विधाता बास देतु है, ताके प्रथम ही दूध स्तन में प्रगट करतु है, औ पाछैं जन्म होतु है। ऐसौ बिचारियै,

जिन तोते हरये किये स्याम काग हंस सेत;
मोर विचित्र जु रंग किये सो चिंता करि देत। (दोहा)

अरु सुनौं, धन में एते दुख हैं, उपजतु, राखतु, जातु; औ बहुत बाढ़े हू धन सुख कबहू न देय; यातें ज्यौं उपजै, त्यौं, दीजै, खाइयै, तौ ही भलौ; नातौ जैसें मास कौं ऊपर राखे पंछी खाय, भूमि में स्यार कूकर, पानी मांहिं कच्छ मच्छ, माटी मांहिं कीरा कीरी खांय; तैसें धन कौं चार भय, राजभय, अग्निभय, चोरभय, दुष्टभय, अरु ताहू में यह बड़ौ दोष, कि माया के लोभ तें सेवक होय अधीनता करै; पर भावी काहू सों न टरै। यासों प्रीतम! तुम हमारौ साथ अब जिन छांड़ौ, जन्म भर ह्यां ही रहौ। कह्यौ है, "संतोष करि रहनौं दान दैनौं, क्रोध न करनौं, ये साध के लक्षन हैं, असाध तें न हैंय।" इतेक सुनि लघुपतनक काग बोल्यौ, अहो मित्र मंथरक! तुम कौं धन्य है! अरु आश्रम के जोग महंत हौ, आपदा में उद्धार लेतु हौ, ऐसें जैसें दहदल में परे हाथी कौं हाथी ही काढ़ै; अरु संसार में तेई नर स्तुति करिवे जोग हैं, जे पराये दुख में सहायता करैं, अरु जिनके द्वार तें सरनागत निरास न जाय, जाचक विमुख न फिरै। इतनी कहि, वे तौनौं वा ठांव सुख से खातु, पीवतु, क्रीड़ा करतु, आनंद सों रहनि लागे।

एक दिन तहां चित्रांगद नाम मृग, भोर ही व्याधी कौ डरायौ आयौ; ताहि आवतु देखि मंथरक जल

मांहिं पैठ्यौ मूसा बिल में धस्यौ, काग रूख पर उड़ि बैठ्यौ; अरु वाने दूर लौं दृष्ट करि देख्यौ, कि याके पाछै और तौ कोऊ नाहीं यह अकेलौ ई आवतु है; तब काग बोल्यौ, भाई! कछु भय नाहीं, सब निकरि बैठौ। यह सुनि, वे ऊ निकसि आये और तीनौं मिल बैठे। हिरन इनके पास आयौ, तब मंथरक बोल्यौ, मिच तुम कुशल क्षेम तें नीकै आये? कह्यौ है, 'उत्तम पुरुषनि कौ यह धर्म है, घर आये कौं पहिले तौ कुशलात पूछै, पुनि आदर करि बैठावै, फेरि अति सनमान करि भोजन कौं पूछै, यह उत्तम जन कौ व्योहार है।" इतनौ पूछि पुनि कह्यौ, अहो मिच! इत आवन तिहारौ कैसें भयौ, मृग कही, हौं व्याधी कौ डरायौ आयौ हौं, अरु तुम तें मिचाई कियौ चाहतु हौं। हिरन्यक कही, हम तुम तौ सहज ही मिच हैं, और परंपराय तुम तें हम तें मिचाई चली आवति है। कह्यौ है, 'जो आपदा में राखै, सेा तौ सदा ही कौ मिच है।" तुम इत आये सो भली कीनौ, अपने घर तें यहां नीकी भांति रहिहौ। यह बात सुनि कुरंग ने अहार कियौ, अरु पानी पी, रूख तरै बिसराम लियौ। पुनि मंथरक बोल्यौ मिच! तुम कह्यौ, कि हौं व्याधी के डर तें आयौ सो या निरजन बन में व्याधी कहां?

हिरन कही, कलिंग देस कौ राजा रुक्मांगद, सर्व दिस जीत, चंद्रभागा नदी के कांठे आय उतर्‌यौ है, अरु सकारै

इत आय या कर्पूर सरोवर में जारि डारि मच्छ कच्छ पकरिहै। यह बात हौं धीवर के मुख तें सुनि आयो हौं, तातें यहां रहनौं भलो नाहीं। कह्यो है, "कष्ट आवतु देखि दूर तें टारिये।" मैं तौ यह कह्यो, पर अब तिहारी बुद्धि मैं आवै सो करौ। मंथरक बोल्यौ, हौं और सरोवर में जाऊं। तब काग और मृग ने कह्यो, कि पानी के जीव कौं पानी को बल ऐसें हैं, कि जैसें राजा कौं अपने राज को। पुनि हिरन्यक मूसा बोलि उठ्यो, कि भाई! तुम तौ बात को भेद न समझ ऐसो विचार करतु हो; जैसो एक बनियां के पुत्र ने अनजाने बिचार कियो, अरु पाछें अपनी स्त्री कौं देखि दुख पायो। मंथरक कही, यह कैसी कथा है? तब मूसा कहतु है;

बीरपुर नगर, वाको बीरसेन नाम राजा, ताके पुत्र भयो, जाको नाम तुंगबल धर्‌यो। जब वह सामर्थ भयो, तद राजा ने राज सुत कौं दयो, आप हरिभजन करनि लाग्यो, और राजकुमार राज। एक दिन वह राजपुत्र देव दरसन किये आवतु हो, वाने काहू बनियां की स्त्री तरुनि अति रूपवती गैल में देखी। वाको रूप चाहि, यह काम को सतायो निज मंदिर मांहिं आयो; अरु वह लावन्यवती हू राजकुमार कौं देखि, कामातुर होय, अपने धाम कौं गई। कह्यो है, "स्त्रियन कै ना कोऊ प्रिय, और ना अप्रिय; जैसे बन मांहिं गैयां नये नये, हरे हरे, तृन चरैं, और मन संतुष्ट करैं, तैसें जुवती हू नवीन नवीन

नर चाहैं। पुनि राजकुमार ने एक दूती बुलाय, वाकौं अपनी अवस्था जताय, वाके निकट पठाई। वाने जाय राजपुच की सब अवस्था सुनाई; तब उनि कह्यौ, हौं तौ पतिव्रता हौं, अरु नारी कौं ऐसौ कह्यौ है कि, "बिन स्वामी की आज्ञा कछु काम न करै;" यातें जो मेरौ भर्त्तार कहैगौ सो में करौंगी। दूती ने कह्यौ, यह तैं भलौ कह्यौ, हौं ऐसें ही करिहौं। इतनौ कहि, दूती राजपुच पै आई, अरु वाकौ संदेसौ कह्यौ। राजकुंवर कह्यौ, यह कैसें ह्वैहै? बहुरि दूती कह्यौ, महाराज! कछु चिंता जिन करौ, उपाय करिहौं। कह्यौ है, 'जो कार्य उपाय तें होय, सो बल तें न होय; जैसें स्यारनि उद्यम करि गज कौं कीच मांहिं फंसायकै मार्यौ।" राजपुच कह्यौ, यह कैसी कथा है? तब दूती कहति है;

ब्रह्मारन्य बन में एक कर्पूरतिलक नाम हाथी रहै; ताहि देखि सब जंबुक मतौ करनि लागे, कि काहू प्रकार तें या गज कौं मारियै, तौ चौमासे भर खैवे कौं आहार सुकतौ होय। यह सुनि, विन में तें एक बृद्ध स्यार बोल्यौ, या हाथी कौं हौं युक्ति करि मारि हौं। इतनौ कहि, वह बूढ़ौ जंबुक गज के निकट गयौ, अरु धूर्त्त ने मन मांहिं कपट करि, वासों यौं कह्यौ, हे देव! तुम मो पर कृपा करौ। गज कह्यौ, अरे! तू को है? अरु कहां तें आयौ है? इन कह्यौ, सब बनबासियन मिल मोहि तुम पै पठायौ है, औ बिनती करि कह्यौ है कि, या बन में हमारौ कोउ राजा नाहीं, बन के

राजा तुम हौ, सब गुन संयुक्त। कह्यौ है, "जो कुलवंत, आचार प्रताप धर्म नीति संयुक्त होय, ताकौं राजा करियै," अरु राजा नीकौ होय तौ धन स्त्री कौ संचय करियै। कहतु हैं, "प्रानी कौं जैसौ मेंह कौ आधार, तैसौ ई राजा कौ भरोसौ है; क्योंकि राज के भय तें सब धर्म रहै; दुर्बल रोगी दरिद्री पति हू की पत्नी, भूपाल के भय तें सेवा करै;" यातें अब तुम बिलंब जिन करौ, बेग चलौ; शुभ कर्म में ढील करनी जोग नाहीं। यह कहि, स्यार हाथी कौं लै चल्यौ; अरु गज हू राजपद के लोभ कौ मार्‍यौ वाके साथ ह्वै लियौ; आगै आगै स्यार, पाछै पाछै कुंजर; ऐसें दोऊ चले; जा पैंड़े मांहिं बरषा की दहदल ह्वै रही ही, ताही गैल वह वाकौं लै चल्यौ। आगै जाय हाथी दौं में फंस्यौ; तब बोल्यौ, मित्र! अब हौं कहा करौं? स्यार कही, मेरी पूंछ पकरि चल्यौ आव। यौं सुनाय, पुनि जब देख्यौ, यह या मांहिं फंस्यौ; तब इन कही, तुम सोच जिन करौ, हौं तिहारे निकारिवे कौं अपने सजाती भाइयन कौं टेरि ल्यावतु हौं। इतनी कहि सब जंबुकनि बोलि लै आयौ, अरु काढ़नि के मिस दांतनि तें वाकौ चाम फारि फारि खायौ; गज चिचाय चिचायकै मर्‍यौ।

इतनौं कहि, दूती बोली, महाराज! उपाय तें कहा न होय? यातें अब हौं कहौं सो तुम करौ। प्रथम तौ लावन्यवती के पति कौं चाकर राखौ; पाछै जो हौं कहौं सो कीजै। यह सुनि, राजकुमार ने लावन्यवती के भरतार

चारुदंत कौं चाकर राख्यौ। पुनि दूती ने राजपुत्र कौं सब छलछिद्र की बातें सिखाय दईं; तब उनि वाकी प्रतीति बढ़ाय, वाहि सब काम में प्रधान कियौ। एक दिन राजपुत्र ने चारुदंत सेां कह्यौ कि, आज तें लै हौं एक मास लौं श्री भवानी जू का व्रत करिहौं, तुम काहू सौभाग्यवती स्त्री कौं ल्यावौ। आज्ञा पाय, चारुदंत काहू असती स्वइच्छाचारनी कौं लै आयौ; तद राजपुत्र ने पवित्र होय वाहि एकांत लैजाय, पाय पखलाय, भोजन करवाय, केसर कपूर चंदन सेां चरचि, वस्त्र आभरन पहिराय, अति आदर मान तें बिदा कियौ। तब गैल में जाय चारुदंत ने लोभ करि वा नारी सेां कह्यौ कि, या द्रव्य तें कछु मो हू कौं बांटि दै। उन कही, मोहि राजकुमार ने दयौ हैं, मैं तोहि क्यौं बांटि दैऊंगी? निदान वाने धन न दियौ; तद चारुदंत ने अपने मन मांहिं बिचार्‌यौ कि, राजपुत्र तौ नित एक महीना लौं इतनौं धन देयगौ, यातें अपनी स्त्री क्यौं क्यौं न लाऊं, जु इतेक द्रव्य सेंत मेंत अपने घर लै जाऊं? यौं बिचारि, वह निज घर आय लावन्यवती सेां बोल्यौ कि, हे प्रिये! राजकुमार इतनौं धन नित प्रति देयगौ; जौ तू जाय तौ वह सब धन अपने गेह मांहिं आवै। लावन्यवती बोली, स्वामी! हौं तिहारी आज्ञाकारी हौं, जो तुम कहौ सेा मोहि प्रमान है। निदान लोभ के मारे वाने अपनी नारी राजपुत्र कौं आन दई। पुनि राजकुमार ने वाहि देखि, मन में कही कि, जाके मिलन की अभिलाषा ही, सेा तौ आय मिली,

अब अपनौं मनोरथ क्यौं न पूरौ करै? यह समझि, निरालौ करि, वाने अपने मन की आस पूजी, अरु धन दै वाहि बिदा कियौ। तब चारुदंत बनियां निज मंदिर में जाय, स्त्री कौ शृंगार छिन्न भिन्न देखि, अपनी करनी औ करतूत तें आपही पछतायौ।

अर्थ न समझौ बात कौ ग्रंथ न दीनौं मन्न;
नगर लोग के देखते भयौ भांड महाजन्न। (दोहा)

इतनी कथा कथ, फेरि मूसा बोल्यौ, अहो मित्र मंथरक! जौ तुम अपनी ठौर तें अनत जायहौ, तौ दुख पायहौ। आगै इंदुर की बात न मान, मंथरक भय कौ मार्यौ सरोवर छांड़ि बन कौं चल्यौ, अरु वे तीनौं हू वाके साथ ह्वै लये। आगै जात ही एक व्याधी आयौ, तिन कच्छप कौं पकरि बांध्यौ। कहतु हैं, "जब आपदा आवै, तब सुख में दुख बढ़ावै; कैसौ हू बलवान बुद्धिवान होय, पर आपदा तें न छूटै।" पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "संपत में बिपत, संगेाग में बियोग, लाभ में हानि, गुन में दोष, ज्ञान में गिलान, मानमें अपमान, हांसी में बिषाद, भलाई में बुराई; ये सब समय पाय आप तें आप आय घटति हैं; पर भय औ आपत्य है, सेा प्रीति की कसौटी है, याही में सज्जन अरु दुरजन जान्यौं जातु है; औ यौं कहवे कौं तौ सब ही सब के मित्र हैं।

सुख में सज्जन बढ़त है दुख में लीने छीन;
सोंना सज्जन कसन कौं बिपत कसौटी कीन। (दोहा)

आगै मंथरक कौं बझगौ देखि, वे तीनौं चिंता करनि लागे; तद मूसा ने हिरन सें कह्यौ, मित्र! तुम पंगु बनि

बधिक के आगे ह्वै कढ़ौ; जब यह बधिक मंथरक कों त्यागि तिहारे पाछै भजिहै, तब हौं याके बंधन काटिहौं, काग बोले बहुरि तुम पराइयो। यह बात मूषक तें सुनि, कुरंग ने त्योंहीं करी। बधिक ने देख्यौ कि, मृग लंगरातु जातु है, याहि दौरिकै पकरि लेउं। यों बिचारि, व्याधौ अपनों सरबसु जल के तीर रूख तरै राखि, हिरन के पाछै दौख्यौ, त्यों मूसा ने मंथरक कछुआ के बंधन काटे, वह नीर मांहिं गिख्यौ; काग पुकाख्यौ, भाई! भागो! परमेश्वर ने काज सुधाख्यौ। यह सुनत ही, मृग चौकरी मारि परायौ; व्याधौ निरास ह्वै उलटौ फिर आयो। व्हां देखै तौ कछुआ हू नाहीं? तब कहनि लाग्यौ कि, मोहि ऐसो करनों उचित न हो जो हाथ कौ छोरि और कों धायो। कह्यो है, "अति लालच नीकौ नाहीं, जैसो मृग कौ लोभ कियौ, तैसो हाथ आयो कछुआ खोय दियौ। ऐसें पछताय, व्याधौ व्हां तें गयो, ये चारों मित्र तहां सुख सों रहे, उनके मनोरथ पुरे भये।

इतनी कथा कहि, बिष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! सुनो! या कथा के सुने तें सज्जन सों मित्रता होय, मन मैं संतोष आवै, घर मांहिं लक्ष्मी बाढ़ै, राजा राजनीति सों चलै, प्रजाकी रक्षा करै। यह मित्रलाभ प्रथम कथा कही, या में जाकी रुचि होय सो कबहू ठगायौ न जाय, सदा निर्मल बुद्धि तें संसार के सब काज साधै, वक्ता श्रोता कौ श्रीमहादेव जू कल्यान करैं।

इति मित्रलाभो नाम प्रथम कथासंग्रहः संपूर्णः।

अथ सुहृद्भेदः ।

राजकुमारनि विष्णुशर्मा सेां कह्यौ, अहो गुरुदेव! मित्रलाभ की कथा तौ हमनि सुनी, अब कृपा करि दूजी सुहृद्भेद की कथा सुनाअै। तहां विष्णुशर्मा कहतु है कि, महाराजकुमार! पहिले एक बरध अै बाघ सेां स्यार ने, प्रीति करवाई अरु पाछै बरध कौं मरवायौ वाही बाघ सेां। राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है? तद् विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ;

दक्षिन दिसा में सुवर्ना नाम नगरी; तहां एक वर्द्धमान नाम बनियां, सो बड़ौ धनवंत हो। काहू दिन वाते एक अैार सेठ की संपत देखि, अपने मन में बिचार्यौ कि, काहू भांति अैार हू लक्ष्मी इकठी करौं तौ भलौ। कह्यौ है, "आप तें अधिक बल द्रव्य विद्या देखि, काकौ मन मलीन न होय? अरु ऐसें हीं अपनी संपत की बढ़वार देखि, को न मन मांहिं अहंकार करै? क्यौंकि धनाढ्य कौं सब कोऊ मानै" पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "असाहसी अै आलसीन कौं लक्ष्मी आप ही त्यागति है; जैसें वृद्ध पुरुष कौं तरुन स्त्री न चाहै, तैसें विन्हैं लक्ष्मी हू।" अरु जे आलसी होय, संतोष करि घर मांहिं बैठ रहैं, तिन कौं बिधाता कबहू न बढ़ावै। कह्यौ है, "भगवान

असाहसी पुत्र हू काहू कौं न देय।" बहुरि कहतु हैं कि, "अनपाई वस्तु को यत्न कीजै, तेा प्राप्त होय; अरु वाकी चिंता न करिये तेा न मिलै।" ऐसें बिचारि, बनियां पुनि मन में कहनि लाग्यौ कि, जो धन पाय न खाय, न उठावै, वह धन कौन काम आवै! औ बल भये शत्रु कौं न मारिये, तेा वा बल को लै कहा करिये? अरु विद्या पढ़ि धर्म न जानियै, तौ वा विद्या तें कहा लाभ? पुनि सरीर पाय उपकार न होय, अरु इंद्री न जीतै, तेा सरीर सेां कहा अर्थ? कह्यौ है, "थोरौ थोरौ उद्यम करै हू धन बाढ़ै; तैसें बूंद बूंद जल करि घट भरै; अरु बिन विद्या औ धन जो जन सांस लेतु है, सो लुहार की धवनि समान जानियै।"

ऐसें सोच बिचार करि, बर्द्धमान बनियां, नंदक औ संजीवक बलध रथ मांहिं जेाति, बहुत धन द्रव्य लादि, रथ पर चढ़ि, काश्मीर की ओर चल्यौ। कह्यौ है, "सा-मर्थी कौं कहा भार? व्यापारी कौं कहा बिदेस? मीठौ बोलै ताहि कौन परायेा? आगे अधबर गैल में चलत, दुर्ग नाम महाबन मांहिं संजीवक कौ पांव टूट्यौ, बरध पछार खाय गिस्यौ। वाहि गिस्यौ देखि, महाजन कहनि लाग्यौ कि, कोऊ कितेक उपाय करि मरौ, फल बिधाता के हाथ है। ऐसें बिचारि, बरध कौं वहां हीं छोरि, बनियां आगे कौं चल्यौ, बरध वहा रह्यौ। कितेक दिवस मांहिं वह हरे हरे तृन खाय निर्मल जल पी, अति बलवान भयौ;

भयौ अरु एक समय परमानंद करि दडूक्यौ। वा ठौर एक पिंगल नाम सिंह राज करतु हो; पर वाहि काहू ने राजतिलक न दयौ हो। कह्यौ है, "अपने बल करि सिंह मृगराज ही कहावै।" सो सिंह वाही काल जमुना तीर नीर पीवनि गयौ। व्हां जाय संजीवक के दडूकवे कौ शब्द सुनि, मन हीं मन भयमान होय, पानी अनपियै ही अपनौ ठाम आय बैठ्यौ। तहां दमनक और करटक दौ स्यार रहैं; सो यह चरित्र देखि, दमनक ने करटक तें कह्यौ कि, मित्र! तुम कछु देख्यौ, जु आज यमुना तीर पै जाय, बाघ बिन पानी पियै, अपनौ ठांव सुचितौ होय आनि बैठ्यौ, ताकौ कारन कहा! करटक कह्यौ, बंधु! मेरौ तौ यह विचार है, कि जाकी सेवा न करियै, ताकी बात पूछे तें कहा प्रयोजन? कहतु हैं, "जा गांव न जानौ, वाकौ पैंड़ौ पूछवे तें कहा काम! मोहि तौ अब याकी सेवा करत हू लाज आवति है; पर अहार के लोभ तें करतु हौं। कह्यौ है, "जे सेवा करि धन चाहतु हैं, ते अपनौ शरीर पराये हाथ बेचतु हैं; अरु जे और के हेतु भूख प्यास घाम सीत बर्षा सहतु है, तिन कौ तपस्या में खोट जानियै; क्यौंकि पराधीन परबस कौ जीवन मृतक समान है" कहतु हैं,

"दैनौं भलौ सुपथ कुपथ पै न दूनौं भलौ सुनौं भलौं भौंन
पै न खल साथ करियै;
संतन कौ लघु संग जड़ कौ गुरु छांड़ि साधु कौ सहज
औ असाधु कृपा डरियै;

थोरियै सराफी नफा बङ्गत जुवा कौ छांड़ि परिकै कुसंग
आप बल सों सपरियै ;
हारि मानि लीजै पै न रारि कीजै नीचनि सों सरबस
दीजै पै न परबस परियै ।” (कबित्त)

मृतक कौंन कौं कहतु हैं कि, जा सेवक कौ ठाकुर न चाहै, अरु कहै इत तें उत जा, बोलै जिन ठाढ़ौ रह, ऐसें अवज्ञा करि वाकौ मान मर्दन करै तौ ह्र मूरख धन के हेतु पराधीन रहै। जैसें बेस्या परपुरुष के निमित्त सिंगार करै, तैसें मूरख ह्र पढ़ि गुनि परायौ अधीन होय; यातें मेरे जान सेवक के समान मूरख जगत में कोऊ नाहीं। दमनक कही, मित्र! तुम यह बात जिन कहौ; कह्यौ है, “बड़ौ जतन करि भलौ ठाकुर सेइयै, जासेां मन कामना पूरन होय; छत्र चमर गज अश्व आदि सब लक्ष्मी के पदारथ मिलैं; जौ न सेवियै तौ कहां सें पाइयै? तातें सेवा अवश्य करियै।” बहुरि करटक कही, हितू! जो तुम कह्यौ तासेां हमैं कहा प्रयोजन? कह्यौ है, “बिन समझै बूझै काह्न के बीच परै, सो मरै, जैसें एक बनचर मर्‍यौ।” दमनक कही, यह कैसी कथा है? तहां करकट कहतु हैं;

मगध देस में सुभदत्त नाम कायथ, तिन धर्मारन्य बन में क्रीड़ा की ठौर बनावन कौ आरम्भ कियौ; यहां कोऊ बढ़ई काठ चीरतु चीरतु, वा मांहिं लकरी की कील दै, काह्न काम कौं गयौ; अरु एक बन कौ बानर चपलाई करतु करतु कालबस वाही काठ पर कील पकरि आय बैठ्यौ, अरु वाके लांगुल का मूल वा काठ की संधि मांहिं

लटकि परे। ज्यौं उनि चंचलता सेां युक्ति करि कील काढ़ी, त्यौं काढ़त प्रमान लांगुल का मूल चपे औा मस्यौ।

तातें हौं कहतु हौं, कि बिन स्वारथ चेष्टा न करिये। दमनक कही, मित्र! जेा प्रधान होय, सेा सब काम करै; सेवक कौं ऐसेा बिचारनेां जेाग नाहीं। करटक बोल्यौ, भाई! अपनेा काम छोरि औार के काम में परनेां उचित नाहीं; अरु जेा परै, तेा वैसें होय, जैसें पराये काज में परि बिचारेा गदहा मार्यौ गयेा। दमनक कही, यह कैसेा कथा है! तद करटक कहतु है;

बारानसी नगरी मांहिं कोऊ कर्पूरपाट नाम धोबी रहै, सेा तरुन स्त्री व्याह ल्यायेा। वाके साथ एक दिन रात कौं सुखनींद मांहिं सेावतु हेा; वाके घर में चोर पैठे। अरु ताके अंगना में एक गदहा औा कूकर हेा, सेा गदहा चोरनि कौं देखि कूकर तें बोल्यौ, अरे! यह तेरेा काम है, कि ठाकुर कौं जगाय दै। उनि कही, अरे! मेरेा काज की चर्चा जिन कर, तू जानतु नाहीं जु, यह मोहि खैवे कौं नाहीं देतु? सुनि कह्यौ है, "जब लौं ठाकुर पै आपदा न परै, तब लौं सेवक कौ आदर ह्वै न करै।" पुनि गर्दभ कही, सुन रे बावरे! जेा काम परे मांगे सेा कैसेा चाकर? उनि कही, जेा काज परे सेवक कौं चाहै, सेा कैसेा ठाकुर? सेवक औा पुत्र समान है, इनकेा पोषन भरन करनेां स्वामी कौं उचित है। गदहा बोल्यौ, अरे! तू तेा पापी है, जेा स्वामी कौ काज नाहीं करतु; अरु मेरेा नाम स्वामिभ

है, तातें जामें स्वामी जागिहै सेा उपाय करिहैं। बहुरि स्वान कही, रे! सूरज कौं पीठ दै सेइयै, अग्नि आगै धरि तापियै, अरु स्वामी सेां आगै पाछै शुद्ध भाव रहियै; पर यह स्वामी वैसौ नाहीं; अरु जौ तू मेरे काज मांहिं पाय धरैगौ, तौ मेरौ मैान तोहि लागिहै। वाकी बात सुनि गदहा वहां तें उसरि, धुबिया के निकट जाय, कान सेां मुंह लाय रैंक्यौ, तब वा रजक ने नींद सेां चौंकि, क्रोध करि, गदहा कौं लुहांगियन मार्‌यौ, वा मार तें वह मर्‌यौ।

तातें हैं। कहतु हैं, कि औार के अधिकार मांहिं कबहू न परियै। हमारौ काम तौ यह है, कि अहार खोजनैं; पै आज हमें वाहू कौ सेाच नाहीं; क्यौंकि काहू कौ मास बहुत धर्‌यौ है, वातें हम अनेक दिन पेट भरि काटिहैं। दमनक कही, जौ तू अहार ही के लयै सेवा करतु है, तौ यह भलौ नाहीं; राजा कौ सेवा करनैं, सेा तौ स्वारथ परमारथ के निमित्त, कि जाकौ सेवा तें मित्र साधनि कौं उपकार करियै. औा शत्रु दुष्टनि कौं मारियै। यह मन में बासना रहति है, केवल उदर भरन के हेतु नाहीं सेवतु। कह्यौ है, "संसार में जाके आसरे अनेक लेाग जीवैं, ताही कौ जीवन सुफल है। सब सेवक समान न हेांय, सेवक सेवक में हू बड़ौ अंतर है; जैसें एक पांच कौरी कौं हू अकरौ, औा एक लाखनि तें हू न पाइयै। कहतु हैं, "घोरा, हाथी, काठ, पाथर, कपरा, स्त्री, पुरुष, अन्न, इनके मोल मोल में बड़ौ भेद है।" देखौ! कूकर थोरौ

ई मास हाड़ तें खप्यौ पावै, तौ वाही मांहिं संतोष करि रहै; अरु सिंह आगै स्यार ठाढ़ौ रहै, तौ ह्व वह वाहि छांड़ि गज कौं ही मारै। तातें हौं कहतु हौं कि, जे बड़े हैं ते बड़ौ ई काम करतु हैं। पुनि कूकर पूंछ हिलावै, पेट दिखावै, तब टूका पावै; अरु हाथी स्थान बंध्यौ, केते जतन उपाय करि, घने आदर सेां अहार कौ ग्रास लेय। कह्यौ है; "जगत मांहिं ज्ञान, पराक्रम, जस, अहंकार सहित एक घरी जौनैं ह्व भलौ; अरु मान रहित काग कौ भांति बिष्ठा खाय अनेक दिन जियौ तौ कहा!" जौ अपनौ ही पेट पालि जियौ, तौ वा मनुष औ पशु में कहा अंतर है? पुनि करकट कही, कछु हम तुम या राजा के सेवक नाहीं। बहुरि दमनक कही, भाई! समें पाय मंचौ ह्वैवे कौ यत्न करियै; बड़ौ पाथर कष्ट करि उठाइयै, पै गिराइयै सहज में; औ अपनौ प्रतिष्ठा राखिवे कौं उपाय सदा करियै। पुनि करटक कही, बंधु! तुम कछु जानतु हौ, कि सिंह आज काहे डर्यौ? दमनक बोल्यौ, भाई! यामें कहा जानवौ है? पंडित बिन कहे ही जानै, अरु कहे तें तौ पशु ह्व पिछानै; पर जाकौं जो भावै सो भलौ। मेरे जान तौ राजा की सेवा मांहिं रहियै, औ जब राजा पुकारै, ह्यां कोऊ है? तब कहियै, महाराज! कहा आज्ञा होति है? दास बैठ्यौ है। वा भांति जद पुकारै, तद याही रीति जतर देइ, अरु जो कछु कहै सेा सावधान ह्वै सुनि लेइ, कह्यौ न उलंघै, छिन भर साथ न

छांड़ै, परछांड़ै की भांति संग लाग्यौ रहै। करटक कही, हितू! कह्यौ है, "अनअवसर नृपति के निकट जाय तौ निरादर होय।" दमनक बोल्यौ, तौहू सेवक स्वामी कौं न छांड़ै। कह्यौ है, "लोगनि के भय उद्यम औ अजीरन के डर भोजन न करनौं कपूत कौ काम है।" कैसौ हू अकुलीन मलीन बिद्याहीन पुरुष राजा के समीप रहै, तासों हित करै। कहतु हैं, "अग्नि, स्त्री, राजा, लता, ये निकटवर्त्ती सों लग चलतु हैं, यामें संदेह नाहीं।" करटक कही, तू राजा सों पूछैगो, तुम क्यों डरे? उनि कही, प्रथम जाय हौं राजा कौं देखि हौं, प्रसन्न है कै उदास। इन कही, यह तू कैसें जानैगो? पुनि उनि कह्यौ, जो ठाकुर सेवक कौं दूर तें आवतु देखि प्रसन्न होय, आपही तें बतराय, निज सेवकनि मांहिं गनै, थोरी सेवा देखि बहुत मया करै, दिन दिन आदर देइ, तौ जानियै, ठाकुर संतुष्ट है; अरु जब राजा सेवक कौं आवतु देखि आंख चुरावै, औ दैवे कौं आज काल्ह करि आसा बढ़ावै, काहू बात मांहिं चित न देइ, गुन में औगुन काढ़ै, तब जानियै राजा असंतुष्ट है। तातें तुम चिंता कछु जिन करौ, मैं जैसें राजा कौं देखिहौं, तैसी ही बात करिहौं। कह्यौ है; "जो सयानौ मंची होय, सो अनीति में नीति, औ बिपत में संपत करि दिखावै।" बहुरि करटक कही, भाई! समय बिन बृहस्पति हू कहै तौ अपमान ही पावै, मनुष की किन चलाई? पुनि दमनक बोल्यौ, अहो मित्र! तुम जिन डरौ,

हैं बिन औसर न कहिहैं, कह्यौ है, "जब कोऊ कुमारग में चलैं, तब वाकौ हितू होय सो बिन कहे न रहै;" औ समें असमें मंच न कहै, तौ मंची काहेकौ? क्योंकि, औसर पर ही बड़ाई पाइयतु है।

समय चूकिकै सकल नर फिर पाछै पछितात;
ना यह रहै न वह रहै रहै कहनि कौं बात। (दोहा)

इतनी कहि, फेर दमनक बोल्यौ, अब जो मोहि कहौ सो करौं। करटक कह्यौ, जामें अपनौ भलौ जानौ सो करौ। यह सुनि, दमनक पिंगल राजा के नेरे गयौ, दंडवत करि, कर जोरि, सन्मुख ठाढ़ौ रह्यौ; तब राजा ने हंसिकै कह्यौ, दमनक! तू मो पास बहुत दिन पाछै आयौ। इतनौं कहि बैठायौ। पुनि दमनक ने राजा की अंतरगति पाय, वाकौं भयमान जानि, ऐसें कह्यौ कि, पृथ्वीनाथ! तिहारौ हमारौ काम तौ नाहीं; पर हम सेवक हैं; हम कौं यह जोग है, कि समय असमय आयौ चाहैं; क्योंकि, एक समें दांत कान कुरेदवे कौं तृन हू काम परतु है; तातें सेवक बेला कुबेला काज न आवै, तौ पाछै वह कौन काम कौ! यद्यपि बहुत दिन भये तुम मोसें कछु मंच नाहीं पूछ्यौ, पर मेरी बुद्धि नाहीं घटी। कह्यौ है, "जो मनि पाय बांधिये, औ काच सिर, तौ हू काच सो काच, अरु मनि सो मनि।" पुनि अपमान किये हू जाकी बुद्धि स्थिर रहै, सो पंडित; यासें, महाराज! तुम कौं सदा विवेक करनौं उचित है। संसार में उत्तम मध्यम अधम तीन

प्रकार के लोग हैं, जाकौं जैसौ देखियै, ताकौं तैसौ अधिकार सौंपियै, अरु सेवक की सेवा बुझियै; जौ सेवक की सेवा राजा न बूझै, तौ सेवक मन मांहिं महादुखी रहै; तातें, महाराज! आभरन औ सेवक जहां को होय, तहां हीं सोभा पावै; अरु राजा मंची की बुद्धि तें चलै, तौ अनेक सेवक आवैं। कह्यौ है, "अश्व, शस्त्र, शास्त्र, बीन, नर, नारी, ये सब भले के हाथ रहैं तौ भले रहैं, औ बुरे के हाथ बुरे।" पुनि कह्यौ है, "जौ राजा सुबुद्धि पर कुमाया करै, तौ वह याके निकट न रहै; जौ सुबुद्धि राजा के ढिग न रहै, तौ नीति जाय; नीति गये लोग दुखी होंय; अरु भूपति मया करै, तौ सब ही मानैं; नीकी बात सब कौं सुहाय; पै मीठौ बोलनौं महाकठिन है।"

इतेक बातें जब दमनक ने कहीं, तब सिंह राजा बोल्यौ, अहो दमनक! तुम हमारे मंची के पुच ह्वैकै हम पास कबहू न आये, ऐसौ तुम्हें न बूझियै, अब आवन कैसें भयौ? दमनक कही कि, महाराज! हौं तुम तें कछु पूछवे कौं आयौ हौं, आप की आज्ञा पाऊं तौ पूछौं। सिंह कही, दमनक! तुम हम तें निस्संदेह पूछौ। पुनि दमनक बोल्यौ, महाराज! तुम पानी के तीर जाय, बिन नीर पिये सुचित ह्वै, अपने स्थान पै आय बैठे, सो ताकौ कारन कहा? यह कृपा करि मोहि कहौ, तौ मेरे मन कौ संदेह जाय। उनि कही, भाई! मेरे मन की बात काहू सों कहवे की नाहीं; पर तू मेरे मंची कौ पुच है, यातें हौं तोतें कहतु हौं, तू

काहू सेां या बात कौं जिन कहियो कि जब आज हौं जल पीवे कौं गयो, तब एक अति भयानक शब्द सुन्यौं, ताके भय कौ मार्‌यौ वहां तें बगदि यहां आय बैठ्यौ हौं, अरु जी में विचारतु हौं कि, या बन में कोऊ महाबली जंतु आयो है, तातें या बन तें अनत जाय बसियै सो भलौ। पर यहां रहनौं जोग नाहीं। यह सुनि, दमनक बोल्यौ, महाराज! कछु कहिवे की नाहीं, वह शब्द मैं ने हू जब तें सुन्यौ है, तब तें मारे भय के थरथर कांपतु हौं; पर मंची कौं ऐसौ न चाहियै जु पहलै ही ठौर छुड़ावै कै लरावै। औ राजानि कौं यह उचित है कि, आपदा में इतनेंन की परीक्षा लैय, सेवक, स्त्री, बुद्धि, बल; क्यौंकि, इन की कसौटी बिपत है। सिंह कही, मेरे मन मांहिं अति संका है। तब दमनक ने निज मन में कह्यौ कि, तुम कौं संका न होती, तौ हम सेां काहेकौं बतराते? ऐसें मन में समझि, पुनि बोल्यौ कि, धर्मावतार! जौलौं हम जीवत हैं, तौलौं तुम भय कछु जिन करौ; हौं करटक आदि सब सेवक बुलाय लेत हौं। नीति में ऐसौ कह्यौ है कि, "आपत्य के समय राजा अपने सब सेवकनि कौं बुलाय, एकमतौ करि अधिकार सौंपै।" इतनी कहि, दमनक करटक कौं बुलाय ल्यायौ, औ राजा सेां मिलायौ। पुनि राजा ने इन दोऊअन कौं बागे पहिराय, पान दै, वा भय की शांत कौं बिदा कियौ। आगै डगर में जात करटक ने दमनक सेां कह्यौ कि, भाई! तुम बिन समुझे राजा कौ प्रसाद लियौ, सो भली न करी,

कहा जानें हम तें वा भय कौ निवारन ह्वै सकै कै नाहीं? कह्यौ है, "काहू की वस्तु बिन समुझै न लीजिये;" पर राजा कौ तौ प्रसाद बिशेष करि न लीजै; क्यौंकि, जौ कबहू काज न होय, तौ राजा क्रोध करै, अरु न जानिये कहा दुख देय? ऐसें हू कह्यौ है कि, "राजा की दया में लक्ष्मी बसतु है, अरु पराक्रम में जस, क्रोध में काल।" औ सब देवतानि कौ तेज भूपाल में है, तातें नर नरपति की आज्ञा मांहिं रहै तौ ही भलौ; क्यौंकि पृथ्वीपति मनुष रूप कोऊ बड़ौ देवता है। बहुरि दमनक कही, मित्र! तुम चुपके रहौ, या बात कौ कारन हम जान्यौ कि यह बरध के बोलवे कौ शब्द सुनिकै डर्‌यौ है। अरु बैल कौं तौ हम हू मारि सकतु हैं, सिंह कौं वह कहा करिहै? पुनि करटक कही, भाई! जौ ऐसी ही बात है तौ राजा सों कहिकै उन के मन कौ भय काहे न दूर कियौ? दमनक कही, हितू यह बात प्रथम ही नरपति तें कही होती, तौ हम तुमकौं अधिकार कैसें मिलतौ? कह्यौ है, "सेवक स्वामी कौं निचिंत कबहू न राखै; जौ राखै तौ दधि-करन बिलाव की भांति होय"। यह सुनि, करटक कही, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

अर्बुद परबत की कंदरा में एक महाबिक्रम नाम सिंह रहै। जब वह वहां सोवै, तब एक मूसा बिल तें निकरि, वाके केस काटै; जद वह जागै, तद बिल में भजि जाय। कह्यौ है, "छोटे शत्रु बड़ेनि तें न मरैं।" वा मूषक की

दुष्टता देखि, सिंह ने निज मन में विचास्यौ कि, याकौ समान कौ कोउ ल्याऊं तौ यह मास्यौ जाय, नातौ या के हाथ तें सोवन न पायहौं। यह बिचारि, गांव में जाय, एक दधिकरन नाम बिलाव कौं अति आदर सों ल्यायौ, अरु राख्यौ। वह हू वा कंदरा के द्वार पर बैठ्यौ रहै; अरु बिलाव के भय तें मूसा बिल सों बाहर न निकरै, सिंह सुखनींद सोवै। यातें मूसा के डर तें सिंह बिलाव कौ अति आदर करै। आगै, कितेक दिन पाछै एक दिन, दाव पाय वा मूसा कौं बिलाव ने मारि खायौ। जब सिंह ने मूषक कौ शब्द न सुन्यौ, तब उनि मन मांहिं बिचास्यौ कि, जाके कारन याहि ल्यायौ हो, सो काम तौ सिद्ध भयौ, अब याहि राखिवे तें कहा प्रयोजन? सिंह ने ऐसें बिचारि वाकौ अहार बंद कियौ; तब बिलाव वा ठौर तें भूख्यौ मरि मरि परायौ। यातें हौं कहतु हौं, कि ठाकुर कौं कबहू निचितौ न राखियै।

इतनौ कहि, दमनक करटक कौं एक रूख तरै ऊंची ठौर बैठाय, केतेक जंबुक वाकै निकट राखि, आप एकलौ संजीवक के पास जाय बोल्यौ, तू कहां तें आयौ है? जब उनि अपनी सब पूर्व अवस्था कही, तब इन कही, या बन कौ राजा सिंह है, तुम ह्यां कैसें रहिहौ? पुनि भयमान होय वृषभ कही, तुम काहू भांति मेरी सहायता करौ। बहुरि दमनक ने अपनी घां तें वाहि निर्भय करि कह्यौ कि, मेरौ बड़ौ भाई करटक राजा कौ मंत्री है, प्रथम

उन तें तोहि मिलाऊंगो, पाछै राजा तें हू भेट कराऊंगो। ऐसें कहि, दमनक ने वा बलध कौं करटक के समीप लैजाय, वाके पायन पाख्यौ। तब करटक ने बैल की पीठ ठोकिकै कह्यौ, अब तुम या बन मांहिं अभय चरतु फिरौ, अरु काहू भांति की चिंता निज मन में जिन करौ। ऐसें वाकौ भय मिटाय, साथ लै, राजपौर पर आय बैठे। कह्यौ है, "बल तें बुद्धि बड़ी।" देखौ! बल बिन बुद्धि सों गज बस करतु हैं। पुनि संजीवक सों करटक कही, अब तुम ह्यां बैठौ, हम राजा पै होय आवैं, तब तुम हू कौं लै जांयगे। इतनौ कहि, वे दोऊ सिंह पास गये, औ प्रनाम करि, कर जोरि, सनमुख ठाढ़े भये। तब राजा ने उनि तें अति मधुर बचन सों पूछ्यौ कि, जा कार्य के लये गये हे, वाकौ समाचार कहौ। तहां दमनक हाथ जोरि, नीचौ मूड़ करि, कहनि लाग्यौ, महाराज! हम वाहि देख्यौ, सो अति बलवंत है, पर हमारे समझायवे तें वह आप सों मिल्यौ चाहतु है, हम वाहि अब ही लै आवतु हैं; पै आप सावधान ह्वै बैठियै, वाके शब्द तें न डरियै, शब्द कौ कारन बिचारियै; जैसें शब्द कौ कारन बिचारि, दूती ने प्रभुता पाई। राजा बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तद दमनक कहतु है;

औपर्वत में ब्रह्मपुर नाम नगर; अरु वा पहाड़ की चोटी पै एक घंटाकरन नाम राक्षस रहै, सो वा नगर के निवासी सब जानैं; क्यौंकि, वाकौ शब्द सदा सुन्यौ करैं।

एक दिन, नगर में तें चोर घंटा चुराय, गिर पर लियै जातु हो; ताहि तहां वाघ ने मारि खायो, अरु वह घंटा बानर के हाथ आई। जब वह बजावै, तब नगरनिवासी जानैं कि, राक्षस डोलतु है। काहू दिन कोऊ वा मरे मनुष कौं देखि आयो, तिन सब तें कह्यो कि, अब घंटाकरन रिसायकै नर खानि लाग्यो, यह मैं स्वदृष्टि देखि आयो। वाकी बात सुनि, मारे भय के, नगर के सब लोग भजवे लागे। तब कराला नाम एक दूती ने वा घंटा के बजवे कौ कारन जानि, राजा सों जाय कह्यो कि, महाराज! मोहि कछु देउ तौ घंटाकरन कौं मारि आऊं। यह सुनि, राजा ने वाहि लाख रुपैया दिये, अरु वाके मारिवे कौं बिदा कियो। तद् वाने धन तौ निज मंदिर मांहिं राख्यो, अरु बहुत सी खैवे की सामा लै, बन कौ गैल गही। व्हां जाय, देखै तौ एक मरकट रूख पर बैठ्यो घंटा बजावतु है। वाहि देखि, याने एक ऊंचे पर सब सामा बिथराय दई। वह बंदरा देखतु ही वृक्ष तें कूदि व्हां आयो; पकवान मिठाई, फल मूल देखि, घंटा पटकि, खैवे कौं जौं उनि हाथ चलायो, त्यौं घंटा अलग भई। तब याने घंटा लै अपनी गैल गही, नगर में आय, वाने वह राजा के हाथ दई, अरु यह बात कही कि, महाराज! हौं वाहि मारि आई। यह सुनि, औ घंटा देखि, राजा ने वाकी बहुत प्रतिष्ठा करी, अरु नगर के लोगन हू वाहि पूज्यो।

तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! केवल शब्द ही तें न डरियै; प्रथम वाकौ कारन बिचारियै, पुनि उपाय करियै। यह तौ श्री शिव जू कौ बाहन है, औ तुम पार्वती के; यातें वह तिहारौ आश्रम जानि, निर्भय गाजतु है, तुम कौं वाकौ आगतास्वागता करि सेवा करनी जोग है; क्योंकि, आज वह तिहारौ पाहुनौ है, वाकौ सेवा तें ईश्वर पार्वती प्रसन्न हौंयगे। यह सुनि, दमनक तें सिंह बोल्यौ कि, तुम शिष्टाचार करि वाहि मोतें मिलाओ, वह तौ हमारौ भ्राता है। पुनि दमनक ने संजीवक बरध कौं पिंगल सिंह सेां मिलायौ। दोउअनि मिलि अधिक सुख पायौ। कछुक दिननि पाछै उन मांहिं अति प्रीति भई। आगै, एक दिन, सितकरन नाम सिंह राजा कौ भाई तहां आयौ; तब संजीवक ने यह टेरि सुनायौ कि, महाराज! आज तुमनि जो मृग मार्यौ हो, वाकौ मास कहां है? सिंह कह्यौ, भाई! करटक दमनक जानैं। पुनि संजीवक बोल्यौ कि, महाराज! तुम उन तें पूछौ तौ सही, है कै नाहीं? बहुरि सिंह उतर दियौ कि, हमारै यही रीति है, जो ल्यावैं, सो उठावैं। फेरि संजीवक बोल्यौ, महाराज! मंत्री कौं ऐसौ न बूझियै कि, जो आवै सो उठावै, कै राजा की आज्ञा बिन काहू कौं देइ; यह नीति नाहीं। कह्यौ है, "आपदा के अर्थ धन राखियै।" औ मंत्री ऐसौ चाहियै जो, राजा के धन कौ संग्रह करै, थोरौ उठावै, बहुत जोरै। राजा कौ भंडार प्रान समान है, सब

कोऊ धन के निमित्त राजसेवा करतु हैं; धनहीन भये घर की नारी हू न मानै, और की तौ कहा चली; या संसार में धन ही की प्रभुता है, जाके पास धन, सोई बड़ौ। ये प्रधान के दूषन हैं, अति खरचै, प्रजा की रक्षा न करै, अनीति अधर्म करि भंडार भरै। राजा के सनमुख झूठ बोलै, तौ अल्प दिननि में ही राज भ्रष्ट होय; क्योंकि, बिन सोचे बिचारे काज करे तें काज कबहू न रहै। संजीवक ने जब यह बात कही, तब सितकरन बोल्यौ, भाई! तैं इन स्यारन कौं अधिकारी कियौ, सो भलौ करी; पर हम प्राचीन लोगनि तें सुन्यौ है कि, ब्राह्मन, क्षची, संबंधी, उपकारी, औ मित्र, इनकौं अधिकार न सौंपिये; क्योंकि, ब्राह्मन धन खाय तौ राजा दंड न दे सकै; अरु क्षची जब बल पावै, तब राज दबाय लेय; पुनि संबंधी आज्ञा न मानै; उपकारी सब तुच्छ जानै; मित्र राजा सम आपकौं गनै; तातें इनकौं अधिकार कबहू न दीजिये। बहुरि ऐसें हू कह्यौ है कि, "चट प्रधान कौं न तोरिये, सहज सहज निचोरिये, जौं स्वान कौ चौर।" जद वाने याहि भरमायौ, तद याहू के मन मांहिं कपट छायौ। कहतु हैं "वेस्या काकौ स्त्री, औ राजा काकौ मीत?"

सांप सुसील दयाजुत नाहर काग पवित्र औ सांचौ जुआरी;
पावक सीतल पाहन कोमल रैन अमावस की उजियारी;
कायर धीर सती गनिका मतवारौ कहां मतवारौ अनारी;
मोतियराम सुजान सुनौं किन देखी सुनी नरनाह की यारी। (कवित्त)

पुनि राजा बोल्यौ कि, भ्राता! तुम सांच कहतु हौ,

ये दोऊ मेरौ कह्यौ नाहीं मानतु, औ मोहि दुख देतु हैं। बहुरि सितकरन कही, भाई! कह्यौ है कि, "अहंकार तें जस जाय, कुविसन तें ज्ञान, आलस्य तें धन, क्रिया बिन कुल, औ लोभ तें धर्म।" पुनि ऐसें हू कह्यौ है,

"आज्ञा भंग नरेंद्र की विप्रनि कौ अपमान;
भिन्न सेज नारीन कौं बिना शस्त्र बध जान"। (दोहा)

अरु नीति तौ यौं है कि "पुत्र हू कह्यौ न मानै, तौ राजा वा हू कौं दंड देय; पुनि चोर अरु लोभी प्रधान तें प्रजा की रक्षा करि, पुत्र की भांति पालै।" अरु सुनि भाई! आज मैं तेरौ अन्न खायौ है, तातें हौं तेरे हित को कहतु हौं; यह संजीवक बड़ौ साध है, शुभचिंतक, औ सुकृति की खान है; यातें अपनौं भलौ चाहौ तौ याहि अधिकारी करौ। यह बात राजा ने भाई की सुनि, संजीवक कौं अधिकारी कियौ, औ दमनक करटक तें अधिकार खोस लियौ। तब दमनक ने करटक तें कह्यौ, मित्र! अब कहा करिये? यह तौ हमारौ ई कियौ दोष है; जैसें चित्रलिखे कौं छूवत कंदर्पकेतु ने, औ मणि के लोभ तें महाजन ने, अरु अपनी करतूत तें दूती ने, दुख पायौ, तैसें हम हू अपने किये कौ फल पायौ। पुनि करटक बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहतु है;

कंचनपुर में बीर विक्रमादित्य नाम राजा हो। वाके सेवक एक नाऊ कौं मारनि लै चले; तहां कंदर्पकेतु सन्यासी अरु साहु ने वाहि देख्यौ; तब सन्यासी ने राजा

के चाकरनि सों कह्यौ कि, या नौआ कौ कछु अपराध नाहीं। सेवकनि कही, याकौ ब्यौरौ कहौ। पुनि सन्यासी बोल्यौ कि, प्रथम मेरौ दोष मोहि लाग्यौ, सो सुनौ। सिंहल-द्वीप कौ जंबुकेतु राजा, ताकौ मैं पुत्र हौं, अरु कंदर्पकेतु मेरौ नाम है। एक दिन एक ब्योपारी मेरे नगर में आयौ, अरु उत्तम पदारथ उनि मोहि आनि दिखायौ। जब मैं ने वासों पूछ्यौ कि, तैंने यह कहां तें पायौ? तब उनि प्रसंग चलायौ कि, महाराज! हम ब्यौपारी लोग समुद्र के तीर बनज कों जातु हैं, तहां बरसवें दिन सागर में तें एक वृक्ष निकरतु है, तापै अति सुंदरि नवजोबना रतनजटित आभूषन पहरैं, एक नायिका बैठी बैठी आछे आछे पदारथ भेज भेज देति है, अरु महाजन ब्यौपारी सब लेत हैं, औ देस देस बेचत फिरत हैं। इतनी बात जब वाने मोसों कही, तब मैं वाहि साथ लै समुद्र तीर गयौ, अरु वहां जाय, वाहि देखत प्रमान समुद्र में कूद्यौ। कूदत ही मोहि एक कंचन कौ मंदिर दृष्ट आयौ; तद हौं ह्वै उठि वा मांहिं धायौ। मोकौं देखि, वाने एक दूती पठाई, सो चली चली मेरे ढिग आई; मैं ने वासों पूछ्यौ, यह को है? उनि कही, यह कंदर्पकेल बिद्याधरनि कौ राजा की पुत्री है; अरु रतन-मंजरी याकौ नाम है। यह बात सुनि, मैं ने आगे बढ़ि, वाके निकट जाय, अधिक सुख पायौ। तद उनि कह्यौ, स्वामी स्वइच्छा तें तुम यहां रहौ; पर यह चित्रलिखी बिद्या कबहू मत छूइयौ। आगे गंधर्वविवाह करि, हौं वहां

कितेक दिन रह्यौ। एक दिन वाकौ कह्यौ न मानि, ज्यौं वह विद्या मैं छुई, त्यौं उनि मोहि एक लात ऐसी दई कि, हौं मगध देस में आनि पर्‌यौ। ता दिना तें वा ही के वियोग में सन्यासी भयौ डोलतु हौं; आज तिहारी नगरी में आय, रात हौं अहीर के घर मांहिं रह्यौ, सु वहां देख्यौ कि, वह घोस अपनी घुसायन कौं जार के साथ बतराति देखि, क्रोध करि, थांभ सों बांधि, मतवारौ होय, सोय रह्यौ। अरु जब आधी रात बाजी, तब एक नायन वाके पास जाय बोली कि, सुन री! तेरे बिरह तें वह बापरौ मरतु है, वाकौ दया बिचारि, हौं तोपै आई हौं, अब तू बिलंब जिन करै, मोहि या थांभ तें बांधि जा, अरु वाकौ भलौ मनाय आ। वाकी बात सुनि, उनि वैसें ही करी। तब अहीर जाग्यौ, औ वासों कहनि लाग्यौ कि, अब तू जार पास क्यौं न जाय? जद वह न बोली, तद उनि वाकौ नाक उतार लई, अरु मद कौ माती पुनि सोय रह्यौ। इतेक में घुसायन ने आय नायन सों पूछी कि, अरी! कुशल है? उनि कही, बीर! तू तौ कुशल तें आई, पर मैं ने ह्यां अपनौ नाक गंवाई। यह सुनि, ग्वालनि आप बंध गई, अरु वाने नायन कौं बिदा दई। जब नायन अपने घर आई, तब फेर घोस जाग्यौ, औ जो कछु वाके मुख आयौ, सो कहनि लाग्यौ। वा समें अहीरी बोली, तू मेरौ धनी है, मार, बांध, जो चाहै सो कर; और ऐसौ को है, जो मोहि कलंक लगावै? मेरौ कर्म औ धर्म अष्ट

लोकपाल, चांद, सूरज, धरती, आकास, अग्नि, जल, पवन, राचि, दिन, दोऊ संध्या, जानति हैं; अरु प्रानी जो कर्म करतु है, ताकौ उन कौं गम्य है; अब हौं अपने धर्म सत सेां कहति हौं कि, हे सूर्य देवता! जौ मैं अपने सत धर्म तें हौं, तौ मेरी नासिका कटी न जनाइयौ। यह बात सुनि, अहीर वाके ढिग जाय, देखै तौ नाक ज्यौं की त्यौं बनी है। देखत प्रमान वह वाके पायन पै गिरयौ, औ बोल्यौ कि, तू मेरौ अपराध क्षमा कर, मैं तोहि बिन अपराध सतायौ। पुनि वह वाके कंठ लागि बोली कि, स्वामी! यामें तिहारौ कछु दोष नाहीं, यह मेरे ही कर्म कौ फल है। आगै, नायन निज घर जाय, नाक हाथ मांहिं लिये बैठी ही, कि भोर भये वाके भर्त्तार ने पेटौ मांगौ। इन एक छुरा वाके हाथ दियौ। उनि क्रोध करि याकौ ओर फैंक्यौ; तद यह पुकारी कि, हाय! इन निर्दई ने मेरी नाक पै छुरा मार्‌यौ। याकी पुकार सुनि, तुम वाहि बिन सोच बिचार किये पकरि ल्याये, औ मारन कौं लिये जातु हौ; पर याकौ कछु अपराध नाहीं। अरु साध महाजन मेरे संग है, ताकौ बात सुनौ कि, यह बारह बरस बिदेस कमाय, धन लियै, अपने घर कौं जातु हो, सो या नगर में आय, रात वेस्या के घर रह्यौ। वा सामान्या ने अपने द्वार पर एक काठ कौ बैताल बनाय, कल लगाय, वाके मूंड पर एक रत्न जड़ि राख्यौ हो। यह साध लोभ कौ मार्‌यौ आधी रात कौं उठि, बैताल के

निकट जाय, हाथ बढ़ाय, ज्यौंही रत्न लयौ चाहै, त्यौंहीं वाकौ कल छूटि, याके दोऊ कर बंधे। कल छूटवे कौ शब्द पाय, वह बारबिलासिनी याके ढिग आय बोली कि तू मलयागिर तें मुक्तानि की जौ माला ल्यायौ है, सो मोहि दै; नातौ भोर तोहि कोटवार के ह्यां जानौ होयगौ, अरु व्हां तें जीवत न फिरैगौ। इतनी बात यह वाकौ सुनि, भय खाय, अपनौ सब धन वाहि दै, मेरे संग आय लाग्यौ है। यह बात सन्यासी तें सुनि, राजा के सेवकनि न्याय बिचार्यौ, औ वाहि छांड़ि, वेस्या तें साध कौ धन दिवाय, यथायोग्य दंड दै, सब कौं छांड़ि दियौ। तातें हौं कहतु हौं कि, ज्यौं उननि अपने दोष तें दुख पायौ, तैसें हम हू अपने किये कौ फल पायौ; पर भाई करटक! अब जो भई सो भई, परंतु तुम जिन सोच करौ। सुनौ! जैसें मैं ने इन तें प्रीति कराई, तैसें ही अब बैर करवायहौं। कह्यौ है, "जे चतुर हैं, ते झूठौ बात कौं हू सांचौ करि दिखावैं;" जैसें एक अहीरी ने झूठ कौं सांच करि, स्वामी के देखतु जार कौं घर तें निकार्यौ। करटक कही, यह कैसी कथा है? पुनि दमनक कहतु है;

द्वारिका नगरी में एक घोस की नारि बिभिचारिनी ही; सु कोटवार औ वाके मींड़ा तें रहै। एक दिन राचि की बेला, कोटवार के छोहरा तें भोग करि रही ही; ता मांहिं कोटवार आय, बार पर पुकार्यौ; तब याने वाके ढोटा कौं कोठी में लुकाय, द्वार खोल दियौ, अरु ताहू

कौ भलौ मनायौ। इतेक में वाकौ धनी आयौ; तद इन कोटवार कौं यह सिखायौ कि, हौं तौ बार उघारनि जाति हौं, पर तुम लौठिया कांधे पै धरि, क्रोध करि, घर तें निकरौ, ता पाछै हौं बात बनाय लैउंगी। उनि वैसें ही करी। तब अहीर ने घर में आय, अपनी स्त्री तें कह्यौ कि, आज कोटवार हमारे घर तें रिसायकै क्यौं गयौ? अहीरी बोली, कोटवार हमारे घर तें क्यौं रिसायगौ? वांकौं पूत वातें रिसाय, मेरे घर मांहिं आय छिप्यौ है, सु वह अपने मौंड़ा कों मोसें मांगतु हो, इतेक मांहिं तुम जो आये, सो तुम्हें देखि चल्यौ गयौ। यह कहि, घुसायन ने कोटवार के पुच कौं कोठी तें निकारि, कह्यौ कि, तू कछू भय मत करै, मैं तोहि बाहर निकारि देति हौं, जित तेरे सींग समाय, तित चल्यौ जा। ऐसें कहि, वाहि घर तें निकारि दियौ। कह्यौ है,

"पुरुषनि तें दुगनी क्षुधा बुद्धि चौगुनी होय;
काम आठ साहस छःगुन या बिधि तिय सब कोय"। (दोहा)

तातें हौं कहतु हौं, काम परै जाकी बुद्धि फुरै, सोई पंडित। बहुरि करटक बोल्यौ, भाई! इन दोऊन में तौ अति प्रीति है, तुम कैसें बिगार करवायहौ? फेरि दमनक बोल्यौ कि, मित्र! जो काज उपाय तें होय, सो बल तें न होय; जैसें एक सांप कौं काहू काग ने मरवायौ, तैसें हौं हू याहि मरवाउंगौ। करटक कही, यह कैसी कथा है? तहां दमनक कहतु है;

उत्तर दिसा में बिद्याधर नाम पर्वत, वहां एक तरु प काग कागली रहैं, अरु वाकी जर में एक सांप हु। जब कागली ने अंडा दये, तब सर्प ने रूख पर चढ़ि खाय लिये, अरु अंडानि के लालच सेां नित वृक्ष पै चढ़ि, वाके खोंधा में जाय जाय बैठै। पुनि कागली गर्भ सेां भई, तौ उनि वायस तें कही, रे स्वामी! या तरवर कौं तजि अनत जाय बसियै तौ भलौ; क्योंकि कह्यौ है, "जाकी नारी दुष्ट, मित्र सठ, सेवक बादी, घर में नाग कौ बास, ताकौ मरन निस्संदेह होय;" या सेां ह्यां कौ रहनौ उचित नाहीं। काग कही, हे प्रिये! अब जिन डरै, क्योंकि मैं ने या नाग कौ अधिक अपराध सह्यौ, पर अब न सहैांगैा। कागली बोली, तुम याकैा कहा करौगे? काग कही, प्यारी! जो काम बुद्धि तें होय, सो बल तें न होय; जैसें एक ससा ने बुद्धि करि, महाबली सिंह कौ मार्‍यौ, तैसें हैां हु याहि बिन मारे न छांड़िहैां। कागली बोली, यह कैसी कथा है? तहां काग कहतु है;

मंदरगिरि पै दुर्दंत नाम एक सिंह हो; सेा बहुत जीव जंतु मार्‍यौ करै। एक दिन बन के सब जीवनि मिल बिचार करि, आपस में कह्यौ कि, यह सिंह नित आय एक जंतु खातु है, औ अनेक मारतु हैं; तातें याकै पास चलिकै एक जंतु नित दैनैां कहि आवैं, अरु बारी बांधि पहुंचावैं, तौ भलौ। ऐसें वे आपस में बतराय, सिंह के पास गये, औ कर जोरि, प्रनाम करि, मर्याद सेां याके सनमुख

ठाढ़े भये। इन्हें देखि, सिंह बोल्यौ, तुम कहा मांगतु हौ? इननि कही, स्वामी! तुम अहार के लयै नित जातु हौ, अधिक मारतु हौ, अल्प खातु हौ, यातें हमारी यह प्रार्थना है कि, हम तिहारे खैवे कौं एक जंतु नित ह्यां हीं पहुंचाय जैहैं, तुम परिश्रम जिन कियौ करौ। उनि कही, अति उत्तम। ऐसें वे सिंह तें बचन करि आये। आगै, जाकौ बारौ आवै सो जाय वह खा जाय। ऐसें कितेक दिन पाछै, एक बूढ़े ससा कौ बारौ आई; तब वाने अपने जी में बिचार्यौ कि, मेरौ सरीर छोटौ है, यासें वाकौ पेट न भरैगौ, तद हमारे और भाईयन कौं खायगौ; तातें हमारौ कुल तौ एक दोइ वार में हीं पूरौ करैगौ; यातें अपने जीवतु ही याकौ नास करौं तौ भलौ। यह बिचारि, अपने स्थान तें उठि, हरवै हरवै चलि, वह सिंह के पास आयौ। तब वह याहि देखि, क्रोध करि बोल्यौ, अरे! तू अबेरौ क्यौं आयौ? पुनि ससा ने कर जोरि, यह बचन सुनायौ, स्वामी! मेरौ कछु दोष नाहीं, हौं चल्यौ आवतु हो तुम पाहीं, गैल मांहिं दूजौ सिंह मिलौ; तिन मोसें कह्यौ, रे! तू कित चल्यौ जातु है मैं कही कि, हौं अपने स्वामी पास जातु हौं। उनि कह्यौ, या बन कौ स्वामी तौ मैं हौं, और स्वामी ह्यां कहां तें आयौ? पुनि मैं कह्यौ कि, आज छुराय तौ तुम कौं ह्यां कबहू न देख्यौ हो। इतनौ बात के सुनत ही, वाने क्रोध करि, मोहि बैठाय राख्यौ; तद मैं वासें कह्यौ कि, यह

सेवक कौ धर्म नाहीं जु, स्वामी के काज में बिलंब करै; तुम मोहि रोक्यौ है, सु मेरौ ठाकुर न जानैगौ; बरन मेरौ कह्यौ झूठ मानैगौ, अरु निज मन में कहैगौ कि, यह घर जाय सोय रह्यौ, औ मोसों आय मिथ्या भाषतु है; यातें तुम मोहि जिन अटकाओ, हौं अपने स्वामी पास होय आऊं, वह मेरी बाट जोवतु होयगौ। तुम्हें यह बचन दिये जातु हौं कि, मैं स्वामी कौं कहि, उलटे पायन बगदि आवतु हौं। या बात के कहे तें उनि बचन बंध करि, मोहि बिदा कियौ, तब मैं तिहारे पास आयौ; स्वामी! यामें मेरौ कहा दोष है? इतनी बात सुनि, सिंह बोल्यौ, अरे! मेरे बन में और सिंह कहां तें आयौ? तू मोहि वाहि अब हीं दिखाव, मैं वाकौं बिन मारै आज भोजन न करिहौं। ऐसें बातें करि, वे दोऊ व्हां तें चले, आगै आगै ससा, पाछै पाछै सिंह। जब चल तु चलतु बन में कितनी एक दूर पहुंचे, तब ससा एक कूआ के ढिग जाय ठाढ़ौ भयौ। तहां सिंह बोल्यौ, अरे! वह तोहि रोकनिवारौ कहां है? ससा ने उतर दियौ कि, स्वामी! वह तिहारे भय तें या कूप मांहिं पैठ्यौ है। इतनी सुनि, सिंह ने क्रोध करि, कूआ के पनघटा पर जाय, ज्यौं जल मांहिं देख्यौ, त्यौं वाहि वाकौ ही प्रतिबिंब दृष्ट आयौ। परछांई देखत प्रमान वह जल में कूद्यौ, औ डूब मर्‌यौ। तब ससा ने अपने स्थान पर आय, सब बनबासियन कौं सुनायौ कि, हौं सिंह कौं मारि आयौ; मैं ने तिहारौ

जन्म जन्म को दुख दूर कियो। यह सुनि, सब बनवासियन वाहि आशीर्बाद दियो।

इतनी कथा कथ, काग ने कागली तें कह्यो कि, हे प्रिये! तू देखो, जो काम बुद्धि तें भयो, सो बल तें कबहू न होतो। पुनि कागली बोली, स्वामी! जामें भलो होय सो उपाय करो। तद् वायस व्हां तें उड़ि, आगे जाय देखै तो, एक राजपुच काहू सरोवर के तीर पै बस्त्र शस्त्र आभूषन राखि, वा में स्नान करतु है। ताको मोतिन की माल यह लै ऊड्यो, अरु अपने खोंदा पै जाय, वह माल सांप के कंठ में डारि, अलग होय बैठ्यो। याके पाछै लागे वा राजा के सेवक हू देखतु चले आये हे। तिननि जब काग की चोंच में हार न देख्यो, तब विन में तें एक रूख पर चढ़्यो; ता ने देख्यो कि, खोडर में कारो नाग वह माला पहरै बैठ्यो है। यह देखि, राजा के वा किंकर ने निज मन मांहिं बिचार्यो कि, माला तो देखी, पर अब कछु बिन उपाय हाथ न ऐहै, यासों कछु यत्न कीजै। इतनों कहि, वाने सर्प कों तीरनि तें मारि, माला राजपुच कों ल्याय दई। तातें हों कहतु हों, भाई! उपाय किये कहा न होय!

बहुरि करटक कही, भाई! तुम जो जानो सो करो। आगे, दमनक ने व्हां तें उठि, पिंगल सिंह के पास जाय, कह्यो कि, महाराज! यद्यपि तिहारे पास हमारो कछु काम नाहीं; पर समय असमय आप के निकट हम कों

आवनौ उचित है। कह्यौ है कि, "जब राजा कुमारग में चलै, तब सेवक कौ धर्म है जु, राजा कौं चिताय देइ; औ न जतावै, तौ सेवक कौ धर्म जाय। आगै राजा मानौ कै जिन मानौ; पर वाकौ कहनौ जोग है।" महाराज! राजा भोग करिवे कौं है, औ सेवक सेवा करनि कौं। पुनि कह्यौ है, "जौ राजा कौ राज बिगरै, तौ मंत्री कौ दोष ठहरै, राजा कौं कोऊ कछु न कहै;" यातें प्रधान कौं चाहियै, अपने स्वामी के काज कष्ट पाय, धन तन देइ, पर राज न जानि देइ; अरु जो प्रधान राजकाज बिगरत देखि, राजा सों न कहै, सो कैसौ सेवक? औ जो राजा समय असमय किंकर कौ बात न सुनै, सो कैसौ ठाकुर? पिंगल बोल्यौ, तुम कहा कह्यौ चाहतु हौ, सो कहौ। दमनक कहनि लाग्यौ, पृथ्वीनाथ! यह संजीवक तिहारौ निंदा करतु हो, अरु कहतु हो कि, अब यह राजा प्रतापहीन भयौ, प्रजा कौ रक्षा करौ चाहियै। या बात में, महाराज! मोहि ऐसौ समझ पर्‌यौ कि, अब वह आप राज कियौ चाहतु है। यह बात सुनि. राजा चुप ह्वै रह्यौ। पुनि दमनक बोल्यौ, धर्मावतार! तुम ऐसौ प्रचंड मंत्री कियौ कि, जो राजकाज कौ मतौ तुम तें न पूछि, एकाएकौ आप ही राज करनि लाग्यौ, सो भलौ नाहीं। जैसें चानक मंत्री ने राजा नंदक कौं मार्‌यौ, कहूं वैसें न होय! राजा पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? तहां दमनक कहतु है।

काहू देस में नंदक नाम राजा, वाकौ चानक नाम मंची। सु राजा वा मंची कौं अपने राजकाज कौ भार दै, आप निश्चिंत होय, आनंद करनि लाग्यौ, अरु मंची राज। एक दिन वह राजा प्रधान कौं लार लै अहेर कौं गयौ; बन में जाय, एक मृग देख्यौ; वाके पाछै विननि घोरा दपटे, तद और लोग हू झपटे; पर इन के अश्वन कौ समान काहू कौ अश्व न पहुंच्यौ। पुनि सब लोग अटपटाय पाछै रहे, औ वे दोऊ आगै गये। जब हिरन चपरि, उन के हाथ तें बन में पैठ्यौ, तब राजा हू घाम प्यास कौ मान्यौ, घोरा तें उतरि, एक रूख तरै बैठ्यौ। निदान वह महीपति अपनौ हय प्रधान कौं थंभाय, तृषा कौं मान्यौ, व्हां तें जल खोजतौ चल्यौ। कितेक दूर जाय देखै तौ एक वापी निर्मल जल भरी, वाहि दृष्ट परी। वह जोवतु प्रमान प्रसन्न ह्वै, वामें नीर पीवन उतर्‌यौ; जल पी फिरनि लाग्यौ, तौ वाने एक पाथर में यह लिख्यौ बांच्यौ कि, राजा औ मंची तेज अरु बल में समान होंय, तौ द्वै में तें एक कौं लक्ष्मी त्यागै। यह बांच, वह पाहन पै कादौ लपेटि, मंची के ढिग आयौ। पुनि मंची हू जल पीवन वा बावरी में गयौ, औ उनि देख्यौ, अरु कह्यौ कि, यह तौ कोऊ अब ही पाहन पै गार लथेर गयौ है। बहुरि उनि पाथर धोय, लिख्यौ पढ़ि, निज मन में कह्यौ कि, राजा ने मो सों दुराव कियौ। ऐसें समझि, पानी पी, मंची राजा के पास आयौ। राजा सोयौ, तब मंची ने हन्यौ।

यातें महाराज! हौं तुम सों कहतु हौं कि, जो बलवान प्रधान होय, सो आप ही कौं राजा करि मानै; अरु जौ राजा एक ही मंत्री कौं अधिकार सौंपै, तौ वह गर्व करै; औ गर्व तें अज्ञान होय, अज्ञान भये वाहि धर्म अधर्म कौ बिचार न रहै। कह्यौ है, "बिष मिल्यौ अन्न, दियौ दान, अरु दुष्ट मंत्री, इन कौं निकट कबहू न राखियै।" महाराज! जो सेवक कौ धर्म हो, सो मैं तुम सों कहि सुनायौ, आगे आप की इच्छा मांहिं आवै सो करौ। संसार में ऐसे लोग थोरे हैं, जिन कौं राज औ धन की लालसा नाहीं; तातें मैं तुम सों अब स्पष्ट कहि देतु हौं कि, वह तिहारौ राज लियौ चाहतु है, आगे तुम जानौ। सिंह बोल्यौ, संजीवक मेरौ बड़ौ मित्र है, वह मेरौ बुरौ कबहू न चीतैगौ; क्योंकि, जो प्रिय है, सो अप्रिय न होय। कह्यौ है, "अग्नि घर जरावै, तौ हू अग्नि बिन न सरै।" बहुरि दमनक कही कि, महाराज! कोऊ कितेक करौ, पर दुरजन औ गंवार अपनौ जातीय सुभाव न छांड़ै; ज्यौं कूकरा की पूंछ तेल मसल सेंकियै, तऊ टेढ़ी की टेढ़ी रहै; त्यौं नीच कौ सनमान करियै, तौ हू भलौ न मानै; अरु नीम कौं मधु दै सींचियैं, पर वाकौं फल मीठौ न होय। कह्यौ है, "प्रीतम सो, जो आपदा निवारै; कर्म वह, जातें अपजस न होय; स्त्री अरु सेवक सो, जो आज्ञाकारी रहै; बुद्धिवान वह, जो गर्व न करै; ज्ञानी सो, जो तृष्णा न राखै; पुरुष वह,

जो जितेंद्री होय; अरु महाराज! मंची वह, जो हितकारी होय।" संजीवक तिहारौ सुखदेवा नाहीं, यह दुख कौ मूल है, याकौ शीघ्र ही नास करौ। कह्यौ है, "जो राजा धनांध कामांध होय, अपनौ भलौ बुरौ न जानै, सो इच्छामातौ रहै; अरु जब अहंकार तें दुख पावै, तब मंची कौं दोष लगावै।" या बात के सुनवे तें, सिंह ने जी में बिचार्‌यौ कि, बिन समझे बूझे काहू कौं दंड देनौ उचित नाहीं। पुनि दमनक कही, पृथ्वीनाथ! संजीवक आज ही तिहारे मारिवे के उद्यम में लाग्यौ है, तुम वाहि बुलावौ, अरु भेद दुरावौ। कह्यौ है, "मंच औ बीज गुप्त राखिये; जौ गुप्त न राखिये, तौ वाकौ फल न होय। अरु दुष्ट का यह सुभाव है कि, पहिले मौठी मौठी बातें कहि, मन धन हाथ कर लेइ, पाछै दुष्टता करि, वाकौ सर्वसु खोय देइ; जैसें शकुन ने दुर्योधन कौं कपट सिखाय, महाभारत करवायौ। पिंगल कही, वह हमारौ कहा करिहै? बहुरि दमनक बोल्यौ कि, महाराज! तुम यह जिन जानौ कि, हम बलवान हैं। कह्यौ है, "समय पाय छोटौ हू बड़ौ काज करै;" जैसें एक टिटोर ने समुद्र कौं महाव्याकुल कियौ। राजा पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? तब दमनक कहवे लाग्यौ;

समुद्र के तीर एक टिटोर औ टिटीहरौ रहैं। जब टिटीहरौ गर्भ सों भई, तब वाने अपने स्वामी सों कह्यौ कि, रे स्वामी! मोहि अंडा राखिवे कौं ठौर बताव। उनि

कही, यह तौ नीकी ठौर है। पुनि टिटौहरी ने कह्यौ, ह्यां तौ समुद्र कौ तुंग तरंग आवति है, वह हमें दुख दैहै। टिटोर कही, जौ यह हम कौं दुख दैहै, तौ हम ह्वै याकौ उपाय करिहैं। बहुरि टिटौहरी हंसिकै बोली, कहां तुम, औ कहां समुद्र? यासों प्रथम ही बिचार करि काज करौ, तौ पाछै दुख न होय। पुनि टिटोर कह्यौ, तुम निचिंताई सों अंडा धरौ, फेर हम समझ लैहैं। यह बात सुनि, वाने तहां अंडा दये, अरु समुद्र ह्वै वाकौ सामर्थ देखिवे के लये लहरि सों अंडा बहाय लै गयौ। तद टिटौहरी बोली, रे स्वामी! अंडा तौ सागर बहाय लै गयौ, अब कहा करैगौ सो कर। टिटोर कही, हे प्रिये! तू कछु चिंता जिन करै, हौं अबही लै आवतु हौं। इतनौ कहि, वह सब पंछियन कौं साथ लै, गरुड़ के पास गयौ; अरु गरुड़ ने श्रीनारायन सों जाय कह्यौ। श्रीनारायन जू ने समुद्र कौं दंड दै, आज्ञा करी; बिन अंडा पाछे दये; तब वह सब पक्षी समेत अंडा लै अपने घर आयौ। तातें. महाराज! हौं कहतु हौं कि, बिन काम परे काहू की सामर्थ जानौ न जाय। बहुरि राजा कही, हम कैसें जानैं कि वह हम तें लरिवे कौं आवतु है? दमनक बोल्यौ, महाराज! वाकौं तौ सींग कौ बल है, जब सींग साम्हने करै, तब जानियौ, अरु जो तुम तें हो सकै सो करियौ।

इतनी बात कहि, व्हां तें उठि, दमनक संजीवक बरध

के निकट गयौ, औ मुख सुखाय वाके सनमुख ठाढ़ौ भयौ। तद उनि यातें कुशल पूछी। इन ऊतर दियै मिच! सेवक कौं काहे कौ कुशल? क्योंकि, वाकौ तौ मन राचि दिन चिंता ही में रहतु है, अरु विशेष राजा कौ सेवक तौ सदा सर्वदा भयमान रहतु है। कह्यौ है, "द्रव्य पाय काने गर्व न कियौ? संसार में आय काने आपदा न भुगती? काकौ मन स्त्री के बस न भयौ? काल के हाथ को न पस्यौ? राजा काकौ मिच भयौ? वेस्या काकौ स्त्री भई? बैरी के फंद को न पस्यौ?" जब दमनक ने ऐसी ऐसी उदासी लिये बातें कहीं, तब संजीवक बोल्यौ कि, मिच! तुम पर ऐसी कहा गाढ़ परी, जो ऐसे उदास बचन कहतु हौ? तुम मो सों तौ कहौ। दमनक कही, हितू! मैं बड़ौ अभागी हौं, जैसें कोऊ समुद्र मांहिं बूढ़तु सांप कौं पाय न पकरि सकै न छांड़ि सकै, तैसें हौं हू। एक बात है, ताहि न कहि सकौं, न कहे बिन रह सकौं; क्योंकि, कहौं तौ राजा रिसाय, औ न कहौं तौ मेरौ धर्म जाय; तातें दुखसमुद्र में पस्यौ हौं। संजीवक बोल्यौ, मिच! जो तिहारे मन में है सो कहौ। इन कही, भाई! हौं कहतु हौं, यह बात अप्रगट राखियौ, अरु जो तिहारी बुद्धि में आवै सो कीजौ; क्योंकि, तुम ह्यां हमारी बांह तें आये, यातें अपजस सों डरि, अपनौ परलोक संवारवे कौं तुम्हें सावधान कियै देतु हौं, तुम चौकस रहियौ। राजा की आज तुम पर कुदृष्टि है, उननि मो सों कह्यौ

कि, आज संजीवक कौं मारि, सकल परिवार कौं तृप्ति करिहौं। यह बात सुनि, संजीवक ने अति दुख पायौ। तद दमनक बोल्यौ कि, प्रीतम! तुम दुख जिन करौ, अब जो बुद्धि में आवै सो करौ। बहुरि संजीवक कह्यौ कि, यह काहू ने सोंच कह्यौ है जो, "कृपन कै धन होय, मेह ऊसर में बरसै, सुंदर स्त्री नीच सों रति करै, राजा कुपाच कौं बढ़ावै।" इतनी कहि, उनि निज मन में बिचार्यौ कि, यह आप सों कहतु है, कै राजा ने ऐसौ बिचार्यौ है? यौं सोचि, पुनि मन ही मन कहनि लाग्यौ कि, उज्जल के संग मलीन मलीनता करि सोभा न पावै; जौं काजर तें नेच सोभा पावैं, पर काजर सोभा न पावै। तातें याकौ कहा सामर्थ है जो यह आप तें कहै? उन हीं कह्यौ होयगौ, मैं तौ सावधानी सों सेवा करतु हौं। राजा ने ऐसौ मेरौ कहा अपराध देख्यौ जो मन मैलौ कियौ? पुनि बूझ्यौ कि, या ह्व में अचरज नाहीं, क्यौंकि, जैसें कौऊ देवता कौ अति सेवा करै, अरु वह वाहि थोरे ही दोष में भ्रष्ट करि डारै; तैसें राजा ह्व नैक दोष में मारै; अब याकौ कछु उपाय नाहीं। ऐसें संजीवक ने अपने मन मांहिं समझि बूझि, दमनक तें कही, भाई! मैं ने राजा कौ ऐसौ कहा काम बिगार्यौ है, जो उनि ऐसौ बिचारी? अब हौं वाकौ सेवा न करौंगो; क्यौंकि, राजसेवा करनौ महाकठिन है; जो भलौ काम करै, बुरौ मानै, ताकौ सेवा करनौ जोग नाहीं; अरु राजा

की प्रीति और सौं नाहीं रहति। कह्यौ है, "असाध कौ उपकार करनौ, औ मूर्ख कौं उपदेस देनौ, वृथा है।" पुनि ज्यौं चंदन में सर्प, पानी में सिवार, आप तें आप आवति है, त्यौं सुख में दुख हू आय घटतु है। पुनि दमनक बोल्यौ, मित्र! दुष्टजन प्रथम दूर तें आवतु देखि, जो आदर करि बैठाय, हित सेां प्रिय वचन कहै, सो न जानियै कि वह पाछै कहा दुष्टता करै! कहतु हैं, "समुद्र तरिवे कौं जहाज़, अंधकार कौं दीपक, गरमी कौं बीजना, माते गज कौं आंकुस, ऐसे बिधाता ने सब के उपाय बनाये हैं; पर दुष्टजन के मन कौ कछु यत्न न करि सक्यौ।" बहुरि संजीवक कही, भाई! हौं धान पानी कौं खानिहारौ होय, याके बस क्यौं रहौं? कह्यौ है, "राजा के चित में मित्रभेद पर्‌यौ मिटतु नाहीं! ज्यौं स्फटिक कौ पाच टूटि फेरि न जुरै, त्यौं नरपति कौ मन हू उचटि फेरि न मिलै।" कहतु हैं, "राजा कौ क्रोध बज्र तुल्य है; पर एक समय बज्र सेां बचै, पै भूपाल के क्रोध सेां कबहू न बचै," तातें अब दीन होय मार खानौ नीकौ नाहीं; बरन, संग्राम करि मरनौ भलौ; क्यौंकि, सूरातन में दोय बात, जीतै तौ सुख भोगवै, औ मरै तौ मुक्ति पावै। यासेां या समय युद्ध करनौ ही उचित है। फेरि दमनक बोल्यौ, अहो मित्र! तुम तें हौं कहै देतु हौं कि, जब वह कान पूंछ उठाय मुख पसारै, ता बेर तुम तें जो पराक्रम बनि आवै सो कीजौ, वामें काहू भांति कसर जिन कीजौ। कह्यौ है, "बलवंत होय अपनौ बल

न प्रकासै, तौ निरादर पावै; जैसें तेजहीन अग्नि कौं सब कोऊ उठावै, तैसें निबल मनुष कौं सब सतावैं।" इतनौ कहि, दमनक बोल्यौ, भाई! अब हौ यह बात मन में राखौ; काम परे बूझि जायगी। ऐसें कहि, दमनक संजीवक सेां बिदा होय, करटक के ढिग गयौ। तब उनि पूछ्यौ, हितू! तू कहा करि आयौ? इन कह्यौ मैं दोउअन मांहि बैर कराय आयौ। पुनि करटक कह्यौ यामें संदेह नाहीं। कह्यौ है, "दुष्टजन कहा न करि सकै? क्षमा तें को न पंडित कहावै? पुनि कैसौ ह्र बुद्धिवान होय, पर असाध की संगति तें बिगरै ही बिगरै," क्योंकि, दुष्ट के संग तें जेा न होय सो थोरौ; जैसें अग्नि, जहां रहै तहां ई जरावै। ऐसें दोऊ बतराये। पुनि दमनक पिंगल के निकट गयौ, कर जेार सनमुख ठाढ़ौ भयौ, अरु बोल्यौ, महाराज! सावधान होय बैठौ, पशु युद्ध करवे कौं आवतु है। ज्यौं हौं सिंह संभल बैठ्यौ, त्यौं हौं बिजार क्रोध भर्‍यौ वा बन में पैठ्यौ। पुनि जिम वाहि देखि सिंह उठि धायौ, तिम या ने ह्र पहुंचकै सींग चलायौ, अरु दोऊ पशु यथाशक्ति लरे; निदान सिंह के हाथ तें बरध मार्‍यौ पर्‍यौ। तब सिंह पछतानि लाग्यौ कि, हाय! मैं यह कहा कियौ जेा राज औ धन कौ लेाभ करि, बापरे तृन अन्न खानिवारे बिजार कौं मारि, महापाप सिर लियौ! या संसार में धन के भागी अधिक हैं; पर पाप बंटावनिहारौ कोऊ नाहीं। कह्यौ है, "सिंह राजा सेा, जेा गजराज कौं

पछारै।" पुनि दमनक बोल्यौ, महाराज! यह कहां कौ रीति है जु तुम शत्रु कौं मारि पछतातु हौ? राजधर्म में कह्यौ है कि, "पिता, भ्राता, पुत्र, मित्र, जो राज लैन कौ इच्छा करै, ताहि नरपति बिन मारै न रहै; जौ बड़ो धर्मी होय, तौ हू दया न करै।" पुनि, ज्यौं सन्यासी कौं क्षमा भूषन है, त्यौं हौं राजा कौं दूषन। बहुरि नीति-शास्त्र में कह्यौ है, "दयावंत राजा, सर्वभक्षी ब्राह्मन, कामातुर स्त्री, सेवक शत्रु, दुष्ट मित्र, असावधान अधिकारी, औ गुननाशक आदि जितने हैं, तिन्हें तत्काल त्यागिये।" पुनि ऐसें हू कह्यौ है कि, "जैसी वेस्या, तैसौ राजा; कहूं लोभी, कहूं दातार; कहूं सांचौ, कहूं झूठौ; कहूं कठिन, कहूं कोमल; कहूं हिंसक, कहूं दयाल; अरु सदा अधिक धन जन चाहै।" या भांति दमनक ने सिंह राजा कौं समझाय बुझाय, वाकौ शोक मिटाय, राजपाट पर बैठायौ; अरु पुनि आप मंत्री होय, सब राजकाज करनि लाग्यौ। इतनौ कथा कहि, विष्णुशर्मा ने राजपुत्रनि कौं आसीस दई कि, महाराजकुमार! तिहारे शत्रुनि कौं मित्रभेद होय, अरु मित्रनि कौं कल्यान!

इति सुहृद्भेदो नाम द्वितीय कथासंग्रहः संपूर्णः।

अथ विग्रहः ।

विष्णुशर्मा जब और कथा कौ आरंभ करनि लाग्यौ, तब राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! अब विग्रह सुनिवे कौ लालसा हम कौं है, सो कृपा करि सुनाइयै। विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! तुम शांत सुभाव होय सुनौं, हौं विग्रह की कथा कहतु हौं। एक हंस और मोर बल बुद्धि राज प्रताप में समान है; पर एक काग ने विस्वासघात करि हंस कौं हरायौ, अरु मोर कौं जितायौ। राजकुमारनि कही, यह कैसी कथा है? तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ;

कर्पूरद्वीप के मांहिं पद्मकेल नाम एक सरोवर है। काहू समें तहां के सब पंछियन मिल, एक हिरन्यगर्भ नाम हंस कौं राजा कियौ; सो व्हां राज करनि लाग्यौ। कह्यौ है, "जहां राजा न होय, तहां की प्रजा सुख सों न रहै; जैसें समुद्र में बिन केवट नाव न चलै, तैसें संसार में हू राजा बिन धर्म न निभै। राजा प्रजा की नित नित अधिकाई चाहै, निज पुत्र की समान जानै; अरु जो राजा प्रजा कौं पालन करि न बढ़ावै, सो जगत में प्रतिष्ठा हू न पावै। आगै, एक समय वह राजा हंस रत्नसिंहासन

पर सभा मांहिं बैठ्यौ हो, तहां कौन हू द्वीप तें एक दीरघमुख नाम बगुला आयौ, औ दंडवत करि, हाथ जोरि, राजा हंस के सनमुख ठाढ़ौ भया। तब राजा ने वाहि आदर करि बैठाय, पूछ्यौ कि, अहो दीरघमुख! जा देस तें तुम पधारे, तहां के समाचार कहो। उनि कही, महाराज! याही बात के लयै तौ हौं तिहारे ढिग आयौ हौं कि, जंबूद्वीप में बिंध्याचल नाम एक बड़ौ परबत है, तहां के सब पंछियन कौ राजा मयूर है, सो वा ठाम बसतु है। तिन मोहि बचननि में चतुर देखि पूछ्यौ कि, तू कहां तें आयौ, औ को है; तब मैं कही कि, कर्पूरद्वीप तें तौ मैं आयौ, अरु वहां के महाराज हिरन्यगर्भ कौ सेवक हौं, तिहारौ देस देखिवे कौं ह्यां आयौ हौं। तब उनि पक्षियन कही कि, तिहारे हमारे देस औ राजानि में कौन भलौ है? पुनि मैं कही कि, तुम कहा कहतु हौ! अरे! कर्पूरद्वीप तौ स्वर्ग समान, अरु आज राजा हंस दूसरौ इंद्र है; या बुरे देस में तुम क्यौं परे हौ? चलौ, हमारे देस में बसौ। जब यह बात मैं कही, तद उनि पखेरुअन मो पै अति क्रोध कियौ। कह्यौ है कि, "जैसें सर्प कौं पय प्याये अधिक बिष बढ़ै, तैसें पंडित कौ उपदेस मूरख के मन में न आवै; बरन वह उलटौ वाही कौं सतावै;" ज्यौं बानर कौं उपदेस दै, बिचारे पक्षियन अपनौ कियौ आप पायौ। राजा पूछी, यह कैसी कथा है? तद बक कहनि लाग्यौ;

नरमदा नदी के तीर एक पर्वत, ताके तरै एक सेमल कौ रूख, वापै पंछी अपने घौंसुआ बनाय, सुख सेां रह्यौ करैं। एक बेर बरषाकाल में भादौं की अंधियारी राचि समय दामिनी दमकि दमकि, घटा घिर घिर आईं, अरु बड़ी बड़ी बूंदनि घन गरज गरज, जल मूसलधार लग्यौ बरसन। ताही काल एक बानर वा पहार तें भीजतु उतरि, सीत कौ मार्यौ थरथर कांपतु, ताही रूख तरै आय बैठ्यौ। वाहि दुखित देखि, दया करि, पक्षियन कह्यौ, अरे बनचर! तू देखि तौ सही कि हमनि अपनी चौंच सेां तृन आनि घर कियौ है; तोहि तौ भगवान ने हाथ पाय दये हैं, तैं ने क्यौं न घर बनायौ? जौ तैं घर बनायौ हौ तौ, तौ या समें सुख सेां पाय पसारै सोतौ। यह सुनि वा मरकट ने जान्यौ कि, ये पक्षी या समें निज घर में सुख सेां बैठे हैं, ताही तें मो पंडित कौं मूरख जानि उपदेस देतु हैं। यह समझ, वह हंसकै बोल्यौ, अरे! बरषा बीते तुम मेरौ कियौ देखियौ। इतनौ कहि, वह क्रोध करि, मष्ट मारि बैठ्यौ। इतेक मांहिं भोर भयौ, अरु मेह उघरि गयौ। जब श्री सूरज देव ने प्रकाश कियौ, तब वह वा रूख पर चढ़ि, सब पंछियन के अंडा भूमि में पटकि, घौंसुआ खसोटकै बोल्यौ, अरे मूढ़ पक्षियौ! जे पंडित हैं, ते कहा घर करवे कौं असमर्थ हैं! तिन कौं तौ सुभाव ही है कि, घर नाहीं करतु। यह वाकौ बात सुनि, बापरे पखेरू मौन साध रहे। तातें हौं कहतु हौं कि, मूरख कौं

उपदेस कबहू न दीजै। पुनि राजा बोल्यौ, आगै कैसौ भई, सो कहो। बगुला बहुरि कहनि लाग्यौ, महाराज! पुनि उनि पक्षियन मो सेां रिसायकै कह्यौ, अरे! तेरे हंस कौ राजा किन कियौ? मैं कह्यौ, रे! तेरे मयूर कौं किन राज दियौ? या बात के सुने तें वे मोहि मारन कौं उठे, तद मैं हू अपनौ पराक्रम दिखायौ। कह्यौ है, "मनुष कौं और समें क्षमा बूझिये; पर जब शत्रु लरवे कौं आवै, तब पराक्रम ही करनौ उचित है; जैसें नारी कौं लाज आभरन है, तैसें रति समें ढिठाई हू आभूषन है" राजा हंस कही, जो अपनौ औसर न देखि क्रोध करै, सो अति दुख पावै; अरु ऐसें ही, जो अपनौ सामर्थ न जानि चेष्टा करै सोऊ; ज्यौं अपनौ सामर्थ न जानि, बाघ कौ चाम ओढ़ि, एक गदहा मार्यौ गयौ। बक बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां राजा हंस कहतु है;

हस्तिनापुर में एक बिलास नाम धोबी रहै; ताके घर एक गदहा। वा पै बोझ लादतु लादतु जद वाकी पीठ पर चांदी परी, तब वह धुबिया गदहा कौं राचि के समय बाघ कौ चाम उढ़ाय, काहू जव के खेत में छोड़ि आयौ। वा खेत कौ रखवारौ ताहि देखत ही परायौ। याही भांति, यह नित नित वाकौ खेत खाय खाय आवै। तद वा रखवारे ने नाहर मारने कौ यत्न कियौ, और वाही खेत की पगार के निकट भूरी कामरी ओढ़ि, धनुष चढ़ाय, आप हू काहू झूड़ तरै दबकि रह्यौ। दै पहर रात के समें

अंधेरे में गदहा आयौ, औ याकौ भूरी कामरिया कौं देखि, गदही जानि, वह कामांध होय रेंकतु धायौ। पुनि रखवारे ने जान्यौ कि, यह तौ गदहा है, पर बाघ कौ चाम ओढ़ि आयौ है। ऐसें कहि, क्रोध करि, रखवारे ने वाहि लौठियन लौठियन मारि गिरायौ, वाकौ प्रान गयौ। तातें हौं कहतु हौं कि अपनौ बल बिचारि काज कीजै।

इतनौ कथा कहि, पुनि राजा हंस बोल्यौ, आगै जो भई सो कहौ। बगुला कहनि लाग्यौ, महाराज! उन पक्षियन मो सेां कही अरे दुष्ट बगुला! तू हमारे देस में आय, हमारे ई राजा की निंदा करतु है! इतनौ कहि, उननि मोहि चोंचनि सेां मास्यौ। अरु कह्यौ, अरे? जैसें कुआ कौ दादुर कुआ ही कौं सराहै, तैसें तू है, अरु तेरौ राजा। यह सुदेस छुड़ाय तू हम कौं वा कुदेस में जैवे कौं कहतु है! रे मूर्ख! कह्यौ है, "चेष्टा करि बड़ौ रूख सेइयै, जौ फल न मिलै, तौ सीरी छांह बैठवे कौं तौ ह्न मिलै;" अरु ओछे की संगति तें प्रभुता जाय; जैसें कलाल के हाथ में दूध कौ बासन होय, तौ ह्न जो देखै, सो कहै, या में मदिरा होगी। अरु बड़े के नाम तें ह्न बड़ाई पाइयै; जैसें चंद्रमा के नाम तें ससा सुखी भये। यह सुनि, मैं उनि तें पूछौ, यह कैसी कथा है? पुनि विन में तें एक पक्षी कहनि लाग्यौ;

एक समें वरषाकाल बिन बरसे, बन में पानी की अति खेंच भई; तब व्हां के हाथियन अपने यूथपति सेां कह्यौ,

स्वामी! ह्यां बिन पानी प्यास के मारे मरतु हैं। यह सुनि, गजराज ने एक सरोवर पहार में बतायौ। वाके तीर ससा बहुत रहैं; जब गज वहां जल पीवन कौं गये, इन के पायन तरै बहुत से ससा चांपे गये। तब एक सिली-मुख नाम ससा हो: वाने बिचार्‌यौ कि, जौ या भांति ये हाथी इत आयहैं, तौ एक छू सजाती हमारौ यहां जीवतु न रहैगौ। यह बात सुनि, एक बिजय नाम अति वृद्ध ससा बोल्यौ, अहो! तुम अब भय जिन करौ, मैं या उपाध कौ यत्न करिहौं। इतनी कहि, वह वहां तें उठि चल्यौ, औ गैल में चलत चलत वाने मन मांहिं कह्यौ कि, हाथियन के निकट कैसें जैहौं? वे तौ छूवत मारैं। इतनौ सोच, वह एक पर्वत पै चढ़ि दिखाई दियौ; अरु इन जूद उन तें राम राम करी, तद विन में तें एक गज गर्व करि बोल्यौ, अरे! तू को है? इन कही, रे! हौं चंद्र-दूत हौं, औ तिहारे पास आयौ हौं। पुनि उननि कही, अपने आवन कौ प्रयोजन कहौ। इन कही, मोहि चंद्र महाराज ने यह कहि तुम पास पठायौ है कि, आज तुमनि आय हमारे या चंद्रसागर में पानी पियौ, सो तौ भलौ करौ; पर तिहारे पायन तरै हमारे ससा चांपे गये; यातें हम तुम तें अति अप्रसन्न भये; क्योंकि, हमारौ और तें ससा ही या सरोवर के रखवारे हैं, मैं इन की रक्षा करतु हौं, याही तें मेरौ नाम लोग ससौ कहत हैं। यह सुनि, गजराज बोल्यौ कि, भाई! तू यह सांच कहतु है।

पुनि ससा ने कह्यौ कि, यह धर्म दूत कौ न होय, जो मिथ्या भाषै। कह्यौ है, "दूत कौं कोऊ मारिवे कौं हू लै जाय, पर वह झूठ न बोलै।" ऐसें सुनि, गजराज भयमान होय, बोल्यौ कि, आज हम इत अनजाने आय कढ़े, पर बहुरि न आयहैं। पुनि ससा ने गजपति सेां कह्यौ कि, तुम निज मन में कछु जिन डरौ, हैां तिहारौ अपराध चंद्रदेव सेां कहि क्षमा करायहैां। ऐसें वाकौ संबोधन करि, राचि भये गजराज कौं सर के तीर लै जाय, चंद्रमा कौ प्रतिबिंब दिखाय, हाथ जुरवाय, आप पुकारिकै बोल्यौ, हे चंद्र महाराज! ये बापरे गज तिहारै सरोवर पै अनजाने आय कढ़े हैं, इनकौ जो अपराध भयौ है, सो आप क्षमा कीजै; पुनि इन तें ऐसौ कबहू न होयगौ। इतनौ कहि, वाने हाथियन कौं बिदा कियौ; औ विननि हू जल मांहिं प्रतिबिंब देखि सत्य जान्यौ कि, चंद्रमा सरोवर में आयौ है। तातें हैां कहतु हैां कि, बड़े के नाम ही तें कार्य सिद्ध होय।

यह सुनि, महाराज! पुनि मैं कही, अरे! हमारौ राजा बड़ौ प्रतापी है। यह सुनि, वे पक्षी मोहि पकरि, राजा मयूर के निकट लै गये; मो सेां दंडवत करवाय, हाथ जुरवाय, वाके सनमुख ठाढ़ौ राखि, विन पक्षियन राजा सेां कह्यौ, महाराज! यह दुष्ट बगुला हमारे ही नगर में रहि, हमारी ही निंदा करतु है। राजा कही, अरे! यह को है, औ कहां तें आयौ है? पक्षियन उतर

दियौ, महाराज! यह कहतु है कि, हौं कर्पूरद्वीप के हिरन्यगर्भ राजा कौ सेवक हौं, औ वाही देस तें आयौ हौं। यह सुनि, वा राजा कौ मंत्री गीध बोल्यौ कि, तेरे राजा कौ मंत्री को है? मैं कही, सर्वज्ञ नाम कछुआ; सोई सब राजकाज में प्रधान है। गीध बोल्यौ कि कह्यौ है, "जो सदेसी, कुलवंत, युद्धविद्या में निपुन, धर्मात्मा, आज्ञाकारी, प्राचीन, प्रसिद्ध पंडित, गुनगाहक, द्रव्य उपायक, उपकारी, हितकारी होय, ताकौं राजा मंत्री करै।" पुनि एक सुआ बोल्यो, पृथ्वीनाथ! या जंबूद्वीप के ही मांहिं कर्पूरद्वीप है, अरु व्हां आपकौ ई राज है। या बात कौं सुनि, वह राजा बोल्यौ कि, तू सांच कहतु है, सो हमारे ही देस में है। कह्यौ है, "राजा, बालक, उनमत्त, धनवंत औ स्त्री, ये पांचौं अनपावनी वस्तु लैन कौं हू हठ करैं।" पुनि मैं कही कि, जो बातन ही प्रभुताई पाइयै तौ हौं हू कहतु हौं कि, हमारौ राजा हिरन्यगर्भ ही सब जंबूद्वीप कौ राजा है। बहुरि कौर कही, यह कैसें जानियै? पुनि मैं कह्यौ, युद्ध किये ही जानिहौ। फेरि वह राजा बोल्यौ कि, तू अपने राजा कौं जाय कह, हम आवतु हैं। तब मैं कही, अपनौ बसीठ पठावौ। राजा ने कह्यौ, कौंन कौं पठाइयै? मैं कही कि, ऐसें कह्यौ है, "जो स्वामिभक्त, गुनवान, पवित्र, चतुर, ढीठ, बिसन रहित, क्षमायुक्त, धीर, गंभीर, सदेसी, पराये मन की जाननिहारौ, जाकौ उतर न फुरै, ऐसौ होय, सो दूत के जोग है," ताही कौं

भेजिये। राजा बोल्यौ, ऐसे तौ हमारे यहां बहुत हैं; पर कह्यौ है, "ब्राह्मन कौं पठाइये; क्यौंकि, बिप्र सत्यवक्ता औ अहंकार रहित होतु है।" पुनि मैं कही कि, महाराज! प्राचीन लोगनि के मुख सुन्यौ है कि, निज स्वभाव कोऊ नाहीं तजतु; जैसें कालकूट बिष ने महादेव कौ कंठ पायौ, पर स्यामता न त्यागी। पुनि मैं कह्यौ कि, महाराज! सुआ कौं पठाइये। तब राजा मयूर ने सुग्गा तें कह्यौ कि, कीर! तुम या बगुला के संग जाओ, अरु राजा हंस तें हमारौ संदेसौ कहि आओ। सुक बोल्यौ, महाराज की आज्ञा मूड़ पै; पर या दुष्ट बक की गैल हौं न जैहौं। कह्यौ है, "दुष्टजन के साथ रहे, साध जन हू दुख पावै; जैसें रावन के समीप रहि बापरौ समुद्र बांध्यौ गयौ।" पुनि ज्यौं काग के संग रहि, हंस औ बटेर मारी गई; राजा पूछी, यह कैसी कथा है! तद सुक कहनि लाग्यौ;

महाराज! उज्जैन नगरी की गैल में ऐक बड़ौ पीपल कौ रूख, ता पर एक काग अरु हंस रहै। ग्रीष्म ऋतु की दुपहरी मांहिं, एक बटोही घाम कौ मार्यौ, वाकी छांह तरै आय, शस्त्र खोल, सौरक पाय, सोयौ। जब घरी चार पाछै वाके मुख पर घाम आई, तब हंस दया करि वाके मुख पर छांह करि बैठ्यौ; अरु काग दुष्टता करि, वाके मुंह पै बीट करि भाग्यौ। त्यौंही बटोही जाग्यौ, औ वाने हंस कौं तीर तें मार्यौ। आगै एक सभें, सब पक्षी मिल, गरुड़ की याचा कौं चले; तामें एक बटेर हू काग के साथ

चली। तहां गैल में एक अहीर दहैंडो लिये जातु हो; सो दहैंडो काग झुठाय भाग्यौ, अरु बापरी बटेर वहां मारी गई। तातें हौं कहतु हौं, महाराज! दुष्ट कौ संग काहू भांति करनौ उचित नाहीं। पुनि मैं कही, भाई सुआ! तुम ऐसी बात क्यों कहतु हो? हमारे तौ जैसे राजा तैसे तुम। महाराज! इतनौ सुनि, वह प्रसन्न भयौ। कह्यौ है, "मूर्ख कौ अपराध करि स्तुति कीजै, तौ वह प्रसन्न होय;" जैसें एक खाती स्तुति किये जार सहित स्त्री की खाट माथे लै नाच्यौ। यह सुनि, राजा हंस कही यह कैसी कथा है! पुनि बगुला कहनि लाग्यौ;

श्रीनगर में मंदबुद्धि नाम एक खाती रहै; सो अपनी नारी कौं बिभिचारिनी जानै; पर वाहि जार समेत कबहू न पावै। एक दिन वाने वाके जार कौं पकरवे के लिये, वासों कह्यौ कि, आज हौं गांव जातु हौं, सु तीन चार दिन में आयहौं। इतनौ कहि, वह बाहर जाय, फेरि घर में आय, खटिया तरै छिप रह्यौ। वाकी स्त्री ने ताहि गांव गयौ जानि, निज जार कौं बुलायौ, अरु क्रीड़ा के समें कछु आहट पाय जान्यौ कि, यह मेरी परीक्षा लैन कौं खटिया तरै लुक्यौ है। यौं जानि, वह मन में चिंतति भई। अरु जब जार कही, रमति क्यों नाहीं? तब वह बोली, आज मेरे घर कौ धनी घर नाहीं, यातें मेरे भायें आज गांव सूनौं बनखंड सौ लगतु है। पुनि जार कही, जौ तेरौ वासों ऐसौ ही सनेह हो, तौ वह तोहि काहे छांड़ि गयौ!

उनि कही, अरे बावरे! तू यह नाहीं जानतु? सुनि! कह्यौ है कि, "स्वामी स्त्री कौं चाहै कै न चाहै, परनारी कौ यह धर्म है जु, पति कौं एक पल हू न बिसारै, अरु भर्त्तार की मार गारी सिंगार जानै; सो धर्म कौं पावै, औ कुलवंती सती कहावै।" धनी घर में रहै कि बाहर, पापी होय कै पुन्यात्मा, पर नारी वाहि न बिसारै; क्योंकि, स्त्री कौ अलंकार भर्त्तार है, पतिहीन अति सुंदरी हू नीकी न लागै। औ तू जार है, सो तौ पान फूल के समान, एक घरी कौ पाहुनौ दैव के संयोग आनि मिल्यौ; कर्म की रेख मेटी न जाय, बिधाता सों काहू की कछु न बसाय। अरु वह मेरौ स्वामी, हौं वाकी दासी, जौलौं वह, तौलौं मेरौ जीव है, वाके मरे हौं सती हौंउगी। कह्यौ है, "जो सती होय, सो प्रथम तौ अपने कुकर्म तें छूटै; दूजै कैसौ हू वाकौ भर्त्तार दुष्कर्मी पापी होय, तौ हू जेते देह में रोम हैं, तेते बर्ष वह निज स्वामी कौं साथ ले, स्वर्गभोग करै।" औ जैसें गारुड़ सांप कौं मंत्र की शक्ति करि पाताल तें बुलावै, तैसें ही सहगामिनी अपने पति कौं नर्क सों काढ़ि परम गति दिवावै। यह बात सुनि, वह खाती अपने जी मांहिं कहनि लाग्यौ, धन्य मेरे भाग! जु ऐसी नारी पाई कि, आप तरै, औ मोहि तरावै। वह ऐसें बिचारि, उछाह कौ मार्‍यौ, उन दोउअन समेत खाट माथै लै नाच्यौ।

तातें हौं कहतु हौं कि, मूरख दोष देखि हू स्तुति कियें

प्रसन्न होय। पुनि राजा हंस कही, आगे कैसो भई? तब बगुला कहनि लाग्यो, महाराज! उनि दूत बिदा कियो है, सो मेरे पाछे आवतु है; यह जानि जो बूझिये सो करौ। या बात कौं सुनि, वा राजा को मंची चकवा बोल्यो कि, धर्मावतार! यह बगुला दुष्ट है, यह काहू को सिखायो आयो है। कह्यो है, "वैद्य रोगी चाहै, पंडित गुनगाहक ढूंढै, राजा सूर सेवक खोजै, अधिकारी ठाकुर को विग्रह मनावै।" पुनि राजा कही, या बात को विचार जो करनो उचित होय सो करौ। मंची कही, महाराज! प्रथम एक जासूस पठाय, उनको कटक औ विचार जानिये; क्योंकि, राजा को आंख जासूस है। जा राजा कै जासूस रूपी नेत्र नाहीं, सो आंधो है; अरु ज के आछे जासूस हौंय, सो नरपति घर बैठ्यो सब संसार को विभौ देखै। कह्यो है, "तीरथ आश्रम देवालय तौ शास्त्र तें जानियै, औ गूढ़ बात जासूस तें।" तातें, महाराज! जो जासूस जल थल में जा सकै, ताहि पठाइयै, औ अब ही यह बात गुप्त राखियै; क्योंकि, जो मंत्र फूटै तौ आगलौ सावधान होय। यातें हौं कहतु हौं कि, नीको जासूस पठाये युद्धजीत है। राजा औ मंची ऐसें बतराय रहे हे कि, पैरिया बोल्यो, महाराज! एक सुआ जंबूद्वीप तें आयो है, सु पैरि पै ठाढ़ो है, वाहि कहा आज्ञा होति है? यह सुनि, राजा ने चकवा की ओर देख्यो। तद चकवा बोल्यो, महाराज! पहिले वाकौं डेरा दिवाओ, पाछे बूझो जायगो। इतनी बात के सुनते

हौ, द्वारपाल वाहि डेरा दैन गयौ। बहुरि राजा कही, अहो! बिग्रह तौ उपज्यौ। चकवा बोल्यौ, महाराज! मंत्री कौ यह धर्म नाहीं, जो स्वामी कौं लगावै, कै भगावै। कह्यौ है, "बिचार कै युक्ति सों बल करै, तौ थोरे पराक्रम ही तें कार्य सिद्ध हो।" जैसें मनुष काठ की सांग तें भारी पाथर उठावै, तैसें नरपति हू युक्ति किये जै पावै। पुनि कहतु हैं, "यौं तौ सब ही सूर हैं, पर औरं कौ बल देखि न डरि, मन स्थिर राखै, ताही कौं बलवान कहियै; बहुरि जौ समें पाय काम करै, तौ बेग ही सिद्ध होय, ज्यौं बरषा काल की खेती।" अरु महत के गुन सुभाव ये हैं कि, समें बिन दूर तें डरावै; औसर पाय, नेरे आय, सूरातन करै; आपदा में धीरज राखै; सब बात की सिद्धि में उतावली न करै। कह्यौ है, "धीरौ पानी परबत फोरै।" महाराज! चिचबरन राजा बड़ौ बली है; बलवान के सनमुख युद्ध करनौ जोग नाहीं; जौ निबल सबल के सनमुख होय लरै, तौ दीप पतंग की भांति होय; कै जैसें कोऊ चैंटी कौं पाथरन मारै, तैसें मार्यौ जाय। पुनि कह्यौ है, "सनमुख युद्ध करिवे कौ काल न होय तौ कछु आ के से पाय सकेल बैठियै; समय पाय नाग कौ सौ फन निकारियै; क्योंकि, समौं जानि छोटौ हू उपाय करै, तौ बडे कौं मारै। ज्यौं बरषा काल पाय, नदी कौ प्रवाह ठाढ़े रूख कौं गिरावै, त्यौं समें लहि सब काम हाथ आवै।" यातें सनमुख लरवे कौ बिचार न करि, गढ़ संवारियै, तौलौं वाके दूत कौं

बिरमाय राखियै। कह्यौ है, "कोट ऊपर कौ एक जोधा सहस्र सेां लरै।" पुनि जा राजा के देस मांहिं गढ़ नाहीं, ताकौ राज शत्रु बेग ही लेय; कोट बिन राजा कौ राज स्थिर न रहै। तातें, महाराज! अब कोट बनाइयै। कह्यौ है, "नदी के तीर गढ़ रचियै, तरै खाई खनाइयै, चारौं ओर निबिड़ बन राखियैं, औ पैठवे निकसवे कौं गैल; भांति भांति के अस्त्र शस्त्र यंच गोला भरियै. अरु अन्न रस धन जन कौ संचय सदा करियै।" राजा बोल्यौ, गढ़ साजवे कौ काज कौंन कौं दैंय? मंत्री कही, जो चतुर होय, ताकौं देउ। पुनि राजा कही, या काज मांहिं तौ सारस निपुन है। प्रधान कही, वाही कौं दीजियै। बहुरि राजा ने सारस कौं बुलायकरि कह्यौ कि, तुम नीकौ ठौरि देखि गढ़ रचो। उन कही, महाराज! मैं या सरोवर कौं अनेक दिन तें, तक राख्यौ है कि, याहि मांहिं गढ़ रचियै, तौ भलौ; क्यौंकि, याके तीर अन्न अधिक होतु है, अरु अन्न ही तें सब कछु होतु है। कह्यौ हैं, "रत्न औ कांचन सब वस्तु सेां उत्तम है; पर मनुष कौं अन्न बिन न सरै। जैसें नैान बिन सब फीकौ, तैसें अन्न बिन कछु न नीकौ।" पुनि राजा ने सारस सेां कह्यौ, तुम बेग जाय गढ़ रचो। इतेक मांहिं, पैारिया आय बोल्यौ कि, धर्मावतार! सिंगल-द्वीप तें एक काग मेघबरन नाम आयौ है, सु आपके दरसन कौ अभिलाषा कियै, द्वार पै ठाढ़ौ है; मोहि कहा आज्ञा होति है? राजा कही, काग दूरदर्शी होतु है, यातें

वाहि राखनैं उचित है। मंची बोल्यौ, महाराज! तुम भली कहौ, पर मेरे जान याहि राखनैं जोग नाहीं; क्योंकि यह थल कौ बासी, औ हमारे शत्रु कौ साथी है, यातें याकौ रहनैं क्यों हू नीकौ नाहीं। कह्यौ है, "जो राजा अपनैं पंथ छांड़ि, पराई चाल चलै, सो राजा कूकर दमनक कौ भांति मरै।" राजा पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? तब मंची कहनि लाग्यौ।

एक समें काहू स्यार कौं नगर के निकट कूकरनि आनि घेर्‌यौ; सो भयमान होय भाग्यौ, औ गांव में जाय, एक लील के कुंड मांहिं गिर्‌यौ। जब नीलवारे ने वाहि मर्‌यौ जानि, वामें कादि गैल में डारि दियौ, तब वह, शृगाल भय कौ मार्‌यौ नगर कौ गली मांहिं मृतक ह्वै रह्यौ। तहां पनहारियन वाहि पर्‌यौ देखि, आपस में पूछ्यौ, आली! यह कौन जंतु है? क हू ने कह्यौ, बीर! यह स्यार है। पुनि एक उन में तें बोली, अरी! याकौ कान काटि बालक के कंठ में बांधै, तौ डाकिनी न लागै। दूजी बोली, बहनि! याकी पूंछ काटि मौंड़ा के गरे में डारै, तौ भूत पिशाच न लागै। तीजी ने झट काट ही लये। तब चौथी ने कह्यौ, याके दांत तोरौ छोहरा की गुदी में राखै, तौ कछु रोग न होय। यह बात सुनि, वा स्यार ने मन में कह्यौ कि, या गांव के लोग बड़े पापी हैं; कान पूंछ काटि अब दांत तोर्‌यौ चाहतु हैं। यातें यहां तें भाजिये तौ बचिये। यह बिचारि, वह स्यार वहां तें पराय, बन में आय, सोचन

लाग्यो कि, अब मेरो नील बरन भयो, जामें अपनी प्रभुता होय सो करौं। यह बिचारि; वा ने सब स्यारनि कौं आनि कह्यो कि, आज या बन के देवताओं ने निज हाथनि औषधीन तें अभिषेक करि मोहि या बन कौ राज दयो है, तुम मेरो बरन देखौ। यह सुनि, विन स्यारनि वाको बरन देखि, ताकी बात मानि, सबनि हाथ जोरि कह्यो कि, अब जो कछु महाराज की आज्ञा होय, सो करैं। तब उनि कही, तुम सब मेरे पास रहौ। पुनि वे ऊ रहनि लागे। ऐसें जब उनि अपने सजातीन में आदर पायो, तब और हू बन के जीव, बाघ चीता आदि सब आज्ञाकारी भये; पुनि उनि स्यार खेद दये। तद वे स्यार सब जुरि, चिंता करि, कहनि लागे कि, अब कहा करैं? बहुरि विन में तें एक बूढ़ो जंबुक बोल्यो, अरे! तुम जिन पछताओ, मैं याको भेद पायो है कि, यह गांव में तै। पूंछ कान कटाय आयो, अरु ह्यां आय इन अपनो नाम राजा कूकरदमनक धरायो; ये सिंह चीता अनजाने याकी सेवा करतु हैं। तातें मैं एक उपाय बिचार्यो है कि, सांझ समें सब स्यार इकठे होय, याके सनमुख पुकारौ, तब यह हू जाति कौ सुभाव न छांड़ि, उन में बैठि बोलिहै। कह्यो है, "जौ कूकर कौं राज होय, तै हू वह टूटो पनहो चबाय, निज जात कौ सुभाव न तजै।" ऐसें बूढ़े स्यार की बात सुनि, उननि वैसें ही करी। जब राजा कूकरदमनक नाहर चौतानि में बैठि बोल्यो, तब उननि वाहि मारि खायो।

तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! अपनौ पंथ कबहू न छांड़ियै; औ घर कौ भेद, बात कौ मरम, काहू सों न कहियै। कह्यौ है, "खोडर कौ आग तरु कौं जरावै।" यातें महाराज! बिदेसी कौं भेद कबहू न बताइयै, न घर में राखियै। पुनि राजा कही, अहो! बात तौ ऐसें ही है; पर दूर तें आयौ है, तातें वाहि बुलायकै देखियै; जौ राखिवे जोग होय, तौ राखियै, ना तौ बिदा करियै। चकवा कही, महाराज! अब तिहारौ गढ़ साज्यौ गयौ; चिचबरन राजा के दूत कौं बुलाय, बिदा कीजै। कह्यौ है, "भूपाल और भूपाल के बसौठ तें एकलौ न मिलै।" तासों अपनी सभा के सब लोगन कौं बुलाय बैठारियै, तब सुआ कौं बुलवाइयै, अरु वाके साथ काग कौं हू। यह सुनि, राजा ने वैसें ही करि, बिन दोऊन कौं बुलाय, आसन दै बैठायै। तब सीस झुकाय, कौर बोल्यौ, अहो हिरन्यगर्भ राजाधिराज! तुम कौं श्री महाराज राजा चिचबरन ने कह्यौ है, जो अपनौ प्रान राख्यौ चाहौ, तौ हमारी सरन आओ; नातौ अपने रहनि कौं अनत ठौर करौ। यह बात सुनि, राजा हंस क्रोध करि, बोल्यौ है रे कोऊ जो या बसौठ कौं मारै? इतेक सुनि, वह काग बोल्यौ, महाराज! मो कौं आज्ञा होय, तौ या दुष्ट कौं मारौं। चकवा कही, धर्मावतार! दूत राजा कौ मुख है, तातें याकौ कछु दोष नाहीं; जैसें वहां सुनी, तैसें ह्यां आनि कही; यह मिथ्या न भाषै; अरु बसौठ के कहे,

कछु अपनी हानि न वाकी प्रभुता; तासों याकौं मारनौं काहू भांति उचित नाहीं। कह्यौ है, "जा सभा में बूढ़ौ न होय, सो सभा न सोभै; सो बूढ़ौ नाहीं, जो धर्म न जानै; वह धर्म नाहीं, जहां सत्य न होय; वह सत्य हू नाहीं, जहां दया न उपजै।" ऐसें समझाय, मंची ने राजा कौ क्रोध निवारन कियौ। पुनि तोता व्हां तें उठि चल्यौ। तद् मंची ने वाहि मनाय बैठायौ, औ वस्त्र अलंकार दिवाय, राजा तें बिदा करायौ।

जब वह अपने राजा के पास गयौ, तब राजा चित्रबरन ने वातें पूछी, सुक! कहौ, वह देस कैसो है? सुआ कहो, महाराज! पहले युद्ध कौ सामा करौ, पाछै हौं कहतु हौं। राजा बोल्यौ, हमारै लराई कौ सब सामान इकठौ है; तुम कहौ। पुनि सुआ कहनि लाग्यौ, महाराज! कर्पूरद्वीप सातवें स्वर्ग समान है, अरु मो पै बरन्यौं नाहीं जातु। यह सुनि, राजा ने अपने सब मंचियन कौं बुलायकै कह्यो, अहो! कौर कहतु है कि, राजा हंस तें युद्ध करौ, सो तुम तें पूछतु हौं कि, अब कहा करनौं उचित है? अरु मेरौ हू मनोरथ यह है कि, युद्ध करौं। कह्यौ है, "असंतोषी ब्राह्मन, लाजवती वेस्या, कुलवती निर्लज्ज, औ राजा संतोषी होय, तौ ये सब थोरे ई दिन मां हं नष्ट होंय।" यह सुनि, राजा कौ मंची दूरदर्शी नाम गंध बोल्यौ, महाराज! अपने मंची, मित्र, कटक, प्रजा आदि सब एक मत होंय, अरु शत्रु के मित्र, मंची,

औा प्रजा में विरुद्ध होय, तौ युद्ध करियै; यह नीति है। राजा कही, मेरौ दल मैं सब देख्यौ; यह खानिवारौ हैं, पर काहू काम कौ नाहीं; यातें तुम बेग जोयसी बुलाय, महूरत देखौ। गीध कही, पृथ्वीनाथ! शीघ्र ही यात्रा न बूझियै। कह्यौ है, "शत्रु बिन बिचारै वाकी भूमि में जाइयै, तौ नान्हौ हू बड़े कौं जीतै।" पुनि राजा कही, जो परभूमि लियौ चाहै सो कौंन भांति तें लेइ? यह तुम कहौ। मंत्री बोल्यौ, महाराज! उद्योग करे मन-कामना पूरन होय, अरु बिन उद्योग कछु न होय; जैसें औाषध खाये रोग जाय, वाकौ नाम लियै न जाय। अब महाराज कौ आज्ञा प्रमान, परभूमि लेवे कौ रीति कहतु हौं, जो राजनीति में कही है।

प्रथम तौ, राजा अपने मंत्री, जोधा, महाजन, मुखियान कौं बुलाय, सनमान करि, साथ लेय; अरु शस्त्र, वस्त्र, अलंकार, धन, गज, घोरा निज लोगन कौं बांटै; जो जाके जोग होय, ताकौ तैसौ मनमान करै, पाछै कटक साथ लै चलै; अरु जहां पर्वत बन डर कौ ठांव होय, तहां सेनापती कटक इकठौ करि चलै; भले भले सूर साथ राखै; औा रनवास, ठाकुर, भंडार, नान्हे लोग, ब्यौपारी, बीच मांहिं। पुनि राजा औा मंत्री सब पै दृष्ट राखै, औा बनवासी, पर्वतनिवासी लोग आगे धर लेय; बहुरि जहां बिषम भूमि होय, कै बरषाकाल होय, तौ राजा हाथी पर चढ़ि चलै। कह्यौ है, "गज की देह में

आठ शस्त्र हैं, चार पांव, द्वै दांत, एक सूंड, औ माथौ।" या तें राजा हाथी अधिक राखै तौ भलौ; क्योंकि, गयंद चलतौ कोट है; अरु जो घोरानि पै चढ़ि लरैं, तिन तें देवता हू डरैं, औ पयादेन कौं बल सदा राखै। पुनि परभूमि में जाय, राजा सदा सावधान रहै, काहू कौ विस्वास कबहू न करै; जोगेश्वर की नींद सोवै; अरु राजा अपने साथ द्रव्य राखै; क्योंकि, धन प्रान तुल्य है; बिन धन प्रभुता नाहीं। लक्ष्मी पाय को न जूझै? मनुष द्रव्य के हेतु सेवा करतु है। कह्यौ है, "नर धन तें बड़ा, औ धन ही तें छोटौ।" पुनि शत्रु कौ देस लूटि, खसोटिकै उजारै; क्योंकि, तातें अरि दुचितौ होय; अरु वाकौ अन्न रस ईंधन न्यार जो पावै, सो लूटि ल्यावै; औ गढ़ गढ़ी सर कूप वापी फोरि नाखै; बन उपवन बारी काटि डारै। ऐसें अनेक अनेक भांति की पीड़ा शत्रु कौं उपजावै, औ अपने लोगनि ते सदा प्रसन्न होय, बतरायौ करै, जातें लोग जानै कि, हमारौ स्वामी हम सौं संतुष्ट है। कह्यौ है, "ठाकर के सनमान औ हित बचन तें जैसौ सेवक काज करै तैसौ धन दिये अरु कटु बचन तें न करै।" पुनि जब सेवक काज करि आवै, तब वाहि प्रसाद देय; अरु जौ प्रसाद न देय, तौ वाकी जीविका दूनी कर देय; औ यहू न होय, तौ ताकौ कमायौ पैसा चुकाय देय। अरु जो स्वामी सेवक कौ महीना देत आज काल करि टारै, ताकौ किंकर उदास रहै, औ

असमय पर कानौ देय। तातें जो राजा शत्रु कौं जीत्यौ चाहै, सो दासनि औ सेवकनि कौं प्रसन्न राखै, तौ जहां जाय, तहां बिजय पावै। अरु या बात कौं सुनि, अरि के सेवक भूखे टूटे हौंय, ते आप तें आप आय मिलैं, तौ लरनौ हू न परै। बहुरि, रिपु के जीतवे कौ एक बड़ौ उपाय कह्यौ है कि, "वाके भाई भानेज भतीजान सेां भेद उपाय करि, तिन कौ आदर मान कीजै, अरु मंचौ प्रजा कौं हू अपनाय लीजै; औ जे लरैं, तिन कौ नास कीजै; अरु जे सरन गहैं, तिन कौ भय मिटाय दीजै; अरि कौ देस उजारियै, अपनौ बसाइयै। शास्त्र में कह्यौ है, या प्रकार तें राजा चलै, तौ युद्ध जीतै। पुनि राजा बोल्यौ, मैं जान्यौं, जातें अपनौ जीत औ शत्रु कौ हार होय, ताकौ यह रीति है; पर शास्त्र के पेंड़े तें मन कौ उमंग कौ पंथ न्यारौ है; मन कौ उमंग में जौ शास्त्र बिचारै, तौ न बनै; जैसें अंधकार औ तेज इकठौ न रहै। इतनौ कहि, राजा ने जोयसी बुलाय, शुभ मुहूर्त ठहराय, भलौ लग्न में दिगबिजययात्रा करी। तब राजा हंस के दूत ने आय, अपने राजा सेां कही कि, महाराज! राजा चित्रबरन ने मलयाचल परवत के हेठ आय डेरा कर्‌यौ, तुम अपने गढ़ कौ रक्षा करौ औ अपनौ परायौ चीन्हौ। वाकौ मंचौ अति चतुर है; मैं वाकौ बात सेां जान्यौ कि, उनि हमारौ गढ़ लैन कौं अपनौ मित्र काग पठायौ है। बहुरि राजा हंस को मंचौ

चकवा बोल्यौ, महाराज! या काग कौं न राखिये। राजा कही, जौ यह काग वाकौ पठायौ होतौ, तौ वा सुआ कौं मारनि न उठतौ; अरु उन तोता के गये पाछै युद्ध कौ मतौ कियौ है, यह वा तें प्रथम आयौ हो। मंची बोल्यौ, महाराज! तऊ नये आये तें डरियै। राजा कही, अहो! जो नयौ आयौ अपनौ उपकार करै, ताहि मित्र जानियै; अरु बंधु मित्र होय अपने काम न आवै, ताहि शत्रु करि मानियै; जैसें वन की औषधी तुरत को आई, रोगी के रोग कौं दूर करि सुख देइ, तैसें कोऊ कोऊ मनुष हू नवौ आयौ, उपकार करि जस लेइ; पुनि ज्यौं शूद्रक राजा के वीरवर सेवक ने अल्प दिननि ही मैं सहायता करी। चकवा बोल्यौ, महाराज! यह कैसी कथा है? पुनि राजा कहतु है;

शूद्रक नाम एक राजा; वाकी क्रीड़ा कौ एक सरोवर, तामैं कर्पूरकेल नाम राजा हंस होा। वाकी बेटी कौ नाम कर्पूरमंजरी; तापै आसक्त होय मैं व्हां रह्यौ। तहां वीरबर नाम एक राजपूत, काहू देस तें उद्यम के लिये आय, राजद्वार पै ठाढ़ौ भयौ, अरु उनि पौरियन तें कह्यौ, मोहि राजा तें मिलाओ, हौं सेवा करनि के हेतु आयौ हौं। द्वारपाल यह बात जाय राजा सों कही। तब राजा ने वाहि बुलायकै पूछ्यौ, तुम दिनप्रति कहा लेउगे? उनि कही, चार सै तोला सुबरन। पुनि राजा बोल्यौ, और तिहारे साथ को है? उनि कही, दै हाथ, तीजौ खड़ग। राजा कही, इतेक हम तें न दियौ जायगौ। यह सुनि,

बीरबर जुहार करि चल्यौ। तद मंत्री ने राजा सों कही, महाराज! चार दिन तौ याहि सुबरन दै राखियै, औ याकौ पराक्रम देखियै, इतेक जोग है कै नाहीं। मंत्री की बात मानि, राजा ने वाहि सौनौ दे राख्यौ। वा दिन कौ कंचन लै, वाने अपने घर जाय, आधौ तौ ब्राह्मननि कौं संकल्प करि दियौ, अरु वाकौ आधौ भूखे भिखारी भिक्षुकन कौं बांटि दियौ, औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यौ। याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री सहित वहां रहनि लाग्यौ। जब सांझ होय, तब खांडौ फरी लै, राजसेवा में जाय उपस्थित होय। एक दिन कृष्णचतुर्दशी की आधी रात कौं घन घुमंडि मेह मच्यौ; ता समें काहू नारी के रोवन कौ शब्द सुनि, राजा बोल्यौ, कोऊ है? बीरबर कही, महाराज! कहा आज्ञा होति है? राजा कही, देख तौ, को रोवतु है? राजा की आज्ञा पाय, बीरबर चल्यौ। तब राजा ने अपने मन में बिचार्‌यौ कि, मोहि ऐसौ न बूझियै जु या अंधेरी रैन मांहिं रजपूत कौं एकलौ पठाऊं; तातें याके पाछै पाछै जाय देखौं तौ सही, यह कहा करतु है? या प्रकार राजा मन में बिचारि, ढार तरवार गहि, वाके पाछै ह्वै लियौ। आगै जाय बीरबर देखो तौ, एक नारी नवजोवना, अति रूपवती, सब आभरन पहरै, ठाढ़ी, धाय मारि मारि रोवति है। इन वासों पूछी, तू को है? उनि कही, हौं राजलक्ष्मी हौं। पुनि इन कह्यौ, तू रोवति काहे? उनि कही, मैं बहुत दिन या राजा की भुजानि की छांह

में बिश्राम कियौ, अरु अब या राजा कौं छांड़ि जाउंगी, या दुख तें रोवति हौं। इन कही, तू काहू भांति हू रहै! उनि कही, जौ तू निज पूत कौं बल देइ, तौ हौं रहौं, अरु यहू राजा अनेक दिन अखंड राज करै। पुनि बीरबर कही, माता! जौलौं मैं अपने घर ह्वै आऊं, तौलौं तुम ह्यां रहौ। ऐसें कहि, घर जाय, बीरबर पुत्र औ स्त्री कौं जगाय, लक्ष्मी के कहे बचन कहिवे लाग्यौ, तौ पुत्री हू जागी। यह बात सुनि, सब चुप रहे। तद पुत्र बोल्यौ, धन्य भाग मेरौ, जु यह देह देवी के निमित्त लागै, अरु स्वामी कौ काज सरै! यामें पिता जू बिलंब जिन करौ; क्यौंकि, कबहू तौ या काया कौ बिनास होय, तातें काहू के काज लागै, सो तौ भलौ ही है। कह्यौ है, "विद्या, धन, प्रान, पराक्रम, जाकौ पराये काम आवै, ताही कौं संसार में जन्म लैनौं सुफल है।" पुनि बीरबर की पत्नी बोली, जौ तुम यह कार्य न करौगे, तौ राजा के ऋन तें कैसें उतरन होउगे? ऐसें बतराय, सब देवी के मंदिर पै गये; अरु पूजा करि, हाथ जोरि, इतनौ कह्यौ, माता! हमारौ राजा चिरंजीव होय राज करै! यह कहि, पुत्र कौ मूंड़ काटि बीरबर ने देवी कौं दयौ, अरु अपने मन मांहिं कह्यौ कि, राजा के ऋन तें तौ उतरन भयौ; पर अब निपूतौ होय जगत में जीवनौं उचित नाहीं। यह समझि अपनौ हू सीस काटि भवानी के आगू धर्‌यौ। उन दोउअन कौं मर्‌यौ देखि, वाकी स्त्री

ने बिचास्यौ कि, संसार में रांड निपूती ह्वै जीनौं जोग नाहीं। ऐसे ठानि, वा हू ने निज माथौ चढ़ायौ। विन तीननि कौं मस्यौ देखि, वाकी पुत्री ने विचास्यौ कि, निगोड़ी नाठी ह्वै जग में जीवनौ भलौ नाहीं। यह समझि, विन हू मस्तक काटि, देवी के सनमुख राख्यौ। यह चरित्र देखि, नरपति ने जी मांहिं बिचास्यौ कि, मो से जीव अनेक पृथ्वी में उपजतु खपतु हैं; पर ऐसे सूर नर हैाने कठिन हैं; तातें अब याकौ कुटुंब नास करि, मोहि राज करनौ जोग नाहीं। यह सोचि समझि, ज्यौं भूपाल निज मूंड़ उतारनि लाग्यौ, त्यौं हीं देवी ने आय कर गह्यौ अरु कह्यौ, राजा! तू साहस जिन करै, अब तेरे राज में भंग नाहीं। राजा कही, माता! मोहि राज तें कछु प्रयोजन नाहीं। पुनि देवी बोली, हैां तेरे धर्म औ सेवक के कर्म पर संतुष्ट भई; अब तू जो बर मांगै सो दैउं। राजा कही, मा! जौ तुम तुष्ट भई हैा, तौ इन चारन कौं जीवदान देउ। जब उन पाताल तें अमृत लाय, विन चारन कौं जिवायौ, तब राजा चुपचाप व्हां तें चलि, निज मंदिर में आयौ; औ बीरबर हू उन तीनौं कौं घर राखि, आप राजा के समीप पंहुच्यौ। नरपति ने वाहि पूछ्यौ, तुम गये हे तहां कहा देखि आये? पुनि कर जोरि, उन कही, महाराज! एक नारी रोवति ही। जौलौं हैां वहां गयौ, तौलौं वह चुप रही, मैं वाहि न पायौ; पुनि मैं बगदि आप के ढिग आयौ। ऐसें सुनि, राजा ने मन

में कह्यौ कि, यह कोऊ बड़ौ सिद्ध पुरुष है, याकी स्तुति हौं कहां लौं करौं! कह्यौ है, "दयावंत, दानी, तपसी, सत्यबादी, औ सूर जौ अपनौ बड़ाई न करै, तौ वाहि सिद्ध पुरुष जानियै।" आगै, राज ने प्रात भये, पंडितन की सभा में बैठि, राचि कौ सब वृत्तांत कह्यौ, अरु संतुष्ट होय, बीरबर कौं करनाटक देस कौ राज दयौ। तातें हौं कहतु हौं, सब नये कू बुरे न होंय। संसार में तीन प्रकार के मनुष होतु हैं, उत्तम, मध्यम, अधम। बहुरि चकवा बोल्यौ, महाराज! यह काज करवे जोग नाहीं; आगै महाराज की इच्छा। कह्यौ है, "पराई रीस पंडित चतुर कबहू न करै;" अरु जौ करै, तौ बैसें होय जैसें एक क्षची ने अपनी तपस्या तें धन पायौ, औ वाकी रीस करि, एक नाऊ ने निज प्रान गंवायौ। नरपति कही, यह कैसी कथा है? तब चक्रवाक कहनि लाग्यौ;

अयोध्या पुरी मांहिं, एक चूड़ाकरन नाम क्षची रहै; तिन धन के निमित्त अति कष्ट करि, श्री महादेव जू की सेवा करी; तब सदाशिव जू ने वाकौं स्वप्न में दरसन दैं कह्यौ, अरे! आज पाछली राचि समैं, क्षौर होय, स्नान करि, लौठिया कर धरि, अपनी पौरि मांहिं कपाट के पाछै लुक रहियौ; जब कोऊ भिक्षा कौं आवै, तब वाहि लकुटनि मारि, घर मांहिं लहियौ; वह सुबरन भर्यौ कलस ह्वैहै; तातें तू जबलग जीवैगौ, तबलग सुखी रहैगौ। यह बर पाय, विन दूजे दिन नाऊ कौ बुलाय,

वैसें ही कियौ, जैसें भोलानाथ ने कह्यौ हो। जद वह भिखारी सुबरन घट भयौ, तद इन लै घर में धर्‌यौ। यह चरित्र देखि, वा नौआ ने बिचार्‌यौ कि, धन पायवे की जौ यही रीति है, तौ हौं हू क्यों न करौं? ऐसें समझि, निज घर आय, उन हू एक सन्यासी मार्‌यौ; तब वाहि राजा के सेवकनि पकरि लै जाय, सन्यासी के पलटै मार्‌यौ। तातें हौं कहतु हौं कि, और कौ रीस कबहू न करियै। पुनि राजा कही, पाछली बात जिन करौ, आगै जो करनौं होय सो करौ। मलयागिर पर्वत के तरै, राजा चिचबरन कौ डेरा है; अब कहा करियै सो कहौ? मंची बोल्यौ, महाराज! हम हू सुन्यौ है कि, वह लरवे कौं आयौ है; पर तुम कछु चिंता जिन करौ, हम वाहि जीति हैं; क्योंकि, वाने अपने मंची कौ कह्यौ नाहीं मान्यौ। कह्यौ है कि, "जो शत्रु लोभी, कूढ़, आलसी, कायर, झूठौ, और अधीर, होय, अरु धन राखि न जानै, काहू कौ कह्यौ न मानै, ताहि बिन कष्ट मारियै।" महाराज! जौलौं वह हमारौ गढ़, नगर, कटक, और घाट बाट न देखै, तौलौं वाके मारिवे कौं सैना पठाइयै। ऐसें और हू ठौर कह्यौ है कि, "दूर कौ आयौ, थक्यौ, भूखौ, प्यासौ, भयमान, असावधान, राति कौ जाग्यौ, और परवत तरै बस्यौ होय, ऐसे शत्रु कौं दौरि मारियै।" यातें उचित है कि, अबही हमारौ सेनापति वाके दल कौं जाय मारै, तौ भलौ। यह बात मंची तें सुनत प्रमान, राजा ने सैनापती

कौं टेरि आज्ञा दई कि, तुम याही समें राजा चित्रबरन को सेना कौं जाय मारौ। उन वैसेंही करी। जब चित्रबरन के जोधा अनेक मारे गये, तब वह चिंता करनि लाग्यौ। पुनि वाकौ मंत्री गौध बोल्यौ, अब काहे चिंता करतु है? बहुरि राजा कही, बाबा जू अब काहू भांति हमारी सेना की रक्षा करौ। ऐसें भयमान राजा कौं देखि, गौध बोल्यौ, महाराज! कह्यौ है कि, "गर्व तें लक्ष्मी टरै; बुद्धापौ पौरुष हरै; चतुर संदेह मिटावै; अभ्यास करे बिद्या आवै; न्याय प्रताप बढ़ावै; विनय तें अर्थ पावै।" अरु मूर्ख राजा होय, तौ पंडितन की सभा तें सोभा; जैसें नदी के तीर रूख हरयौ रहै, तैसें आछी सभा तें राजा कौ मन हू डहडह्यौ रहै।

इतनौ कहि, पुनि गौध बोल्यौ, महाराज! तुम ने अपनौ कटक देखि, गर्व करि, साहस कियौ, अरु मेरौ कह्यौ न मान्यौ; ता अनीति कौ यह फल है। कह्यौ है, "जौ राजा मंत्र चूकै, तौ ताकौ नीति कौ दोष है; जैसें कुपथ्य तें रोग होय, रोग तें मरै; तैसें धन तें गर्व होय, औ गर्व तें दुख।" पुनि निर्बुद्धि कौं शास्त्र यौं, ज्यौं आंधरे के हाथ आरसी। यह समझि, हम हू मौन गहि रहे। इतेक बातें सुनि, राजा ने हाथ जोरि, गौध सों कही, बाबा जू! मो तें अपराध भयौ, क्षमा कीजै; अरु अब काहू भांति जो कटक बच्यौ है, ताहि साथ लै, निज घर को बाट लीजै। पुनि गौध कही, महाराज! ऐसौ कह्यौ

है कि, "राजा, गुरू, ब्राह्मन, बालक, वृद्ध, स्त्री, रोगी, इन पै ज्यौं क्रोध उपजै, त्यौं हीं जाय।" तातें तुम डरौ जिन, धीरज धरौ। कह्यौ है, "मंची ताही कौं कहिये, जो बिगर्‌यौ काज सुधारै; औ वैद्य सो, जो सन्निपात निवारै।" यातें तुम कछु चिंता मत करौ, हौं तिहारे प्रताप तें वाकौ गढ़ तोरि, कटक समेत आनंद सों घर लै चलिहौं। राजा बोल्यौ, थोरौ कटक रह्यौ, अब गढ़ कैसें बिजय करिहौ? गीध कही, महाराज! जो संग्राम जौत्यौ चाहौ, तौ बिलंब जिन करौ; आज ही चलि वाकौ कोट छेकियै।

यह बात सुनत ही, बगुला ने राजा हंस तें जाय कही कि, महाराज! राजा चित्रबरन थोरे ही कटक तें, तिहारौ गढ़ छेक्यौ चाहतु है; यह बात मैं वाके मंची तें सुनि आयौ हौं। यह बात सुनि, राजा हंस ने अपने मंचौ सों कह्यौ कि, अब कहा करियै? चकवा बोल्यौ, महाराज! अपनौ कटक देखौ, यामें कौन भलौ है, औ कौन बुरौ; भलौ होय, ताहि धन, बस्त्र, घोरा, हाथौ, शस्त्र, दीजै; औ बुरौ होय, ताहि गढ़ कटक तें बाहर कीजै। कह्यौ है "जु राजा एक समय तौ दाम कौं लाख करि मानै; अरु एक काल लाख कौं दाम करि जानै; तौ वा राजा कौं लक्ष्मी न छांड़ै।" पुनि, यज्ञ दान विवाह आपत्य औ शत्रु मारिवे में जो धन उठावतु है सोई स्वार्थक है; अरु मूरख थोरे दैन तें डरि, सबही गंवावै। राजा बोल्यौ, तुम कौं ऐसौ कहां की आपदा है? मंचौ कही, महाराज!

कह्यौ है जु, "लक्ष्मी रिसाय, तौ आयौ धन जाय।" तातें दान कीजियै जो धर्म के आधीन ह्वै लक्ष्मी रहै। बहुरि राजनीति में हू कह्यौ है कि, "विग्रह के समय राजा अपने जोधान कौ समाधान करै, जो जैसौ ताकौ तैसौ; क्योंकि जे उत्तम प्रवीन कुलीन सीलवंत सूरबीर धीर नीकै पोखे हौंय, ते पांच पांच सौ तें लरैं; अरु अकुलीन अप्रवीन अधम अधीर कायर निर्लज्ज हौंय, ते पांच सौ पांच तें परांय। महाराज! पुनि जा राजा कौ मंत्री असावधान होय, ताकौ हू राज न रहै। अरु जो राजा अपनौ परायौ न जानै, मंत्री की प्रतीत न मानै, सेवक कौ दुख सुख न गनै, सो राजा कबहू निचतौ न रहै। औ जो राजा अपनौ परायौ बूझै, सेवक कौ दुख सुख बिचारै, ताके लियै सेवक धन तन प्रान दे सहायता करै।

राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे कि, ताही समें मेघबरन काग आय, जुहार करि, बोल्यौ, महाराज! शत्रु युद्ध करिवे कौं गढ़ के बार आयौ है; मोहि आज्ञा होय तौ बाहर निकरि संग्राम करौं, अरु आप के लौन तें उतरन हौंउं। मंत्री कही, बन तें निकस्यौ सिंह अरु स्यार समान है; यातें गढ़ तें न निकसियै। कह्यौ है, "जो राजा आप ठाढ़ौ रहि युद्ध देखै, तौ कायर सिंह समान होय लरै।" तातें अबही कोट के बार जाय युद्ध करनौं जोग नाहीं। इधर तौ राजा औ मंत्री ऐसें बतराय रहे हे, अरु उत चित्रबरन राजा ने दूजै दिन गीध सों कह्यौ कि, बाबा

जू! जो प्रतिज्ञा करी हौ, ताकौ निर्वाह करौ। गीध बोल्यौ, सुनौ महाराज! आगरे के थोरे जोधा हैांय, कै राजा मूर्ख औ मंत्री कायर हैाय, तौ गढ़ उतावलौ टूटै; सो तौ वहां एकौ गति नाहीं; तातें ह्वां के लोगनि तें भेद उपाय करियै; कै घेरौ नाखि, अन्न रस रोकि, सब मिल साहस करैं तौ गढ़ पावैं। कह्यौ है, "जैसौ बल होय, तैसौ जतन करियै।" इतनौ कहि, पुनि मंत्री ने राजा के कान में कह्यौ कि, महाराज! कछु चिंता जिन करौ; हमारौ काग वाके गढ़ में है, सो काम करिहै। आगे, प्रात होत, राजा चित्रबरन सब सेना लै, गढ़ को पौरि जाय लाग्यौ। उत समय पाय, काग लाय लगाय, गढ़ लियौ लियौ करि पुकास्यौ; तब तहां के जीवन के पग छूटे; वे सब दौरि पानी में पैठे; औ राजा हंस सुकुमारता तें पराय न सक्यौ; तद एक सर्वमित्र नाम कूकड़ौ राजा चित्रबरन को सेनापति, तिन आय हंस कौं छेक्यौ। तब सारस वाके सनमुख हैानि लाग्यौ। तहां हंस बोल्यौ, तुम मेरे निमित्त जिन जूझो; हैां ह्वां रह्यौं, तुम मेरे पुत्र चूरामन कौं लै जाय, राज करौ। सारस कही, महाराज! आप ऐसी बात जिन कहैा; जौलौं चंद्र सूरज, तौलौं तुम अखंड राज करौ; हैां आप के प्रताप सेां गढ़ में सब शत्रुन मारि बिछावतु हैां। कह्यौ है, "क्षमावंत दाता गुनगाहक सुखदायक धर्मात्मा ठाकुर कहां पाइयै?" राजा कही, भक्तिवंत निष्कपट चतुर सेवक

हू कहां पाइयै ? पुनि सारस बोल्यौ, महाराज! संग्राम तजि तौ भाजियै, जौ मृत्यु न होय; अरु जौ निदान मृत्यु ही है, तौ अपनौ जस मलीन करि काहे मरियै ? बहुरि, जौ या अनित्य सरीर सों जगत में नित्य जस पाइयै, तौ यातें कहा उत्तम है? या में तुम तौ हमारे स्वामी ही हौ। राजा कही, यह तुम भली बिचारी, हम हू ऐसौ ही करिहैं। सारस बोल्यौ, महाराज! आप ऐसौ बिचार जिन करौ; क्योंकि स्वामी के देह छांड़े प्रजा अनाथ होय; अरु सेवक कौ तौ यह धर्म ही है कि, जौलौं बनै तौलौं स्वामी के राखिवे कौ यत्न करै; स्वामी के उदै तें याकौ उदै, अरु अस्त तें अस्त। इतनी बात कहत कहत, जब कुक्कुट ने राजा हंस कौं आय गह्यौ, तब सारस ने वासों छुड़ाय, पीठ पर चढ़ाय, नीर में जाय छोड़्यौ; अरु आप आय, अनेकन कौं मारि, गढ़ मांहिं जूझ मर्‍यौ। पुनि आय, राजा चित्रबरन ने सब गढ़ की माया लई; अरु बंदीजन के पायन की बेरी हथकरी काट दई। इतनी कथा सुनि, राजपुत्रनि विष्णुशर्मा तें कह्यौ, अहो गुरुदेव! राजा हंस के सेवकनि में वह बड़ौ कोऊ हो, जिन राजा कौं बचाय, आप प्रान दियौ। विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! सुनौ, उन बड़ौ काज कियौ। देखौ, एक तौ संसार में जस पायौ; दूजै स्वर्ग। कह्यौ है, "जो सेवक स्वामी के लियै रन में प्रान देइ, सो परम गति पावै; औ जो साथ छोड़ि भाजै, वह नर्क में पड़ै, औ जगत मांहिं कलंकी होय।"

इति विग्रहो नाम तृतीयः कथासंग्रहः पूर्णः ।

अथ संधिः।

विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! तुमनि विग्रह तौ सुन्यौ; अब हौं संधि कथा कहतु हौं कि, जब दोऊ राजा संग्राम करि, सेना कटाय रहे, तब गीध अरु चकवा ने जा भांति उनकौं मिलायौ, ताई रीति सब कथा कहतु हौं। राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! हमनीकै चित दै सुनतु हैं, आप आज्ञा कीजै। पुनि, विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ कि, जद राजा हंस ने चकवा सेां पूछ्यौ कि, तुम यह जानतु हौ, गढ़ में आग हमारे लोगनि लगाई कै शत्रु के? तद चकवा बोल्यौ, महाराज! तिहारौ मेघबरन काग दीसतु नाहीं; तातें जान्यौ जातु है कि, होय न होय, यह वाही कौ काम है। इतनी बात सुनि, राजा चिंता करि, कहनि लाग्यौ कि मैं जान्यौ यह मेरे ही अभाग तें काम बिगर्‌यौ; या मांहिं कछु तिहारौ दोष नाहीं; मेरे कपाल ही कौ दोष है। मंत्री कही, महाराज! और हू ठौर ऐसें कह्यौ है कि, "जब देव कोपतु है, तब मनुष पर आपदा आवतु है; अरु कर्म के बस होय अनीति करै; हितून कौ कह्यौ न मानै।" जैसें एक कछुआ ने अपने हितू कौ कह्यौ न मानि, काठ तें गिरि दुख उठायौ, तैसें कष्ट पावै। राजा बोल्यौ, यह कैसी कथा है? तहां चकवा कहनि लाग्यौ;

मगध देस में फुल्लोत्पल नाम सरोवर; तहां विकट संकट नाम द्वै राजहंस रहैं; तिनकौ मित्र एक कंबुग्रीव कछुआ ह्वै वहां रहै। एक दिन तहां धीवर आये, अरु आपस में बैठि बतराये कि, आज राति कौं यहां बसि, माछरी कछुआ पकरिहैं। यह सुनि, कमठ ने हंसनि सेां कही, मित्र! तुम धीवर की बात सुनी; अब हैं यहां न रहिहैं, और सरोवर में जैहैं। हंसनि कही, अबही रहौ, आगै उपाय करिहैं। कछुआ बोल्यौ, बंधु! तुम जो कही कि आगै उपाय करिहैं, सो आगै की बात नाहीं। कह्यौ है, "आपदा बिन आये उपाय करै तौ सुख पावै; औ न करै तौ दुख उठावै;" जैसें यज्ञविष्य माछरी ने दुख पायौ। हंसनि कही, यह कैसी कथा है? बहुरि कमठ कहतु है;

पहिलै या सरोवर पर एक बार धीवर आयौ हो; तब यहां तीन माछरी रहति हीं; एक अनागतविधाता, दूजी उत्पन्नमति, तीजी यज्ञविष्य। जब धीवर आयौ, तब अनागतविधाता ने कह्यौ, अब यहां रहनौं उचित नाहीं। इतनौ कहि, वह और सरोवर में गई। दूसरी बोली, जद काज आय परिहै, तद उपाय करिहौं। कह्यौ है, "जो उपजी बात का उपाय करै, सो चतुर।" जैसें एक बनियां की बेटी ने पति के देखत, जार कौं चूंबा दै मिस कियौ। तौसरी ने पूछ्यौ, यह कैसी कथा है? पुनि उत्पन्नमति कहति है;

बिक्रमपुर में समुद्रदत्त नाम बनियां; ताकी स्त्री कौ नाम रतनमंजरी; सो अपने सेवक सेां रहै। कह्यौ है,

"स्त्री के कौन बड़ौ, कौन छोटौ? अपने काम सेां काम।" आगे, एक दिन वह अपने सेवक कौ मुख चूमति ही, वाही समैं वाके स्वामी ने आय देख्यौ; तब उनि दौरि, पति सेां कही, साह जू! या सेवक बज्रमारे कैां घर मांहिं जिन राखौ, यह दैमारयौ चोर है, अबही याने घ्यौ चुराय खायौ; मैं याकौ मुंह सूंघ्यौ, सु घृत की गंध आवति है। यह बात सुनि, सेवक रूठ्यौ, अरु कहनि लाग्यौ कि, जा घर की धनियानी मुख सूंघै, तहां रहनैां भलौ नाहीं। पुनि, समुद्रदत्त ने उन दोऊन कैां मनायौ। तातें हैां कहति हैां कि, आपत्य समय जाकी बुद्धि फुरै, सोई चतुर। बहुरि यद्भविष्य बोली, जो भावै सो होय, चिंता को करै? आगे, धीवर ने आय, जार वा सरोवर मैं नाख्यौ, अरु वे दोऊ बझौं; तब उत्पन्नमति मृतक होय रही। वाकैां मर्‍यो जानि, धीवर ने जार तें बाहर काढ़ि राख्यौ। पुनि औसर पाय, वह पानी मांहिं जाय गिरी। यद्भविष्य कैां भावी कौ भरोसौ हो, सो धीमर के बस परी। तातें हैां कहतु हैां, जौ अनागतविधाता की भांति उत्पात तें पहिलै भाजै, सो भलौ। बहुरि हंसनि कही, तुम कैसें चलिहौ? उनि कही, मित्र! तुम दोऊ एक लकरी दोऊ घां तें पकरौ, औ हैां बीच तें गहैां, तब लै उड़ौ। पुनि हंस बोले, बंधु! तुम नीकी कही; पर हमारे जानि, जैसें बगुला के उपाय तें बालकपन खायौ, तैसें तुम हू कहतु हौ। कमठ कही, यह कैसी कथा है? तहां हंस कहनि लाग्यौ;

उत्तर दिसा की गैल में, कावेरी नदी के तीर, गंधमादन पर्वत पै एक रूख; ता पर एक बगुला रहै; वाके नीचै बांबी, तामें कारौ नाग। जब वह बक अंडा देइ, तब सो सांप रूख पर चढ़ि खाय लेइ। एक दिन, वह चिंता करि रह्यो हो कि, काहू बूढ़े बगुला ने यासों पूछ्यौ कि, रे! तू ऐसौ दुचितौ क्यों है? इन वासों सब भेद कह्यौ। तद उनि कह्यौ कि, अरे! तू एक उपाय कर कि, बहुत सी माछरी ल्याव, औ न्यौर के बिल तें लै, सांप की बांबी लौं पांति सी लगाव। जब वह माछरी खात खात आयहै, तब वा सर्प कौं हू खायहै। यह बात सुनि, उनि वैसें ही करी; औ न्यौर ने आय नाग कौं खायौ; पर साथ ही पेंड़ पै चढ़ि, वाके अंडा हू खाये। तातें ही कहतु हौं कि, ऐसौ यत्न जिन करौ, जामें अपनौ बिनास होय। जौ तुम लकरी पकरि लटकि चलौ, औ कोऊ कछु कहै, वा बेर तुम रिसायकै ऊतर देउ, औ मुंह तें लकरी छूटै, औ नीचै गिरौ, तौ हम कहा करैं सो कहौ? उनि कही हौं कहा बावरौ हौं, जु बोलिहौं! इननि कही, भाई! तुम जानौ। इतनौ कहि, वे दोऊ हंस वाकौं वाही भांति लै उड़े कछुआ कौं लौठिया में लटकत देखि, अहेरी बोले, देखौ रे! या कछुआ कौं दै पक्षी लिये जातु हैं। एक बोल्यौ, जौ यह गिर परै, तौ भूंजि खाऊं। दूजे ने कही, मैं घर लै जाऊं। यह सुनि, कछुआ सों रह्यौ न गयौ; तब क्रोध करि बोल्यौ, तुम पथरा खाउ। इतनौ

कहत, लकरी तें छूटि, तरै गिर्‌यौ; अहेरियन मारि भक्षन कियौ। तातें हौं कहतु हौं, जो मंची कौ कह्यौ न मानै, सो दुख पावै। आगै, एक बगुला आयौ; तब चकवा बोल्यौ, महाराज! यह वही बगुला है, जाहि पहिलै पठायौ हो। यह कहतु है, गढ़ में आग मेघबरन काग ने लगाई; अरु वह गौध को पठायौ आयौ हो। बहुरि राजा हंस कह्यौ, शत्रु के उपकार, औ प्रीति की प्रतीति, कबहू न करिये; जौ करिये, तौ जैसें रूख कौ सोवनहारौ गिरकै पछताय, तैसें पछताइये। बहुरि बगुला बोल्यौ, महाराज! ह्यां तें जब मेघबरन गयौ, तब चित्रबरन ने कह्यौ, अब मेघबरन कौं कर्पूरद्वीप कौ राज दीजै, अरु याकौ दुख दूर कीजै। कह्यौ है, "जो सेवक कष्ट पाय, स्वामी कौ काज करि आवै, ताकौ तबही भलौ कीजै।" मंची कही महाराज! यह उचित नाहीं; याहि और कछु देउ, अरु मेरी बात सुनि लेउ। कह्यौ है, "जाकौ जितनौ मान, ताकौं तितनौ दान।" नीच कौ उपकार करनौ, औ बारू मांहिं घी ढारनौ, समान है; पुनि जौ नीच कौं बढ़ाइये, तौ मुनेश्वर की भांति होय। राजा कही, यह कैसी कथा है? तब गौध कहनि लाग्यौ;

गौतम ऋषि के तपोबन मांहिं महातपी नाम एक मुनि रहै; ताके आश्रम में काग के मुख तें छूटि, मूसा कौ सिसु गिर्‌यौ। वाहि देखि, दया करि, मुनि ने अपने निकट राखि, कन खवाय, बड़ौ कियौ। तब एक बिलाव

वाके खैवे की घात में आयौ करै; यह देखि, मुनि ने मंच करि, वाकौं बिलाव कियौ। फेरि एक स्वान आवन लाग्यौ; बहुरि वाने वाहि स्वान कियौ। पुनि एक सिंह आयौ करै; तब तिन ताहि सिंह बनायौ; पर निज मन मांहिं मूसा ही करि जानै। यह चरित्र देखि, गांव के लोग कहनि लागे, देखो रे! यह मूसा तें सिंह भयौ, सो या मुनि कौ प्रसाद है। या बात कौं सुनि, वा सिंह ने निज मन में बिचार्‌यौ कि, जौलौं वह मुनि रहैगौ, तौलौं सब लोग मोहि ऐसें ही कहत रहैंगे; तातें या मुनि कौं मार खाऊं, तौ यह कलंक छूटै। ऐसें वह जी में ठानि मुनि के खानि कौं चल्यौ। तद मुनि ने वाकौ अंतरगति जानि, पुनि वाहि मूसा कौ मूसा बनायौ। तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! नीच कौं ऊंच पद कबहू न दीजै। यह बात सहज नाहीं, सुनौं! जैसें एक बगुला ने माछरी खात खात, नये मास खान कौ इच्छा करि, अपनौ गरौ कटायौ, कहूं तैसें न होय। राजा कही, यह कैसी कथा है? पुनि गौध कहतु है;

मालव देस में पद्मगर्भ नाम सरवर; तहां एक बूढ़ौ बगुला असमर्थ आप कौं उद्वेगौ सौ जनाय रह्यौ करै। वाहि दूर तें देखि, एक कैंकड़ा ने पूछ्यौ कि, भाई! तू दुःखी क्यौं है! अरु अहार छोड़ि, उदास ह्वै काहे बैठि रह्यौ है! उन कही, बंधु! मेरौ जीवन तौ माछरी तें; सो धौमर कहतु है कि, काल सकारे आय, या सरोवर कौ सब

माछरी मारिहैं, या दुख तें मैं आज ही तें अहार तज्यौ। यह सुनि, या तड़ाग की माछरियन आपस में कह्यौ कि, या समें बगुला हमरौ हितू सौ जनातु है, अरु अब याही सें आपनौ बचाव ह्वै दीसतु है। कह्यौ है, "जौ उपकार करै तौ शत्रु ह्वै तें संधि करिये; क्यौंकि, उपकार है सो मिचाई कौ कारन है।" आगै, माछरियन बगुला सें कह्यौ कि, तुम काहू भांति हमें राखि लेउ। उन कही, तिहारे राखिवे कौ एक उपाय है कि, जौ मैं तुम्हें और सरोवर में लै जाऊं तौ बचौ। विननि कही, सोई करौ। पुनि वह बगुला एक माछरी मुख में लै जाय, और वाहि खाय आवै, बहुरि लै जाय। ऐसें ही सब माछरी खाई। तब एक कैंकड़ा ने ह्वै बगुला सें कह्यौ, मोहू कौं लै चल। यह नयौ मास खान कौ मनोरथ करि, वा ह्वै कौं लै चल्यौ, अरु जहां बैठि माछरी खाई ही, तहां लै जाय धर्‌यौ। माछरीन के कांटे ह्वां डरे देखि, कैंकड़ा ने बिचार्‌यौ कि, मृत्यु तौ दीसति है; पर ऐसौ कह्यौ है, "जौलौं डरिये तौलौं भय; अरु जब भय आयौ तब मरिये कै मारिये।" क्यौंकि, जूझ मरिये तौ मन में पछतावौ न रहै। ऐसें बिचारि, विन बल करि बगुला कौ गरौ काटि डार्‌यौ; बक मर्‌यौ। तातें हौं कहतु हौं कि, अपूरव बात करनौं कबहू न बिचारिये; खोटौ खुटाई नहीं तजतु। पुनि चिचबरन कही, अहो! मेरे मन में ऐसौ आयौ है कि, मेघबरन कौं ह्यां कौ राज दीजै, तौ घर बैठे आछे पदारथ लीजै।

गीध कही, महाराज! अनभई बात कौं बिचारि जो सुख मानै सो दुख पावै; जैसें कुम्हार के भांडे फोरि, ब्राह्मन ने दुख पायौ। राजा कही, यह कैसी कथा है? तहां गीध कहतु है;

कोटर नगर में एक देवशर्मा नाम ब्राह्मन रहै। तिन मेष की संक्राति में काहू यजमान तें एक करुआ सातू कौ भर्यो पायौ, सो लै करि राचि कौं काहू कुम्हार के घर रह्यौ, अरु करुआ वाके बासननि पर धर्यो। तब निज मन मांहिं बिचारनि लाग्यौ कि, या सातू कौं बेचि सात दमरी पाऊंगो, ताकौ कछु और ल्याऊंगो; वाहि बेचि और, और बेचि और। या भांति जब धन बढ़ैगो, तब नारियर सुप्यारी लै बड़ो व्योपार करि धन बढ़ाय चार विवाह करिहौं। कह्यौ है, "ब्राह्मन चार विवाह करै, औ चारौं वरन व्याहै; क्षत्री तीन, वैश्य द्वै, शूद्र एक व्याहै।" पुनि जब वे स्त्री आपस में लरिहैं, तब हौं जाकौ औगुन देखिहौं, ताके मारिवे कौं ऐसें लौठिया घालूंगो। यह कहि, ज्यौं लौठिया घाली त्यौं सतुआ के करुआ समेत उनि कुम्हार के भांड़े फोरे। बहुरि कहनि लाग्यौ कि, हाय! मेरौ कियौ करायौ घर गयौ! आगै, भांड़े फूटे देखि कुम्हार ह्व ने वाके सब कपरा खोस वाहि तिरस्कार करि घर तें निकार दियौ।

तातें हौं कहतु हौं कि, आगै कौ मनोरथ करै सो दुख पावै। पुनि हंसकरि राजा ने गीध सों पूछी कि, अब

कहा करनौं उचित है, सो कहौ। गीध बोल्यौ, महाराज! जौ मंच राजा चूकै, तौ मंची मूरख कहावै; जैसें सांकरी गली में हाथी न चलै, तब महावत कूढ़ कहावै। तातें हौं कहतु हौं कि, गढ़ तौ तिहारे पुन्य प्रताप तें औ हमारे उपाय सें हाथ आयौ; अरु तिहारी जौत हू जगत ने जानी; पर अब अपने देस कौं चलौ तौ भलौ; नातौ बरषाकाल मूंड़ पर आयौ; औ बैरी बराबर कौ है; यातें जौ अब अटकिहौ, तौ पराई भूमि में तें निकसनौ कठिन ह्वैहै। तातें मेरे जानि राजा हिरन्यगर्भ तें सुख सें मिलि हलभल करि निज देस कौं पधारियै। कह्यौ है, "जो मंची धर्म राखै, सो राजा कौं सुहाती अनसुहाती कहै; औ राजा हू बिचारे अनबिचारे प्रमान करै; ऐसौ मंची राजा कौ हितकारी जानियै।" पुनि कह्यौ है, "जो अपने समान होय, तासों प्रीति करियै;" क्यौंकि, लरनौ खांड़े कौ धार है, यह दोऊ ओर तकतु है। पुनि युद्ध में जूझिवे के समें मित्र धन जन कीरत औ अपनकौ शत्रु के सनमुख मृत्यु के हाथ देनौ होतु है। पुनि राजा कही, जो यह बात ऐसें ही हो, तो तुम प्रथम ही क्यौं न कही, जो घर ही बैठ रहते? मंची बोल्यौ, महाराज! हमारौ बचन तुम आदि अंत लौं न मान्यौ। मेरौ बिचार बिग्रह करनि कौ न हो; क्यौंकि, राजा हिरन्यगर्भ के गुन प्रीति करिवे जोग हैं, वासों बैर न बूझियै; कह्यौ है, "जो सत्यवंत धर्मात्मा प्रतिष्ठित औ अनेक संग्राम जीत्यौ हौय, कै

जाके भाई बंधु अधिक हैांय, तातें युद्ध न करिये;" क्यौंकि सत्यवंत अपनौ बोल निबाहै; बलवंत पै कछु बल न चलै; धर्मात्मा जीत्यौ न जाय; आपत्य में वाकौ धर्म होय सहाय; प्रतिष्ठित के नाम ही तें लोग परांय; जिन अनेक युद्ध जीते हैांय, ताकौ धाक ही सेां सब डर जांय; औ जाके भाई बंधु अधिक हैांय, वह कबहू न हारै। यातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! अब संधि करिये; क्यौंकि, ये सब गुन राजा हिरन्यगर्भ में हैं। इतनी बात सुनि, राजा हंस के दूत ने अपने राजा तें जौं की त्यौं जाय कही। तब चकवा ने दूत सेां कह्यौ कि, भाई! यह तौ तुम अति मंगल की बात सुनाई; पुनि जाय समाचार ल्यावौ। दूत गयौ; तब राजा हंस ने चकवा सेां पूछी कि, तुम काहे कौ मंगल मान्यौ सो कहौ। मंत्री कही कि, महाराज! कह्यौ है, "इतनेन तें संन्धि न करिये, बालक वृद्ध रोगी लोभी कायर बैरागी देवगुरुनिंदक;" क्यौंकि, बालक कौ तेज अति अल्प, तातें दंड औ प्रसाद न कर सकै; यातें वाकौ साथ कोऊ न देइ। बूढ़ौ औ रोगी उछाह करि हीन रहै; ताहि सहज ही मारिये। लोभी अंत संधि करै; यह जानि, वाके संग कोऊ न लरै। कायर आप ही रन तें भाजै। बैरागी सब तें उदास रहै, काहू बात में मन न देइ, सो आपही हारै। देवगुरुनिंदक, अधर्म तें आप ही आप नष्ट होय; तातें ऐसे रिपु कौं युद्ध करि मारिये। पुनि कह्यौ है, "जो राजा विद्यावान होय, शस्त्रविद्या जानै,

देस काल पहिचानै, अपनौ परायौ मानै, गुन औगुन मन आनै, प्रभुता सहित रहै, जहां जैसौ उचित, तहां तैसौ कहै, नीति करि सांच भाषै, न्याव में काहू कौ कान न करै, मंच सदा गुप्त राखै, सो राजा समुद्रांत पृथ्वी कौ राज भोगै।" इतनौ कहि, बहुरि चकवा बोल्यौ, महाराज। जौ हू गीध मंची ने संधि करबे की कही, पर राजा चिचबरन अति अभिमानी है, वह वाकौ कह्यौ न मानिहै। कह्यौ है कि, "भय बिन प्रीति न होय; अरु संधि कियै दोऊ ओर कुशल है।" यासों मेरे मन में एक बात आई है, सो होय तौ भलौ कि, सिंगलदीप कौ राजा सारस मेरौ परम मित्र है, महाबल वाकौ नाम; ताकौं हौं लिखौं कि, वह चिचबरन के जंबूद्वीप पै जाय मडराय; अरु ह्यां तुम अपनी सैना कौं जोरि, याकी सैना कौं पीर उपजाओ; दिन रात उठत बैठत निकरत पैठत दबाओ, तौ जै पाओ। कह्यौ है, "दोऊ ताते हौंय तौ, मिलैं लोह की भांति।" राजा कही, नीकौ जानौ सो करौ। तद चकवा ने विचित्र नाम बगुला कौं पत्र दै सिंगलदीप पठायौ; अरु वहां पाती पावत प्रमान, सारस चढ़ि धायौ। आगै, गीध मंची ने राजा चिचबरन सों कह्यौ कि, महाराज! यह मेघबरन काग गढ़ में अनेक दिन रह्यौ, याहि पूछौ जु, राजा हंस प्रीति करबे जोग है कै नाहीं? तब राजा ने काग सों कह्यौ कि, अहो! राजा हंस, औ वाकौ मंची कैसौ है? काग बोल्यौ, महाराज! राजा हंस

साक्षात युधिष्ठिर है; अरु मंची चक्रवाक की समान चतुर दूजौ पृथ्वी में नाहीं। राजा कही, तू वाहि कैसें डहकायौ, अरु ह्यां कौन प्रकार रहन पायौ? काग बोलौ कि, महाराज! राजा जाकी प्रतीत करै, ताहि डहकावनौ कितेक बात है? जैसें जाकी गोद में सोवै, औ सोई मारै, तौ सोवनवारे कौ कहा बसाय? चकवा ने मोहि देखत ही पहिचान्यौ हो; पर राजा हंस ने मंची कौ कह्यौ न मान्यौ; ताही तें मैं वाहि ठग्यौ, अरु ह्यां रहनि पायौ। महाराज! राजा हंस बड़ौ साहसी औ सत्यवादी है। कह्यौ है, "जो आप सत्यवक्ता होय, सो और कौं हू आप सौ जानै;" जैसे एक सत्यवक्ता ब्राह्मन ने और कौ बात सत्य मानि, बोकरा खोयौ। राजा कही, यह कैसी कथा है! तब काग कहनि लाग्यौ;

गौतमारन्य में एक ब्राह्मन यज्ञ के निमित्त बोकरा माथे लियै आवतु हो; वाहि तीन ठगनि देखि, बोकरा लैन कौ आपस में मतौ कियौ; अरु वे तीनौं साध कौ भेष बनाय, तीन ठौर जा बैठे। जब वह ब्राह्मन पहिलै साध के निकट गयौ, तब उन कह्यौ, अरे ब्राह्मन! यह कूकर माथे धरि काहे लियै जातु है? इन कही, कूकर नाहीं, यज्ञ कौ बोकरा है। यह सुनि, वह साध चुप रह्यौ। आगै, दूसरे के पास गयौ; पुनि उन हू कह्यौ रे देवता! मूंड़ पै स्वान क्यों चढ़ायौ? इतनौ सुनि, इन बुरौ मानि, वाहि सीस तें उतरि देख्यौ, अरु संदेह करतु चल्यौ कि,

जो देखतु है, सेा याहि कूकर कहतु है; पर मेरी दृष्टि में तैा बेाक जनातु है। ऐसें सेाचतु सेाचतु, वह तीजे के निकट जाय पहुंच्यौ; तद उन हू कह्यौ, अहेा बिप्र! कूकरा सिर तें डारि दै, तैं यह कहा अनर्थ कियैा, जु स्वान मूंड़ पै धरि लियैा? यह बात वाके मुख तें सुनत प्रमान, वाहि कूकर जानि, बिप्र ने माथे तें पटक, अपनैा पंथ लियौ; अरु विननि बेाक लै अपनैा मनोरथ पूरौ कियौ। तातें हैं। कहतु हैं। कि, दुष्ट के बचन तें साध की हू बुद्धि चलै। बहुरि, जैसें चित्रबरन ऊंट कैं। सिंह ने मारि खायौ; राजा पूछौ, यह कैसौ कथा है? पुनि वायस कहतु है;

एक बन में मदोत्कट नाम सिंह; ताके तीन सेवक, एक तेंदुआ दूजैा काग तीसरौ स्यार। विन तीननि एक दिन वा बन में ऊंट देख्यौ; तब उननि वाहि पूछ्यौ, तू कहां तें आयौ? उन कह्यौ, मैं साथ भूलि आयौ हैं।। यह सुनि, विन तिननि वाहि लै जाय, सिंह सेां मिलायौ। सिंह ने हू वाहि अभयदान दै राख्यौ, अरु चित्रबरन नाम दियौ। पुनि वह सबन के साथ हिलमिल रहनि लाग्यौ। कितेक दिन पाछै, बरषाकाल में, कई एक दिन की झरी लागी; औा वा समय अहार न जुर्‍यौ; तब विन तीननि आपस मांहिं कह्यौ कि, भाई! अब कोऊ ऐसौ उपाय करियै जु, सिंह ऊंटहि मारै, तैा अहार खैवे कैं। मिलै। तेंदुआ बेाल्यौ, मित्र! याहि तैा सिंह ने अभयदान दियौ है, सो कैसें मारिहै? काक कह्यौ, अहो!

समय पाय राजा हू पाप करतु है; जैसें भूखी नागिनि अपने अंडा खाय, भूख्यौ कहा न करै? कह्यौ है, "मतवारौ असावधान रोगी वृद्ध अधीर कामी क्रोधी लोभी भूख्यौ डर्‌यौ आदि ये सब अधर्म कौं न जानैं न मानैं।" ऐसें बतराय वे सिंह के निकट गये अरु हाथ जोरि सनमुख ठाढ़े रहे। तब उनि पूछौ, कछु खैवे कौं पायौ? इननि कही, महाराज! बहुत जतन कियौ पर कछु हाथ न आयौ। सिंह कही, अब कैसें बचिहौं? बहुरि काग कही, महाराज! आप हाथ आयौ अहार छोरतु हौ, तातें और हू ठौर नाहीं मिलत। सिंह बोल्यौ, सो कहा? इन झुक कान में कही, या चित्रबरन कौं मारि खाओ। उनि कही, जाहि मैं अभयदान दियौ ताहि कैसें मारौं? कह्यौ है, "भूमि सुवर्न अन्न आदि दान बड़े दान हैं; पर शरनागत कौ राखिवौ इन हू तें अधिक फल देतु है।" बहुरि काग कही, महाराज! तुम जिन मारौ, हम ऐसौ उपाय करिहैं जु वह आप ही जीवदान करि निज सिर तुमकौं दैहै। यह सुनि सिंह चुप ह्वै रह्यौ। तब काग ने वाकौ मनोरथ जानि कपट करि चित्रबरन सों कह्यौ कि तोहि तौ राजा ने अभयदान दियौ है; परंतु या समय तुम विन तें अहार की मनुहार करौ, तौ राजा तुम तें अति प्रसन्न होयगौ। ऐसें वाहि फुसलाय सिंह पास लै जाय उन तीननि हाथ जोरि कह्यौ, महाराज! यह चित्रबरन कहतु है कि, अहार तौ कहूं नाहीं मिलतु; औ तुम अनेक दिन के भूखे हौ,

तिहारौ दुख मो पै नाहीं देख्यौ जातु; तातें तुम मोहि मार खाओ। कह्यौ है, "राजा तें प्रजा कौ रक्षा है; प्रजा कौ मूल प्रजापति है; अरु मूल रहे तौ डारि पात फूल फल आप ही तें हैंाय।" पुनि सिंह कही, अरे! जल मरियै सो भलौ; पर ऐसौ कर्म न करियै। तब स्यार बोल्यौ, महाराज! ऐसें ही कह्यौ है। तब तौ चित्रबरन हू ने सिंह की दृढ़ता जानि, मनुहार करि कह्यौ, महाराज! आप मेरौ सरीर खाओ। इतनी बात वाके मुख तें सुनत ही सिंह ने वाहि दौरी मार्‌यौ अरु सबनि मिल भक्षन कियौ। महाराज! तातें हैं। कहतु हैं। कि, दुष्ट के उपाय औा उपदेस सों साध हू की मनसा डिगै। बहुरि राजा चित्रबरन बोल्यौ, अहो मेघबरन! तुम इतेक दिन शत्रुनि मांहिं कैसें रहे, अरु कौन भांति उन तें तुम तें प्रीति निभी? वायस बोल्यौ, महाराज! कह्यौ है कि, "स्वामी के काज शत्रु हू कौं माथे चढ़ाइयै औा गिराइयै, ऐसें जैसें नदी पाय धोय धोय रूख कौं गिरावै।" पुनि जो सुबुद्धि होय सोऊ अपने प्रयोजन के निमित्त बैरी हू कौं माथे चढ़ाय निज काज साधै; जैसें बूढ़े सर्प ने सिर चढ़ाय मेंडुक खाये। राजा कही, यह कैसी कथा है? तब काग कहतु है:

काहू बन में एक अति बूढ़ौ मंदविष नाम नाग रहै; सो अहार कौं फिर न सकै; तातें सरोवर के तीर पर्‌यौ रहै। काहू दिन एक दादुर ने वाहि देखि, दूर तें कह्यौ, अहो! तुम जो अहार नाहीं खोजतु परे ई रहतु हौ

सो कहा है? उन कही, हौं कहां जाऊं, औ मो अभागे कौं को बूझतु है? इतनी सुनि विन याहि आचार्य्य जानि कह्यौ कि तुम अपनी अवस्था कहौ; तब सर्प कहनि लाग्यौ;

या ब्रह्मपुरा में कौंडिन्य नाम ब्राह्मन; वाकौ बीस बरष कौ पुत्र पढ़्यौ गुन्यौ मैं अपने अभाग्य तें डस्यौ; तब कौंडिन्य सुसील नाम पुत्र कौं मस्यौ देखि सोग सों घूमि भूमि पै गिरयौ; पुनि वाके भाई बंधु औ गांव के लोग सब आय जुरे। कह्यौ है, "सुख दुख, समें असमें, शुभ अशुभ में, जे इष्ट मित्र बंधु हौंय, ते सुधि लेंइ।" आगै, एक कपिलदेव नाम ब्राह्मन ने आय, याहि समझाय बुझायकै कह्यौ, अरे कौंडिन्य! तू अति मूर्ख है जु, अब खेद करतु है; क्योंकि, संसार की तौ यहौ रीति है कि इत उपज्यौ, उत मस्यौ; तातें याकौ शोक कहा? देखौ, सेना सहित युधिष्ठिर से पुरुष न रहे, तौ और की कहा चली! बहुरि, देहधारी कौं मृत्यु ऐसें लगी रहति है कि जैसे संपत में बिपत, प्राप्ति में हानि, संयोग में बियोग, ज्ञान में ग्लानि। पुनि यह देह छिन छिन यौं घटति है, ज्यौं जल में काचौ घट घटै। कह्यौ है, "सरीर जोबन रूप द्रव्य ठकुराई मिताई औ एक ठौर कौ बास ये सबब अनित्य हैं;" यातें जो ज्ञानी चतुर पंडित होय, सो इनके गये कौ सोच न करै। अरु सुनौ! जैसें नदी के प्रवाह में जहां तहां के काठ आय मिलतु हैं, तैसें या संसार के जीव हैं; इन तें जेतौ सनेह कीजै, तेतौ दुख

होय; क्योंकि, जग में सदा काहू कौ साथ नाहीं निबहतु; अरु जौ अपनी ही देह साथ न देय तौ और की कहा चली? कह्यौ है, "माया किये यौं दुख बढ़ै, जौं कुपथ्य किये रोग; पुनि, काल ऐसें चल्यौ जातु है, जैसें नदी कौ जल।" यासें या संसार की माया छांड़ि दीजै, अरु साध की संगति कीजै; संगति साध की सब सुख सें अधिक सुख देतु है।

तीरथ ब्रत जग देवता, लाल मंत्र द्रुम खेत;
काल पाय फल देतु हैं, साध सदा फल देत। (दोहा)

अरु मित्र, सुनौ! जैसें बरषाकाल में चाम के बंधन ढीले ह्वै जातु हैं, तैसें वृद्ध अवस्था में या सरीर के। इतनी बात कहि, पुनि कौंडिन्य सें कपिलदेव ने कह्यौ, भाई! अब दुख जिन करौ, अपने प्रान राखिवे कौ उपाय करौ। यह सुनि, कौंडिन्य उठि बोल्यौ, बंधु! अब या गृहरूप कूप में न रहिहौं, बन में जैहौं। पुनि कपिलदेव कही, भाई! अनुरागी कौं बन ह्वै में दोष, और उदासी कौं घर ही में मोक्ष। कह्यौ है, "जो जन फल की वासना छांड़ि विष्णुभजन करै, ताहि बन और घर समान है; अरु कोन ह्वै आश्रम में रहि दुख सहि धर्म कर्म दान तप ब्रत यज्ञ करै, और सब जीव पै दया राखै, ताही कौं तपसी जानिये।" पुनि, जो प्रान राखिवे कौं अहार, संतन कौं मैथुन करै, और सत्यबचन भाषै, सो दुखरूपी समुद्र कौं तरै। कह्यौ है, "आत्मारूपी नदी के संयम है पुन्य तीर्थ

सत्य जल, शील करार, दया तरंग; तामें जो स्नान करि अंतःकरन शुद्ध करै, सो जनम मरन व्याधि तें छूटै।" यह संसार सार नाहीं; मनुष दुख कौं सुख करि मानत हैं; जैसें बोझ कौ बाहनिहारौ मोट पाय सुख मानै; तैसें मनुष की गति है। बहुरि कौंडिन्य बोल्यौ, भाई! तुम साच कहतु हौ, यह बात ऐसें ही है। इतनौ कहि, विन लांबी सांस लै मोहि तौ यह आप दियौ कि तू मेंडुकन कौ बाहन होऊ; अरु वाने आप गृहस्थाश्रम छांड़ि सन्यास धर्म लियौ। तातें अब मैं वाकौ दियौ आप भुगतवे कौं आयौ हौं। यह बात सुनि, दादुर ने अपने राजा सों जाय कही; तब जलकुंद नाम मेंडुक मेंडुकन कौ राजा बाहर आयौ। पुनि नाग ने वाहि प्रनाम करि मूंड़ पै चढ़ायौ, अरु ताल के चहुं थां लै फिर्‌यौ। दूसरे दिन जब वह आय चढ़्यौ तब वह चल न सक्यौ। पुनि दादुर बोल्यौ, उतावलौ चल। सांप कही, स्वामी! मो पै मारे भूख के चल्यौ नाहीं जातु। उन कह्यौ, तू मेरी आज्ञा तें सेना के मेंडुक खायौ कर। बहुरि सांप ने हाथ जोरि कह्यौ, महाराज! तुम मेरी बड़ौ सहायता करी। यौं कहि, पुनि खानि लाग्यौ। कितेक दिन में सब मेंडुकन कौं खाय उनि जलकुंद कौं हू खायै। तातें हौं कहतु हौं कि जो चतुर होय, सो अपनौ कार्य्य साधवे के लयें शत्रु हू कौं माथे चढ़ावतु है। महाराज! ऐसें ही मैं हू राजा हिरन्यगर्भ सों प्रतीत बढ़ाय, गढ़ में रह्यौ। आगै, राजा चिचवरन

ने गीध सेां कही कि बाबा जू! अब राजा हंस हमारौ होय रहै, तै। वाकेां बसाइयै; नातै। अपने लेाग।

यह बात राजा चित्रबरन मंत्री तें कहनि न पायौ हो कि एक दूत ने आय कह्यौ, महाराज! सिंगलदीप कै। राजा सारस तिहारे देस पै चढ़ि आयौ है; जेा नगर बचायौ चाहै।, तै। बेग सुध लेउ; नातौ रहनै। कठिन है। यह सुनि, राजा मैांन गहि रह्यौ, अरु गीध मंत्री ने मन में कह्यौ कि, होय न होय यह चकवा कै। काम है। पुनि राजा मयूर क्रोध करि बोल्यौ कि यह काम रहै; चलेा, प्रथम वाही कैां खेद काढ़ें। गीध कही, महाराज! शरद-काल के मेघ की भांति वृथा न गाजिये, बल करि दिखाइयै। नीति तौ येां है कि एक ही बेरि दिस दिस के लेागनि सेां बैर न करियै। कह्यौ है, "अनेक चैंटी हू मिलें तो गज कैां मारैं।" तातें महाराज! मेरे जान तै। राजा हंस तें बिन प्रीति कियै ह्यां तें निभनै। हू कठिन होयगे।; क्यैांकि, चलत ही शत्रु पीछौ करिहै; यातें बिचार करि कार्य्य करौ; बिन बिचास्यौ काम कियै पाछै पछितावै। होतु है; जैसें बिना बिचारे न्यौर मारि, ब्राह्मनी पछताई। राजा कही, यह कैसी कथा है? तब गीध कहतु है;

उज्जैन नगरी में एक माधो नाम ब्राह्मन; ताकी स्त्री ने पुत्र जायौ। सु एक दिन वह ब्राह्मनी पुत्र की रखवारी ब्राह्मन कैां राखि, आप नदी न्हैवे कैां गई; अरु ताही समय पंडित कैां राजा कै। बुलावै। आयौ; तब वाने

बिचार्‌यौ कि, जौ हौं न जाऊंगौ, तौ राजा जो दान देइगौ, सो और कोऊ लै जायगौ। कह्यौ है, "लैन दैन के काज में उतावल न करिये, तौ वह औसर बीते हाथ न आवै;" औ जौ जाऊं, तौ बालक कौंन कौं दै जाऊं! यह बिचारि, वह ब्राह्मन, एक बहुत दिन कौ पोष्यौ न्यौर हेा, ताहि वा छोहरा के निकट रखवारी राखि, आप राजा के वहां गयौ। आगे, मैाड़ा के निकट एक सर्प आयौ, ताहि न्यौर ने मारि खायौ। जब ब्राह्मनी आई, तब न्यौर दौरि वाके पायन पै गिर्‌यौ। उन याकौ मुंह लोहू भर्‌यौ देखि, निज मन में जान्यौ कि, इन चांडाल ने मेरौ पूत मारि खायौ। यह समझ ब्राह्मनी ने न्यौर कौं मारि डार्‌यौ। पुनि आगू जाय देखै तौ छोहरा खेलतु है अरु वाके निकट सांप मर्‌यौ पर्‌यौ है। तब वह पछतायकै बोली कि, हाय! मैं पापिन यह कहा कर्म कियौ जु बिन देखे भाले बापरे न्यौर कौ जीव लियौ? तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! बिन बिचारे कबहू कछु काज न कीजै; अरु काम क्रोध लोभ मोह तज दीजै; क्योंकि, इनही दोषन तें राजा पृथु जन्मेजय रावन औ कुंभकरन मारे गये। अरु देखौ! शुभाव छांड़ि परशुराम औ अंबरीच ने जितेन्द्री होय अनेक दिन राज कियौ। तातें हौं कहतु हौं कि, महाराज! जौ मेरौ कह्यौ मानौ, तौ वा राजा तें प्रीति करि चलौ। कह्यौ है, "प्रथम तौ पराई भूमि मांहिं जाय डेरा करनौ कठिन; अरु किये पाछै

उठावनौ अति कठिन है।" यासों कार्य्य साधिवे कौं चार उपाय कहे हैं; साम दान दंड भेद; पर इनमें साम उपाय सों बेग काम सिद्ध होतु है। राजा कही, प्रीति उतावली कैसें होय? गौध बोल्यौ, बेग ही होय। कह्यौ है, "साध देखत ही मिलै; औ मूरख कछु न समझै; जौ ब्रह्मा हू वाहि चितावै, तौहू न जानै न मानै;" अरु महाराज! राजा हंस तौ बड़ौ साधु है, औ वाकौ मंची सर्वज्ञ नाम चकवौ अति चतुर है; मैं काग के कहे तें उनकी करनी औ करतूत जानौ। कह्यौ है, "जाहि न देख्यौ होय, ताके गुन औ कर्म सुनि सुनिकै वाहि पिछानियै।" राजा कही, अनेक बात करिवे तें कहा प्रयोजन? अब जो उचित होय, सो करौ। या बात के कहत ही, गौध राजा तें आज्ञा लै गढ़ में गयौ; अरु अपने आवन कौ समाचार चकवा सों कहि पठायौ। वाने सुनत ही अपने राजा कौं जाय सुनायौ; तब राजा हंस ने चकवा सों कह्यौ कि, अब जौ गौध के पाछै और कटक आवै, तौ कहा करियै? चकवा बोल्यौ, महाराज! यह संका करवे कौ ठाम नाहीं; क्यौंकि, यह गौध बड़ौ पुन्यात्मा है, यातें कछु चिंता नाहीं। कह्यौ है, "बिन भय की ठौर संदेह करनौ कुबुद्धि कौ काम है।" इतनी कहि, चकवा ने जाय गौध कौं ल्याय, राजा हंस सों गढ़ के द्वार आगै मिलायौ। तद राजा हंस ने गौध कौं आदर दै बैठायौ। पुनि गौध बोल्यौ, महाराज! यह गढ़ आपकौ है, जाहि दियौ चाहौ

ताहि देउ। हंस कही, यह बात ऐसें ही है। बहुरि चकवा बोल्यौ, सुनौ! हमारौ तिहारौ एक ही है; पर अब कछु अधिक कहिवे कौ प्रयोजन नाहीं। गौध बोल्यौ, महाराज! नीतिशास्त्र में कह्यौ है कि, "लोभी कौं धन दै भलौ मनाइयै; उग्र होय, ताकौ कर जोर स्तुति गाइयै; मूरख कौ कह्यौ राखियै; पंडित तें सत्य भाषियै; देवता की निष्कपट पूजा कीजै; मित्र बंधु कौं अति आदर दीजै; सेवक औ स्त्री कौं दान मान तें बस करियै; तौ या कठिन संसार में सुख सों दिन भरियै।" तातें हौ कहतु हौं कि, जो उचित होय सो अब करियै। चकवा बोल्यौ, जो संधि की रीति है सो कहौ, अधिक बात कहिवे तें कहा काम! पुनि राजा हंस ने कह्यौ कि, संधि के कितेक प्रकार हैं, सो कहौ।

गौध बोल्यौ, धर्मावतार! हौं कहतु हौं, आप चित दै सुनियै। कह्यौ है कि, "जब बलवान पै अति बलवंत चढ़ि आवै, अरु वा पर याकौ कछु बल न चलै, तब संधि उपाय करै।" संधि के नाम; कपाल, उपहार, संतान, संगत, उपन्यास, प्रतीकार, संयोग, पुरुषान्त, अदृष्टनर, आदिष्ट, आत्मामिष, उपग्रह, परिक्रय, उच्छिन्न, परदूषन। अरु ये संधिगति हैं; समानता तें दै राजा मिलैं, सो कपालसंधि कहावै; दान दै प्रीति करै, ताहि उपहारसंधि कहतु हैं; दासी दै मिलै, वाहि संतानसंधि कहियै; पांच सात मिल बीच में परि प्रीति करावैं, ताहि संगतसंधि

कहि गावैं; दै राजा एक ही काज करि, आपस मांहिं हित राखैं, सेा उपन्यासंधि; अब हम इनकौ काज सारैं, पाछै ये हमारे काज आयहैं, ऐसें बिचारि जेा मिलै, सो प्रतीकारसंधि; एक ही शत्रु पर दै नरपति चढ़ैं, अरु पैंडे में मिलैं, वह संयोगसंधि; अपने जेाधान कों साथ लै मिलै, वाहि पुरुषान्तरसंधि कहैं; तुम वाहि मारौ, हम तिहारे ह्वै रहैं, यों कहि मिलै, सो अदृष्टनरसंधि; भूमि दै प्रीति करै, वह आदिष्टसंधि; प्रान राखिवे कौं सर्बस देय, ताहि आत्मामिषसंधि कहैं; अपनेा कठक सेवा कों पठावै, सेा उपग्रहसंधि; दै राजा आपस में बैरभाव राखैं, पुनि काहू शत्रु के घेरे में आय दोऊ मिल जांय, सेा परिक्रयसंधि; सारभूमि दै मिलै, वह उच्छिन्नसंधि; जेा द्रव्य उपजैगेा, सेा तुम कौं दैहैं, पर निकट जिन आओ; ऐसें कहि मिलै, वाहि परदूषनसंधि कहिये।

इतेक बातें कहि, गौध बोल्यौ, महाराज! ये सब संधि कहीं। पर या समय उपहारसंधि ही भली है: क्योंकि जेा बलवंत अपनेा देस छांड़ि, गांठि कौ धन खाय आवै, सेा बिन भेट लिये न जाय; तातें बिन दिये संधि न होय; अब धन दीजै, औ उपहारसंधि कीजै। चकवा बोल्यौ, सुनेा! यह अपनेा वह परायेा, ऐसेा जे बिचारतु हैं, ते अधम जन हैं; अरु उत्तम जननि कौ तेा ऐसेा बिचार नाहीं; वे तेा सब सृष्टि ही कौं कुटुंब जानतु हैं। कह्यौ है, "जे पुरुष पर स्त्री कौं माता करि मानैं, औ दूजे के

धन कौं माटी समान जानैं; पुनि, सब जीवन कौ जीव अपनौ सौ गनैं तेई या जगत में पंडित औ धर्मात्मा हैं।” बहुरि गीध कह्यौ, तुम यह कहा कहतु हौ; सुनौ! मेरे जान, जिन संसार में आय या छिनभंग देह कौ धर्म छांड़्यौ, तिन सर्बस गंवायौ। कहतु हैं कि, “जैसें जल मांहिं पवन चलै, चंद्र कौ प्रतिबिंब चंचल रहतु है; तैसें ही प्रानी कौ प्रान सदा अस्थिर रहतु है;” तातें या मनुष कौं उचित है कि, देह की माया छांड़ि, अपने कल्यान कौ काज बिचारै, अरु सदा सर्बदा सज्जननि की संगति करै; क्योंकि, वासों धर्म औ सुख दोऊ मिलें। या सों हौं कहतु हौं, जौ मेरौ कह्यौ मानौ, तौ ऐसें ही करौ। कह्यौ है, “सहस्र अश्वमेध कौ समान सत्य है; पर जोखियै तौ सत्य ही अधिक होय।” यातें हौं कहतु हौं कि, अब दोऊ नरपति सत्य बीच दै मिलौ, अरु उपहारसंधि करौ, तौ अति उत्तम है; क्योंकि, या में सांप मरै न लाठी टूटै। चकवा बोल्यौ, तुम नीकी बात कही। यह सुनत ही, राजा हंस ने रत्न वस्त्र अलंकार द्रव्य दूरदर्शी गीध कौं दियौ; अरु विन हू लै प्रसन्न ह्वै सर्वज्ञ चकवा कौं साथ करि, राजा हंस सों बिदा होय, अपने कटक कौं प्रस्थान कियौ। ह्वां जाय, ह्यां कौ सब वृत्तांत सुनायौ; औ चकवा कौं राजा चित्रबरन तें अति आदरमान सों मिलायौ; तब राजा ने हू बड़े मान सों पान औ प्रसाद दै, चकवा कौं बिदा कियौ। इत चकवा राजा हंस के निकट

आयौ; अरु उत गौध ने चिचबरन कौं टेर सुनायौ कि महाराज! तिहारौ सब मन कौ बांछा पूजौ, अब कुशल क्षेम अपने देस चलौ। यह सुनि, राजा मयूर वहां तें चल्यौ, अरु आनंद तें अपनौ राजधानी में पहुंच्यौ। दोऊ राजा आप अपने देस में सुख सेां राज करनि लागे। इतनौ कथा कथ विष्णुशर्मा बोल्यौ, महाराजकुमार! अब जो कछु तुम्हें सुनिवे कौ इच्छा होय, सो कहौ। राजपुत्रनि कही, अहो गुरुदेव! हम ने तिहारे प्रसाद तें राजनीति के सब अंग जानें; सुख पायौ; अज्ञान नसायौ; मन कौ खेद गंवायौ, मानौं नयौ जन्म भयौ।

इति संधि नाम चतुर्थः कथासंग्रहः संपूर्णः।

लब्धप्रनाश: ।

विष्णुशर्मा बोल्यौ, सुनियै महाराजकुमार ! या कथा के पढ़े सुने तें, मनुष कठिनता के समुद्र कैं ऐसें तरै, जैसें बानर अपनी बुद्धि सें तस्यौ। अरु जो कपट सें काज लियौ चाहै, औ अधूरे काम मांहिं मनोरथ कहि देय, सो ऐसें ठगायौ जाय, जैसें मगरमछ ठगायौ गयौ। राजपुत्रनि कही, यह कैसी कथा है? तब विष्णुशर्मा कहनि लाग्यौ ;

समुद्र के तीर, काहू ठौर, एक जामन कौ पेड़ सफल ; तापै रक्तमुख नाम एक बानर रहै। काहू समें, सागर की लहर कौ मास्यौ, एक विकराल नाम मगरमछ वहां आयौ, अरु वृक्ष तरै कोमल बालू में जाय बैठ्यौ। तब मरकट ने वासें कही, अहो! तू आज मेरौ पाहुनौ है, यातें मैं जंबू फल दैतु हैं, तू मन भरि भोजन कर। कह्यौ है, "हितू होय कै अनहितू पंडित होय कै मूर्ख, भोजनसमय आवै, तासें अतिथिधर्म कीजै।"

आवै भोजन के समय शत्रु चोर चंडार ;
अतिथि जानि पूजा करैं जग में परम उदार। (दोहा)

आगै, वह मगर फल खाय, संतुष्ट भयौ। पुनि नित आवै, नित जाय ; भली भली बातें कहै सुनै ; फल खाय, अरु पाके पाके फल अपनी स्त्री हू के लियै लै जाय। एक दिन वाने पूछी, अहो कंत! ये अमृतफल तुम कहां तें ल्यावतु

है।? इन कही, मेरौ एक परम मित्र रक्तमुख नाम बानर है, सो मोहि प्रीति सहित ये फल देतु है। पुनि वह बोली, जो ये अमृतफल नित खातु है, ताकौ करेजा अमृत सम होयगौ; तातें तू वाकौ करेजा मोहि ल्याय दै, मैं वाहि खाय तृप्त होय, तोसें क्रीड़ा करौंगी। मगर कही, एक तौ वह मेरौ परम मित्र, दूजै फल कौ दाता; ताहि मैं कैसें मारि हैां? कह्यौ है. "संसार में द्वै प्रकार के भाई होतु हैं, एक तौ माजायौ, दूजौ मुखगायौ; पर अपने सहोदर भाइ तें वाहि अधिक जानियै। बहुरि वह बोली, सुनि! अबलौं तौ मेरौ कह्यौ तैं कबहू न उलंघ्यौ हो, पर आज तैं न मान्यौ; तातें मैं जान्यौ कि, जाहि तू बानर कहतु है, सो नाहीं; वह बानरी है, तातें तू आसक्त भयौ है; वाही के अनुराग तें दिन भर ह्वां रहतु है, सो मैं जान्यौ; याही तें तू मेरे पास आय, वाही की बातें नित हंसि हंसि कह्यौ करतु है; औ रात्रि कौं सोवत समें तेरौ अंग सिथिल रहतु है; मैं अब बूझी कि, तेरौ मन और नारि सेां लाग्यौ है; अधिक कहा कहैां, जब लौं अपनी सौत कौ करेजा न खाऊंगी, तब लौं अन्न पानी न करौंगी, अरु प्रान दै मरौंगी। यह सुनि डरि मगर दीन ह्वै बोल्यौ, प्यारी! हैां तेरे पाय परतु हैां, तू जिन रिसाय। यैां सुनि वाहि अधीन भयौ जानि, आंखनि में आंसू भरि बोली, अरे धूर्त्त कंत! आज लौं तौ तैं मेरे अनेक मनोरथ साधे; पर अब तू और सेां स्नेह करि, मेरौ निरादर करतु है;

तातें तेरा पायन कौ परवौ दूनौ उर दाहतु है; अरु जौ तेरौ प्रेम वा सों नाहीं, तौ क्यों न मेरौ नेम पूरौ करै? पुनि वह निज मन में कहनि लाग्यौ कि, साधु जन सांच कहतु हैं;

पाहन रेख रु तरुनि हठ कुक्कट क्रोध सुभाव;
नील रंग सम ना मिटै कीने ऊ कोटि उपाव। (दोहा)

तातें मोहि याके मनोरथ कौ यत्न करनौ बन्यौ। यह बिचारि ह्यां तें उठि बानर के पास जाय मगर अनमनौ ह्वै, बैठि रह्यौ। पुनि मरकट ने वाहि उद्वेगी देखि कह्यौ, अहो! आज कहा है जो तुम कछु भाषतु नांहीं, अरु चिंतित होय बैठि रहे हौ! मगर बोल्यौ, मित्र! आज तेरी भाभी ने मोसों निठुर बचन कहि, कह्यौ कि तू कृतघ्नी है, अरु काहू के उपकार कौं न मानतु है न जानतु है; क्योंकि, ऐसे उपकारी कौं तू एक बेर हू अपने घर नाहीं ल्यावतु; पुनि निर्लज्ज होय, वाके घर काहे खाय खाय आवतु है? अब अधिक कहा करौं, जौ तू मेरे उपकारी देवर कौं न ल्यावैगौ, तौ मो कौं हू जीवतु न पावैगौ। मित्र! यातें मैं तौ ह्यां तें उदास होय, इत तेरे लैन कौं आयौ; औ उत उन तेरे कारन कंचन रत्न तें घर संवार पाटंबर छांय बिछाय, नाना भांति के पकवान बिंजन बनाय राखे होंयगे; अरु पौरि पर बैठी, बापरी उत्कंठित बाट जोवति होयगी। बानर कही, अहो मित्र! भाभी ने यह बात तौ तुम तें सांच ही कही; क्योंकि, ऐसें और हू ठौर

कह्यौ है, "मित्रता के छः लक्षन हैं, दैनौ, लैनौ, निज दुख सुख कहिवौ, वाकौ सुनिवौ, वाके घर जीमनौ, अपने गेह जिमावनौ;" ये बातें तौ प्रीति में अवश्यक चाहियैं; पर हम बनवासी, तुम जलनिवासी, तातें मेरौ जैवौ तौ ह्यां नाहीं बनतु; पै तुम कृपा करि, भाभी कौं ह्यां लै आओ, तौ मैं वाके पाय परि असीस लैउं। मगर कही, बंधु! हमारौ गेह जल मांहिं नाहीं, जैसें समुद्र के कांठे इत तुम रहतु हौ, तैसें उत हम; अरु जौ तुम न जाओगे, तौ हमारौ गृह कैसें पवित्र होयगौ? यातें तुम मेरौ पीठ पर चढ़ि लेउ, मैं तुम्हैं सुख सेां लै चलौं। बहुरि बानर कही, भाई! जौ ऐसौ है तौ अब बिलंब जिन करौ, बेग ही चलौ। यह कहि वाकौ पीठ पर चढ़ि बैठ्यौ, अरु वह लै नीर में पैठ्यौ; पुनि औंडे में जाय, बेग चलनि लाग्यौ। तब बानर बोल्यौ, भाई! धीरै चलौ, पानी कौ तरंग मोहि ठेलै देति है। यह सुनि, मगर ने निज मन में बिचार्‌यौ कि, अब तौ यह बंदरा मेरौ पीठ तें तिल भर हू नाहीं खिसक सकतु, तातें हौं अपनौ मनोरथ क्यों न कहौं, जो यह अंतसमय जानि अपनौ इष्टदेव भजै। ऐसें जौ में ठानि, उनि बनचर सेां कही, मित्र! हौं स्त्री के कहे बिस्वासघात करि, तोहि मारिवे कौं लियै जातु हौं; तुम अपनौ इष्टदेव भजौ, अरु जग कौ माया तजौ। बानर कही, भाई! मैं भाभी कौ ऐसौ कहा अपराध कियौ, जु तुम मोहि मारनि कौं साथ लियौ? मगर बोल्यौ, अहो!

तुम नित अमृत फल खातु हौ, यातें तिहारौ करेजा अमृत समान होयगौ; यह जानि, उन खैवे कौ मनोरथ कियौ है; अरु वाके मनोरथ पूरवे कौं मैं छूं सिर पाप लियौ है। कह्यौ है, "अग्नि साख दै जाकौ कर गहियै, ताकौ मनभायौ काज करियै; यह पुरुष कौ धर्म है।" या बात कौं सुनि, रक्तमुख बानर ने वाकी मूरखता देखि, उक्ति युक्ति सेां वाके मनोरथ पर मनोहर बचन सुनाये कि, मित्र! जो तेरौ ऐसौ ही बिचार हो, तौ तैं मोतें ह्यां हीं क्यों न कह्यौ, जो मैं अपनौ करेजा जंबूतरु में न राखि आवतौ? वह तौ मो पै भाभी के पाय लागवे की बड़ी भेट हौ। कह्यौ है, "राजद्वार देवद्वार गुरुद्वार सूने हाथ जैवौ उचित नाहीं;" पर हौं तौ हृदयसून्य होय, या अगाध जल में तेरी गैल चल्यौ आयौ; अरु सुनि! सब प्रानी कौं भय होतु है; क्योंकि, भय कौ निवास देह में करेजा है, याही तें जीव सोच करि चलतु हैं, आगले पाय कौं ठार करि, पाछलौ पग उठावतु हैं; औ हम बनचर धरतौ पग छू न धरैं, ताही तें हमारौ नाम ब्रह्मा ने शाखामृग धर्यौ है; सो अपने कुलधर्म सेां भय कौ निवास जो करेजा, ताहि निकारि, रूख के खोलर में धरि, निर्भय ह्वै, डारि डारि, दौरि दौरि, कूदि कूदि फिरतु हौं; अरु अबहौ तेरे संग आवत, जामन के खोडर में यत्न सेां धरि आयौ; बिन हृदय तेरे साथ निर्भय ह्वै, उठि धायौ। यद्यपि हमारौ हृदय बिधाता ने संसार की रीति तें बनायौ है;

पर वह हमारे काहू काम कौ नाहीं, अरु तुम सोई चाहतु हौ; यातें उत्तम कहा, जो तिहारे काज आवै; कह्यौ है,

"धन दैकै जिय राखियै, जिय दै राखिये लाज;
धन दै जौ दै लाज दै एक प्रीति के काज।" (दोहा)

इतनी बात के सुनते ही, मगर आनंद सेां बोल्यौ, अहो प्रीतम! जौ ऐसी बात है, तौ अपनौ करेजा मोहि दै, जु वा दुष्ट पत्नी कौ हठ रहै; अरु तेरौ जीव बचै; मोहि मित्रद्रोह कौ पाप न लागै। इतनौं कहि, पाछौ फिर्‌यौ। पुनि वे दोऊ आप अपनौ इष्ट सुमरन लागे। कह्यौ है, "अधर्मी कौ मनोरथ इष्टदेव भजे हू निष्फल होय।" आगै बानर अपने पुन्यप्रताप सेां तीर पै जाय, मगर की पीठ तें उतरि, लांबौ लांबी डगैं भरि, जंबूवृक्ष पर जाय बैठ्यौ, औ मन में कहनि लाग्यौ कि, मैं आज नयौ जन्म पायौ जु, या दुष्ट के हाथ तें बचि आयौ। कह्यौ है कि, "जाकौ विस्वास जी में न आवै, ताकौ विस्वास कब हू न कीजै; पाच कुपाच बिचारियै; जाकौ जैसौ सुभाव होय, तासेां तैसें ही निबाहियै; अरु दुष्ट के मीठे बचननि पर न जाइयै; क्यौंकि, वह अपनौ घात ही सेां कहै।"

यह तौ ऐसें बिचार रह्यौ हौ, तामें मगर बोल्यौ, भाई! बैठि काहे रह्यौ! वह करेजा मोहि दै, मैं तेरौ भाभौ कौं जाय दैंउ। बानर कही, मित्र! अथाह जल में गये तें भ्रम भयौ है, तातें मोपै बोल्यौ नाहीं जातु। मगर कही, बंधु! पुरुष कौ कह्यौ है कि, भ्रम जीत परमार्थ पुरुषार्थ करै।

यह सुनि, बानर रिसायकै बोल्यौ, अरे मूरख विस्वासघाती! तोहि औ तेरी मति कौं धिक्कार है! क्योंकि, काहू के द्वै करेजा हू होतु हैं? अब तू यहां तें जा, फेर जिन आवनौ। कह्यौ है, "जासेां एक बेर जीव बचाइयै, पुनि वाहि कबहू न पतियाइयै? अरु जौ वाकौ बहुरि विस्वास करै, तौ निदान अनेक दुख भरि निस्संदेह मरै।" ये बातें बानर तें सुनि, मगर चिंता करि कहनि लाग्यौ कि, मैं अभागे यह कहा कियौ जु, काज बिन भये अपनौ कपट याके आगे कह दियौ! अब काहू भांति यातें विस्वास उपजाय, पुनि याहि दांव मैं ल्याऊं तौ भलौ। ऐसें मन में ठानि, हंसकै बोल्यौ कि, हे मित्र! तेरी भाभी कौं तौ या बात तें कुछ प्रयोजन न हो; पर हौं हंसी को रीति तेरी प्रीति की परीक्षा लेतु हो; तुम मन में कछु जिन ल्याऔ, औ मेरी गैल आऔ। कपि कही, अरे दुष्ट जलचर! तू यहां तें जा, हौं आवन कौ नाहीं। ऐसें गंगदत्त हू ने कह्यौ हो कि, प्रियदरसन तें कहौ कि, फेर गंगदत्त कुआ में आवन कौ नाहीं। मगर कही, यह कैसी कथा है? पुनि मरकट कहनि लाग्यौ;

काहू एक कूआ में, गंगदत्त नाम मेंड़क, मेंडुकन कौ राजा रहै; वाकौ कुटुंब तें बैर भयौ, तब वह अरहट की माल पै बैठि, कूप तें बाहर आय, बिचारन लाग्यौ कि, अब कौन उपाय तें बैरियन मारि निष्कंटक राज करौं? यह बिचार करतु हो कि, वाने एक कारौ नाग बिल में

पैठतु देख्यौ, अरु याहि वह प्यारौ लाग्यौ; तब बोल्यौ कि, यासों प्रीति करि, शत्रुन कौ नाश करौं। कह्यौ है कि, "रिपु मारिवे कौं अति बलवंत शत्रु सों सेह करियै; औ ससा के मारिवे कौं बाघ कौ बल धरियै; थोरौ पराक्रम कबहू न करियै; नातौ अवश्य हारियै।" ऐसें जौ में ठानि, सर्प के बिलद्वार पै जाय पुकार्यौ, अहो प्रियदरसन! मेरौ तुमकौं प्रनाम है, बाहर आओ। यह सुनि, वा सांप ने निज मन में बिचार्यौ कि, जो मोहि बुलावतु है, सो मेरौ सजाती तौ नाहीं; क्यौंकि, सर्प कौ शब्द नाहीं, औ न काहू सों मिचाई; यातें प्रथम याहि भीतर बैठे ही जानि लीजै, तब बाहर पाय दीजै। कह्यौ है, "जाकौ शील सुभाव न जानियै, तासों बेग ही न मिल बैठियै।" यह बृहस्पति कौ बचन है, अरु जौ मैं तुरंत ही बिन समझे बिल तें बाहर निकरौं, तौ न जानियै कि, कोऊ बैरी मंचबादी पकरै; तातें याहि जान्यौ चाहियै। यौं बिचार, वहांहौं तें बोल्यौ, अरे! तू को है, जु मोहि टेरतु है? इन कही, हौं गंगदत्त नाम मेंड़क, मेंडुकन कौ राजा हौं; तोसों मेरी सहायता होगी, यातें मिचाई करन आयौ हौं। सर्प कही, अहो! यह अनमिल संग हैं, तृन अग्नि कैसी मिचाई? पर अब तू मेरे घर आयौ, यातें मैं कहा कहौं? कह्यौ है, "जासों अपनौ मृत्यु जानियै, ताके नेरे सपने हू न जाइयै;" पै तैं ऐसी कहा बिचारी? गंगदत्त कही, अहो! यह तौ सांच है, अरु हम तुम जन्म ही के बैरी हैं; पर हौं शत्रु कौ

दबायौ निरादर ह्वै, तुम पास आयौ। कह्यौ है, "पग में कांटौ चुभै, तौ सुआ सेां काढ़िये; अरु शत्रु सेां जब अपनौ बिनास जानिये, तब सबल शत्रु कौ आसरौ गहि, प्रान धन राखिये।" पुनि नाग बोल्यौ, तो सेां शत्रुता कौंन सेां है? इन कही, कुटुंब सेां। उन पूछ्यौ, तेरौ निवास कूप तड़ाग बापी कहां है? इन कह्यौ, पाथरन तें बंधे कुआ में रहतु हौं। सांप बोल्यौ, तौ तौ न बनौ; क्यौंकि, तहां मोसेां न गयौ जायगौ। कह्यौ है, "अति मीठौ भोजन होय, तौ हू पेट भर खाइये अधिक लोभ न करिये; लोभ करे बिगार होय, दुख पावै।" पुनि गंगदत्त कही, अहो! ऐसौ कह्यौ है कि, "भेदी मिले कठिन ठौर हू सुगम ह्वै जातु है; जैसें घर के भेदी लंका खोई।" अब मैं तुम तें वहां कौ सारौ भेद कहतु हौं, तुम चित दै सुनौ। वा कुआ के ऊपर रहट चलतु है; ताकौ माल तें लागि, नीचै जाय, एक खवाल में बैठि तुम हमारे शत्रुनि निचिंताई सेां खाओ; अरु चैन सेां बैठि मंगल गाओ; हौं तुम से आचार्य कौं अपनी गाढ़ में कछु समझ ही लिये जातु हौं, तासेां तुम काहू भांति की चिंता जिन करौ, बेग चलकै मेरी राजधानी की रक्षा करौ। इतनौ सुनि, सर्प ने बिचार्‌यौ कि, यह कोऊ मेरे भाग तें मोहि अपने कुल कौ अंगार आय मिल्यौ है; अरु मोहि तौ या ठौर अहार हू नाहीं जुरतु, यातें वा ठौर याके संग जाऊं, तौ बिन श्रम बैठ्यौ अहार पाऊं। कह्यौ है कि, "जब देह कौ बल घटै, अरु कोऊ

सहायक न होय, तब पंडित होय सो अपनी जीविका की वृत्ति विचारै।" ऐसें सर्प ने निज मन में ठानि, गंगदत्त सों कही, आज तें तू मेरो मित्र भयो; अब वहां लै चल, जाहि कहैगो ताहि खाऊंगो। या रीति सों बातें बचन कहि, नाग बिल तें बाहर आयो। पुनि दोऊ बतराय, कूप पै आय, रहट की माल में लागि, वा मांहिं धसे, औ खवाल बीच बसे। आगे गंगदत्त ने अपने शत्रु चीन्ह चीन्ह बताये, उन बीन बीन खाये। जब बिल में तें कोऊ न रह्यो, तब सर्प ने गंगदत्त सों कह्यो कि, मित्र! मैं ने तेरो कैसो काम कर दियो जु शत्रुनि मारि निष्कंटक राज कियो! गंगदत्त बोल्यो, भाई! जैसें भले मित्र काज करतु हैं, तैसें तुम कीनो, अरु मोहि सुख दीनो; पर अब याहो अरहट की माल लागि, अपने धाम पधारो। नाग कह्यो, हितू! यह कहा कहतु है! तैं मेरो घर छुड़ायो, मोकों यहां लै आयो; वहां और ही मेरो सजातो आनि रह्यो होयगो, सो मोहि बिल में काहे बड़न देयगो! वहां सों तैं मोहि आन्यो, अपनो करि ठान्यो; अब मेरे अहार की चिंता कर; नातो हम सों तुम सों न बनिहै। कह्यो है, "अहारे व्योहारे लज्जा न कारे।" यह बात सुनि, गंगदत्त कों उतर न आयो; तब निज मन में पछतायो कि, मैं मूरख यह कहा कियो जु अपनो घर दिया लै दिखाय दियो! अब यह बिरोध के बचन कहतु है। कह्यो है कि, "सरबस जातो जानिये तो आधो दीजै बांट।" तातें याके खैवे कों अपनो बगर

के मेंडुकन तें एक एक नित दीजै। ऐसें मन में ठहराय बोल्यौ, भाई! तुम अपने अहार कौं मेरी बाखल तें एक दादुर नित लेहु, अरु जैसें अपने घर रहियतु है, तैसें रहौ। वह वाही भांति रहनि लाग्यो।

एक दिन, गंगदत्त कौ पुत्र सुभदत्त नाम, वाके अहार में आयौ; तब गंगदत्त रोवत रोवत अपनी स्त्री के सन्मुख धायौ। उन कह्यौ, रे कटुंब के मारनहारे! अब क्यों रोवतु है? तोहि तौ कुटुंब कौ पाप लाग्यौ; पर अब निज प्रान राखिवे कौ यत्न कर। यह बात सुन, गंगदत्त ने अपने किये कौ बहुत परेखौ कियौ। आगे जब केवल गंगदत्त ही रह्यौ, तब प्रियदरसन ने बिचार्यौ कि, यासों मोसों बोल बचन है, तातें यातें भोजन मांगौं; जब यह कहैगो, अब तौ हौं ही रह्यौ, तब याहि छल करि खाऊंगो। सर्प ने ऐसें मन में ठानि, गंगदत्त सों कह्यौ, रे प्रीतम! अब तौ यहां मेंडुक नाहीं, अरु मोहि भूख लागी है। गंगदत्त बोल्यौ, हे प्रीतम! अब तौ हम तुम दै भाई ही रहे, पर आज्ञा करौ, तौ दूजौ ब्याह करौं; औ प्रजा बसाय, कुटुंब तें घर भरौं; तुम मेरी राजधानी की चिंता करौ, औ मैं तिहारे अहार की। कहौ तौ अबही जाय, ताल के मेंडुकनि भुलाय ल्याऊं, अरु फेर ज्यों कौ त्यों नगर बसाऊं। सर्प कही, बंधु! यह तौ तुम नीकी बिचारी, यातें तौ तिहारी राजधानी रहै, अरु मेरी जीविका हू चले। सुनि! अबलौं तू मेरौ भाई हो; पर आज तू मेरे पिता कौ समान है। इतनौ सुनि,

गंगदत्त रहट की माल लागि, कुआ के बाहर आय, निज मन में कहनि लाग्यौ कि, मैं आज काल के गाल तें निकरि आयौ सु मानौ नयौ जन्म पायौ। ऐसें कहि, एक सरवर में जाय रह्यौ; अरु वहां नाग ने कितेक बेर लौं याकी बाट जोई; निदान घबरायकै बोल्यौ कि, मैं अभागे यह कहा कियौ, जु वाहि जीवत जानि दियौ? सब दादुर कुआ के खाये, पर जब लग गंगदत्त मेरी डाढ़ तरै न आयौ, तब लौं हौं नेक हूं न अघायौ। ऐसें कहि, कूप मांहिं एक गोह रहत ही; इन तासें कह्यौ, हे प्यारी! तू मेरी संतुष्टता कौ काज करै, तौ हौं तो सें एक बात कहौं। वह बोली, कह। याने कह्यौ कि, गंगदत्त ताल में मेंडुक लैन गयौ है, ताहि जाय कह कि, दादुर लै बेग चल; अरु वे न चलैं, तौ तू ही चल, तेरे देखे ही वाकी भूख जैहै। कह्यौ है, "भूख प्यास सही जाय, पर मित्र कौ वियोग न सह्यौ जाय।" पुनि कहियौ कि उन मो सें कह्यौ है जु, मोहि भूख्यौ जान, मन में कछु भय न करै; जो मैं वासें द्रोह करौं, तौ मेरे सब किये कर्म धोबी की नांद में परैं। इतनौं कहि, सांप ने गोह कौं बिदा कियौ। वह कूप तें निकरि, गंगदत्त के पास जाय, नाग कौ संदेसौ सुनाय, बोली कि, उन कह्यौ है, अब दोऊ मित्र बैठि धर्मचरचा करिहैं; खैवे कौ सोच जिन करौ। पूरनवारौ कन कीरी, औ मन कुंजर कौं देतु है। गोह तें सब बात सुनि, गंगदत्त बोल्यौ, हे प्रिये! कह्यौ है, "भूख्यौ कौन पाप न करै? नीच जीव निर्दई होतु

हैं, तातें तू प्रियदरसन तें जाय कह कि, अब गंगदत्त कुआ में आवन कौ नाहीं। ऐसें कहि, उन गोह कौं बिदा कियौ। इतनौ कथा कहि, बानर ने मगर सेां कह्यौ, अरे दूष्ट जलचर! तु यहां तें जा, हैां गंगदत्त की भांति फेर तेरे घर जान कौ नाहीं। पुनि मगर कहो, मिच! तुम्हें ऐसौ करनैां जोग नाहीं; सुनौ! जौ तुम मेरौ कृतघ्नदोष दूर न करिहौ, तौ मैं तिहारे बार उपवास करि मरिहैां। बानर बोल्यौ, रे मूढ़! तू केतौ ऊ करि, पर मैं लंबकरन गदहा की भांति फेर न जाऊगौ। मगर कही, यह कैसी कथा है! तहां बानर कहतु है;

काहू बन में एक करालकेश नाम सिंह, अरु ताकौ सेवक धूसर नाम स्यार रहै; सु काहू समें, वह सिंह गज सेां लर्‌यौ; वाके शरीर में चोट लागी, ऐसी कि वातें एक डग हू न चल्यौ जाय। यासेां वाहि अहार न जुर्‌यौ; तब जंबुक बोल्यौ कि, स्वामी! मेरौ तौ मारे भूख के प्रान जातु है, अरु तिहारी सो यह गति है जु डग भर हू नाहीं चल्यौ जात, मैं सेवा कैसें करौं? सिंह कह्यौ, अरे! तू कहूं कोऊ जीव जाय देख, जौ मेरौ यह दसा है, तौहू ताहि मारिहैां। यह सुनि, स्यार ह्यां तें चलि, गांव के निकट आय, देखै तौ एक ताल के तीर, लंबकरन नाम गदहा चरतु है। वाहि देखि, याने कह्यौ, मामा! तोहि मेरौ प्रनाम है, आज अनेक दिन पाछै मैं तिहारौ दरसन पायौ, अरु सब दुख पाप गंवायौ। यौं कहि, वह धूर्त्त पुनि बोल्यौ, मामा!

अबकै तोहि अति दुर्बल देखतु हौं, सु कहा है? उन कही, अहो भगिनीसुत! कहा करौं? यह धुबिया बढ़ौ निर्दई है, मो पै बहुत भार लादतु है, अरु एक मूठी हू अनाज नाहीं देतु; हौं धूर मिश्रित रूखे सूखे तृन खाय रहतु हौं; तुम ही बिचारौ, तातें देह कैसें पुष्ट होय? स्यार कही, मामा! जौ तू ऐसी बिपत में है, तौ मेरे साथ चल, मैं तोहि आछौ ठौर लै जाऊ; तहां नदी के तीर मरकत मनि के बरन हरी हरी दूब चरौ, औ आनंद तें बिचरौ; अरु हम तुम तहां बैठि, आछौ आछौ बातें करैं, औ रहैं।

लंबकरन बोल्यौ, अहो भगिनीसुत! यह तौ तैं भली बात कही; पर तुम बनवासी, हम नगरनिवासी; तिहारी जीविका मास तें, हमारी तृन नाज तें; यातें हमारौ तिहारौ मेल कैसें बने? अरु वह भली ठाम हमारे कौन काज की? स्यार कही, मामा! ऐसें जिन कहौ, वा ठौर तुम मेरी भुजानि के बल तें रहौ; ह्यां काहू भांति कौ दुख भय नाहीं; और हू गदही अनेक अपनी आजीविका के लिये रहति हैं मो पाहीं; औ ते आई हौं तब अति दुर्बल ह्वै रही हौं; तातें महाकूरूप दीसति हौं, मेरे आश्रम में आय उननि सुख पायौ, अहार मुकतौ खायौ; तासों वे पुष्ट होय, चंपाबरनी ह्वै रही हैं। अरु वे काम कौ सताईं मोसों निसंक अपनौ मनोरथ आय आय कहति हैं; औ तामें आज प्रात ही एक मामी ने मोतें आय कही कि, तेरौ मामा सपने में मेरौ पति भयौ है, ताहि ल्याय

मोसों मिलाय दै ; यातें तुम बेग चलौ ; नातौ वाहि कोऊ और लै जायगौ । यह बात सुनि, कामातुर होय, लंबकरन बोल्यौ, अहो भानेज ! जौ ऐसी बात है, तौ आग होय तौ हू मैं चलौंगौ । कह्यौ है, "स्त्री में द्वै गुन ; एक अमृत, औ दूजौ बिष ; संयोग अमृत, औ बियोग बिष ।" पुनि जाकौ नाम लियै मनुष प्रसन्न होय, ताकौ मिलन सुख तौ अधिक ही होयगौ । आगै, वह स्यार गदहा कौं फुसलाय लै गयौ ; औ सिंह गदहा कौं देखत ही धायौ । तब यह भयमान ह्वै परायौ ; औ वाके हाथ तौ न आयौ ; पर सिंह के हाथ की चोट याके शरीर में लागी । सिंह अछताय पछताय बैठ रह्यौ । तब जंबुक बोल्यौ कि, तुम यह कहा कियौ, जु गदहा छांड़ि दियौ ? बस देख्यौ तेरौ पराक्रम, जौ याही कौं न मार सक्यौ, तौ हाथी कैसें मारैगौ ? सिंह कही, अरे ! एक तौ मेरी देह निर्बल ; दूजै वाकौ आवनौ मैं न जान्यौ, यातें वह निकरि गयौ ; नातौ हाथी खेद मारौं । पुनि स्यार बोल्यौ, भलौ, जो भयौ सो भयौ, वाहि जानि देउ, अब हौं वाहि फेर ल्यावतु हौं, तुम सावधान होय बैठौ । सिंह कही, अरे ! जो मोहि देखि गयौ है, सो फेर कैसें आवैगौ ? स्यार बोल्यौ, तुम अपने पराक्रम की बात कहौ, वाहि ल्यावन की हौं जानौं । यह बात सुनि, सिंह सचेत ह्वै ऐंठि बैठ्यौ ; औ स्यार तहां तें चलि नगर में पैठ्यौ, गदहा के ढिग जाय, हंसिकै बोल्यौ, अरे मामा ! तू वहां तें क्यौं बगदि आयौ ? उनि कही,

अहो, भगिनीसुत! तू मोहि भलो ठौर ले गयो जु, मैं नौठ नौठ मौच के हाथ तें बचि आयौ! वह कौन जंतु हो, जाके हाथ की चोट मेरे शरीर में बज्र सम लागी! स्यार ने मुसकुरायके कह्यो, मामा! वह तौ मामी हो, तोकौं आवतु देखि, अनुराग तें आतुर होय, आलिंगन करिवे कौं उठी हो; पर तू नपुंसक जु भाज्यौ, सु वह सकुच करि वहां ही बैठ गई। कह्यौ है, "जब स्त्री क्रीड़ा समय ढीठ होय ढिठाई करै, अरु वाके भर्त्तार सों कछु काज न सरै, तब वह अपनी ढिठाई तें आप लज्जित होय।" अब वाने मोसों कह्यौ है कि, जाके शरीर में मेरौ हाथ लाग्यौ, मैं ताही कौं बरिहौं; नातौ लंघन करि करि मरिहौं। तू ही ताके मन में बस्यौ है, तेरी ही बिरह सों वह बापरी दुख पावति है; यातें हौं कहतु हौं कि, तू बेग चलि वाकौ मनोरथ पूरौ कर। न जानिये, जौ बिरह विथा तें वाकौ जीव निकरि जाय, तौ तोहि स्त्रीहत्या कौ पाप लागै। कह्यौ है, "बालक स्त्री गौ ब्राह्मन की हत्या तें महानर्क भोगनौ होतु है।" औ भगवान ने संसार में नारी बड़ी वस्तु बनाई है, ताही तें सब कौं प्रिय है;

नारी नारी सब कहैं, नारी नर की खान;
अंतकाल में देखिये, नारी ही में प्रान। (दोहा)

अरु जे स्वर्ग की इच्छा करि नारी कौं तजतु हैं, तिन कौं कामदेव पीड़ा देतु है। देखौ! कोऊ नग्न होय छार में लोटतु है; कोऊ अपने हाथ अपनौ सिर खसोटतु है;

कोऊ जटा राखि पंचाग्नि मांहिं बैठि जरतु है; कोऊ कपाली आसन मारि, औ ऊर्द्धबाहु होय दुख भरतु है। पुनि कह्यौ है, "नारी सब सुख की जर है।" इतनौ कहि, बहुरि स्यार बोल्यौ कि, मामा! हौं तिहारौ हितू होय कहतु हौं; क्योंकि, तिहारे सुख तें हमें सुख है, औ दुख तें दुख। आगै, गदहा स्यार कौ उपदेस सुनि कामांध होय, हरषि पुनि वाके साथ चल्यौ। कह्यौ है कि, "जब मनुष कर्म के बस होय, तब खोटी बात जानकै हू न मानै, बिन किये न रहै।" पुनि ज्यौं खर वहां गयौ, त्यौंही सिंह ने मार लियौ।

आगै, सिंह स्यार कौं गदहा के ढिग राखि, आप नदी न्हैवे गयौ। जौलौं वह स्नान ध्यान पूजा तर्पन करि आवै, तौलौं स्यार चंडार ने क्षुधा के मारे गदहा के कान नैन औ हियौ लै भक्षन कियौ। सिंह आनि देखै तौ, वाकौ हृदय औ नैच कर्न नाहीं; तब उनि स्यार सों कह्यौ, अरे! यह तैं कहा कियौ जु, आंख कान औ हियौ याकौ काढ़ि खाय लियौ! तेरौ झूठौ मैं कैसें खाऊं! स्यार कहौ, स्वामी! ऐसौ जिन कहौ; या जीव कै कान आंख हियौ होत नाहीं; क्योंकि, कान होते तौ तिहारौ नाम इन या बन में सुन्यौ होतौ; अरु नेच होते, तौ तुम्हें देखि फेर न आवतौ; औ हियौ होतौ, तौ तिहारे कर कौ चोट खाय, फेर न भूलजातौ। यह बात स्यार तें सुनि, सिंह ने गदहा बांटि खायौ। इतनौ कहि, बानर बोल्यौ, अरे जलचर!

हैां लंबकरन नाहीं जु तेरे साथ अब आऊं; क्योंकि, तैं प्रथम ही मोसेां कपट कियेा; बहुरि युधिष्ठिर कुम्हार की भांति सब भेद कहि दियेा। मगर कही, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

एक समें काहू देस में अति बर्षा भई; तातें काल पस्यौ। तब वहां के कितेक रजपूत कहूं चाकरी कों चले; तिन के साथ युधिष्ठिर नाम एक कुम्हार हू है लियेा। वाके माथे में घाव हेा। कितेक दिन में, काहू और देस मांहिं जाय, एक राजा के यहां चाकर भये। कुम्हार के लिलार कौ घाव देखि राजा ने अपने जी में बिचास्यौ कि, यह कोऊ बड़ी सूर है जु याने सनमुख चोट खाई है। यातें राजा वाहि वाके सब साथियन तें अधिक मानै। एक दिन, वह नरपति अपने सब सुभटन सहित सभा में बैठ्यौ हेा कि, वाने यासेां पूछ्यौ, अहेा रावत! यह घाव तुम मस्तक पर कौन सी लराई में खायेा? इन कही, महाराज! मेरेा नाम युधिष्ठिर है, यातें हैां झूठ नाहीं बोलतु; मैं रजपूत नाहीं, जात कौ कुम्हार हैां; अरु यह घाव मैंने रन में नाहीं खायौ, याकौ भेद कहतु हैां सुनेा कि मेरे पिता के ब्याह कौ उछाह हेा; तहां मैं हू अपनी मंडली में भांग पी, घर में दैास्यौ, सु उखट पस्यौ, एक ठीकरा मूंड में पैठ्यौ, ताकौ यह चिन्ह है। इतनी बात सुनत ही, राजा रिस करि बोल्यौ, इन मोहि धोखौ दियौ, अरु याके लिये मैंने इन राजपूतन कौ अपमान कियौ, अब याहि धकाय काढ़ेां। कुम्हार कही,

महाराज! ऐसें जिन कीजै, बरन युद्ध में मेरी परीक्षा लीजै। राजा बोल्यौ, अरे! सर्वगुनसंयुक्त कुल में तू जनम्यौ नाहीं। ऐसें स्यारसिसु कौं सिंहनी ने हू कह्यौ हो। कुम्हार कही, यह कैसी कथा है; तब राजा कहनि लाग्यौ;

काहू बन में एक सिंह औ सिंहनी रहैं; सु सिंहनी ने दै सिसु जाये; तद वाकौ पति वाके लिये अनेक अनेक भांति के जीव औ जंतु मारि ल्यावै। एक दिन वह सारौ दिवस फिर्यौ; पै वाके हाथ कोऊ जंतु न आयौ। जब सूरज अस्त भयौ, तब निरास हो घर कौं आवन लाग्यौ; तहां गैल में एक स्यार कौ सुत, तुरत कौ जायौ, इन पायौ; ताहि जतन सेां मुंह में राखि, सिंहनी के ढिग जीवतु ल्यायौ। वाहि देखि, सिंहनी बोली, हे नाथ! कहा आज और जंतु न पायौ? सिंह कही, भद्रे! सिगरौ दिन भटक्यौ, पर कछु हाथ न आयौ; अबही डगर में आवतु यह हाथ पर्यौ; सु याहि बालक जानि मैं नाहीं मार्यौ, तेरे पथ्य के लिये ल्यायौ हौं। सिंहनी बोली, स्वामी! यातें मेरौ पेट हू न भरैगौ, वृथा याहि कौं मारौं? कह्यौ है, "बाला बाल ब्राह्मन ये तीनौं अबध्य हैं; विशेष अपने घर आवै, ताहि तौ कबहू न मारिये।" सिंह बोल्यौ, जौ तैं ऐसी बिचारी, तौ यह कैसें जियैगौ? उन कही, याहि मैं अपनौ दूध प्याय जिवाऊंगी; जैसें मेरे ये दै हैं, तैसें तीसरौ यह हू रहै। ऐसें कहि, वह वाहि दूध प्यावन लागी। आगे, जद वे बड़े भये, तौ वे बिन जाने इकठे

रहैं; अरु स्यारसिसु तिन में बड़ो भाई कहावै। एक दिन वा बन में हाथी आयो; तब सिंहसिसु बोल्यो, अहो! यह गज अपने कुल कौ बैरी है, चलो, याहि खेद मारैं। यह सुनि, स्यारसिसु इतनो कहि भजो कि, भाई! याके सनमुख कहां जात हो? वाके साथ सिंहसिसु हू भजे; अरु वे तीनो घर आये। कह्यो है कि, "युद्ध समय, आगे सूर होय, तौ वाहि देखि औरन कौं हू सूरता होय; अरु एक कायर संग्राम छोड़ भजै, तौ वाके संग सब भजैं।" आगे, सिंहसिसुनि आय, माता सों कही कि, मा! यह हाथी देखि परायो, अरु याके पाछै हम हू। अपनी निंदा सुनि, स्यार कौ सिसु उनके मारिवे कौं उठ्यो; तब सिंहनी बोली, ये तो तें छोटे हैं, तू इन तें बड़ो है, यातें तोहि इन पै क्रोध करनो उचित नाहीं। उन कही, ये मेरी निंदा करतु है सो कहा, हौं इन तें कुल बरन पराक्रम में घाट हौं, कै हाथी नांहीं मार जानतु? यह सुनि, सिंहनी ने वा पै दया करि, वाहि एकांत लै जाय, कह्यो कि, पूत! तू सुंदर औ बलवान है; पर वा कुल में जनम्यो नाहीं जु हाथी मारो। अरे! तू तौ स्यार है, मैं तोहि दया करि अपनो दुध प्याय जिवायो है; सु ये तोहि जानतु नाहीं; अरु अब इन तें तोतें बिरुद्ध भयो, ये तोहि बिन मारे न रहैंगे; यातें हौं कहति हौं कि, तू अब अपने सजातियन में जाय रह; नातौ जीवतु न बचैगो। इतनो सुनि, वह ह्यां तें उठि पूंछ दबाय धाय अपने सजातीन में जाय मिल्यो।

यह प्रसंग कहि राजा ने कुम्हार सों कह्यो कि, सुन! तू वा कुल में उपजो नाहीं कि लोह को आंच झेलै। पुनि सभा तें उठाय दियो। तातें हौं कहतु हौं, रे मूर्ख जलचर! तैं हूं युधिष्ठिर की भांति कपट कहि दियो, सु यह कहा कियो? नीति तौ यों है कि, जहां सांच बोले तें काज बिगरै औ झूठ तें सुधरै, तहां सांच सों झूठ ही भलो। कह्यो है जु "मिथ्या कहे काहू को जीव बचै, औ अपनो माहात्म रहै तौ राखिये।" दै ठोर झूठ बोलवे को दोष नाहीं; अरु बिन बोले काज सरै तौ कबहू न बोलिये, औ हर काम में चपलता करि बिन स्वारथ न बोल उठिये। देखो! बगुला मुनिधर्म साधे निज काज करै; औ चपल होय सुआ बोलि बंध में परै। इतनो कहि पुनि बानर बोल्यो, अरे मूढ़! तैं स्त्री के संतोष के लिये ऐसो अधर्म बिचार्यो कि, मोहि मारन कों उपस्थित भयो। कह्यो है, "नारी को मनभायो सहज में होय तौ करियै; अरु वाके कहे मूर्ख होय, निज धर्म न बिसरियै; क्योंकि, स्त्रीजन आपस्वार्थी होति हैं; बिन की प्रतीत कबहू न कीजै; कीजै तौ जैसें एक ब्राह्मन प्रतीत करि पछतायो, तैसें पछतावनौं होय। मगर पूछो, यह कैसी कथा है; तहां बानर कहनि लाग्यो;

काहू गांव में एक ब्राह्मन रहै; ताकी नारी अति सुंदरी चंदमुखी चंपकबरनी मृगनैंनी पिकबैनी गजगैनी कटि केहरी, अरु जाके कर पद कोमल कमल से, नारंगी सम

कुच, बार स्याम घटा की समान, दांत हीरा की सी पांति, ओठ बिंबाफल जान, भोंह धनुष मान, पुनि कीर की सी नाक, कपोत कैा सैा कंठ; औा करतार ने वाहि ऐसी संवारी कि, मानैां सांचे की सी ढारी। वाके रूप की ईर्षा सब कुटुंब की नारी खायैा करैं। जब यह चरित्र वाके पति ने देख्यौ, तब वह घर की माया छोड़ि, वाके आधीन होय, वाहि साथ लै परदेस कैां चल्यौ। कितेक दूर जाय, वाकी स्त्री ने कह्यो, हे स्वामी! मोहि प्यास लागी है। उन कही, प्रिये! तू यहां बैठ, हैां जल खोज लाऊं। यह कहि, वह तैा पानी सोधन गयैा; औा ह्यां प्यास के मारे याकैा प्रान निकरि रह्यो। वह आय, याहि मरी देखि, अति विलाप करनि लाग्यौ; तद आकाशबानी भई कि, अरे! याकी तैा आयु पूरी भई; पर जैा तेरी यासेां अधिक सनेह है, तैा तू अपनी आर्बल याहि दै। ऐसें सुनि बिप्र ने हाथ पाय धोय आचमन करि पवित्र होय आधी बैस वाहि दई। वह झट उठि बैठी भई; जल पीय दोऊ आगे चले, औा काहू गांव के निकट जाय, एक माली की बारी मांहिं उतरे। जद ब्राह्मन गांव में सौदा लैन गयैा, तद ब्राह्मनी बारी में फिरन लागी; तहां देखै तौ एक पंगु कुआ पै बैठ्यौ, गाय गाय रहट कैा बरध हांकि रह्यौ है; वाकी गान सुनि ब्राह्मनी रीझि, ताके निकट जाय कहनि लागी, अरे! मेरी मन तोसेां अटक्यौ; तू मेरी मनोरथ पूरी कर। उन कही, अरी घरगई! हैां पंगु, तू मोहि कहा

करैगो? इन कही, दईमारे निगोड़े! तोहि या बात सेां कहा काम? जो मैं कहेां सो तू कर; अरु जौ तू मेरौ कह्यौ न करैगेा तौ मैं तोहि हत्या दूंगी। यह सुनि वाने वाकेा मनोरथ पूरौ कियेा। तब ब्राह्मनी प्रसन्न होय बोली, आज तें यह जीव तेरौ दियेा है।

आगे सीधे लै बिप्र आयेा; अरु रसोई करि जब स्त्री पुरुष भोजन केा बैठे, तब ब्राह्मनी ने पंगु कों हू जिमायेा। पुनि जद ह्वां तें चलवे कों भये, तद ब्राह्मनी ने अपने पति सेां कह्यौ कि, हे स्वामी! जा वेर तू मोहि छांड़ि सीधौ लैन नगर में जातु है, वा समें हेां अकेली रहति हेां; यातें यह लूलेा माली केा टहलुआ है, औ आछौ गावतु है, याहि संग लीजै तौ मेरे निकट रह्यौ करैगेा। उन कही, प्रिये! एक तौ गैल में अपनी देह निवाहनी कठिन; दूजै या पंगु कों कैसें लै चलैंगे? इन कही, स्वामी! एक पिटारौ आनि देउ, तामें राखि याहि हेां निज मूंड पर आछौ भांति लै चलिहेां, तुम या बात की चिंता जिन करौ। यह सुनि, उन पिटारौ आनि दियेा; इन वाहि वामें राखि, सिर धर लियेा। आगे, एक बन में जाय, ब्राह्मनी ने निज मन मांहिं बिचार्‍यौ कि, यह ब्राह्मन जबलेां रहैगेा, तबलेां हेां या पंगु सेां निर्भय होय भोग न कर सकेांगी। ऐसें बिचारि, समें पाय बिप्र कों कूप में डारि, पंगु केा पिटारौ सिर लै, ज्यौं एक नगर में बड़ी, त्यौं राजा के सेवक याहि पकरि नगरपति पै लै गये, उन पिटारौ खुलवाय पंगु

कौं देखि, कह्यौ, यह को है? इन कह्यौ, महाराज! यह मेरौ पति है, याके शत्रुन के भय तें अपने मूंड पै लिये डोलति हौं; अब तिहारी सरन आनि लई है, जैसौ जानौ तैसौ करौ। राजा कह्यौ, तू मेरे नगर में रहि, हौं तेरी आजीविका करै देतु हौं; तेरौ शत्रु आवै तौ मोसों कहियौ। इतनौ कहि, राजा ने वाकौ गांव गांव में चुंगी कर दई; वह वाहि लै, ह्वां सुख सों रहन लागी।

आगै, दई के, जो कोऊ बनजारौ वा बन में आय निकास्यौ, ताने वा ब्राह्मन कौं कुआ सों काढ़्यौ। कह्यौ है जु, "आयु न पूरी होय, तौ बाघ बैरी अग्नि जल के हू मुख तें बचै।" पुनि वह ब्राह्मन वाही नगर में आयौ, जहां ब्राह्मनी ही। जब ब्राह्मनी ने अपनौ पति देख्यौ, तब उन राजा सों जाय कह्यौ, महाराज! मेरे स्वामी कौ रिपु आयौ। यह सुनि, राजा ने वाहि पकरि मंगायौ, अरु कह्यौ, रे बिप्र! तू याहि क्यों दुख देत है, औ कहा मांगतु है? ऐसी बात राजा के मुख तें सुनि, ब्राह्मन ने निज मन में बिचार्‌यौ कि, जौ इनहीं मेरी ममता त्यागी, तौ मोकौं हू याकी प्रीति तजनी उचित है; क्योंकि, मन टूट्यौ फेर न मिलै, जौं फटिक कौ पात्र। ऐसें बिचारि, ब्राह्मन ने राजा सों कही कि, पृथ्वीनाथ! हौं यातें न कछू मांगौं, न कहौं; पर मेरौ या पै आधौ आयु है, सो दिवाय देउ। राजा ब्राह्मन की बात झूठ समझ, चुप ह्वै रह्यौ। अरु ब्राह्मनी आगलौ भेद न जान बोल उठी कि, धर्मावतार! जा भांति

यह कहै, ता रीति सेां याकौ आर्बल दैंउ। बहुरि बिप्र बोल्यौ, हाथ पाय धोय आचमन करि पवित्र होय ऐसें कह कि, मैं तेरी आयु लई ही, सो पाछौ दई। उन वैसें ही कह्यौ; औ कहत ही, वाकौ प्रान घट तें निकरि गयौ। राजा सभा सहित देखि भैचक रह्यौ। पुनि वाकौ भेद पूछ्यौ, तब ब्राह्मन ने सब भेद कह्यौ। या बात के सुनत ही, राजा ने ब्राह्मन कौं बिदा कियौ; अरु आप नियम लियौ कि, नारी की बात कबहू सांचौ न मानियै। तातें हौं कहतु हौं, अरे मूर्ख जलचर! स्त्री की बात कौ बिश्वास कबहू न करियै। कह्यौ है, "जो नारी के बस परै, सो कहा न करै!" जैसें राजा भोज औ पांड़े बररुचि कियौ। मगर पूछौ, यह कैसी कथा है? तहां बानर कहतु है;

एक समय राच कौ, राजा भोज की रानी राजा सेां रिसानी; तब उन अनेक उपाय मनावे कौं किये, पर वाने याकी बात कौं हू न मानी, औ कह्यौ, जौ तुम घोरा बनि, मोहि चढ़ाय आंगन में लै फिरौ, अरु हौं एड़ करि चाबुक चटकाऊं, तौ तिहारौ गायौ गाऊं। उन सुनि, वैसें ही करि, अपनौ मनोरथ साध्यौ। औ वाहि राच पांड़े की पंडियान हू रूठी; तब पांड़े ने कही, तू काहू भांति हू हट छोड़ै? उन कही, तू मेरौ अपराधी है; यातें तोहि भद्र करौं, तौ मेरौ क्रोध मिटै। कह्यौ है, "जो अति चतुर होय, सो रसरीति समझ, प्रीति के बस परै।" आगै, पांड़े ने दाढ़ी मूंछ औ मूंड मुंडवायौ, औ वाकौ गायौ

गयौ। भोर भये जब राजा सभा में आय बैठ्यौ, तब पांड़े ने जाय आसीस दई। उन याहि देखि, हंसकै कही, अहो बिप्र! बिन पर्व भद्र कहां भये? इन बिद्या के बल रात कौ बात बिचारि कह्यौ, महाराज! जहां मनुष घोरा कौ भांति हींसै, तहां बिन पर्व ह्वै मुंडन होय। यह सुनि, राजा मौन गहि रह्यौ। तातें हौं कहतु हौं, अरे दुष्ट जलचर! जैसें राजा औ पांड़े ने कियौ, तैसें तू ह्वै कामांध होय स्त्री के बस भयौ।

वे दोऊ ऐसें बतराय रहे हे कि, वाही समय एक जलचर ने आय, मगर सों कही, भाई! तेरी स्त्री मारे क्रोध के मरवे कौं ह्वै रही है; अरु घर में तेरे एक और मगर आय रह्यौ है। यह सुनि, मगर दुख पाय बोल्यौ, हाय! मैं अभागे यह कहा कियौ जु, ऐसी दुष्ट पतनी के कहे अपनौ धर्म कर्म खोय दियै! पुनि उन बानर सों कह्यौ कि, मित्र! तू मेरौ अपराध क्षमा कर; क्यौंकि, मैं अब या दुख तें प्रान छांड़िहौं। बानर बोल्यौ, अरे मूर्ख! तेरे घर में बिगार हैनौ तौ युक्त ही हो; पर तोहि ऐसी दुष्ट स्त्री के गये उछाह करनौ जोग है; क्यौंकि, कह्यौ हैं, "कलह-कारिनी नारी औ बिष, बिपत की जर है; यातें जो अपनी आत्मा कौ सुख चाहै, सो वासों विरक्त रहै तौही भलौ; वाकै मन मानै सो कहै औ करै; नारीन के चरित्र भांति भांति के हैं, ते कहां लौं कहौं! पर तू ऐसी ही बात में जानियो कि, जे चतुर औ सज्ञान हैं, ते तिन

के आधीन कबहू न हौंयगे। मगर कही, अहो! मोतें ह्वै चूक भई। ताही तें इत मिचाई गई, औ उत स्त्री। जैसें एक नारि कौ जार भयो न भर्त्तार। बानर कही, यह कैसी कथा है? तहां मगर कहतु है;

एक किसान की स्त्री तरुनि, औ वह बूढ़ौ; तातें यह नितप्रति परपुरुष हेरयौ करै, औ काम के मारे याकौ मन धाम में न लागै, उदास रहै। एक दिन, कोऊ पराये वित्त चित कौ चोर याहि आनि मिल्यौ; वासों इन कही, हे सुभलक्षन! मेरौ पति बूढ़ौ ह्वै रह्यौ है, जौ तू मेरौ जार होय, तौ मैं घर कौ द्रव्य लै, तेरे संग चलौं। उन कही, तैं नीकी बिचारी; भलौ मैं ह्वैऊंगौ। इन कही, तौ तू सकारे आइयो, हौं तेरे साथ चलौंगी। आगै, भोर भये वह आयौ; औ वाहि बित्त समेत लै, नगर के बाहर कौं धायौ। कोस एक जाय, मन में बिचार करनि लाग्यौ कि, यह एक तौ जोबनवती; दूजै याहि पर पुरुष की इच्छा है; कदाचित जैसें यह मोहि मिली, तैसें काहू और सों मिल जाय, तौ फेर मैं कहा करौंगौ? यह बिचारि, एक नदी के तीर जाय बोल्यौ, भद्रे! प्रथम नदी पार बित्त वस्त्र धरि आऊं, पाछै पीठ पर चढ़ाय तोहि लै जाऊंगौ। वाने या बात के सुनत ही, बसन आभूषन को गठरी दई; इन लै पार होय अपनी बाट लई सो लई; बिभिचारिनी नदी तीर पछताय, नीचौ नार किये बैठ रही ही कि, एक स्यारनी मास कौ लौथरा लियै

तहां आई। अरु एक माछरी हू पानी तें निकरि, रेत पर बैठी ही; वाहि देखि, स्यारनी लोथरा धरि, माछरी पकरवे कौं दौरी। इत मास चोल ले गई; औ उत माछरी याहि देखि जल में कूदी। जब स्यारनी निरास होय चील की ओर तकनि लागी, तब बिभिचारिनी बोली कि, दोऊ गंवाय अब कहा देखति है? उन कही, एक तौ हौं चतुर, अरु मोहू तें दूनी तू, जु तेरौ सरबसु गयौ औ न जार भयौ न भर्त्तार। इतनी कथा कहि, मगर बोल्यौ, भाई! मेरौ हू वही दसा है; पर अब कौन उपाय करौं। नीति में तौ कार्य साधवे कौं चार उपाय कहे हैं; साम, दान, दंड, भेद; अब इन में तें मोहि जो करनौं जोग होय, सो कहौ। बानर कही, अरे! मूढ़ कौं उपदेस कबहू न दीजै। बहुरि मगर बोल्यौ, मित्र! हौं शोकसमुद्र में बूड़तु हौं, तू मोहि काढ़, तोहि जस धर्म होयगौ। कह्यौ है, "जौ मूरख काज बिगारै, तौहू चतुर सुधार लेय।" मैं मूढ़ तू चतुर, तातें जामें मेरौ भलौ होय, सो युक्ति बताय। वाकी दीनता देखि बनचर बोल्यौ, भाई! तू अपने घर जा, औ सजाती सों युद्ध कर; क्योंकि, जौ जीतिहै तौ घर पायहै, औ मरिहै तौ स्वर्ग। कह्यौ है, "उत्तम जन सों साम उपाय कीजै, मनुहार करि कार्य्य लीजै; अरु अति बलवान कौं धन दै, दान उपाय करि, अपनौ काज संवारियै; पुनि दुष्ट तें दंड उपाय कै, अपनपौ राखियै; बहुरि समान सों भेद उपाय करि, वाहि छल बल करि, मार नाखियै," जैसें

एक स्यार ने कियौ। मगर कही, यह कैसी कथा है? पुनि बानर कहतु है;

काहू स्यार ने बन में एक मर्‌यौ हाथी पायौ; पर वाकौ कठिन चाम, यातें काट्यौ न गयौ। त्यौंही एक सिंह आयौ; यह देखत ही वाके सनमुख उठि धायौ, औ हाथ जोरि बोल्यौ, स्वामी! या गज कौं आप अंगीकार कीजै। उन कही, हौं काहू कौ मार्‌यौ खातु नाहीं, मेरौ यह धर्म है; यातें यह मैं तोही कौं दियौ। इतनी कहि वह चल्यौ गयौ। पुनि एक तेंदुआ आयौ; वाहि देखि स्यार ने जी में बिचार्‌यौ कि, यह दुष्ट है, याकौं भेद उपाय करि डराइयै। ऐसें मन में ठानि यह वाके सनमुख जाय गुमान सेां हितू होय बोल्यौ, अहो! ह्यां कहां आवतु हौ? यह गज सिंह मारि गंगा न्हान गयौ है; मोहि याकी रखवारी राखिकै। ज्यौंहीं बघेला ने याकी बात सुनी अरु वाके चरन चिंन्ह देखे त्यौंहीं पीठ दई। इतेक में एक चीता आयौ, ताहि निहारि जंबुक ने बिचार्‌यौ जु यासेां हाथी कौ चाम फड़वाय लीजै तौ भलौ। ऐसें बिचारि इन चीता सेां कह्यौ, अहो भगिनीसुत! मैं तोहि अनेक दिन पाछै देख्यौ; जौ भूख्यौ है तौ यह गज सिंह मारि नदी न्हैवे कौं गयौ है; जौलौं वह आवै तौलौं कलेवा करि चल्यौ जा। उन कही, मामा! हौं अपनौ मांस राखौं तौ लाख; सिंह कौ मार्‌यौ गज कैसें खाऊं? स्यार बोल्यौ अरे! हौं याकौ रखवारौ हौं, औ तेरे आड़े ठाढ़ौ रहतु हौं, तू खा;

जब सिंह आवैगो, मैं पुकारौंगो, तब तू भाग जैयो। उन याकी बात मानि ज्यौंहीं वाकी खाल फारि कछु मांस मुख में लियो, त्यौंहीं स्यार पुकार्यो, अरे! भाग! सिंह आयो। यह सुनत प्रमान, वह उटि दौर्यो। या भांति स्यार ने वासों दान उपाय करि निज काज साध्यो। आगै, सजातीन सों दंड उपाय करि युद्ध कियो; अरु वह हाथी काहू कौं न खान दियो। तातें हौं कहतु हौं कि साम दान दंड भेद चार उपाय कहे हैं; पर जैसो जहां बूझिये, तैसो तहां करियै। बहुरि मगर कही, हौं बिदेस जैहौं। बंदर बोल्यो,

अरे! एक चिचांगद नाम कूकर परदेस में जाय काहू गृहस्थ के घर पैठ्यो; औ आछो आछो खाय जब बाहर आयो, तब वा गांव के स्वाननि वाहि घेर अति मार दई। पुनि, इन दुख पाय निज नगर की बाट लई अरु घर आयो। तद याके कुटुंब ने पूछ्यो कि, विदेस जैवे की अवस्था कहो जु ह्यां कैसें रहे? इन कही, परदेस में और तो सब भलो, पर सजाती देख नाहीं सकतु; जो कोऊ मोसों पूछै, तो मेरे जाने घर तें निकसनो उचित क्योंहू नाहीं। अरे मगर! तातें हौं कहतु हौं कि तेरी दुष्ट पत्नी तो गई, पै तू अबही सकाम है, यातें नयो ब्याह कर। कह्यो है, "कुआ को नीर, बड़ की छांह, तुरंत बिलोयो घी, खीर को भोजन, बाल स्त्री, ये सब प्रान कौं पोषतु हैं।" अरु अवस्था प्रमान काज कीजै, तो दोष नाहीं। बानर तें यह उपदेस सुनि,

मगर निज घर गयौ ; औ उन नयौ विवाह कियौ, घर मांड्यौ, सब दुख छांड्यौ, आनंद सेां रहन लाग्यौ। इतनी कथा संपूरन करि विष्णुशर्मा ने राजपुचन कौं असीस दई कि तिहारी जय होय, औ शत्रुन की हार! यह सुनि, राजपुचन कूं वस्त्र आभूषन द्रव्य मंगाय भेट धरि पाय लाग गुरु कौं बिदा कियौ, अरु आप नीतिमार्ग सेां निज राजकाज करनि लागे।

इति लब्धप्रनाशः पंचमः कथासंग्रहः संपूर्णः।

NOTES ON RĀJNĪTI.

NOTES ON NAIADS

NOTES.

Page 1.

कथा आरम्भ 'beginning of the story.' **कथा** is from the Sk. root **कथ** 'to narrate.'

l. 1. **को** is the Braj form of the genitive termination **का**.

समंद the curtailed form of **समंदर** = **समुद्र** 'sea', is used for the sake of rhyme.

l. 2. **ये कहु** = **यह कुछ**. **कहतु हैं** = **कहते हैं**.

l. 3. **श्री** primarily means 'prosperity', 'lustre.' When prefixed to proper names it means 'prosperous', 'illustrious', 'holy.' The river Ganges is the most sacred stream of India and it is worshipped as a goddess by the Hindus.

जू = **जी** a term of respect usually added to names of deities and revered persons. [This word also means 'river' when it is derived from the Sk. root **जू** 'to move on quickly.']

तीर = **तीर में**. The locative termination is understood here. It is often omitted after the word **समय** 'time.'

नाम 'named.' With proper names it is used like a Compound Adjective.

सब गुन निधान 'a receptacle of all virtues.' The correct form of the word **गुन** is **गुण**. It is to be noted that in Hindī no distinction is made in the use of the cerebral and dental *n*, so also in the use of the three sibilants, and the letters **ब** '*b*' and **व** '*v*.'

l. 4. **महाजान** = (**महा** 'great' and **जान** 'knowing') 'very learned.' This word **जान** which is derived from **जानना** (Sk. **ज्ञा**) 'to know' is quite distinct from the word **जान** meaning 'life' which comes from the verb **जनना** (Sk. **जन**) 'to be born', 'to come into existence.'

पुन्यवान् 'possessing religious merits.' This suffix **वान** denotes 'possession', cf. **धनवान** 'rich', **ज्ञानवान** 'wise', and is used only after words ending in **अ** (*a*) and **आ** (*ā*). After words ending in **इ, ई** (*i, ī*) and **उ, ऊ** (*u, ū*), its other form **मान** is

used. Cf. बुद्धिमान 'intelligent', धीमान 'learned', अंशुमान 'luminous', etc.

सुदरशन lit. 'of a beautiful appearance.' Here a proper name.

l. 5. ह्यो 'was.' The Braj form of the past tense of the verb होना 'to be', in the third person singular.

वानें = उस ने. वा is the constructive base of the demonstrative pronoun वह in Braj dialect. It is the singular form of वे.

काहू = किसी. It is the constructive base of the indefinite pronoun कोई.

तें is the Braj form of the ablative termination से 'from.'

द्वै = दो 'two.' ताकौ = उसका 'of that.'

l. 6. अनेक अनेक 'very many.' अनेक lit. means 'not one', i.e. more than one.

संदेहनि 'doubts.' Note the plural termination नि which is purely Sanskrit and is the origin of the very common final nasal denoting plurality. In the later development of the Braj dialect this नि gradually dropped the final *i* and became simply न. Cf. नैनन 'eyes', फलन 'fruits.'

कौं is the Braj form of the accusative termination को.

दूरि ; the final *i* is redundant here.

l. 7. करै = करता है. दूरि करै 'removes.' The final *ai* in करै is the sign of the proverbial present.

अरु = और 'and.' This transposition of the vowel is common in Braj dialect.

गूढ़ अर्थनि 'hidden meanings.' गूढ़ comes from the root गुह 'to hide.'

तातें = तिससे 'hence', 'therefore.'

l. 8. जाहि = जिसका 'of whom.'

शास्त्ररूपीनेच—शास्त्र comes from the root शास 'to teach', 'to rule', hence 'teachings', 'rulings'; here it means 'knowledge of the *shāstras*.' नेच 'eyes', lit. 'leader', from the root नी 'to lead.' The word रूपी from रूप 'form', is generally used to illustrate a metaphor and is placed between two words, the first of which is compared to the latter. *Vide* Greaves' Hindi Grammar, p. 67.

सो = वह 'he.' Evidently the Sanskrit third personal pronoun सः.

आंधरो = अन्धा 'blind.'

l. 9. **नवनापन** 'youth.' **नवन** 'young'; **पन** is a suffix for forming abstract nouns.

अविवेकता 'want of discretion.' **अ** is a privative prefix: when it comes before a word beginning with a vowel, it takes the form **अन** (cf. the English prefix *un*). Cf. the word **अनर्थ** 'evil' in the next line. **ता** is another suffix for forming abstract nouns. Words formed with this suffix are feminine.

l. 10. **करनिहारो** is the Braj form of **करनेवालो** 'producer.' For this form of the noun of agency, *vide* p. 131, Greaves' Hindi Grammar.

हैंय is the contingent future, third person plural form of the verb **होना** 'to be.'

l. 11. **न जानिये** 'it is not known.'

कहा is the Braj form of the indefinite pronoun **क्या** 'what.' **होय=होता है.**

सुनि=सुन कर or **सुनके.** For this form of the conjunctive participle, cf. **देखि** and **करि** in the next line.

अपनें 'of his own.' The nasal dot denoting plurality is often put in Braj after the final vowel of words of any part of speech without much significance. Cf. **सुनें** l. 5, **ऐसें जैसें** l. 14, **जन्में** l. 16, etc.

l. 12. **कहनि लाग्यो=कहने लगा.** In Braj the indefinite perfect has the termination **यो**; cf. **कह्यो, देख्यो, बोल्यो.** &c.

l. 13. **भये** is the Indefinite Perfect Conditional, third person plural of the verb **होना** 'to be.'

जे and **ते** in the next line are correlatives direct from Sanskrit **ये—ते** 'who—they.'

विद्या करि हीन=विद्या से हीन 'void of learning.' **करि** is here used in the sense of **से** and is a preposition.

धर्म सेां रहित=धर्म से रहित 'devoid of virtue' **सेां=से.**

l. 14. **रहित** is the exact reverse of **सहित** 'with', and is used as a preposition. *Vide* p. 189 Greaves' Hindi Grammar.

देखिवे को तो=देखने को तो. **नाहीं** 'are not'=**नहीं हैं.**

l. 15. **दुखनी** feminine form of the verb **दुखना** int. 'to pain.' **आवै=आवे** contingent future (conditional) of **आना** 'to come.'

पीर=पीड़ा 'pain.' **करै=करता है** 'causes.' **कह्यो है** 'It is said.' **नाही को'...जाके=जिसको...जिसके.**

l. 16. मर्य्याद 'honour', 'glory.' कुल 'family.'
यौं तौ = यूं तो 'ordinarily.' Note the vigour of the Braj dialect in which the vowels *e* and *o* are generally lengthened into *ai* and *au*.

PAGE 2.

l. 1. उपजतु है 'is born.' सज्जन = (सत् 'good' and जन 'man') 'gentle.'

l. 2. होतु है = होता है. पुरुषसिंह lit. 'the lion of a man', hence 'a great man.'

l. 3. वा = उस is the constructive base of the remote demonstrative pronoun.

l. 4. After कुल supply शोभा पावतु है. जाकौ = जिसका.
गुनीन plural of गुनी 'possessing virtues.' (गुन + इन). The suffix इन denotes possession. Cf. धनी 'wealthy' ज्ञानी 'wise', &c. This plural form should be carefully distinguished from the feminine form ending in इन, *e.g.* मालिन 'gardener's wife', धोबिन 'washerwoman', ग्वालिन 'milkmaid.'
लिखनी = लेखनी 'a pen.' Lit. 'an instrument for writing', from लिखना 'to write.'

l. 5. बांझ from Sanskrit वन्ध्या 'a barren woman.' Cf. सांझ = सन्ध्या 'evening.'

l. 6. दान 'charity.' तप 'religious austerity.' सूरता 'bravery.'

l. 7. जनवे हो कौ = जनने ही का 'of giving birth to or delivering.' This termination वे is the inflected form of the termination वौ = ना in Braj. Cf. देखिवे कौं = देखने के p. 1, l. 14.

l. 8. पै = the conjunction पर 'but.'

l. 9. जिननि = जिनने. This termination नि should not be confounded with the plural termination नि as in तीर्थनि in the same line. Cf. also संदेहनि p. 1, l. 6.
व्रत 'a religious vow.'

l. 10. धर्मात्मा 'virtuous', 'religious.' धर्म 'virtue', 'religion' and आत्मा 'soul.'

l. 11. छह = छ 'six.' सदा 'always' is the curtailed form of सर्वदा 'at all times.' दा is a suffix denoting time.

l. 12. शरीर आरोग्य is a compound word = शरीर का आरोग्य 'health', lit. 'freedom of the body from illness.'

l. 15. भलो = भला 'well and good.' Note that in Braj this final *au* is frequently put for *ā*.

कोऊ = कोई 'somebody.'

में तें note the use of the double postpositions = मे से 'from amidst.'

l. 16. आयु 'life.' कर्म 'occupation' from करना 'to do.' विभ 'wealth.'

l. 17. बात here means 'things.'

देहधारी 'man.' Lit. 'body-holder.'

सिरजो = सृजो 'created.' Feminine, because it qualifies बात.

l. 18. भावी 'future.' Lit. 'yet to be' from भू 'to be.'

बिना 'without.' भये 'having taken place.'

रहति = रहता. This particle ति in Braj is frequently the termination, for all genders and numbers, of the present participle.

l. 19. महादेव is another name of Śiva, who is represented as naked. नग्नता 'nakedness.'

भगवान here means Vishnu, who is represented as lying on a serpent-bed.

सर्प सय्या 'a bed of serpent.' These two words though written separately is a compound word and should be read as one word.

l. 20. मति करो = मत करो 'Do not.' जो = जो conj. 'if.' तिहारे = तुम्हारे

कर्म 'fate', 'destiny', lit. 'an act or deed.' The Hindus believe that man's condition in life is the result of his actions in previous births.

l. 21. होंयगे = होवेंगे 'will be.' पुनि = Sk. पुनः 'again.'

राजा कही = राजाने कहा. In Braj ī is joined to the root of a verb to form the Historical Past Tense for either gender.

l. 22. परमेश्वर = (परम 'supreme' + ईश्वर 'God'). जो is understood before दाय.

l. 23. दयो = दिया. सो 'that', correlative of जो understood in the previous line.

विद्या साधन के अर्थ 'for the acquisition of learning.'

Page 3.

l. 1. बिन = बिना 'without.' पुरुषार्थ 'energy', 'exertion', lit. पुरुष 'man' + अर्थ 'object', i.e. 'the object of man's existence on

earth.' This word technically means 'the four principal objects of human pursuit', viz. (1) *Dharma* 'duty', (2) *Artha* 'wealth', (3) *Kām* 'desire' and (4) *Moksha* 'salvation.' Here it is synonymous with the word **उद्यम** 'energy', 'effort', in the next line.

l. 2. **ई**=the emphatic particle **ही** 'only.' **आसरो**=**आसरा** 'hope', 'reliance.'

l. 5. **जड़** 'an inert thing.'
करता same as **करतार** 'author', 'doer.'

l. 6. **तासों** 'therefore.' **प्रेरै** '(if) stimulates.'

l. 7. **संयोग** 'combination', 'union.'

l. 8. **कपूत**=**कुपुत्र** 'unworthy son.' **कु** 'bad.'

l. 11. **सोहै**=**सोहाता** 'shines.'

l. 12. **समाज** 'assembly.'

l. 14. **नीतिमार्ग** 'the path of morals.' **नीति** lit. 'that which leads', hence 'rules of conduct.'

l. 15. **मरकत मनि** 'emerald.'

l. 18. **संगति कीजै** 'associate with', Imperative.

l. 19. **ओछो** 'mean.' **आठौं पहर** 'day and night.' **पहर** 'a watch of the day', 'three hours.'
उपाधि 'trouble', 'vexation.'

l. 20. **तहां** 'then', 'at that point'; mark the use of the adverb of *place* for the adverb of *time*.

l. 21. **बृहस्पति** is the teacher of the gods in Hindu mythology.

l. 23. **सिद्ध होना** 'to succeed', 'to be successful.' **अरु जो** 'and if.'

Page 4.

l. 1. **अनीति विशेष** 'distinctive acts of impropriety.'
छांड़ै; here the nasal dot after *ā* is redundant. **छाड़ना**=**छोड़ना** 'to forsake.'

l. 2. **गांठ बांधना** is 'to stick to obstinately', 'to be prejudiced.' **दृढ़ करि** 'firmly.'

l. 3. **नवो नवो**=**नया नया** 'new', 'fresh.' The repetition of the adjective here means 'succession.'
तौहू=**तब भी** 'still.'

l. 4. बिलूरवे की घात 'deceptive ways of cats.'
कोटि 'a *crore*', here used in the sense of 'numberless', 'various.'

l. 5. सौ = सा 'like.' सुआ = सुगा 'parrot.'

l. 6. माछरी = मछली 'fish.'

l. 8. मनि 'a precious stone.' मानिक is 'ruby.' The two words together mean 'the jewels' as a class. Cf. रुपिया पैसा 'money.'

l. 10. यातें 'for this reason.' हैं is the Braj form of हम = मैं.

l. 11. छः 'six'; for another form of this numeral *vide* p. 2, l. 11.
करिहैं = करूंगा.

l. 13. पुहुप 'flower' from Sk. पुष्प. नान्हे 'insignificant.' ह्व = भी. *Vide* l. 3.

l. 14. माथे = माथे पर 'on the head.' सतसंग 'good company.'

l. 15. प्रतिष्ठा करना is 'to consecrate as a deity.' In line 18 it is used as a noun and in the sense of 'dignity', 'honour.'
देवता करि 'as a god', 'taking it to be a god.'

l. 16. उदयाचल 'the mount of rising (of the sun).' The eastern mountain from behind which the sun is supposed to rise. परवत 'mountain' is a tautology here, for अचल lit. 'not moving' means 'a mountain.'
बसन 'habitation' from बसना 'to dwell.'

l. 17. दौसे 'show; make appear.' सुसंग 'good company', सु 'good.'

l. 19. उर 'heart', अन्तर 'difference.' सरूप (स = समान 'equal', रूप 'appearance'). निरन्तर (निर 'not', अन्तर 'difference') 'alike.'
There is a popular belief that if a bumble-bee catches hold of an insect, the latter is transformed into the former through constant contact.

l. 20. हेम 'gold.' पारस = स्पर्शमणि 'philosopher's stone.'
सरसे दरसे 'is frequently seen.'

l. 21. सेस 'the thousand-headed serpent of the Hindu mythology.' सारदा the goddess of learning,' lit. 'She who gives the essence of human existence, i e. knowledge.' व्यास 'the compiler of the Vedas.'
मुनि 'sage.' पार lit. 'crossing', hence 'limit.'

l. 22. **महिमा** 'greatness', 'glory.' **गंवार** lit. 'a villager', 'a boor', hence 'a man of little learning.'

l. 23. **जोग** 'competent.' **वा**=**उस**.

PAGE 5.

l. 1. **सौंपे** 'entrusted.'

l. 3. **समें** 'time', 'opportunity.'

l. 4. **काव्य शास्त्र** 'poetical literature.' **आनन्द** 'delight.'
रसिकनि 'men of taste for learning.' '**रस** 'flavour', 'taste.'

l. 5. **कलह** 'quarrel.' **उतपात** 'mischief.'

l. 6. **हौं**=**हम** 'I.' **मित्रलाभ** 'acquisition of a friend.'

l. 7. **लाभ** 'gain', 'benefit', 'advantage.'

l. 9. **असाध्य** 'incapable', 'weak.' The word also means 'impracticable.'
निधन (properly **निर्धन**) 'void of wealth', 'poor.' This word should not be confounded with the word **निधन** meaning 'destruction.'

l. 14. **सेमल** 'silk-cotton', Sk. **शाल्मली**. **रूख** 'tree.'

l. 16. **कालरूप** 'like Death.' **काल** 'time' also means 'Death.'

l. 18. **भोर ही की बेला** 'at the very break of day.'

l. 20. **उतपात की ठाम** 'place of danger.'

l. 21. **इतेक में**=**इतने में** 'in the meantime.'

l. 22. **ब्याधी**=**ब्याध** 'hunter', 'fowler.' The final *ī* has no signification here, and is added without affecting the gender. This word **ब्याधी** should be distinguished from the word **ब्याधि** which means 'disease.'
तरै=**तले**, **चांवर**=**चांवल**, **डारि**=**डाल कर**. All are examples of the interchangeability of *l* and *r*. **तापर**=**तिस पर**.
चित्रग्रीव lit. 'spotted-necked.'

l. 23. **उत** 'thither', correl. of **इत** 'hither.'

PAGE 6.

l. 1. **आय कढ़्यो** 'happened to come.'

l. 2. **चुग्यो**=**चुगना** 'to pick up.'

l. 3. **कौतुक** 'trick.'

l. 6. दहदल 'quagmire', 'swamp', 'bog.' Cf. दलदल.

l. 10. कुश 'a kind of sacred grass.' It is used in all religious rites and ceremonies.

l. 11. बटोही 'traveller', 'wayfarer.'

l. 12. नाहर 'a tiger.' भय पाय 'being frightened.' पाय=पा कर व्हांहीं=वहां ही.

l. 13. ठिठक्यो 'stopped short', 'stood amazed.'
याहि=इसको. भयातुर 'distressed with fear' (भय+आतुर) अहो 'O.' देवता 'a deity'; here a term of respect, for Brahmans are considered by the Hindus as gods on earth.

l. 14. गैल 'path', 'road.' Mark the different uses of the word हैं in this line, the first of which is equal to हम, and the second to हूं.

l. 15. मो=मुझको. श्रीकृष्णार्पन देना is 'to dedicate in the name of God.'

l. 16. लै=ले.

l. 17. दीसतु है=दिखाता है 'it seems.' जैवौ=जाना (in Braj).

l. 18. जोग=योग्य 'proper.' हू in Braj is equal to the emphatic particle भी.

l. 21. माया lit. 'illusion'; here used in its secondary sense of 'wealth', 'riches', the most delusive of human possessions. There is a superstition that wherever there is wealth hidden under earth, a serpent is invariably found there to guard over it.

PAGE 7.

ll. 3 & 4. व्याध कौ करनैवारो lit. 'causer of pain', hence 'doer of mischief.'

l. 6. दूजे 'secondly' is corr. of एक तौ 'first and foremost' in the previous line.

l. 9. प्रकार 'ways', i.e. 'means of acquiring virtue.' पाखंडी 'a hypocrite.'

l. 10. लये=लेकर.

l. 12. कुटनी 'a procuress.'

l. 13. हत्यारो 'a murderer.'

l. 14. काया 'body.'

ll. 18 & 19. **धर्मार्थ** etc. '(either) for acquiring virtue, or for fear, or for doing good to others or for affection.'

l. 19. **तोहि** = **तुमको**.

l. 21. **फल** 'religious merit', lit. 'fruit.'

l. 22. **औषध अरु पथ्य** 'medicine and diet.'

l. 23. **देश काल पात्र** 'place, time, and person.' **सात्विकी** lit. 'pertaining to **सत्त्व** 'essence of real goodness', hence 'true', 'genuine', 'really good.' In Hindu philosophy all things in nature are divided according to the preponderance of one of the three constituent properties, namely **सत्त्व** 'goodness', **रज** 'activity', and **तम** 'ignorance.'

Page 8.

l. 1. **औ** in Braj a curtailed form of **और**.

ll. 2 & 3. **ज्यों**—**त्यों** 'as soon as', 'no sooner than.'

l. 3. **दौ** 'mud', 'mire.'

l. 4. **हौलें हौलें** 'slowly', 'little by little.'

l. 6. **तोपै** = **तुमपर**. **प्रयोग** 'recital of some ceremonial text.'

l. 7. **स्वस्ति शब्द** 'a word of benediction'; **स्वस्ति** lit. **सु** 'good' + **अस्ति** 'is.'

l. 8. **नरहटी धरी** 'seized him by the throat.' **नरहटी** = **नरेटी** 'throat', 'windpipe.'

l. 11. **सुभाव** = **स्वभाव** lit. 'one's own nature.'

l. 14. **उत**—**इत** = there here. **फेरि** = **फिर** 'again.'

l. 16. **कुल व्योहार**— 'hereditary tendency.' Lit. 'family custom.' **तौ लौं** = **तब लग** = **तब तक** 'by that time.'

l. 18. **कबहू न** = **कभी न** 'never.'

l. 22. **सनमान** = **सम्मान** 'honour', 'exultation.'

रागरंग merriment.' Cf. **रंगरस**

l. 23. **गिरधर कविराय** 'Girdhar the king of poets.' Girdhar Das was a didactic poet famous for his Kundaliyās. **कुंडलिया** is a kind of stanza in Hindi poetry, which is so constructed as to end invariably with the same word or words as the next begins with. It is hence compared to the coil of a snake (**कुंडली**) the opposite ends of which unite.

PAGE 9.

l. 2. सुसेवित 'well-served.' सु 'well', सेवा करना 'to serve.'

l. 3. परेवा 'a pigeon', from Sanskrit 'पारावत.'

l. 4. डोकरा 'old person.'

ll. 6 & 7. सुख - - - - होय 'cannot even live at ease.'

l. 7. तृषावंत lit. 'thirsty', here 'avaricious.'

l. 8. सदासंदेही 'always suspicious.'

l. 9. छहौं plural form of छह 'six.'

l. 11. इनकी लार 'in their company.' जो होय सो होय 'come what come may.'

l. 14. आगे 'then.' This is a common expression used in narratives to introduce a new thread of the story. It literally means 'further on.'

विनके = उनके.

l. 15. पखेरू 'birds', lit. 'winged one', from पख, Sk. पक्ष 'wing.'

याने = उसने i.e. 'the fowler.'

l. 16. जेवरी 'rope.' बझे 'were entangled.'

तद = तब. This form is the shorter form of Sk. तदा 'then.'

l. 17. सभा में 'in an assembly.'

l. 18. संवरै 'be successful', 'thrive.'

l. 22. बछरा 'calf' from Sk. वत्सतर.

PAGE 10.

l. 1. बधिक lit. 'one who kills', hence 'a huntsman.'

l. 2. अति हित etc. 'a great friend becomes an enemy.'

तुलसी the great poet of Hindustan, the author of the Ramayana, addresses himself and says. It is a common feature of Hindi poets to join their names in this way at the end of didactic poems.

l. 3. ज्योतिष 'astrology', properly 'astronomy.' Lit. 'the science of the luminaries.'

आगम 'the mystical science of spells and incantation for self-protection.'

भूत 'past', lit. 'what was.' भविष्य 'future', lit. 'what will be.'

वर्त्तमान 'present', lit. 'what is.'

l. 4. **उलटि जातु** 'is perverted.'

l. 5. **आपत्य** 'danger', 'difficulty.' **काम आना** 'to become useful.' **भई बात** i.e. 'to repent for the past.'

l. 6. **कपूत** 'unworthy son.'

l. 8. **बीति ताहि** 'that which has passed.'

l. 9. **बन आना** 'to be performed.'
सहज में 'easily', 'at ease.' **चित देना** 'to apply one's mind', 'to attend to.'

l. 11. **दुरजन** 'wicked people.' **दुर** 'bad', **जन** 'man.'

l. 12. **परतीती** 'confidence', 'sincere belief.'

l. 13. **बीती सो बीती** 'what is gone is gone.'

l. 16. **बिसन** lit. 'addiction', 'strong propensity.'

l. 17. **छोरे** = **छोड़े** 'to avoid.'

l. 19. **एकमति होय** 'being of one mind.'

l. 20. **क** = **भी**.

l. 21. **सिद्ध होना** 'to be achieved.' **बांटें** 'is twisted.'

l. 24. **जद** = **जब** 'when.' For its corr. **तद** *vide* next line and p. 9, l. 16.

l. 25. **धरती** 'the earth.' Lit. 'the holder of all', from **धरना** 'to hold.'
निरास 'hopeless.' **निर** a privative prefix and **आस** 'hope.'

Page. 11.

l. 3. **कढ़ैं** 'get out', 'extricate ourselves.'

l. 4. **सुभाव ही तें** 'by nature', 'instinctively.'

l. 8. **व्हां** shortened form of **वहां** 'there.' **परेवानि** 'the pigeons.'

l. 9. **कै** = **हो कर**.

l. 10. **पिछानि** 'recognizing.'

l. 11. **बड़े भाग** 'great good fortune.'

l. 12. **मो पै** = **मुझ पर**. Cf. **तो पै** = **तुझ पर**; *vide* p. 8, l. 6.

l. 13. **उन कही** = **उसने कहा**. For this form of the verb *vide* p. 2, l. 21.

l. 14. **पूर्वजन्म को पाप** 'sin of the previous birth.' The Hindus believe in the doctrine of transmigration of soul and refer all their

pleasures and pains of the present life to their good and evil doings of the past life.

l. 16. **अपने . . . . फल है** 'is the fruit of one's own actions.' This law of Karma explains most of the subtle points of Hindu philosophy.

l. 18. **उदोत = उदित** 'risen.' **प्रभाकर** 'the sun', lit. **प्रभा** 'light', **कर** 'maker or producer.'

l. 19. **सरोज** 'lotus', lit. 'born of a pond.'
मेरु 'the fabulous mountain of the Hindu mythology': probably 'the Himalayas.' **चले तो चले** 'might possibly move.' The repetition of the verb here implies 'possibility.'

l. 20. **मोतियराम** is the name of the poet.

l. 21. **चंक** 'lines', 'letters.' **लेखे विधि के**—this refers to the Hindu superstition that on the sixth day after a child is born Fate writes down upon its forehead all that will happen during the child's career, and what is written is inevitable.

l. 23. **हितू** '(my) friend!' Lit. 'a benefactor.'

Page 12.

l. 1. **संघातीन** 'associates', 'companions.' **ता पाछे** 'after that.'

l. 2. **प्रीतम** 'most beloved'; this superlative suffix **तम** is purely Sanskrit.

l. 4. **नायक** 'leader', from the root **नी** 'to lead.'

l. 5. **यासों = इस से** 'for this reason.'

l. 10. **धर्म्म अर्थ काम मोच्च** 'duty', 'wealth', 'desire', 'salvation', i.e. 'performance of one's duties, spiritual and temporal'; 'acquisition of wealth, moral and material'; 'attainment of the objects of desire, reasonable and legitimate'; 'attainment of salvation.' *Vide* note on line 1, page 3.

l. 11. **पदार्थ** 'thing.' Lit. 'that which a word connotes.'

l. 12. **बहुरि** 'again.' Cf. Sk. **भूरि** 'again and again.'

l. 13. **सरनागत वत्सल** 'kindly disposed to those who come under his protection.' **सरन** properly **शरण** 'protection', **आगत** p.p. 'come', **वत्सल** 'kind.'

l. 16. **अनित्य** 'not permanent', 'transient', 'mortal.' **नित्य** 'ever-existing', 'eternal.'

l. 17. **अविनाशी** 'indestructible', 'immortal.'

l. 19. **मलीन** 'filthy', 'full of filth.' **मल** 'filth', 'dirt.' The body is called filthy because it is always full of impurities, which come out as excretions.

निर्मल 'free from impurities', 'pure.'

l. 22. **त्रिलोकी** 'the three worlds', i.e. the earth, the skies, and the nether world. The final *ī* here signifies a collective idea.

Here **राज** = **राजा** 'king', not 'kingdom.'

Page 13.

l. 1. **जिन** is here a prohibitive particle (like **मत**) = don't.

l. 2. **जोजन** is an old Indian measurement of distance, which is equal to 4 *croses* or 8 miles.

l. 4. **ग्रहपीड़ा** 'distress from the planet.' **ग्रह** 'a planet' and **पीड़ा** 'trouble', 'distress.' This word means 'the eclipse', which according to the Hindu idea is an attack of Rāhu, which in old Indian astronomy was counted amongst the planets.'

l. 5. **नभचर** 'living in air', **नभ** 'sky' and **चरना** 'to move about.'

l. 6. **भावी** 'future', lit. 'yet to be', from the root **भू** 'to be.'

l. 8. **मनोहर** 'pleasing', lit. 'heart-stealing', 'mind-captivating', from **मन** 'mind' and **हरना** 'to steal.'

l. 9. **कुटंब** 'kinsmen.'

l. 12. **मिचाई** 'friendship'; mark the abstract termination **ई** here, which takes a long *ā* before it. Cf. **चतुराई**, p. 10, l. 15.

l. 14. **बार** in the language of Marwar means 'door', probably a curtailed form of the Sanskrit word **द्वार**.

l. 19. **विपत्त** same as **विपत्ति**, 'calamity', 'danger', 'misfortune.'

l. 20. **भच्च** 'food', 'fit to be eaten', from the root **भच्च** 'to eat.'

l. 21. **अनमिल संग** 'heterogeneous combination', 'association with the discordant.'

l. 22. **स्यार** 'Jackal', from Sk. **शृगाल**.

Page 14.

l. 1. **मगध** is the old name of Behar.

l. 2. **तरै** = **तले मैं** 'at the foot.'

l. 3. दोउन में = दोनों में 'between them.'

l. 4. ही = थी 'was.' Third person feminine perfect form of होना 'to be.'

l. 6. खैवे कों = खाने को 'for eating.'

l. 8. हरवे तें 'slowly.'

l. 9. मित्र करि हीन 'void of friends.' For this prepositional use of करि *vide* p. 1, l. 13.

निरबंधु 'without a relative'; बंधु also means 'a friend.' It is derived from the root बंधना 'to bind.'

l. 10. तिहारौ in Braj = तुम्हारा 'your.' जी में जी आना 'to be comforted', lit. 'to feel as if restored to life.'

l. 11. पायन तरि = पांवके तले में. बात लगाना is 'to coax', 'to humour.

l. 12. कुरंग the Sanskrit name for 'a deer.' आश्रम 'abode.'

l. 13. निदान 'at last.'

l. 15. को = कौन 'who.'

l. 17. बेग adv. 'hastily.'

l. 18. सील 'character.'

l. 22. दीन 'poor', 'unfortunate.'

PAGE 15.

l. 1. पाकड़ 'a kind of fig tree.'

l. 2. खोडर 'hollow.' Cf. Sk. कोटर.

l. 3. चुनि before this supply चुग्गो 'food.' Lit. 'picked-up food.'

l. 5. छौंनानि 'young ones.'

l. 11. भाजिहैं = भागें 'run away.'

l. 13. दंडवत करना lit. 'to fall flat on the ground like a stick,' hence 'to make obeisance', 'to bow down.'

l. 15. ना तो = नतो = नहीं तो 'otherwise.'

l. 16. जो मन मानै सो 'as you please.'

l. 17. ब्रह्मचर्य्य व्रत 'vow of performing religious austerities', 'vow of self-restraint or abstinence.'

l. 18. चांद्रायन व्रत 'a religious or expiatory fast regulated by the moon's age; it consists in the diminishing the quantity of one's food by one mouthful every day during the dark fort-

night till it is reduced to nil at the new moon, and increasing it in like manner during the bright fortnight.'

नेम is a contraction of the word **नियम** 'a religious observance.'

l. 20. **बड़ाई** lit. 'greatness', hence 'praise.' **निपुन** 'expert.'

l. 21. **बिचार** 'contemplation.'

Page 16.

l. 1. **अगाध** 'bottomless', 'unfathomable.' **बिवेक** 'discretion.' **बि** 'prefectly', **बिच्** 'to discriminate (between right and wrong).'

l. 2. **उपाध** lit. 'deception', hence 'wickedness.'

l. 3. **मनोरथ** lit. 'vehicle of the mind', hence 'desire.'

l. 6. **वाङ्ग पर = उस पर भी**; mark the position of the emphatic particle here. Cf. also line 14 below.

l. 7. **पाऊनो** 'guest.' **सेवा जोग** 'fit to be treated hospitably.'

l. 8. **अवस्था** 'position in life', here 'age', i.e. 'stage of life.'

l. 9. **यथायोग्य** 'as is proper', 'becoming.'

l. 11. **हित कै** 'friendly', 'affectionately.'

l. 12. **अतिथि** 'a passing guest.'

l. 13. **धर्म** 'religious merits.'

l. 16. **ह्यां = यहां** 'here.'

l. 19. **सूमि** etc.; these are the forms of taking a solemn vow.
खामी 'my lord!' The word means 'master', 'owner', *also* 'husband.'

l. 21. **बैराग दसा** 'the condition of a religious ascetic who has renounced the world.' **बि** is a privative prefix and **राग** means 'attachment.'
गही है 'have embraced.' **जीवहिंसा** 'killing of animals.' **जीव** 'a living being', *also* 'life.'

Page 17.

l. 3. **छिन** 'moment.' **जीभ** 'tongue', Sk. **जिह्वा**.

l. 5. **कन्द** 'bulbous root.'

l. 7. **समीप** 'near.' **समय** 'opportunity.'

l. 8. सिसु lit. 'child', here 'young ones.'

l. 9. दीरघकरन lit. 'long-eared.' Mark that all the proper names in this book have some significance. Cf. चित्रग्रीव 'spotted-necked.' छुद्रबुद्धि 'small-witted.' लघुपतनक 'fast-flying' etc.

l. 11. मोतें बिछुरे हैं 'are separated from me.' ताके हेतु 'for that reason.' The word हेतु 'cause', 'reason' should be distinguished from हितु 'a friend.'

दिन कटाना is 'to pass the day', 'to beguile time.'

l. 13. परायौ = पलाया 'fled', *not* पराया.

l. 14. परे पाये = पड़े हुये पाये 'found lying.'

l. 15. बिस्वासघाती 'treacherous', lit. 'destroyer of confidence.'
चंडार = चंडाल 'villain', 'base born.' The lowest of castes amongst the Hindus.

l. 16. जीव सों मार्यौ 'killed', lit. 'beat him to death'; cf. जान से मारा.

l. 22. अपनौ परायौ कहनौं 'to call one one's own and another a stranger.'

Page 18.

l. 1. व्यवहार 'behaviour', 'dealings.'

l. 3. जितेक...तितेक = जितना...उतना.

l. 4. उदर की चिन्ता lit. 'thought of the stomach' hence 'search for food.'

l. 5. याही भांति 'in this way.'

l. 7. लये = लिये.

l. 8. मेरी गैल चलौ 'follow me', lit. 'come my way.'

l. 9. या रीति 'in this way.'

l. 10. कुबिसन 'evil desires.'

l. 12. रखवार = रखनेवाला 'keeper.'

l. 13. फांद 'snare', 'trap.' पैठ्यौ 'entered', 'rushed in.'

l. 14. बझ्यौ 'was entangled.'

l. 19. नाचना कूदना is 'to dance and jump (in joy).'

l. 20. ई = ही emphatic.

l. 21. व्याकुल 'distracted.' हाथ पांव पटकना 'to dash one's hands and feet (in grief).'

l. 22. **नटुवा** lit. 'a dancer', 'a rope-dancer', 'a juggler.' **कला** 'trick', 'craft.'

PAGE 19.

l. 2. **दरिद्र** is here used in the abstract sense 'poverty.'

l. 3. **परीक्षा** 'test', comes from **परि** 'on all sides' (cf. Eng. *peri*) and **ईक्ष** 'to see.'

l. 6. **सिद्धि होना** 'to be accomplished.'

l. 7. **आदित** 'the sun.' Sk. **आदित्य** lit. means 'the son of **अदिति** the mother of the gods.' **आदित को उपास** means 'fasting in worship of the sun.' This is a common observance in Northern India not to take or even touch any animal food on Sundays. The sun is the god of health in Hindu mythology.

l. 9. **भंग होना** 'to be broken.'

l. 10. **काष्ठा** 'religious observance.' Lit. 'a limitation or restriction.'

l. 12. **उसरना** is 'to retreat', 'to recede.' **परे होय** 'at a distance', lit. 'being removed.'

निसा बितीत भई 'the night passed.' **बितीत होना** is the fuller form of **बीतना** 'to pass.'

l. 21. **जातीय सुभाव** 'natural instinct.'

PAGE 20.

l. 1. **कानाबानी करना** lit. 'to speak into the ear': hence 'to backbite', 'to calumniate.'

हित की रीति सें 'by way of friendship', 'in the manner of a friend.'

l. 2. **घात चलाना** 'to lay a snare', 'to waylay.'

l. 4. **डंक मारना** 'to sting.'

l. 6. **बैरी** 'enemy.' **बन्दूआ** same as **बन्दी** 'a prisoner', from **बन्द** 'to salute', to pay homage to.'

जुआरी = जुआड़ी 'a gambler.' **लबार** 'a talker', 'a babbler' hence 'a liar.'

l. 7. **बिभचारी** 'an adulterer.' **रिनी** properly **ऋणी** 'a debtor.' **नगरनारि** 'town-woman', 'a prostitute.' The final *i* is short for the sake of metre.

l. 9. सौंदें खाना is 'to take oaths.' चित्त देना is 'to be inclined to believe.'

l. 10. अनधेरो 'one who comes unexpectedly.'

l. 11. बनाय कहना is 'to fabricate words.'

l. 12. लांबो सांस लेना is 'to draw a long breath', 'to heave a sigh.'

l. 15. वायस 'crow.'

l. 16. आंखि फिराय 'turning up (your) eyes', i.e. showing (yourself) as dead.

l. 17. भजियो = भागो 'take flight', 'run away.'

l. 18. आप दो मरना is 'to die a natural death.'

l. 21. खिस्यायके 'grinning with anger.' लोठिया = लाठी 'a heavy stick.'

l. 22. घालना is 'to throw.' लागत प्रमान दो 'the moment he was hit', 'immediately on being hit.'

l. 24. पक्ष 'a fortnight.' The word literally means 'a wing.' The two fortnights are compared to two wings of the month which like a bird is always flying.

Page 21.

l. 2. जो कदाचित मैं 'should I ever.' कदा 'at any time', चित is a suffix of indefiniteness meaning 'whatsoever.'

l. 3. तुम से 'like you.' Here से is the inflected form of the particle सा 'like', and not a postposition.

धरमात्मा 'religious minded.' The word आत्मा means 'soul' but it is also used to mean 'mind.'

l. 4. सहायता 'help.' The word सहाय literally means 'one who accompanies or stands by (in time of danger)', and ता is a suffix forming an abstract noun.

l. 7. पठंगो = पठिंगा 'shelter', 'refuge.'

l. 10. चंचल 'fickle'; it is derived from the frequentative form of the verb चलना 'to move', and means 'always moving', 'unsteady.' The word is more often used in the sense of 'restless', here it means 'one of unsteady mind.'

l. 11. कापुरुष 'a coward', lit. कु 'bad' and पुरुष 'man', 'one who cannot properly be called a man', 'a mean, contemptible fellow', 'a man without manliness.'

व is the shortened form of अव=और 'and.' आन=अन्य 'other than these', 'also.'

मंजार from Sk. मार्जार 'a cat.'

l. 14. कैसौ हू तातौ 'however hot.'

l. 16. अनमिल बात 'disagreeable things.'

l. 18. मर्म की बात 'a secret.' मर्म means 'any vital part of the body' hence anything which should always be hidden, i.e. kept from being exposed (to harm or injury). Here it means 'the secret recesses of the heart.'

l. 21. न बिरुझिये 'do not quarrel with', lit. 'do not turn hostile.'

l. 22. पौरिया 'door-keeper.' यज्ञकरावनहार 'a priest.'

l. 24. परौसी 'a neighbour.' आप कौं तपै रसोई 'one who cooks for you.'

PAGE 22.

l. 2. तरह देना is 'to give way to' hence 'to bear with.'
बन आना is 'to succeed in life', 'to prosper.' सांई 'O Sir.' This word is a corruption of the word स्वामी 'master.' It is also used to mean 'an ascetic.'

l. 6. उपास करि करि 'by continued footing.' Note the repetition of the verb here implies 'successive action.'

l. 7. आन 'oath.' मोहि...है 'I take an oath upon the divinity of Ram and Lakshman.'

l. 9. बेग adv. 'quickly.'

l. 10. फेरि संधै 'can be joined again.'

l. 12. बेर=बैर 'plum', 'jujube.' It comes from Sk. बदरी.
रहन 'ways', 'manners.'

l. 15. पवित्र 'pure', 'pure-hearted.' संकोची 'modest', 'bashful.'

l. 20. लू 'the hot wind of May and June in the U. P. and Panjab.'

l. 22. गुह्य कहिवौ सुनिवौ 'to tell and hear a secret.' The वौ in Braj=ना of the infinitive.

l. 23. दूषन 'defect', 'fault.'

. 24. मिथ्या भाषवौ 'to speak falsehood.'

PAGE 23.

l. 1. जुआ 'gambling.' तो में 'in you.'

l. 2. सुविचार 'good judgment.' प्रसन्न 'pleased.'

l. 4. सामग्री 'things.'

l. 6. या ठौर 'here', 'in this place.'

l. 7. जुरना 'to be procured.'

l. 9. सयानो 'prudent.' आगलो पाय 'fore-foot.'

l. 10. पाछलो पग 'hind-foot.' पग is 'foot.'
ता पाछे 'after that.'

l. 11. नीको ठाम 'good place.' विचारी 'have thought of.'

l. 12. दंडकारन्य 'the forest named Dandaka.' The vast forest in the Deccan between the rivers Narmada and Godavari was called Dandaka. The word बन coming after it is tautologous.
सरोवर 'a lake', 'a large pond.'

l. 13. कछुआ 'tortoise.' धर्मात्मा 'righteous', lit. 'religious minded.'

l. 15. धर्ममारग 'path of virtue.' विरले 'rare.'

l. 17. करिहै: this termination इहै is, in Braj, the 2nd and 3rd person singular of the future tense = एगा. करिहै = करेगा.

l. 17. बड़ाई 'glory', 'honour.'

l. 18. गुनविचार 'appreciation of merit.'

l. 20. बतराना is 'to talk', 'to converse.'

l. 21. पै = पास 'near', 'to.'

l. 22. शिष्टाचार 'courtesy', from शिष्ट 'polite', आचार 'rule of conduct.'

l. 23. पखलाना is 'to wash thoroughly', from Sk. प्रक्षालन.
आसन 'a seat', from the root आस 'to sit.'
पूजा करना lit. 'to worship', hence 'to serve respectfully.'

Page 24.

l. 1. विशेष करि 'especially.'

l. 2. मूसा 'mouse', 'rat.' चूहन को 'of the rats.'

l. 3. स्तुति करना is 'to praise.'

l. 4. शेष नाग the celebrated serpent Śeṣa of the Hindu mythology, is said to have one thousand heads and is represented as forming the couch of Vishnu, or as supporting the entire world on his head.

l. 8. सन्यासियन 'religious mendicants', सन्यासी lit. means 'a saint who has renounced the world and lives the life of an ascetic.'

l. 9. **मठ** 'monastery.' A Buddhist or Jaina convent is called a **विहार**. The province of Bihar derives it nomenclature from one of such convents in the vicinity of the town which is still called Bihar.

l. 10. **आरा** = **आला** 'a niche', 'a small recess in a wall.'
अनाज 'grain.' This word as well as the word **अन्न** comes from the root **अद्** 'to eat.'

l. 15. **गुरुभाई** : disciples of the same teacher or spiritual guide call and address each other by this term, which means 'brother by virtue of having the same Guru or spiritual guide.'

l. 16. **निगुरी** = **निगोड़ा** 'wretch.' Lit. 'without feet.'

l. 18. **उपाय करना** is 'to devise some remedy.'

l. 20. **आलिंगन चुंबन** 'embracing and kissing.'

l. 23. **गौड़देश** the old name of the province of Bengal. The ruins of Gaur, its old capital, lie a few miles off Murshidabad.

Page 25.

l. 1. **बनिया** 'a merchant', from Sk. **वणिक**.

l. 2. **महाजन** 'a banker', 'a merchant', lit. 'a distinguished person', 'a great man.'
अधिकाई 'excess.' For this form of abstract noun *vide* p. 13, l. 12.
काम lit. 'desire', hence 'lust.'

l. 3. **जोबनवती** 'youthful', 'young,'

l. 4. **अनखावना** is 'to be displeased with', 'to hate.'
बिरहिनि 'a mistress separated from her lover.' It is a very common idea in Indian poetry, that the sight of the moon is painful to separated lovers inasmuch as it reminds them of the happy nights they passed with their sweethearts while enjoying the moonlight.
घाम के तौंसे 'one overcome by the heat of the sun.'

l. 8. **बुढ़रा** = **बुढ़ा**.

l. 10. **परकीया** lit. 'another's wife or mistress', here 'an adulteress.'

l. 12. **हित करना** is 'to love.'

l. 13. **बिभचारिनी** from Sk. **व्यभिचारिणी** 'an adulteress.'

l. 14. औगुन = अवगुण 'demerits.'

l. 15. सिंगार करना is 'to dress gaily.'
रात 'at night': the post-position is often omitted after रात.

l. 16. परधाम 'another's house.' सयान 'cunning.'

l. 17. ढिठाई 'forwardness.'

l. 21. रखवारी 'guardianship', 'protection.' सावधानी 'cautiousness.' This final *ī* is the termination of abstract nouns formed from adjectives.

PAGE 26.

l. 1. आनन्द करना is 'to enjoy oneself.' हौ = थौ.

l. 3. सनमुख = सम्मुख 'in front of'; lit. सम 'same' and मुख 'face', i.e. 'face to face.'

l. 5. मिस = मिष 'pretence', 'trick', 'deception.' जार 'paramour.'

l. 6. वृहस्पति 'the preceptor of the gods'; lit. 'the master of knowledge.' The word also means Jupiter 'the lord of luminaries.'
जो...पर 'although . . . . still.'

l. 7. उत्पात की ठांव 'in a situation of danger.'

l. 10. डांटना is 'to threaten', 'to warn.'

l. 11. माया 'wealth', lit. 'delusion' hence 'cause of delusion.'

l. 14. कनक 'gold', *also* 'thorn-apple.'

l. 15. बौराना is 'to become mad.'

l. 18. उत्साह 'energy.'

l. 20. मृतक 'a dead body.'

l. 21. मो पै = मुझ से.
द्रव्यहीन 'void of wealth.' निबलाई 'weakness.' नि is a privative prefix.

PAGE 27.

l. 1. बुद्धिवान, the proper form should be बुद्धिमान; *vide* note l. 2, p. 1.

l. 2. दानी properly दाता. कुलीन 'a nobleman.' Lit. 'one of noble descent.'

l. 5. गुसांई properly गोसांई = गोस्वामी lit. 'Lord of the earth', hence 'a saint', 'a sage'; the descendants of the disciples of Chaitanya are called Gosvāmies.

l. 8. मंत्र 'a mystic verse', 'a charm or spell.'

l. 9. मर्म 'a secret.' द्रव्य 'wealth.' गृहछिद्र 'family secret', lit. 'a hole of the house', hence 'a weak point of the family.'
लाल, the poet addresses himself by his own name.

l. 10. मिथ्या adv. 'uselessly', 'unnecessarily.' भर्भ = भ्रम contraction of भरम 'reputation.' भरम गंवाना is 'to lose one's credit.'

l. 11. उद्यम 'exertion.'

l. 12. धतूरा 'thorn-apple.'

l. 13. महादेव a name of Śiva, lit. 'the great God or God of gods.' Śiva is represented as having the flower of thorn-apple as a decoration of his ears.
भिक्षा 'begging.' उपाय 'means', here 'means of subsistence.'

l. 14. जीवै = जीना 'to live.' जोग 'becoming.' मागिवो 'to beg' and मरवो 'to die.' वै and वो are Braj terminations of the infinitive = ना. The inflected form is वे; *vide* note l. 12, p. 1.
कृपन 'a miser.'

l. 15. सनमान = सम्मान 'respect.' For this replacement of म by न *vide* l. 3, p. 26.
पयान = प्रयान (from प्र 'perfectly' and या 'to go'). 'Departure for good.'
निपट 'exceedingly.' गुनी 'qualified.' Lit. 'possessing high merits', 'virtuous.'

l. 16. गिर = गिरि 'mountain.' गरवो the Braj form of गुरु 'weighty.'

l. 17. जस = यश 'renown', 'praise', 'glory.' उचारना is 'to speak out', 'to extol.'
चुटकी देना 'to snap one's fingers in approbation.'

l. 18. कुटकी = कटकी 'worm-wood', 'a bitter drug.' करवो in Braj = कड़ुआ 'bitter.'

l. 19. अजानबाहु = आजानुबाहु 'one whose arms extend down to the knees'; आ 'up to', जानु 'knees', बाहु 'arms.' Long arms are, in Hindu idea, a token of natural pre-eminence. तउ = तौ भी = तब भी 'still.'
तन from Sk. तनु 'body.' थोरी 'short.'

l. 20. लसै 'looks', 'appears.' हिंडोरे 'a swing.' कौ सौ = का सा 'like.'
मरवो 'same as मेरु 'an axis', here 'the seat of a swing.'

l. 21. मेरे जान 'in my estimation.'

l. 22. हलवो in Braj = हलका 'light.'

l. 23. पराधीन 'dependent on another.'

l. 24. प्रदेस = परदेश 'another country', 'foreign country.'

l. 25. काया 'body.'

PAGE 28.

l. 1. डुलै 'wavers.'

l. 2. मरन होय 'after death.' लोक परलोक 'this world and the next'; लोक means 'world.' लोक परलोक जाना is 'to be deprived of the blessings of this life and hereafter.'

l. 4. आत्मद्रोही 'enemy to myself', lit. 'self-rebellious.' संपति = संपत्ति 'wealth.'
संतोषी 'contented.'

l. 5. अघाने pl. of अघाना 'satisfied.'

l. 7. तृष्णा 'hankering for wealth', lit. 'thirst.' अधीन वचन 'submissive words.'

l. 8. बिरह 'separation from one's beloved.' पीर = पीड़ा 'pains.'
अधीरता 'impatience.'

l. 10. आदर 'respect.'

l. 11. निरजन 'uninhabited', 'solitary'; from निर privative 'without', 'void of', and जन 'man.'
आश्रम 'abode', 'hermitage.' स्वर्गसमान 'like the paradise', 'heaven-like.'

l. 13. काव्यरस 'pleasures of poetry.' काव्य 'poetical literature', and रस 'flavour', 'sweetness.'

l. 16. प्रान तें ह्र यत्न करि 'with greater care than you take for your life.'

l. 17. लये = लिये 'for.' उपजाय राखैं 'having produced collect.'

l. 18. मोटिया 'a porter', lit. "carrier of a मोट 'bundle.'" भोग 'enjoyment.'

l. 20. दान भोग में 'in charity or enjoyment.'

l. 21. सोच 'regret.'

l. 22. बात 'things.'

l. 23. कठिन 'difficult.'

4

PAGE 29.

l. 1. गर्व 'pride.' छमा 'forbearance.' समेत 'with.' सूरता 'heroism', 'prowess.'

त्याग 'giving away (in charity).'

l. 2. धर्म कौ संचय 'acquisition of virtue.'

l. 5. कल्यानकटक lit. 'house of welfare.'

l. 6. हो = वह 'he.'

l. 8. घाल्यौ 'cast', 'threw.'

सर 'arrow.'

l. 9. मरतु मरतु 'while dying', i.e. 'before he died.'

l. 10. दीरघराव lit. 'loud howling.' छुधित 'hungry.' आय कढ़्यौ 'came forth.'

l. 11. तिन in Braj = उन = उसने.

l. 13. लौं = लग = तक 'up to', 'during.'

l. 15. जेह 'cord.' छोर छुटि 'flinging.'

l. 16. ततकाल 'instantly', lit. 'at that time.'

l. 17. जंबुक the Sanskrit name for 'a jackal.'

l. 19. जौलों तौलों 'so long as.'

l. 20. गाहक = ग्राहक 'receiver', hence 'possessor', 'owner.'

l. 21. मरै पै 'after death.'

l. 23. लुटाना is 'to give away (in charity).' स्वारथ = स्व + अर्थ 'one's own interest.'

परमार्थ = परम 'the best', and अर्थ 'object.' 'The highest object of human pursuit' i.e. 'virtue', 'religious merit.'

PAGE 30.

l. 2. गये द्रव्य 'lost wealth.'

l. 3. पायवे जोग 'worthy of acquirement', 'obtainable.'

l. 5. क्रियावान lit. 'performer of actions', hence 'a practical man', 'who carries out all he has learnt into practice.' This word is technically used to mean 'one who performs and celebrates religious rites and ceremonies' but is not used in that sense here.

l. 7. उद्यम 'exertion', 'effort.' विचार 'contemplation.'

l. 10. नर 'man.' स्थान 'place', 'position.'

l. 11. पान 'betel.'

l. 13. दादुर from Sk. दर्दुर 'a frog.' कंवल = कमल 'a lotus.'

l. 14. चक्र की भांति 'like a wheel.'

l. 15. साहसी 'courageous.' सूर 'a brave hero.'

l. 16. व्यापना 'to pervade', 'to affect.'

l. 17. तपसी = तपस्वी 'an ascetic.'

l. 18. अनादर 'dishonour', 'disgrace.'

l. 19. आभूषन 'an ornament.' कंचन = कांचन 'gold.'

l. 20. सुहावनी 'beautiful.' लागै 'will look.'

l. 21. सोच करना 'to brood over.' विधाता 'creator', 'God.' Lit. 'the Ordainer of all things.'

गर्भ 'womb.'

l. 22. स्तन 'mother's breast.'

l. 22. प्रगट करना 'to make manifest', 'to cause to appear.'

Page 31.

l. 1. तोते 'parrots.' हरये = हरिये 'green.' स्याम 'black.' सेत = श्वेत 'white.'

l. 2. मोर Sk. मयूर 'a peacock.' बिचित्र 'variegated.'

l. 3. एते 'so many', purely Sanskrit form.
उपजतु राखतु जातु 'in being acquired, preserved and lost.'

l. 5. नातो = नहीं तो 'otherwise.'

l. 7. कछ मछ 'turtles and fishes', कीरा कीरी = कीड़ा कीड़ी 'worms and insects.'

l. 8. दुष्टभय 'fear from an enemy', lit. 'fear from the wicked people.'

l. 10. अधीनता 'submissiveness.' भावी 'the inevitable.' टरै 'is avoided.'

l. 11. प्रीतम = प्रियतम 'most beloved': it is a term for addressing a friend or an object of love.
साथ is here used as a noun and means 'company', 'society.'

l. 15. मंथरक lit. 'slow mover.' तुम कौं धन्य है 'glory be to you!'
आश्रम के लोग 'worthy of the hermitage.' महंत 'a monk', lit.

'a man of eminent religious merits', hence technically 'the superior of a monastery.'

l. 16. दलदल 'a quagmire', 'a bog.'

l. 19. सरनागत 'seeker of protection', *vide* p. 12, l. 13.
निरास 'disappointed.' निर privative prefix 'void of', आशा 'hope.'

l. 20. जाचक 'a beggar.' विमुख 'having the face averted.'

Page 32.

l. 1. पैठना is 'to rush in', 'to enter quickly.' धसना is 'to run into.'

l. 4. निकरि = निकल कर 'coming out.'

l. 7. कुशल 'welfare.' छेम 'safety.'
कुशल छेम तें 'hale and hearty', 'in peace and prosperity', 'in health and happiness.' The words are almost synonymous.

l. 8. घर आये कौं 'to one who has come to his house.' कुशलात 'welfare.' This is another form of the word कुशलता 'the state of being hale and hearty.'

l. 11. अहो is a particle of address = 'O.' मित्र 'friend.'

l. 14. सहज 'natural', lit. 'by birth.'
परंपराय 'by tradition', 'for successive generations', lit. 'one after another.'

l. 17. कीनी in Braj = किया 'have done.' रहिहो 'will remain.'

l. 19. विसराम 'rest.'

l. 22. कलिंग देश the ancient name of a district in the Coromandel Coast. The tract of the country south of Orissa and north of the river Krishna.

l. 23. कांठे 'on the banks of' from Sk. कण्ठ 'proximity.' सकारे 'in the morning.'

Page 33.

l. 1. जारि = जाल 'net.'

l. 2. पकरिहै = पकड़ेगा 'will catch'; *vide* p. 23, l. 17.

l. 4. टारना is 'to avoid', 'to avert.'

l. 5. जो is understood before आवै.

l. 7. पानी कौ 'in (respect of) water.'

l. 9. बात को भेद 'meaning of the question', 'drift of the circumstances.'

l. 10 अनजाने adv. 'unwittingly', 'ignorantly.'

l. 14. तुंगबल lit. 'of great strength.'
सामर्थ = समर्थ 'capable', lit. 'equal to (cope with) necessity.'

l. 15 आप 'himself.' This word, when used with a pronoun, adds emphasis. It is also used in dignified conversation, in addressing or speaking of a respectable person.
हरिभजन 'worship of Hari or God.'

l. 16. Mark the idiom in suppressing the verb after राज. Supply करने लागो after it.

l. 17. तरुनि = तरुणी 'young', f.

l. 18. रूपवती f. of रूपवान 'possessing beauty', 'beautiful.'
चाहि 'looking at', 'seeing.' काम को सताथो 'afflicted by Cupid.'

l. 19. मंदिर 'house.' It also means 'a temple.' लावन्यवती 'beautiful.'

l. 20. कामातुर 'distracted with love.' काम 'lust' and आतुर 'afflicted.'
धाम 'house', cf. Eng. 'dome.'

l. 23. नवीन 'new', 'fresh.' The repetition of the adjective here implies 'plurality.'

PAGE 34.

l. 1. दूती lit. 'a female messenger', 'a procuress.'

l. 2. अवस्था 'condition.' जनाय 'making known.'

l. 4. पतिव्रता 'devoted to husband.' पति 'husband', lit. 'supporter', and व्रत 'vow.'

l. 5. स्वामी 'husband', lit. 'owner', 'master.'

l. 6. भर्त्तार = भर्त्ता 'husband', lit. 'supporter.'
तैं in Braj = तू 'you.'

l. 8. संदेसो 'messages.' कुंवर is the corrupted form of कुमार 'son.'

l. 9. कैहै in Braj = होगा.

l. 10. उपाय 'plan.'

l. 12. फंसाना 'to ensnare.'

l. 15. मतो करनि 'to consult.'

l. 17. मुकतो = मुक्ता 'much.'

l. 18. युक्ति 'contrivance', lit. 'reasoning.'

l. 19. धूर्त्त 'cunning', 'crafty.' कपट 'deceit.'

l. 20. हे देव 'O God!'

l. 22. विनती 'prayer', 'request', 'submission.'

PAGE 35.

l. 1. कुलवंत 'born of a high family', lit. 'possessing high pedigree.'

l. 2. आचार 'good conduct.' प्रताप 'power', 'authority.' संयुक्त 'endowed with.'

l. 4. मेंह 'rain.' आधार 'nourishment.'

l. 5. भरोसौ 'hope', 'confidence.'

l. 6. भूपाल 'king.' From भू 'earth', and पाल 'supporter', 'nourisher.'

l. 8. ढील 'delay', lit. 'relaxation.'

l. 9. राजपद 'kingship.' Lit. 'the position of a king.'
लोभ कौ मार्यौ 'through temptation', = मारे लोभ के lit. 'struck with a strong desire.'

l. 10. कुंजर a Sk. word for 'elephant.'

l. 11. पेंड़ा 'path', 'road.'
दहदल same as दलदल 'bog', 'quagmire.'

l. 12. दौं 'mire', 'mud.'

l. 14. पूंछ from Sk. पुच्छ 'tail.'

l. 15. सोच जिन करौ 'don't be anxious.'

l. 16. सजाति 'of the same tribe.' भाइयन 'fellow brethren.' टेरि 'calling loudly.'

l. 18. मिस = Sk. मिषं 'pretence', 'pretext.'

l. 21. जो is understood before कहैं. Cf. p. 33, l. 5.

l. 22. चाकर 'servant.'

PAGE 36.

l. 1. चारुदंत lit. 'of beautiful teeth.'

l. 2. छलछिद्र 'artifice', stratagem', 'plot.'
छल 'pretence' and छिद्र 'loopholes', 'weak points.' बातें 'points.'
प्रतीति 'confidence', 'trust.'

l. 3. **प्रधान** 'chief', lit. 'one who is placed foremost of all.'

l. 4. **ले = ले कर** 'taking', 'counting.'

l. 5. **लों = तक** 'up to.' **भवानी** feminine of **भव** 'Siva' i.e. goddess Durgā.

सौभाग्यवती lit. 'fortunate', from **सु** 'good' **भाग्य** 'fortune', and **वती** feminine termination of 'possession.' The word is used technically here in the sense of 'a woman who has her husband living and also has got all her offspring alive.'

l. 6. **असती** 'wicked.' **अ** 'not' **सत्** 'good' and **ी** is the feminine suffix; 'unchaste', 'an adulteress.'

स्वच्छाचारनी properly **स्वेच्छाचारिणी** lit. 'self-willed' hence 'a wanton woman.'

l. 7. **पवित्र** 'purified.'

l. 8. **एकान्त** lit. 'one end': hence 'apart', 'aside.'

केसर 'saffron.'

l. 9. **चरचि** 'smearing', 'anointing.'

l. 10. **आदर मान** 'respect and honour.' The two words are almost synonymous.

l. 12. **मो छ लों = मुझ को भी.**

l. 15. **नित = नित्य** 'every day.'

l. 16. **जु = जो** 'so that.'

सेंतमेंत 'gratuitously.'

l. 18. **हे प्रिये** 'my dear.'

l. 19. **नितप्रति** 'always', 'every day.'

l. 21. **आज्ञाकारी** 'obedient', lit. 'one who carries out orders.' **प्रमान** 'authority.'

l. 24. **मिलन** 'meeting.' Noun from **मिलना** 'to meet.'

PAGE 37.

l. 1. **मनोरथ** 'desire', lit. 'vehicle of the mind.' **मन** 'mind' and **रथ** 'chariot.'

l. 2. **निरालो करि** 'taking (her) apart.' **पूजी** 'fulfilled', feminine because **आस** 'longing' is feminine.

l. 3. **बिदा करना** is 'to let go', 'to bid farewell.'

l. 4. शृंगार 'decorations of the body.' छिन्न भिन्न 'disheveled', 'out of order', lit. 'torn and rent asunder.' करनी औ करतूत 'deed and conduct'; both the words are derived from the same root करना 'to do.'

l. 6. ग्रंथ 'book.' मन्न = मन 'mind.' The final न is redundant here, as well as महाजन्न 'great man', 'saint', in the next line. It is brought in for the sake of metre.

भांड 'an imposter', 'a hypocrite.' It also means 'a jester', 'a mimic.'

l. 9. अनत = अन्यत्र 'elsewhere', from अन्य 'another', and त्र a suffix denoting place.

l. 12. तिन 'he.'

l. 16. संयोग 'union.' वियोग 'separation.'

l. 17. गिलान = ग्लानि 'inertness', 'pessimism', lit. 'fatigue.'
हांसी 'mirth', lit. 'laughter.' विषाद 'sorrow', lit. 'lowness of spirits.'

l. 19. कसौटी 'touchstone.'

l. 20. यों कहवे कों 'so to say', 'commonly speaking.'
औ = और 'otherwise.'

l. 22. हे = थे 'were.'
कसन 'to test', 'to examine', 'to prove.'

l. 25. पंगु 'lame.' बनि = बनकर 'feigning.'

PAGE 38.

l. 2. त्यागि 'leaving.' भजिहै 'will run after.'

l. 6. सरबसु = सर्वस्व 'all his things.'

l. 9. सुधार्‍यौ 'has prospered.' चौकरी मारि = चौकड़ी मार कर 'springing off', 'bounding on all fours.'

l. 10. परायौ 'fled.' उलटा फिरना is 'to return', 'to turn back.'

l. 12. न हो = नहीं था 'was not.' हाथ आयौ 'that which came to hand.' The two words taken together form an adjective here.

l. 19. लच्छी 'wealth', lit. 'goddess of wealth.'

l. 20. चलै 'will act or conduct himself.'
प्रजा 'subjects', lit. 'children.'

l. 21. रुचि 'taste', 'liking.'

l. 22. संसार 'the world.' वक्ता 'speaker.'

l. 23. श्रोता 'hearer.' कल्यान 'welfare.'

l. 24. इति 'thus', 'here.' मित्रलाभो 'acquisition of friends.' कथासंपद 'collection of stories.' संपूर्णः 'is finished.' This line is in Sanskrit and is therefore inflected throughout.

Page 39.

अथ this particle is used as an inceptive for introducing a story or a subject and may be rendered by 'here beginneth.'

सुहृद्भेदः 'separation of friends', 'dissension among friends.' सुहृद् lit. 'good-hearted' from सु 'good' and हृद् 'heart', भेद 'breaking', 'disunion.'

l. 2. दूजो 'a second.'

l. 4. बरध=बरद् a contraction of बलीवर्द 'a bullock.'

l. 5. प्रीति 'friendship', lit. 'affection.'

l. 8. सुवर्ना lit. 'golden.' सु 'good', वर्ण 'colour.'

l. 9. धनवंत 'wealthy', 'rich.' The suffix वंत is the Sanskrit plural form of वत् (वान्) 'possessing', but it is often used in Hindi as singular. हो=था 'was.'

l. 10. सेठ 'merchant.' It is the corruption of the word श्रेष्ठी 'the head of a mercantile guild' or 'one having the best of possessions.'

l. 12. मन मलिन होना 'to be distressed in mind.' मलिन होना 'to fade', 'to lose colour', here 'to become pale with jealousy.' काको =किसका 'whose.'

l. 13. बढ़वार बढ़ाई 'increase.'

l. 14. अहंकार 'pride', lit. 'egotism.'
धनाढ्य 'wealthy', lit. 'rich in wealth.'

l. 17. विन्हें is in Braj=उनको 'them.'

Page 40.

l. 1. असाहसी 'coward.'

l. 2. अनपाई 'unobtained.'

l. 5. उठाना is 'to spend.'

l. 8. उपकार 'benefaction.' इंद्री = इन्द्रिय 'senses.' According to Hindu philosophy the five organs of action, the five organs of sense and the mind are included by this term.

l. 10. बूंद = Sk. बिन्दु 'a drop.'

l. 11. सांस लेतु 'breathes', 'lives.'

लुहार 'blacksmith.' This termination *ār* is a contraction of the Sanskrit suffix कार meaning 'a maker', cf. सोनार, 'goldsmith', कुम्हार 'potter', etc.

l. 12. धवनि 'bellows', lit. 'a quiverer.'

l. 13. सोच बिचार 'thinking and reasoning.' The two words are appositives. Cf. आदर मान l. 10, p. 36. छल छिद्र l. 2, p. 36, etc.

नंदक lit. 'delighter.'

l. 14. संजीवक lit. 'reviver', बलध = बलद 'a bull.'

l. 15. चढ़ि = चढ़ा कर 'having laden.' सामर्थी 'man of ability', *also* 'strong.'

l. 16. व्यापारी 'trader.'

l. 17. अधबर गैल 'half way', 'middle of the road.'

l. 18. दुर्ग lit. 'difficult of access.'

l. 19. पछार खाना is 'to fall down.'

l. 20. कितेक 'however much.' Cf. इतेक 'so much.' उपाय करना is 'to exert oneself.'

कर मरना 'to do one's utmost and fail to achieve good results', lit. 'to die in making (fruitless) efforts.'

फल lit. 'fruit' hence 'result', 'accomplishment.'

विधाता 'Providence', lit. 'ordainer.'

l. 22. कितेक 'a few.' Cf. the same word used in a different sense in l. 20 above.

l. 23. हरे हरे 'fresh-grown', lit. 'green.' The repetition of the adjective here used in an appreciative sense. तृन 'grass.'

पी = पी कर 'having drunk.'

PAGE 41.

l. 1. परमानंद करि 'with great delight.' डकना 'to bellow (said of an ox).

l. 2. पिंगल lit. 'Tawney-coloured.'

l. 3. **राजतिलक** 'the royal mark on the forehead.'

l. 4. **मृगराज** 'king of beasts.' The word **मृग** in itself ordinarily means 'a deer', but retains its derivative meaning (from **मृग** 'to hunt') 'a wild beast' in such compounds. **सिंह** 'the lion.' This word comes from the Sk. root **हिंस्** 'to kill.'

l. 6. **मन हीं मन** 'in mind', i.e. without giving expression to his fear. **भयमान** 'frightened.' This **मान** is the Sk. present participle termination.

अनपिये 'without having drunk.' The privative prefix **अन** is used as a part of the verb as well. Cf. **अनपाई** l. 2, p. 40.

l. 8. **चरित्र** 'conduct' (of the tiger).

l. 10. **सुचित्तो** 'concerned' 'with his mind occupied.'

l. 13. **प्रयोजन** 'necessity', 'use.' **न जानो = न जाना = न जानेका** 'not to go.'

l. 14. **मोहि = मुझको** 'to me.'

l. 17. **औरके हेतु** 'for the sake of others.' **घाम** 'heat', Sk. **घर्म**.

l. 18. **तपस्या** 'penance.' **खोट** 'defect', 'deficiency.'

l. 20. **दैनौं = दैन्य** 'poverty.' **सुपथ** 'righteous path.' **दूनौ** 'double.' **सूनो** 'empty.'

भौंन = भवन 'house.'

l. 21. **खल** 'wicked', 'vile.'

l. 22. **संतन** 'saintly people.' **लघु** lit. 'light' hence 'slight', 'short', 'a little.'

जड़िको 'of the foolish people.' **गुरु** lit. 'heavy' hence 'much', 'prolonged.'

सहज 'natural', lit. 'what one is born with', 'inborn.'

Page 42.

l. 1. **सराफी = सर्राफ़ी** 'banking business', 'money-changer's commission.' **जुवा** 'gambling.'

l. 2. **सपड़ना** 'to be involved', 'to be ruined.'

l. 3. **रारि = रार** 'wrangling', 'quarrel.'

l. 5. **ठाकुर** 'master', lit. 'a god.' Among the Rajputs 'a ruling chief.'

l. 7. **अवज्ञा** 'contempt.' **मान मर्दन करै** 'crushes his honour, i.e. self-respect.'

l. 8. **बेस्या** 'prostitute', lit. 'one always dressing herself.'
परपुरुष from **पर** 'stranger' **पुरुष** 'man.' 'A man other than her husband.'

l. 9. **सिंगार करना** is 'to decorate oneself.' **मूरख** 'fool', lit. 'an illiterate fellow.'
पढ़ि गुनि 'being educated and accomplished.' **पढ़ा गुणा = पढ़ा लिखा** adj.

l. 10. **मेरे जान** 'to my knowledge', 'in my estimation.' **सेवक** 'a servant' from **सेवा करना** 'to serve.' The suffix **क** is agentive. Cf. **पाचक** 'a cook', **गायक** 'a singer', **पालक** 'protector', etc.

l. 11. **सेइये** 'serve' imperative.

l. 13. **छत्र** 'an umbrella', from the root **छद्** 'to cover.'
चमर 'the fly-flapper.' This is usually made of the tail of the *chamara* (Yak).
लक्ष्मी के पदारथ 'things of prosperity.'

l. 15. **अवश्य** 'must', 'out of necessity', lit. 'being helpless', 'having gone out of one's control.'

l. 19. **कायथ** 'Kāyastha' a caste of the Hindus; lit. born of the body (of God).' [According to Hindu idea the Brahmans were born out of the head of the Creator, the Kshatriyas from His arms, the Vaisyas from His belly, and the Sudras from His feet.] The script called *Kāythī* is derived from this word and means the writing of the *Kāyath*.

l. 19. **धर्मारन्य** lit. 'forest of righteousness.'

l. 20. **क्रीड़ा की ठौर** 'place of amusement.'

l. 21. **बढ़ई** 'carpenter', from Sk. **वर्धकी** 'a cutter (of wood).'
चीरतु चीरतु: this repetition of the verb implies 'leaving an act unfinished.'
कील 'a wedge.'

l. 22. **चपलाई** 'fickleness', lit. 'restlessness.'
करतु करतु the repetition of the verb here implies 'in the act of.'

l. 23. **कालबस** 'driven by Death.'

l. 24. **संधि** 'chasm', 'crack', lit. 'junction.'

PAGE 43.

l. 1. चंचलता 'restlessness' synonymous with चपलाई above. चंचल is the frequentative form of the verb चलना 'to move', ता is the termination of forming abstract nouns.

l. 2. काढ़त प्रमान 'immediately on extracting.' Cf. स्वागत प्रमान p. 20, l. 22.

लांगुल का मूल 'tip of the tail.'

l. 3. स्वारथ 'self-interest.'

l. 4. प्रधान 'chief.' Lit. 'one who is placed foremost.' In Orissa this term is used for 'the headman of a village.'

l. 6. काम में पड़ना 'to be engaged in work of one's own accord.'

l. 8. बिचारो = बेचारा 'poor', 'unfortunate' lit. 'helpless.' This prefix (बे) of privation is seen in different forms in different languages: cf. Sk. विधवा 'bereft of husband', Eng. beheaded, 'bereft of head', etc.

l. 10. कपूरपाट lit. 'whose washing plank is as white as camphor.'

l. 11. तरुन = तरुणी f. 'youthful.'

l. 12. पैठे 'entered.'

l. 13. अंगना 'courtyard.'

l. 16. चर्चा करना is 'to discuss upon', 'to talk of.'

l. 19. बावरे 'mad fellow': it is the same word as बौरा 'insane' from Sk. वातुल lit. 'affected with the wind.'

l. 21. पोषन भरन करनो 'to nourish and maintain.'

l. 23. स्वामिभक्त 'devoted to master.'

PAGE 44.

l. 2. स्वान 'dog.'

l. 3. तापिये 'warm yourself.' शुद्ध भाव 'pure and simple manner.'

l. 4. पाय धरना is 'to interfere with.'

l. 5. मेरो ... लागिहै 'my silence will sit upon you, i.e. cause your destruction.'

l. 6. उसरि 'receding.'

l. 7. रैंक्यो 'brayed', चांकि 'starting up.'

l. 8. लुहांगियन 'staff armed with iron.'

l. 9. अधिकार 'province.' न परिये 'do not intrude upon.'

l. 11. काल्ह को 'of yesterday.'

l. 13. लये = लिये 'for the sake of.' Lit. 'taking', 'keeping in view.'

l. 14. स्वारथ परमारथ के निमित्त 'for the attainment of one's object as well as the highest spiritual merit.'

l. 15. मित्र साधनि कौं 'friends and virtuous people.'

l. 16. शत्रु दुष्टनि कौं 'enemies and wicked people.'

l. 17. बासना 'desire.'

l. 18. आसरे 'protection', from Sk. *Aśray* 'shelter.'

l. 19. सुफल 'fruitful', lit. 'attended with good fruits.'

l. 20. अंतर 'difference', lit. 'intervening space.'

कौरी '*Kauṛī.*' 'Small shells used as money of the lowest value.'

l. 21. अकन्नै 'dear', from Sk. अक्रेय 'impurchaseable.' लाखनि '*lākhs.* नि is the pl. termination.

l. 23. भेद 'difference.' This word is also used in the sense of 'secret', 'mystery'; lit. it means 'breaking.'

PAGE 45.

l. 1. ई = the emphatic particle ही. लपट्यौ 'stuck.'

l. 2. हू = the emphatic particle भी.

l. 5. टूका = टूकड़ा 'bit (of food).'

l. 6. घने आदर 'great attention.' घन lit. 'dense.' ग्रास 'mouthful', from the root ग्रस 'to swallow', hence 'the quantity swallowed at a time.'

l. 9. विष्ठा 'dung.' कहा = क्या 'what advantage.'

l. 14. प्रतिष्ठा 'eminence', 'reputation.'

l. 18. पिछानै = पहचाने 'comes to know.' भावै 'pleases', 'suits one's mind.'

l. 19. मेरे जानतौ 'in my opinion', 'to my mind.'

l. 21. वा भांति 'in that way.'

l. 22. याही रीति 'in this very manner.'

l. 23. उलंघै 'disobey', 'transgress', from उल्लंघना 'to jump over.'

भर साथ 'constant company.' Mark the idiomatic use of the word भर which means 'to the fullest extent', 'entire.'

PAGE 46.

l. 1. परछाँई 'shadow', from Sk. प्रतिच्छाया 'reflection', 'shadow.'

l. 2. अनअोसर 'inopportunely', 'untimely.'

l. 4. अजीरन 'indigestion.'

l. 6. अकुलीन 'not born of a respectable family', 'of low pedigree.' मलीन lit. 'dirty', hence 'of no moral worth', 'depraved.'

l. 8. निकटवर्ती 'standing near.' लग चलतु हैं 'stick to', 'become attached to.'

l. 10. देखि हौं=देखुंगा 'will see.' उदास 'sorrowful.' प्रसन्न in good spirits.'

l. 13. गनै 'count', 'consider.'

l. 14. मया करना is 'to show affection', 'to treat with affection.' मया=माया primarily means 'illusion.' In Hindu philosophy this term is used in different senses by different schools. In Vedanta it means 'the illusion by virtue of which one considers the unreal world as really existent and as distinct from the Supreme Spirit. In Sāṅkhya, it means 'the *Pradhāna* or *Prakriti*.'

दिन दिन 'day by day', 'every day.' Mark the force of the repetition here.

l. 15. आंख चुराना is 'to turn one's eyes away', 'to avoid the sight of any one (through dislike).' Lit. 'to steal eyes.'

l. 17. औगुन काढ़ना 'to find fault with', 'to find out some defect.'

l. 20. सयानो lit. 'knowing', from Sk. सज्ञान 'possessed of knowledge' hence 'shrewd', 'sagacious.'

मंत्री 'minister. Lit. 'one who gives advice.' This final ī is agentive and should be distinguished from the ī of possession' as in धनी, ज्ञानी, etc. अनीति 'injustice', 'impropriety.'

l. 21. समय बिन 'untimely', lit. 'without time.'

l. 23. किन चलाई 'what to be said of?' बात is understood before किन. Idiomatically for 'not to speak of.' *Vide* also कहा चली p. 55, l. 2.

PAGE 47.

l. 5. **समय चूकना** 'to lose an opportunity.'

l. 9. **नेरे** 'near.'

l. 12. **अन्तरगति** 'condition of the mind', 'inward feelings.'

l. 13. **पृथ्वीनाथ** 'lord of the earth', **पृथ्वी** is the contracted form of the word **पृथिवी**, lit. 'weighty.'

l. 15. **समय असमय** 'in season and out of season', 'every now and then.'
एक समय 'occasion may arise when', 'on some occasion.'

l. 16. **कुरेदना** is 'to pick', 'to scratch.'

l. 17. **बेला कुबेला** same as **समय असमय.**

l. 19. **मनि** properly '**मणि**' 'a precious stone.'

l. 22. **विवेक** 'discrimination.'

l. 23. **उत्तम मध्यम अधम** 'good, middling and bad', lit. 'uppermost, middlemost and lowermost.' This final **म** is the contraction of the superlative termination **तम** .

PAGE 48.

l. 1. **अधिकार** 'authority', 'sphere of duty.'

l. 4. **आभरन** 'ornament.'
जहां को होय तहां 'in their proper place.'

l. 6. **बीन=बीणा** 'the Indian lute.' It is a fretted instrument of the guitar kind with a large gourd at each end of the finger-board.

l. 8. **कुमाया** 'unkindness', lit. 'bad feelings.'

l. 10. **दिग** 'side', 'near.'

l. 11. **भूपति** 'lord of the earth', 'a king.'

l. 15. **तुम्हें न बूझिये** 'is not befitting you.'

l. 18. **निसंदेह** 'without hesitation.'

l. 19. **सुचित** 'occupied in mind', 'thoughtful.' The latter word **चित** of the compound is the corrupted form of the word **चिंता** 'cares', and should be carefully distinguished from the word **चित** 'mind.'

PAGE 49.

l. 3. **बगदि** 'returning.'

l. 4. **महाबली** 'very powerful.'

l. 5. अनत 'elsewhere', Sk. अन्यत्र.

l. 8. थरथर an onomatopoetic word giving the idea of shivering.

l. 9. जु=जो conj. 'that.' कै 'or.'

l. 10. इतनेन कौ 'of these.'

l. 12. संका properly शंका 'fear.'

l. 15. धर्मावतार 'incarnation of justice.'

l. 16. आदि 'et cetera.'

l. 18. एकमतो 'unanimous', lit. 'of one opinion.'

l. 21. बागे 'vestments of honour.'
शांत कौं 'for alleviation.'

l. 22. डगर 'road.'

l. 23. प्रसाद 'favour.'

PAGE 50.

l. 1. निवारन 'prevention.'

l. 4. जौ कबहू 'if ever.'

l. 6. काल 'death', lit. 'time.'

l. 7. तेज 'essence.' भूपाल 'nourisher or protector of the world.'

l. 8. मनुष रूप 'in human form.'

l. 17. निचिंत 'free from cares.'

l. 20. कंदरा 'cave.' महाबिक्रम lit. 'very strong and powerful.'

l. 22. भजना is 'to run away', 'to take to flight.'

PAGE 51.

l. 2. याके हाथ तें 'on account of him.'

l. 7. सुखनींद सोना is 'to sleep a sound sleep', 'to sleep comfortably.'

l. 8. आगै 'again', 'further.'

l. 9. दाव पाय 'getting an opportunity.'

l. 11. जाके कारन 'for which.'

l. 14. भूख्यो मरि मरि 'being at the point of dying of starvation.'

l. 19. पूर्व अवस्था 'former history', 'previous circumstances.'

l. 21. अपनी घां ते 'on his part.'

PAGE 52.

l. 2. **समीप** 'near.'

l. 3. **पायन पारयौ** 'made to fall on his feet.'

l. 4. **ढोकिकै** 'having patted' as a mark of encouragement.

l. 6. **राजपौर पर** 'at the door of the king.'

l. 9. **राजा पै**=**राजा के पास**. **तुम हू कौं**=**तुम को भी**. Mark the position of the emphatic particle in Braj.

l. 13. **ह्वै**=**है**. **समाचार** 'news.'

l. 14. **नीचौ मूड़ करि** 'bowing down his head (in obeisance).'

l. 22. **चोटी** 'top.'

PAGE 53.

l. 6. **खदृष्टि** 'with my own eyes.' **ख** 'my own', **दृष्टि** 'sight.'

l. 8. **कराला** lit. 'formidable.'

l. 13. **खैवे कौ सामा** 'eatables of various sorts.'
वन कौ गैल गह्यौ 'took the road to the forest.'

l. 16. **बिथराना** is 'to scatter.'

l. 17. **पकवान**=Sk. **पक्वान्न** 'sweetmeats prepared by being first fried in *ghī* and then saturated with sugar.'
मिठाई=Sk. **मिष्टान्न** 'sweets (in general)', from **मिष्ट** 'sweet', **अन्न** 'food.'
फल मूल 'fruits and edible roots.' **पटकि** 'having thrown aside.'

l. 18. **हाथ चलायौ** 'stretched out his hands.'

l. 22. **प्रतिष्ठा** 'honour.'

PAGE 54.

l. 3. **वाहन** 'carrier', 'conveyor', 'an animal for riding', from **वह** 'to carry.' Siva is represented as riding on a bull. **पार्वती** 'Goddess Durga', lit. the daughter of a mountain. Durga is known to be the daughter of the Himalaya mountain. She is represented as riding on a lion.

l. 4. **गाजना** is 'to roar', from Sk. root *garj* 'to make a roaring noise.'

l. 5. **स्वागता स्वागता करि** 'giving a reception befitting a guest.' **आगत** 'a guest', lit. 'one come', and **स्वागत** from **सु** 'good', 'well', and **आगत** 'come' hence 'welcome.'

l. 6. **पाउनो** 'a guest.'

l. 7. **ईश्वर पार्वती** 'Śiva and Durgā.' **ईश्वर** 'the Supreme Lord' is an epithet of Śiva.

l. 8. **शिष्टाचार** 'civility', from **शिष्ट** 'civil', and **आचार** 'conduct.'

l. 13. **टेरि** 'shouting.'

l. 16. **पूछो तो सही** 'pray, just enquire.' Mark the idiomatic use of the dramatic particle **सही**, the ordinary signification of which is 'very well.'

l. 18. **उठाना** is 'to spend.'

l. 19. **न बूझिये** 'is not becoming.'

l. 20. **कै** 'or', *vide* l. 9, p. 49. **नीति** 'polity.'

l. 22. **संग्रह करना** is 'to collect', lit. 'to bring together.'

l. 23. **जोड़ना** is 'to amass', lit. 'to add to.' It also means 'to add up a sum.'
भंडार 'storehouse', 'treasury.'

Page 55.

l. 2. **कहा चली** 'not to speak of', lit. 'what to be said of?' *Vide* p. 46, l. 23.

l. 4. **प्रधान** lit. 'chief', hence 'the chief companion of a king', 'a minister.'

l. 5. **अनीति** 'injustice.' **अधर्म** 'unrighteous act.'

l. 6. **भ्रष्ट होना** is 'to be ruined', lit. 'to be displaced.'

l. 11. **संबंधी** 'relations', lit. 'closely bound or connected.' This word is technically used in Hindi to mean 'a son or daughter's father-in-law.' **संबंध** means 'a relation by birth or matrimony.'
उपकारी 'a benefactor.' **अधिकार** 'authority', 'executive function.'

l. 14. **तुच्छ** 'insignificant', 'despicable.'

l. 16. **चट** 'quickly', 'abruptly.' **तोड़ना** is 'to break', hence 'to dismiss.'

l. 17. **सहज सहज** 'very tenderly.' The repetition is here intensive. **चीर** 'cloth.'

l. 18. भरमाना is 'to give grounds of suspicion', lit. 'to perplex', from the root भ्रम 'to wander about.'

l. 19. मीत is the corrupted form of मित्र 'a friend.'

l. 20. सुशील 'good-natured.'

l. 21. पावक 'fire', lit. 'the purifier.'

l. 21. अमावस 'the new-moon day.'

l. 22. मतवारा is used twice in this line in two different meanings. In one place it has its ordinary meaning 'a drunkard', and in the other, it means 'intelligent', 'wise.' In the former it comes from the word मत्त 'mad', and in the latter, it is the contraction of the word मति 'understanding', 'intellect.' अनारी 'ignorant', 'stupid', lit. 'unskilful.'

l. 23. मोतियराम name of a poet, the author of this verse.
नरनाह=नरनाथ lit. 'Lord of man', 'a king.' यारी 'friendship.'

Page 56.

l. 2. अहंकार 'pride', 'the feeling of self-importance.' कुविसन 'bad vices.'

l. 5. आज्ञाभंग 'infraction of order.' नरेंद्र 'king', lit. 'An Indra amongst men.'

l. 6. भिन्न सेज 'a separate bed.' सेज comes from Sk. शय्या 'something to lie down upon.'

l. 11. शुभचिंतक 'well wisher.'

l. 12. सुकृति 'good acts', 'virtuous acts.'

l. 13. अधिकारी 'one in authority.'

l. 15. खोस लेना 'to take off.'

l. 17. चितलिखा 'a picture', lit. 'something drawn out in painting.'

l. 21. विक्रमादित्य lit. 'powerful as the sun.'

l. 23. साह 'a banker.'

Page 57.

l. 1. नौआ=नाऊ (l. 22, p. 56) 'a barber.' This sort of transposition of vowels without any change of meaning is a common characteristic of spoken dialects.

l. 2. ब्यौरो=बेवरा 'history', 'detailed accounts.'

l. 3. सिंहल द्वीप 'the island of Ceylon.' द्वीप lit. 'land surrounded on both sides by water.'

l. 7. तैंने = तूने = तुमने. प्रसंग चलाया 'began to relate.' प्रसंग 'talk', 'conversation.'

l. 9. बनज कों = वाणिज्य (करने) को 'to trade.' बरसवें दिन 'once every year.'

l. 10. नवजोबना = नवयौवना 'a lady in the prime of her youth.'
रतनजटित 'set with jewels.'

l. 11. नायिका 'a noble lady.' This word is used also to mean 'the heroine of a drama', 'a mistress', etc. Mark the repetition of words in this line and the next two lines.

l. 15. विद्याधर 'a kind of demigods.'

l. 22. स्वइच्छा तें 'at your own will', 'freely.'
चित्रलिखी विद्या 'the art of painting', here 'a production of that fine art.'

l. 23. गंधर्वविवाह one of the eight forms of marriage recognized by Manu. In this form, the marriage proceeds entirely from love or mutual inclination of the youth and the maiden.

PAGE 58.

l. 2. विद्या 'magic picture.'

l. 3. वियोग 'separation', lit. 'want of union.'

l. 4. आज 'now.'

l. 5. रात 'last night.'
अहीर 'a cowherd', from Sk. आभीरः

l. 6. घोस 'milkman', 'a cowherd.' घुसायन feminine of घोस.
जार 'a paramour.' बतराति 'to talk', 'engaged in talking.'

l. 7. थांभ 'a pillar', Sk. स्तम्भः 'a fixed post or pillar.'

l. 8. आधी राज बाजी 'when the midnight chimes rung.' In big cities of India, the expiration of a watch or *pahar* was, in olden times, announced by the ringing of chimes, called गजर.
नायन = नाईन 'a barber's wife.'

l. 9. री is the feminine form of the vocative particle रे.
बिरह 'separation.' This word is used only in the case of lovers.
बापरो = बापड़ा = बपुरा 'poor fellow.'

l. 10. दया बिचारि 'taking pity.'

l. 11. बिलंब 'delay.'

l. 12. भली मनाय 'having gratified.'

l. 15. उतार लई 'cut off.'

l. 17. बीर 'sister.'

l. 18. गंवाई 'have lost.'

l. 22. धनी 'owner', 'lord', 'husband', lit. 'one possessing wealth', hence 'the possessor of anything.'

l. 23. कलंक 'stigma on one's character.'

PAGE 59.

l. 1. लोकपाल 'the guardians of (the quarters) of the world.' They are also called दिक्पाल or the regents of the eight cardinal points. *Indra* is the lord of the East, *Agni* of the South-east, *Yama* of the South, *Nairrita* of the South-west, *Varuṇa* of the West, *Marut* of the North-west, *Kuvera* of the North and *Rudra* of the North-east.

धरती = धरित्री 'the earth', lit. 'the upholder of all.' This and the following four words are the names of the five elements.

l. 2. दोऊ संध्या 'the morning and the evening', lit. 'the two points of union (of the day and night),' 'the two twilights.'

l. 3. गम्य 'known', lit. 'accessible.'

l. 6. ढिग 'near.'

ज्यों की त्यों बनी है 'is exactly as it was before.'

l. 8. अपराध 'transgression', 'guilt', lit. 'an act which causes displeasure.'

l. 12. पेटी 'basket.'

l. 14. वाकी ओर 'towards her', 'at her.'

l. 18. साध 'merchant.'

l. 21. सामान्या 'prostitute', lit. 'a common woman.'

बैताल 'a demon', 'a goblin.'

PAGE 60.

l. 2. कल छूटि 'machine went off.' कर 'hand' from the root कृ 'to do', lit. 'the limb for doing actions.'

l. 3. **बारबिलासिनी** 'prostitute', lit. 'given to dalliance with a multitude of people.'

l. 4. **मलयागिर** 'the Malaya hills in Southern India.' The country around is called Malabar. There is a poetic fancy attached to this range of hills, which abounds in sandal wood, that the touch of the wind blowing from it transforms any tree into a sandal tree.

l. 5. **कोटवार = कोतवाल** 'a Police Superintendent.'

l. 7. **दै = दे कर** 'having given.'

l. 10. **यथायोग्य** 'as was proper.'

l. 13. **जो भई सो भई** 'what is past is past.'

l. 14. **करवायहौं = करवायेंगे**.

l. 15. **चतुर** 'clever', 'cunning.'

l. 19. **बिभिचारिनी = व्यभिचारिणी** 'an adulteress', lit. 'gone astray from the path of virtue.'

l. 20. **मौंड़ा** 'a son', 'a boy', lit. 'an offshoot.'

l. 21. **छोहरा** 'son.'
भोग करना is 'to enjoy.'

l. 23. **ढोठा** 'son.' **कोठी** 'granary.'

Page 61.

l. 1. **भला मनाना** is 'to gratify.' **धनी** 'husband.'

l. 2. **उघारना** is 'to open.'

l. 3. **लौठिया** 'stick.'

l. 4. **बात बनाय लेना** is 'to settle matters.'

l. 13. **जित.....जा** 'go wherever you like.'

l. 16. **काम** 'lust.' **कोय = कोई**.

l. 17. **फुरै** 'is active.'

Page 62.

l. 2. **कागली** 'female crow.'

l. 4. **खौंधा** 'a bird's nest.'

l. 5. **गर्भ सौं भई** 'conceived.'

l. 6. **अनत** from Sk. **अन्यत्र** 'to another place.'

l. 8. **बादी** 'arguer', hence 'disobedient.'

l. 9. **या सेां** 'for this reason.'

l. 14. **ससा** 'hare', from Sk. **शशः**

l. 17. **दुर्दंत** lit. 'indomitable.'

l. 19. **आपस में** 'amongst themselves.'

l. 21. **बारी बांधि** 'fixing turns.'

l. 23. **मर्याद सेां** 'with respect', 'respectfully.'

PAGE 63.

l. 4. **खैवे कौं** = **खाने को**.

l. 5. **जैहैं** = **जायेंगे**.

l. 6. **अति उत्तम** 'very well.' **वचन करि** 'having promised.'

l. 7. **बारी** 'turn.'

l. 12. **पूरी करैगी** 'will finish.'

l. 13. **हरवै हरवै** 'very slowly', 'with faint steps.'

l. 15. **अबेरी** 'delay.'

l. 17. **तुम पाहीं** = **तुम्हारे पास**. **दूजो** 'a second', 'another.'

l. 18. **कित** 'where.'

l. 20. **यहां** = **यहां** 'here.'

l. 21. **आज छुराय** 'except to-day.'

PAGE 64.

l. 1. **जु** = **जो** 'that.'

l. 2. **वरन** 'but on the other hand', 'moreover.'

l. 6. **फेरी आना** is 'to go and come back.' **बाट जोवना** is 'to be looking out for some one', lit. 'to look on the path.'

l. 7. **उलटे पायन** 'retracing (my) steps.'

l. 8. **बगद आना** is 'to return.'
बचन बंध करि 'making (me) promise', lit. 'binding me by (my) words.'

l. 9. **बिदा करना** is 'to bid farewell to', 'to dismiss.'

l. 17. **रोकनिवारी** = **रोकनेवाला** 'preventer.'

l. 18. **पैठी है** 'has entered', 'has gone into.'

l. 19. **पनघटा** 'stairs of the well.

l. 20. **प्रतिबिंब** 'reflection.'

l. 21. **कूद्यो** 'jumped into.'

PAGE 65.

l. 2. **आशीर्वाद देना** is 'to bless', lit. 'to utter benedictions.'

l. 3. **कय** 'having said.' Mark the participle, here **कर** is understood after the verb.

l. 7. **सरोवर** 'tank.'

l. 12. **बिन में तें** 'from amongst them.'

l. 13. **नाग** 'snake.'

l. 14. **किंकर** 'servant', lit. 'one who always eagerly says, 'what shall I do?'

l. 16. Mark the position of the preposition **बिन** 'without' between the adjective and the noun.

l. 23. **समय असमय** 'in season and out of season.'

PAGE 66.

l. 3. **न जतावै** 'if not warn.'

l. 9. **पर ... देइ** 'but should not allow the kingdom to go to ruin.'

l. 15. **प्रतापहीन** 'void of power', lit. 'void of heat or glory.'

l. 18 **धर्मावतार** 'incarnation of justice', **अवतार** lit. means 'coming down on earth.'

l. 19. **प्रचंड** 'powerful', 'intolerable.' **मतो** 'advice', 'opinion.'

l. 20. **एकाएकी** 'all at once', 'all of a sudden.

l. 21. **चानक** 'Chāṇakya, the friend and adviser of Chandra Gupta.' He was also called **कौटील्य** for his crooked policy.

PAGE 67.

l. 1. **नंदक** lit. 'delighter' from the root **नंद** 'to please.'

l. 2. **सु = सो = वह** 'that.'

l. 3. **आनंद करना** is 'to enjoy.'

l. 4. After **राज** supply **करने लागा**.
लार लै 'taking with', 'taking in (his) company.' **अहेर** 'hunting', 'the chase.'

l. 6. **दपटना** 'to gallop.' **झपटना** 'to fly at.'

l. 8. **अटपटाना** 'to be tired', 'to be confused.'

l. 9. **चपरि** 'fleeing away.' It is also used as an adverb meaning 'quickly.'

घाम प्यास 'heat and thirst.' **घाम** also means 'sunshine.'

l. 11. **महीपति** 'king', 'lord of the world.' **प्रधान को थंभाय** 'making his minister hold.'

l. 13. **बापी** 'pond.'

l. 14. **पीवन = पीने को** 'to drink.'

l. 15. **पी = पी कर** 'having drunk.'

l. 16. **बांच्यो** 'read'; past tense of **बांचना** 'to read.'

l. 17. **त्यागै** 'will leave.' Mark the future form. **पाहन** 'stone' from Sk. 'Pāsān.'

l. 19. **बावरी = बावड़ी** 'well.'

l. 20. **गार** 'mud.' **लथेर = लथेड़ कर** 'having besmeared with.'

l. 22. **दुराव करना** 'to attempt to deceive.'

l. 23. **हन्यो** 'killed', from Sk. root **हन्** 'to kill.'

PAGE 68.

l. 4. **गर्व** 'pride.'

l. 6. **दीयो दान** 'a gift already given away.'

l. 8. **आगै** 'Now.' Supply **जो** before **आवै**.

l. 10. **स्पष्ट** 'plainly.'

l. 11. **आगै तुम जानो** 'for the future you know what to do.'

l. 13. **चीतैगो** 'will think of.'

l. 15. **न सरै** 'one cannot do', 'nothing can be done.'

l. 16. **गंवार** 'a boor', lit. 'a man of the village.' **आतीय सुभाव** 'natural instinct.'

l. 17. **तेल मसल** 'rubbing with oil.'

l. 19. **मधु दे सींचिये** 'if sprinkle with honey.'

l. 21. **अपजस** 'disgrace', lit. 'bad reputation.' **लच्छा** 'avarice', lit. 'thirst.'

PAGE 69.

l. 1. **जितेंद्री = जितेन्द्रिय** 'one who has subdued his passions', lit. 'one who has conquered his senses.'

l. 2. सुखदेवा 'giver of pleasure.' देवा = देनेवाला.

l. 4. कामांध 'blinded with lust.'

l. 5. इच्छामाती 'intoxicated with desire.'

l. 10. भेद दुरावी 'conceal the secret.'

l. 13. हात कर लेना is 'to bring under control.'

l. 14. सर्वसु = सर्वस्व 'all property.' सर्व 'all' and स्व lit. 'one's own.' Here is an example of the semivowel व being contracted into उ in the dialect. Cf. सुभाव for स्वभाव, l. 12, above, which means 'nature', lit. 'one's own state or disposition.'

शकुन = शकुनि was the maternal uncle of Duryodhan, by whose intrigues the great battle of Kurukshetra was brought about.

l. 15. महाभारत 'the great war of the sons of Dhritarāṣṭra and Pāṇḍu described in the epic of that name.'

l. 16. करिहै = करेगा. In Braj इहै is the termination of the 2nd and 3rd persons singular of the future tense = egā.

l. 18. टिटोर 'the sand-piper.' This bird is said to sleep with its legs extended upwards as if to support the sky. The full form of this word is टटौहरा, also टिटौहर, of which the feminine form is used in l. 21 below.

l. 19. महाव्याकुल 'greatly agitated.'

l. 22. गर्भ सों भई 'was about to lay eggs.'

Page 70.

l. 2. तुंग तरंग 'high waves.' This is a high-flown expression and is purely Sanskrit.

l. 5. कहां—कहां idiomatically expresses great contrast or difference.

l. 7. निचिंताई 'unconcern', 'fearlessness.' Note this form of abstract nouns.

l. 9. लहरि 'wave.'

l. 13. गरुड़ 'Garur, the king of birds.' In Hindu mythology Nārāyaṇa is represented as riding on Garur, hence his influence with Nārāyaṇa, his master.'

l. 18. सामर्थ properly सामर्थ्य is an abstract noun, 'power', 'the condition of being able.' The adjective समर्थ, 'able', lit. means 'equal to the purpose or necessity.'

Page 71.

l. 1. **मुख सुखाय** 'assuming a dejected (lit. dried up) countenance.'

l. 4. **विशेष** 'especially.'

l. 5. **भयमान** 'full of fear.'

l. 10. **उदासी** 'dejection.'

l. 11. **गाढ़** 'difficulty', 'misfortune.'
उदास वचन 'sorrowful words.'

l. 17. **दुखसमुद्र** 'sea of sorrow.'

l. 19. **अप्रगट = अप्रकट** 'unknown to others', 'concealed.'

l. 20. **बांह** 'security', 'protection', lit. 'arm.'

l. 21. **परलोक संवारना** is 'to secure a happy hereafter.' **परलोक** 'the next world.'

l. 22. **चौकस** 'circumspect', 'watchful', 'alert.'

l. 23. **कुदृष्टि** 'displeasure', lit. 'evil eye.'

Page 72.

l. 1. **परिवार** 'family', lit. 'those who surround (one).'
कौ in Braj, the sign of the genitive. **तृप्ति** 'satisfaction.'

l. 3. **प्रीतम = प्रियतम** 'most beloved.'

l. 6. **ऊसर** 'barren land.'

l. 8. **आप सों** 'of his own accord.' **कै = कि** 'or.'

l. 9. **मन ही मन** 'in his own mind.'

l. 10. **उज्जल** 'bright', figuratively for 'noble minded.'
मलीन lit. 'dirty', 'vile', 'depraved.'

l. 11. **काजर** 'collyrium' from Sk. **कज्जल**.

l. 13. **सावधानी** 'carefulness.' Note the formation of the abstract noun by adding the final **ī**. **सावधान** lit. 'with or having circumspection', hence, 'careful.'

l. 14. **अपराध** 'offence.' **मन मैला करना** is 'to be annoyed.'

l. 15. **अचरज** 'wonder.'

l. 16. **अति** 'too much.'

l. 17. **भ्रष्ट करना** lit. 'to displace or to remove one from his position', hence 'to ruin.' **नैक** 'little', lit. 'not even one.'

l. 18. **उपाय** 'remedy', 'means of escape.'

l. 19. **समझ बूझना** is 'to reflect and make up (one's) mind.'

l. 21. **बात** is to be understood after **ऐसी**.

PAGE 73.

l. 1. **चीर लौं** 'up to the end.'

l. 2. **बृथा** 'useless.'

l. 3. **सिवार** from Sk. **शैवाल** 'green vegetation.' **आप सें आप** 'spontaneously.'

l. 5. **दुष्टजन** 'wicked person.'

l. 6. **सौं = सा** 'like'; cf. Sk. **सम** 'like.'

l. 8. **बीजना** 'fan.'

l. 9. **आंकुस** 'an iron goad for driving elephants.'

l. 11. **धान पानी कौं खानिहारी** 'granivorous', lit. 'eater of rice and water.'

l. 12. **मित्रभेद** 'breach of friendship.' **चित में परी** 'suggested to the mind.'

l. 13. **स्फटिक** 'crystal.'

l. 14. **उचटना** is 'to be separated (like plaster from the wall)' hence 'to be annoyed.'

l. 15. **एक समय** 'sometimes.'

l. 16. **दीन** 'humble.'

l. 17. **बरन** 'but, on the other hand.'

l. 18. **सूरातन** 'heroism', 'bravery.'

l. 19. **मुक्ति** 'salvation', lit. 'release.'

l. 21. **तुम ... आवै** 'what strength you can.'

l. 22. **काहू भांति कसर** 'relaxation of any kind.'

PAGE 74.

l. 1. **निरादर** 'insult', lit. 'want of respect.'

l. 6. **दोउन मांहिं** 'between the two.' For its another form '**दोऊन में**' *vide* p. 14, l. 3.

l. 10. **संगति** 'companionship', 'society.' **बिगरै ही बिगरै** 'will certainly be spoiled.' Mark the intensive force of the repetition of the verb here.

l. 15. **बिजार** 'bull.' **क्रोध भरो = क्रोध से भरा** 'filled with anger.'

l. 16. **जिम = जैसे** 'just as.'

l. 17. **तिम** correlative of **जिम**, 'then.'

l. 18. **यथाशक्ति** 'with all (their) might', 'as far as (their) strength (allowed).'

l. 20. **बापरे** 'helpless', 'poor, innocent.'

l. 21. **सिर लियो = सिर में लिया** 'brought upon myself', 'heaped upon my head.'

l. 22. **भागी** 'sharer', 'partaker.' **बंटावनिहारो** 'partner', 'co-sharer.'

Page 75.

l. 2. **रीति** 'custom.' **राजधर्म** 'polity', lit. 'duties of a king'; hence the book in which are laid down what a king should or should not do.'

l. 5. **धर्मी** 'righteous.'

l. 6. **क्षमा** 'forbearance', 'forgiveness.'
भूषन 'an ornament.' **दूषन** 'fault'; **है** is understood after it.
नीतिशास्त्र 'polity', lit. the book which regulates the conduct (of life). **नीति** lit. means 'that which leads', and **शास्त्र** lit. means 'that which rules.'

l. 7. **सर्वभक्षी** 'one who eats everything', i.e. 'one who takes all sorts of food, clean or unclean, prescribed or prohibited.'

l. 8. **असावधान अधिकारी** 'careless or imprudent officer.'

l. 9. **गुननाशक** 'one who spoils all good qualities.' This agentive termination **क** is in signification the same as **करनेवाला**. Cf. **दर्शक = दर्शनकरनेवाला** 'a spectator', 'a looker on', also **हिंसक** in l. 12 below.
तत्काल lit. 'that time', 'that very moment', 'instantly.'

l. 11. **दातार** properly **दाता** 'liberal in charity.' The final **र** in this word is the remnant of the *r* sound in the original stem **दातृ**. In Sanskrit declension, the nominative plural form of the words ends in **र**. Cf. also the forms **कर्तार, वक्तार, भर्तार**, etc.

l. 12. हिंसक 'cruel', lit. 'murderous.' दयाल = दयालु 'kind', 'full of kindness.'

l. 14. शोक मिटाय 'removing his remorse.'

l. 15. राजपाट 'the royal throne.'

l. 17. आसीस 'blessings', 'benediction.'

l. कल्यान 'well-being', 'welfare.' होय is understood after it.

PAGE 76.

l. 1. विग्रह 'strife', 'quarrel', 'battle', 'war.'

l. 2. अहो is a particle of address, 'O.'
गुरुदेव 'teacher.' The word देव 'god' is added as a mark of veneration.

l. 3. लालसा 'desire', 'curiosity.'

l. 4. शांत सुभाव होय 'being calm and quiet.'

l. 6. राजप्रताप 'royal dignity'; प्रताप lit. means 'heat', hence 'glory', 'power.'

l. 7. विस्वासघात 'treachery', lit. 'striking down confidence.'

l. 10. कर्पूरद्वीप lit. 'camphor island.' पद्मकेल = पद्मकेलि lit. 'pleasure-ground of lotuses.'

l. 11. हिरण्यगर्भ lit. 'born of a golden egg.'

l. 14. केवट from Sk. कैवर्त्त 'a boatman.'

l. 15. न निभै 'will not thrive.'

l. 16. अधिकाई 'increase (in number and wealth).'

l. 17. प्रतिष्ठा 'glory', 'renown.'

l. 18. रत्नसिंहासन 'jewelled throne.'

PAGE 77.

l. कौन ह्वै 'a certain', 'some unknown.' Mark the force of the intensive particle ह्वै here. It is somewhat like an expletive here, or may be taken in a depreciative sense, 'not so well-known.'
दीरघमुख lit. 'long-mouthed.'

l. 5. समाचार 'news', lit. 'doings of all.'

l. 7. जंबूद्वीप lit. 'the island of the rose-apple tree.' One of the seven old divisions of the world under which India falls.

In those days the whole earth was taken as an island and its different parts were therefore so named. These divisions were named after the tree peculiar to itself. Cf. प्लक्षद्वीप 'the island of the Indian fig tree', शाल्मलीद्वीप 'the island of the silk cotton tree', etc.

l. 9. बचननि में चतुर 'skilful in words.'

l. 15. आज राजा 'the king of the present day.'

l. 16. दूसरौ इंद्र 'a second Indra', 'another Indra.'

l. 19. पय 'milk.'

l. 20. न आवै 'will not enter', 'will not act upon.'

l. 22. अपनौ कियौ आप पायौ 'suffered the consequence of their own actions.'

PAGE 78.

l. 1. सेमल = Sk. शाल्मली 'silk-cotton.'

l. 2. घोंसुआ in Braj = घोंसला 'a bird's nest.'

l. 3. एक बेर 'once upon a time.' भादौं 'the month of Bhadra, the fifth of the Hindu months.'

l. 4. दामिनी 'the lightning.' दाम means 'a string or streak (of light).' दमकना is 'to flash.' घटा 'clouds', the word primarily means 'an assemblage', 'a gathering', hence 'a gathering of clouds.' The usual word in Sanskrit is घनघटा.

l. 5. मूसलधार adv. 'in torrents', lit. 'a stream of bludgeons.'

l. 6. भीजतु 'being wet.' In Braj this तु is a termination of the present participle.

l. 7. सीत कौ मार्‌यौ = शीत के मारे 'through cold.'

l. 8. बनचर lit. 'a wanderer in the forest.'

l. 9. देखि तौ सही 'just see', 'please see.' This dramatic particle सही has various meanings. It usually means 'let it be admitted', but sometimes it also means 'certainly', 'just so', 'pray', etc.

l. 11. तैं ने = तू ने.

l. 12. पाय पसारे सोना is 'to sleep comfortably', lit. 'to lie down with one's feet fully stretched out.'

l. 14. **मो पंडित कौं = मुझ पंडित को**. Mark the position of the noun in apposition, which is always between the pronoun and the case-ending.

l. 17. **मट्ट मारि** 'silently.' **मट्ट मारना** is 'to remain silent.' **उघरि गयो** 'cleared off.'

l. 19. **पटकि** 'dashing against the ground.'

l. 20. **खसोडना** is 'to pull off.'

l. 23. **मौन साध रहे** 'remained silent', 'kept quiet.' **मौन** 'speechlessness.'

PAGE 79.

l. 5. **मारन कौं = मारने को** 'to beat.'

l. 6. **पराक्रम** 'strength.'

l. 7. **बूझना** is 'to be thought proper.'

l. 9. **ठिठाई** 'pertness', 'coquetry.'

l. 15. **हस्तिनापुर** 'the old name of Delhi.'

l. 17. **चांदी** 'a white spot', 'a scar.' The ordinary meaning of this word is 'silver', lit. 'the moon-like white metal.'

l. 22. **पगार** 'the trench around a field.' **निकट** 'near.'
भूरी कामरी 'brown blanket.' **धनुष चढ़ाय** 'having strung a bow.'

l. 23. **झूड़** 'bush.' **दबकि रह्यो** 'hid himself', 'remained hidden.'
दै पहर रात के समें 'at midnight', 'when two watches of the night have passed.'

PAGE 80.

l. 2. **कामांध** 'blinded with passion.' **रैंकतु धायो** 'ran braying.'

l. 5. **लौठियन लौठियन** 'repeated blows of a cudgel.' Mark the force of the repetition here.

l. 12. **दादूर** 'frog', from Sk. **दर्दुर**. **सराहै** 'praises.'

l. 14. **मूर्ख** 'fool', 'stupid.'

l. 15. **सेइयै = सेवेगा** 'should serve or attend on.'
सीरो 'cool', from Sk. **शीतल**. **छांह** 'shade.'

l. 16. **ओछे** 'vulgar.'
प्रभुता 'superiority.' **कलाल** 'a distiller', 'a seller of wine.'

l. 17. **बासन** 'vessel', 'pot.' **मदिरा** 'wine', lit. 'intoxicating liquor.'

l. 19. **ससा** 'hare.'

l. 23. **खैंच** 'scarcity', lit. 'pulling.'
यूथपति 'the leader of the herd.'

Page 81.

l. 2. **गजराज** 'king of the elephants.'

l. 4. **सिलीमुख** lit. 'an arrow-mouthed.'

l. 6. **आयहैं** 'should come.' **सजाती** 'kindred.' The prefix **स=सम** 'same.'

l. 7. **जीवतु** 'living.'

l. 9. **उपाध** 'violence', 'injury.' **यत्न करना** here 'to try to remedy.'

l. 10. **मन माँहिं कह्यौ** 'reflected in his mind', 'said to himself.'

l. 11. **छूवत** 'touching', 'by a mere touch.'

l. 12. **दिखाई दियो** 'showed himself.'

l. 13. **राम राम करना** is 'to call Rām Rām.' It is a very common form of salutation among the Hindus of Northern India, who worship the deity in the form of Rām.

l. 14. **चंद्रदूत** 'messenger of the moon.'

l. 16. **आवन को=आने का** 'of coming.'

l. 18. **चंद्रसागर** 'moon-lake', lit. 'sea of the moon.'

l. 20. **अप्रसन्न** 'displeased.'
हमारो ओर तें 'on my behalf', lit. 'from my side.'

l. 22. **ससी** lit. 'owner of the hare.' The correct signification of the word is 'having a hare.' The spot in the moon resembles the form of a hare and hence the epithet.

Page 82.

l. 1. **धर्म** 'propriety', 'right action', 'prescribed duty.'

l. 5. **आय कढ़े** 'came forth', 'happened to come.' **बहुरि** 'again.'

l. 7. **अपराध** 'transgression', lit. 'any action causing annoyance', 'guilt.'
चंद्रदेव 'the moon god.' **क्षमा करायहौं** 'I will cause it to be forgiven.'

l. 8. **संबोधन करि** 'having addressed.'

l. 9. प्रतिबिंब 'reflection.'

l. 16. सिद्ध होना is 'to be accomplished.'

l. 19. दंडवत करवाय 'having made me prostrate myself (like a stick).'

l. 22. निंदा करना is 'to slander.'

PAGE 83.

l. 3. को = कौन 'who', Sk. कः

l. 4. सर्वज्ञ lit. 'all-knowing.'

l. 5. प्रधान 'chief', lit. 'one placed foremost of all.'

l. 6. कुलवंत 'born of a high family.' The suffix वंत is the plural form of the suffix वान 'possessing.'

युद्धविद्या में निपुन 'skilful in the science of war', 'an expert warrior.'

धर्मात्मा 'virtuous-souled.'

l. 7. आज्ञाकारी 'obedient', lit. 'one who carries out orders.'

प्राचीन 'mature in age' hence 'wise.'

प्रसिद्ध पंडित 'a renowned scholar', 'a man of reputed learning.'

गुनग्राहक 'appreciator of merit.' द्रव्य उपायक 'acquirer of wealth.'

l. 8. उपकारी 'benefactor.' हितकारी 'doer of good.'

l. 9. सुआ 'parrot', from Sk. शुक.

l. 12. उनमत्त 'mad man', also 'a drunkard.'

l. 13. अनपावनो 'unobtainable.'

l. 14. बातन ही 'by mere talk.'

l. 16. कीर 'parrot.'

l. 19. बसीठ 'ambassador', 'messenger.'

l. 20. स्वामिभक्त 'devoted to his master.'

l. 21. पवित्र 'pure.' चतुर 'shrewd', 'clever.' ढीठ 'bold', 'forward.'

विषन रहित 'void of lust or anger.' छमायुक्त 'forbearing.'

l. 22. गंभीर 'serious', 'reserve.' जाको उतर न फुरै 'to whom none can readily reply.'

PAGE 84.

l. 2. विप्र 'a Brahman.' सत्यवक्ता 'truthful', lit. 'truth-teller.'

l. 3. अहंकार रहित 'void of pride.'

l. 4. **निज स्वभाव** 'one's own nature.'

l. 5. **कालकूट विष** 'the deadliest poison. **महादेव** 'Siva', lit. 'the great god.'

l. 6. **स्यामता** 'blackness.' **न त्यागी** 'did not forsake.'

l. 7. **सुग्गा** 'parrot.' Mark this another form of the Sk. original **शुक** which is retained in **सुक** l. 9 below.

l. 9. **संदेसो** 'message.'

l. 10. **मूड़ पै** 'on my head', i.e. 'I will carry out submissively.'

l. 12. **समीप** 'near.'

l. 16. **ग्रीष्मऋतु** 'summer season.' According to the Hindus there are six *Ritus* or seasons. **ग्रीष्म** 'summer', **वर्षा** 'rains', **शरत** 'autumn', **हेमन्त** 'early winter', **शीत** 'winter', **वसन्त** 'spring.'

l. 17. **दुपहरी** 'mid-day', lit. 'when two watches of the day have passed.' **बटोही** 'traveller.'

l. 18. **सीरक** 'coolness.'

l. 20. **छांह** 'shade.'

l. 21. **बीट** from Sk. **विष्ठा** 'excreta', 'dung (of birds here).' **बीट करना** is 'to excrete.'

l. 22. **गरुड़** 'the king of birds', the conveyance of Vishnu. **यात्रा** 'pilgrimage.'

PAGE 85.

l. 1. **अहीर** 'milkman.' **दहेंडी** 'a vessel in which sour milk is kept.'

l. 2. **झुठाय** 'having defiled by eating of it.' **बटेर** 'quail.'

l. 3. **काहू भांति** 'in any way.'

l. 7. **अपराध करि** 'having offended.'

l. 8. **खाती** 'carpenter.' **जार** 'paramour.' **खाट** 'bedstead.'

l. 11. **मंदबुद्धि** lit. 'foolish', 'blunt-witted.'

l. 14. **सु = सो** 'so.'

l. 18. **खाहट** 'sound', 'noise.' **परीक्षा** 'test' (**परि** 'on all sides', and **ईक्ष** 'to see').

l. 20. **रमति क्यों नाहीं** 'why don't you enjoy yourself?'

l. 21. **घर को धनी** 'master of the house.'
मेरे भायें 'to my mind', 'in my eyes.'

l. 22. **सूनो** 'empty', 'solitary.' **बनखंड** 'a tract of forest.' **सो = सा** 'like.'

लगतु है 'appears', 'seems to be.'

l. 23. **सनेह** 'affection', 'love.'

PAGE 86.

l. 1. **बावरे** from Sk. **बातुल** 'crazy', 'insane.'

l. 3. **एक पल** 'one moment.' A *pal* = 24 seconds according to Hindu calculation of time.

बिसारना = बिसराना 'to forget.'

l. 4. **सिंगार** 'ornament.'

कुलवंती properly **कुलवती** 'noble lady.'

l. 5. **सती** 'chaste.'

l. 6. **पुन्यात्मा** 'pious', lit. 'pure-souled.'

l. 8. **पान फूल के समान** 'like betel and flower', i.e. enjoyable for a short time, or a momentary decoration.

l. 9. **पाऊनो** 'guest.' **दैव के संजोग** 'by chance', 'by an accident of fate.'

कर्म की रेख 'lines of fate.' This refers to the belief that the inevitable happenings to a man during his life-time are written on his forehead by Fate. These lines are indelible.

l. 10. **न बसाय** 'is of no avail.'

l. 12. **सती होना** is 'to burn oneself on the funeral pyre of one's husband.'

l. 14. **जेते...तेवे** 'as many...so many.'

l. 16. **गारुड़** 'snake-charmer', from Sk. **गारुडिकः**. The word **गारुड़** means 'a charm for snake-bite', from **गरुड़** the king of vultures whose very name when uttered has the effect of neutralising the effects of snake poison. Garur is a great serpent-eater and hence the popular superstition.

शक्ति करि 'by the power.' The particle **करि** is here used in the sense of **से** (instrumental). For its another use *vide* note l. 11, p. 1.

पाताल 'nether world', 'subterranean world', which is the abode of the serpents.

l. 17. **सहगामिनी** 'the woman who follows her husband after his

death, i.e. by burning herself on his funeral pyre.' **सह** 'with' and **गम** 'to go.'

नर्क a short form of **नरक** 'hell.'

l. 18. **काढ़ि** 'taking out', i.e. 'delivering.'

परम गति 'the highest condition', 'final beatitude.' **पर** high and **म** is the shortened form of **तम** the superlative suffix.

l. 19. **धन्य मेरे भाग!** 'How fortunate am I!' 'Blessed be my fortune!'

l. 20. **आप तरै** 'herself will be released.'

l. 21. **उछाह** 'excessive joy', 'intense delight.'

समेत 'together with', 'along with'; while **साथ** means 'in company with.' **समेत** is used of lifeless things generally.

l. 23. **स्तुति** 'praise.'

PAGE 87.

l. 4. **चकवा** Sk. **चक्रवाक** 'Ruddy goose.'

l. 5. **धर्मावतार** 'incarnation of justice.' **अवतार** 'incarnation', lit. means 'come down (from heaven).'

l. 7. **अधिकारी** 'minister.' **ठाकुर** 'master.' **विग्रह** 'dissension.'

l. 8. **मनावै** 'would invoke the gods for', i.e. 'eagerly wish for.'

l. 10. **जासूस** 'spy.' **कटक** 'army.' **विचार** 'object', 'motive', 'design.'

l. 12. **आछे**=**अच्छे** 'good', 'expert.'

l. 13. **सब संसार** 'the whole world.' **विभौ**=**विभव** 'prosperity', 'wealth.'

l. 14. **तीरथ** 'holy place of pilgrimage.'

आश्रम 'hermitage (of sages).' **देवालय** 'temple', lit. 'house of god.' **गूढ़** 'hidden.' **गूढ़ बात** 'ins and outs.'

l. 16. **गुप्त** 'concealed.'

l. 17. **मंत्र** 'counsel.' **फूटै** 'should take air.' **आगलो** 'the antagonist', 'the opponent.'

l. 19. **पौरिया** 'gate-keeper.'

l. 20. **पौरि पै** 'at the gate.'

l. 23. **डेरा दिवाओ** 'let him have a place to put up.'

PAGE 88.

l. 1. **द्वारपाल** 'door-keeper.' **दैन**=**देने** 'to give.'

l. 2. **उपज्यो** 'has sprung forth.'

l. 5. **सांग** 'spear.'

l. 9. **वेग ही** 'quickly indeed.'

l. 10. **गुन सुभाव** both the words are synonymous, 'nature', 'characteristic.'

l. 11. **सूरातन** 'bravery', 'courage.'

l. 12. **उतावली** 'haste', 'impatience.'

l. 14. **चित्रवरन** lit. 'of variegated colour.'

l. 16. **दीप पतंग की भांति** 'like the moth before the lamp.' **चींटी** 'ant.'

l. 18. **काल** 'time', 'occasion', 'opportune time.'

l. 19. **सकेलना** is 'to gather up (as the limbs of a tortoise).' **नाग** 'a snake.'

l. 21. **ठाढ़े** 'standing erect.'

l. 23. **गढ़** 'fortress.' **संवारना** is 'to make ready.'

PAGE 89.

l. 1. **विरमाना** is 'to cause to delay.' **कोट** 'stronghold', 'fort.'
जोधा = Sk. **योद्धा** 'warrior.'

l. 2. **सहस** 'thousand.'

l. 5. **रचना** is 'to build', 'to set up.' **खाई** 'trench.'

l. 6. **निबिड़** 'dense', 'thick.' **पैठवे निकसवे कों** 'for ingress and egress.'

l. 7. **यंत्र गोला** 'cannons and balls.' **यंत्र** lit. 'a machine.'
अन्न रस 'food and drink.' **धन जन** 'men and money.'
संचय करना is 'to collect', 'to store up.'

l. 10. **सारस** 'crane.'

l. 12. **नीकी ठौरि** 'a good position', 'a suitable place.'

l. 14. **तक राखना** is 'to fix one's eyes upon', 'to keep one's view upon.'

l. 17. **न सरै** 'cannot do', 'cannot go on or live.'

l. 18. **नोन** = **लौन** = **लवण** 'salt.' **फीकौ** 'tasteless.'

l. 20. **सिंगलदीप** 'the island of Ceylon.'

l. 23. **दूरदर्शी** 'far-seeing', 'far-sighted.'

PAGE 90.

l. 5. **पराई चाल चलना** is 'to assume the manners of another.'
कूकरदमनक lit. 'the subduer of dogs.'

l. 10. **लील=नील** 'indigo.' **कुंड** 'vat.'
नीलवार 'indigo-manufacturer.'

l. 12. **मृतक के** 'pretending to be dead.'

l. 13. **पनहारियन** 'female watercarriers.'
बाली 'companion', a female companion is addressed by this term by her fellow woman.
बीर 'O sister!' This word is used in addressing both male and female friends.
बरी 'Oh' is the feminine form of **बरे**.

l. 16. **डाकिनी** 'a witch whose evil eyes cause children to pine and die.' It also means 'a female imp.'
दूजी 'a second', 'another woman.'
बहनि=बहिन 'sister.' Mark the transposition of the vowel *i* without changing the meaning.

l. 17. **मौंड़ा** 'a son', 'a boy', lit. 'shaven', i.e. 'a boy whose tonsure ceremony is performed.'
भूत पिशाच 'spirits and goblins.'

l. 19. **छोहरा** 'a child.' **मुंडी** 'head.'

l. 23. **पराय** 'having fled.' **सोचन=सोचने** 'to reflect.'

PAGE 91.

l. 1. **प्रभुता** 'authority.'

l. 4. **औषधौन** 'medicinal herbs', 'medicaments.'
अभिषेक करना is 'to besprinkle', 'to anoint.'

l. 8. **वेऊ=वे भी** 'they too.'

l. 11. **खेद दये** 'drove out.'

l. 12. **जुरि** 'having assembled.'

l. 13. **जिन पछताओ** 'don't regret', 'don't be sorry.'

l. 19. **बोलिहै** 'will cry out.'

l. 20. **पनही** 'a slipper.'

PAGE 92.

l. 1. **अपनो पंथ** 'your own ways.'

l. 2. **भेद** 'secret.' **मरम** 'mystery', 'hidden meaning.'

l. 3. तरु 'tree.'

l. 10. भूपाल 'king', lit. 'the cherisher or preserver of the world.'

l. 14. आसन 'seat.' सीस झुकाय 'bending down his head.'

l. 15. राजाधिराज 'king of kings'; अधिराज means 'suzerain king.'

l. 17. सरनआना is 'to seek protection under.' अनत=अन्यत्र 'elsewhere.'

l. 21. दूत...है 'it is through the mouth of the messenger that the king speaks.'

l. 23. आनि=आ कर 'having come.' कहे=कहने से.

PAGE 93.

l. 1. हानि 'loss', 'harm.'

l. 3. धर्म 'rules of propriety', 'religious injunctions.'

l. 6. निवारन कियो 'appeased', 'removed.'

l. 7. मनाय 'soothing', 'conciliating.'

l. 11. सामा 'preparations', 'arrangements.'

l. 14. सातवें स्वर्ग 'the seventh heaven', 'the highest heaven.' The Hindus believe in the existence of seven graduated heavens.
मो पै=मुझ से 'by me.' बरन्यौं=बरनना from Sk. वर्णना 'to describe', 'to extol.'

l. 18. मनोरथ 'desire', lit. 'the chariot of the mind.'

l. 19. असन्तोषी 'discontented.'
लाजवती 'modest.' वेश्या 'a prostitute', lit. 'a woman who always dresses herself in a manner to attract the minds of the people', from वेश 'dress.'
कुलवती 'a lady of a high family', 'a respectable lady.'

l. 20. ई=ही (intensive particle).

l. 23. एक मत 'of one opinion', 'unanimous.'

PAGE 94.

l. 1. प्रजा 'subjects', lit. 'children.' विग्रह 'hostile (feeling)', 'contention.' नीति 'policy.'

l. 3. बेग adv. 'quickly.' जोयसी=Sk. ज्योतिषी 'astrologer.'

l. 4. महूरत=मुहूर्त्त lit. 'a moment', hence 'an auspicious moment.' The Hindus always consult the position of the stars and

planets before undertaking any work or setting out on a journey. This word मुहूर्त्त is also technically used in astrological calculations to mean 'a period of 48 minutes.'

l. 6. **नान्हो** 'a little one', 'an unimportant or insignificant person.'

l. 7. **परभूमि** 'another man's land', 'another's kingdom.'

l. 8. **उद्योग** 'exertion.'

l. 11. **प्रमान** 'authority.' **आज्ञा प्रमान** 'on the authority of the order.'

l. 13. **मुखियान** 'chiefs', from Sk. **मुख**, lit. 'belonging to the face' or 'placed in the front.'

l. 19. **रनवास** 'a rājā's female apartments', 'seraglio.' From **रानीवास** 'residence of the *rānīs*.'

l. 22. **बिषम** 'uneven.' **के** 'or.'

Page 95.

l. 2. **गयंद** 'elephant', probably from **गजेन्द्र** 'king of elephants.'

l. 3. **चलतो कोट** 'a moving fortress.'

l. 4. **पयादेन** from Sk. **पदाति** 'footsoldier', 'infantry.'

l. 6. **जोगेस्वर कौ नींद** i.e. 'very little sleep', lit. 'the sleep of the chief of *yogīs*.' One of the main austerities of *yoga* is to conquer sleep.

l. 10. **खसोटिकै उजारै** 'should desolate completely.' **खसोटना** is 'to root out.'

l. 11. **बैरि** 'enemy.' **दुचितो** lit. 'of two minds', hence 'divided in thought', 'distracted.'

l. 12. **ईंधन** 'fire-wood.' **न्यार** 'forage', 'fodder.'

l. 13. **गढ़ी** diminutive of **गढ़** 'a fort.'
सर 'tank.' **बापौ** 'pond.' **फौरि नाखै** 'should break and destroy.' **उपवन** 'grove.' **बारो** 'garden.'

l. 14. **पीड़ा** 'trouble', 'affliction.'

l. 15. **उपजाना** is 'to cause.'

l. 19. **प्रसाद** 'reward', lit. 'a token of pleasure.'

l. 20. **जीविका** 'pittance', lit. 'means of livelihood', from **जीव** 'life.'

l. 23. **किंकर** 'servant', lit. "one who always asks 'what shall I do?'"
उदास 'dejected', 'disheartened.'

PAGE 96.

l. 1. **असमय** 'improper time', i.e. 'when he is wanted', 'at the wrong moment.'

कानो देना is 'to give the cold shoulder', 'to evade.'

l. 4. **भूखे टूटे** 'starving and pining', 'being starved and distressed.'

l. 6. **भानेज** 'sister's sons.' **भतीजान** 'brother's sons.'

l. 8. **अपनाय लेना** is 'to make one's own.'

l. 9. **सरन गहैं** 'seek your protection.'

l. 13. **पैंड़े** 'path', 'road.'

l. 14. **उमंग** 'ambition.'

l. 16. **शुभ** 'auspicious.'

l. 17. **लग्न** 'moment.' In astrology it is used to mean 'the moment of the sun's entrance into a sign of the zodiac.'

दिगविजययात्रा 'a journey for the conquest of the different quarters of the world', 'a march for invading other countries.'

l. 19. **ऐंड** 'below.'

l. 20. **डेरा** 'camp.'

PAGE 97.

l. 4. **मतौ कियौ** 'advised.'

l. 5. **तऊ** 'still.'

l. 13. **क्रीड़ा** 'amusement.'

l. 15. **आसक्त** 'attached.'

l. 16. **राजपूत** 'Rajput.' This word literally means 'the son of a king.' The Rajputs claim to be the descendants of the royal family which governed India in early times.

उद्यम lit. 'exertion', hence 'labour', here 'employment.'

l. 20. **दिनप्रति** 'every day', 'daily.' **प्रति** is a Sanskrit preposition equivalent to 'per.'

l. 22. **खड्ग** 'sword.'

PAGE 98.

l. 1. **जुहार** 'salutation.'

l. 2. **सुवरन** 'gold', lit. 'good-coloured (metal).'

l. 4. **सोनौ** 'gold.'

l. 6. **संकल्प कर देना** is 'to give away in charity by taking a religious vow.'

l. 9. **खांडो** 'sword.' **फरी** 'shield.'

l. 10. **कृष्णचतुर्दशी** 'the fourteenth day after the full moon'. 'the fourteenth day of the dark half of the month.'

l. 11. **घन घुमडि** 'clouds gathering round.' **मेह मच्यौ** 'it rained heavily.'

l. 18. **गहि** 'taking', from Sk. **ग्रहण** 'to take.' **पाछे के लियौ** 'followed.'

l. 19. **नवजोबना** 'quite young', lit. 'newly attaining youth.'

l. 20. **धाय मारना** is 'to weep bitterly.'

l. 22. **राजलक्ष्मी** 'presiding goddess of prosperity of the kingdom.'

l. 23. **भुजानि की छांह** 'shadow of the arms', i.e. protection.

Page 99.

l. 1. **विश्राम करना** is 'to take rest', hence 'to live peacefully.'

l. 3. **बल देना** is 'to sacrifice.' Sk. **बलि** 'an offering.'

l. 4. **अखंड राज** 'undivided rule', 'unbroken kingdom.'

l. 9. **धन्य भाग मेरौ** 'blessed is my fortune.' **देवी** 'goddess.'

l. 10. **काज सरै** 'work may be done', 'may be of service.'

l. 11. **काया** 'body.'

l. 14. **सुफल = सफल** 'fruitful.'

l. 16. **ऋन** 'debt', 'obligation.' **उतरन** 'release.'

l. 18. **चिरंजीव** 'long-lived.'

l. 21. **निपूतौ** 'sonless.' **जगत** 'world.'

l. 22. **भवानी** 'goddess Durgā', lit. 'wife of S'iva.'

Page 100.

l. 1. **रांड** 'widow.'

l. 2. **ठानि** 'resolving', 'making up (her) mind.'

चढ़ायौ 'offered as a sacrifice', 'made an offering of.'

l. 4. **निगोड़ौ** 'miserable wretch', lit. 'without feet', hence 'helpless.'

नाठौ fem. of **नाठा** from Sk. **नष्ट** 'ruined.'

l. 5. **चरित्र** 'conduct', 'behaviour'; lit. 'movement', from Sk. **चर** 'to move.'

l. 7. **उपजतु खपतु** 'come and go', i.e. 'are born and die.'

l. 8. **कुटुंब** 'kinsmen', i.e. 'family', hence 'wife and children.'

l. 11. **साहस** 'rashness', 'violence', 'daring act.'

l. 12. **भंग** lit. 'breaking', hence 'destruction.'

l. 16. **जीवदान देना** is 'to give the boon of life', i.e. 'to restore to life.'

तिन चारन = उन चारों 'those four persons.'

l. 19. **समीप** 'near.'

l. 23. **बगदि** 'having returned.' **ढिग** 'side', 'near.'

Page 101.

l. 1. **सिद्ध पुरुष** 'a perfected man', 'a man endowed with supernatural powers', 'a saint', 'a divine person.'

l. 5. **वृत्तांत** 'occurrence', 'story.'

l. 6. **करनाटक** The Carnatic, a province in the Deccan.

l. 10. **रीस** 'jealousy.'

l. 11. **चतुर** 'clever', 'prudent.'

l. 13. **नाऊ** 'barber.' **प्रान गंवायौ** 'lost his life.'

l. 17. **स्वप्न** 'dream.'

सदाशिव 'an epithet of Mahadeva', lit. 'always blissful.'

l. 18. **पाछलौ रात्रि समें** 'towards the end of the night', 'during the small hours of the night.'

क्षौर होना 'to get shaved.'

l. 19. **लौठिया** 'stick', 'bludgeon', the Braj form of **लाठी**.

l. 20. **लुक रहना** 'to keep oneself concealed.'

l. 21. **लकुठनि** 'with the stick or bludgeon.' **लहियौ** 'get' imperative.

l. 22. **कलस** 'pot', 'pitcher.' **ह्वैहै** 'shall become', 'shall be transformed into.'

l. 23. **बर** 'boon.' **दूजे दिन** 'next day.'

PAGE 102.

l. 1. भोलानाथ 'one of the epithets of Śiva', lit. 'the easily propitiated Lord.'

l. 3. नौआ 'barber' is another form of नाऊ.

l. 4. रीति 'way', 'means.'

l. 14. कूढ़ 'stupid', 'foolish.'

l. 17. घाट बाट 'ferries and roads.'

l. 21. दौरि 'running', i.e. 'quickly', 'without delay.'

l. 23. सुनत प्रमान 'immediately on hearing.'

PAGE 103.

l. 5. बाबा जू 'Revered Sir.' काहू भांति 'in any way', 'by any means', 'somehow or other.'

l. 7. गर्ब 'pride.' लक्ष्मी 'Goddess of prosperity.'

l. 8. टरै 'disappears.' पौरुष 'manliness', 'strength', 'energy.' चतुर 'clever', 'intelligent', 'sagacious.' अभ्यास करना is 'to repeat often', 'to practise', 'to exercise the memory.'

l. 12. डहडहाना is 'to flourish', 'to bloom.'

l. 15. अनीति 'impolitic act.'

l. 16. चूकना is 'to blunder', 'to err', 'to abandon.'

l. 17. कुपथ्य 'unwholesome diet', 'intemperance.'

l. 19. आरसी 'mirror', 'looking glass.' मौन गहि रहे 'remained silent.'

PAGE 104.

l. 4. सुधारना is 'to rectify', 'to mend.' सन्निपात 'a fatal type of fever caused by the combined derangement of the three humours of the body', 'typhoid fever.'

l. 7. विजय करना is 'to conquer.'

l. 8. संग्राम 'battle.'

l. 9. कोट छेकिये 'besiege the fort.'

l. 18. दाम 'a copper coin of the smallest value', 'a farthing.'

l. 20. आपत्य 'calamity', from Sk. आपत्ति.

l. 21 स्वार्थक properly सार्थक 'useful.'

Page 105.

l. 2. आधीन properly अधीन 'subservient', lit. 'under.'

l. 4. समाधान करना is 'to satisfy.'

l. 5. प्रवीन 'experienced', 'prudent.' सीलवंत 'well-behaved.'

l. 6. नीके पोखे 'well-nourished.'

l. 7. अधीर 'irresolute.' कायर 'coward.'

l. 10. प्रतीत 'confidence.'

l. 11. निचंती Sk. निश्चिन्त 'free from anxiety.'

l. 13. सहायता 'assistance', 'help.' सहाय lit. 'one who accompanies.'

l. 15. मेघबरन 'of the colour of clouds', 'cloudy-black.'

l. 16. बार 'gate', probably from Sk. द्वार '*dvār*' of which '*d*' is dropped.

l. 17. लोन तें उतरन होना is 'to be released from (the obligation of) salt', i.e. 'to free oneself from the favour received in the form of food (from one's master).'

Page 106.

l. 1. प्रतिज्ञा 'promise.' निर्वाह करना is 'to carry out', 'to fulfill.'

l. 2. आगरे के 'of the advanced line.'

l. 3. उतावली 'speedily', 'quickly.'

l. 4. गति 'condition.' भेद 'dissension', from the root भिद 'to split up.'

l. 5. घेरी नाखि 'setting up an enclosure.'

l. 11. उत 'there', 'at that moment.'

लाय 'flame', 'fire.'

l. 12. जीवन के 'of the living beings.'

पग छूटना is 'to be disheartened', lit. 'to slip.'

l. 13. सुकुमारता 'delicateness.'

l. 14. सर्वमित्र lit. 'friend of all.'

l. 15. लेको 'seized.'

l. 17. जूझना is 'to be killed in the battle.'

l. 21. बिथरावना is 'to scatter.'

l. 23. भक्तिवंत 'devoted.' निष्कपट 'guileless.'

Page 107.

l. 3. **जस मलीन करि** 'tarnishing fame.'

l. 4. **अनित्य** 'not everlasting', i.e. 'transient', 'mortal.' **नित्य** 'everlasting', 'immortal.'

l. 8. **अनाथ** 'helpless', lit. 'without a master or protector.'

l. 11. **उदै** 'rise', 'prosperity.' **अस्त** 'setting', 'decline', 'misfortune.'

l. 15. **माया** 'wealth.'

l. 16. **बंदीजन** 'prisoners.' **बेरी** 'shackles', 'chains.'
हथकरी = **हथकड़ी** 'handcuffs.'

l. 17. **गुरुदेव** 'revered preceptor.'

l. 22. **रन** 'battle.' **परम गति** lit. 'the highest state', 'final beatitude', 'perfect bliss.'

l. 23. **नर्क** contracted form of **नरक** 'hell.' **कलंकी** 'stigmatised', 'disgraced.'

Page 108.

l. 2. **संधि**: 'union', 'alliance.' It also means 'peace', lit. 'the state of being placed together.'

l. 6. **आज्ञा करना** is idiomatically used to mean 'to be pleased to say.'

l. 10. **होय न होय** 'most likely', 'certainly.'

l. 12. **अभाग** 'bad luck', 'want of good luck.'

l. 14. **कपाल** lit. 'forehead' hence 'fate.' The Hindu superstition is that all the good and bad things that will happen to a man are written by Fate on his forehead.

l. 15. **देव कोपतु है** 'God is angry.' **हितून** 'well-wishers', 'friends.'

l. 18. **दुख उठायो** 'suffered pain.' Cf. the Hindustani idiom **तकलीफ़ उठाना**.

Page 109.

l. 1. **फुल्लोत्पल** lit. 'with blooming lotuses.' **बिकट** lit. 'formidable', 'terrible.'

l. 2. **संकट** lit. 'impervious', 'dangerous.' **कंबुग्रीव** lit. 'of conch-like throat.'

l. 3. **धीवर** 'fisherman.'

l. 8. **बंधु** 'friend', lit. 'one fastened with the tie of love.'

l. 11. **यद्भविष्य** lit. 'come what come may', i.e. 'improvident.'

l. 14. **अनागतविधाता** lit. 'one who takes precautionary measures against an approaching danger.'

l. 15. **उत्पन्नमति** lit. 'one who has got presence of mind in averting an evil.'

l. 17. **जद...परि है** 'when necessity will arise.'

l. 18. **उपाय** 'plan.'
उपजी बात 'something that has already happened.'

l. 20. **मिस** 'pretence.'

PAGE 110.

l. 1. **अपने काम सें काम** '(she is) only concerned with the satisfaction of (her) desire', '(she) only has to fulfill (her) object.'

l. 4. **बज्रमारे** 'cursed', lit. 'blasted with the thunderbolt.'

l. 5. **दैमार्यौ = दैमारा** lit. 'dashed to the ground', hence 'a wretch.'

l. 7. **रूठ्यौ** 'showed anger.'

l. 8. **धनियानी** fem. of **धनी** 'master.'

l. 12. **जार नाख्यौ** 'cast net.'

l. 13. **बझीं** 'were entangled.'

l. 16. **धीमर** 'fisherman.'

l. 17. **उत्पात** 'calamity.'

l. 19. **घां** 'side', 'end.'

l. 22. **बालकपन** 'childishness.' **कमठ** 'tortoise.'

PAGE 111.

l. 1. **गंधमादन** lit. 'maddening with its smell.'

l. 3. **बांबी** 'hole.' **कारौ नाग** 'black snake.'

l. 6. **दुचितौ** 'thoughtful', 'full of anxiety.'

l. 8. **न्यौर** Sk. **नकुल** 'mongoose.'
बिल 'hole.'

l. 9. **लौं** 'up to.' **पांति सौ** 'in a line'—Sk. **पंक्ति** 'series', 'line', **सौ** 'like.'

l. 10. **खाय है** 'will eat.'

l. 19. **अहेरौ** 'a hunter.' This word should be distinguished from the word **अहीरौ** which means 'a cowherd.'

1. 21. भूंजना is 'to fry', 'to roast.'

1. 22. सों रह्यो न गयो 'could not remain silent.'

Page 112.

l. 1. भक्षन करना is 'to eat.'

l. 7. उपकार 'beneficence.' प्रीति 'friendship.'

l. 8. वृक्ष को सोवनहारो 'one who sleeps on a tree.'

l. 16. दान 'presents', 'gift.'

l. 17. बालू...डारनो 'to throw *ghi* on sand', i.e. 'an unprofitable task.'

l. 18. मुनेश्वर lit. 'chief of the saints', properly मुनीश्वर.

l. 20. तपोवन lit. 'forest for performing austerities.'
महातपी lit. 'of great austerity.' आश्रम 'hermitage.'

l. 21. मूसा को सिसु 'the young of a mouse.'

l. 23. कन 'grain.'

Page 113.

l. 1. घात में आना is 'to lie in ambush.' मंत्र 'incantation', 'charm.'

l. 2. स्वान 'dog.'

l. 7. प्रसाद 'favour.'

l. 10. जी में ठानि 'having resolved or determined on.'

l. 11. अंतरगति lit. 'state of mind', hence 'inward thoughts.'

l. 15. गरो = गला 'throat.'

l. 16. कहूं न 'never.'

l. 18. मालव 'Malwā.'

l. 19. उद्वेगी 'anxious.'

l. 20. केंकड़ा 'crab.'

l. 20. दुःखी 'sad', 'sorrowful.'

l. 21. उदास 'morose', 'dejected.'

Page 114.

l. 2. तड़ाग 'tank.'

l. 4. दीसतु है 'seems to be.'

l. 6. आगे 'then.'

l. 11. बहुरि 'again.'

l. 13. खान कौ = खाने का ' to eat.'

l. 15. कांटे ' bones ', ' spines.' डरे ' lay.'

l. 18. पछतावौ ' regret.'

l. 20. अपूरब ' unusual ', lit. ' not (done) before.'

l. 21. खुटाई ' wickedness.'

l. 23. आछे = अच्छे ' good.' पदारथ ' things ', lit. ' that which a word connotes.'

PAGE 115.

l. 1. अनभई बात ' impossible thing ', lit. ' that which never occurred.'

l. 6. मेष कौ संक्रांति ' the day when the sun enters the sign of Aries, i.e. the last day of the month of Chaitra. On this day the Hindus offer barley-meal to the gods, and then distribute it to the Brahmins. For this custom, the day is also called सतू संक्रांति.' The word मेष means ' ram ' and संक्रांति lit. means ' stepping in (of the sun).'

यजमान ' customer,' ' client ', lit. ' one for whom a sacrifice is made.'

करवा ' an earthen pipkin.' सातू ' parched grain reduced to meal.'

l. 7. कुम्हार from Sk. कुम्भकार ' maker of pots ', ' a potter.'

l. 8. बासननि ' plates ', ' earthenware. '

l. 10. दमरी ' one-eighth of a pice.'

l. 12. नारियर ' cocoanut.' सुपारी ' betel-nut.'

l. 15. औगुन ' fault.'

l. 16. घालना ' to throw.'

l. 18. भांड़े ' pots ', ' vessels.'

l. 19. कियौ करायौ ' ready made.'

l. 20. छीन ' having snatched away.' तिरस्कार ' reproach.'

l. 22. आगै कौ ' in anticipation ', ' beforehand.'

PAGE 116.

l. 2. सांकरी गली ' narrow lane.' सांकरी is the corruption of Sk. संकीर्ण.

l. 3. महावत ' elephant driver.'

l. 4. पुन्य प्रताप ' glory of religious merit.'

l. 5. **उपाय** 'scheme.' **हाथ आयो** 'has come to hand', 'has been taken.'

l. 7. **मूंड़ पर आयो** 'has already approached', lit. 'has come upon the head.' **बैरी** 'enemy.'

l. 8. **अटकिहै** 'will remain.'

l. 9. **मेरे जानि** 'in my opinion.'

l. 10. **हलभल करना** is 'to be in close friendship.'

l. 11. **सुहाती** 'pleasing', 'agreeable.'

l. 12. **प्रमान** 'according to.'

l. 15. **खाड़े की धार** 'edge of a sword.'

l. 16. **कीरत** from Sk. **कीर्त्ति** 'fame.' **अपनकी** 'one's own self.'

l. 20. **आदि अंत लौं** 'from beginning to end.'

l. 22. **न बूझिये** 'is not becoming.'

l. 23. **प्रतिष्ठित** 'a man of high reputation.' **कै** 'or.'

Page 117.

l. 2. **अपनी बोल निबाहै** 'will carry out his word.'

l. 5. **धाक** 'fame', 'terror.'

l. 9. **ज्यों की त्यों** 'exactly as the matter stood.'

l. 11. **मंगल** 'welfare.' **समाचार** 'news.'

l. 15. **बैरागी** 'one who has renounced the world', 'an ascetic.'
देवगुरुनिंदक 'one who slanders the gods and his own preceptor.'

l. 16. **तेज** 'power.' **प्रसाद** 'favour.'

l. 17. **साथ देना** 'to take part with', 'to assist.'
उछाह करि हीन 'void of aspiration.' Note this prepositional use of **करि**; cf. p. 1, l. 11, also p. 118, l. 3.

l. 18. **अंत** adv. 'ultimately.'

l. 20. **उदास** 'indifferent.'

l. 21. **आप ही आप** 'of himself.'

l. 22. **रिपु** 'enemy.'

l. 23. **शस्त्रविद्या** 'the science of wielding arms.'

Page 118.

l. 1. **देस काल** 'place and time', i.e. 'suitable place and opportunity.'
मानै 'distinguishes between.'

l. 2. **मन आनै** 'remembers', 'bears in mind.'

l. 3. **नीति करि** 'with policy.' Mark the prepositional use of **करि**.
कान 'respect', hence 'partiality.'

l. 4. **गुप्त** 'concealed.'
समुद्रांत पृथ्वी 'ocean-bounded earth', i.e. 'the whole earth.'

l. 7. **अभिमानी** 'proud.'

l. 9. **दोऊ ओर** 'on both sides.' **कुशल** 'welfare.'

l. 11. **महाबल** lit. 'very powerful', 'mighty.'

l. 12. **मंडराना** is 'to reconnoitre', from Sk. **मंडल** 'a circuit.'

l. 13. **जोरि** 'collecting.' **पीर** from Sk. **पीड़ा** 'trouble.'

l. 15. **ताते** 'hot' from Sk. **तप्त**.

l. 18. **पाती** 'letter', from Sk. **पत्रिका**.

Page 119.

l. 1. **साक्षात** lit. 'visible to the eye', 'manifest', hence 'exactly like.'

l. 2. **डहकाना** is 'to deceive.'

l. 10. **आप सो = अपना सा** 'like himself.'

l. 12. **बोकरा = बकरा** 'goat.'

l. 14. **यज्ञ** 'sacrifice.'

l. 15. **ठगनि** 'cheats.'

l. 21. **देवता** 'a god.' The Hindus have so much reverence for the Brahman that they consider him as the manifestation of divinity on earth. **भूदेव** 'a god on earth', is another epithet of the Brahmans.

Page 120.

l. 2. **बोक** contraction of **बोकरा**.

l. 4. **तें** 'you.'
अनर्थ 'mischief', 'improper act.'

l. 6. **पटक** 'having dashed on the ground.'

l. 9. **चले** 'is shaken', 'is lost.'

l. 11. **मदोत्कट** lit. 'fierce with pride.'

l. 12. **तेंदुआ** 'a leopard.'

l. 14. साथ भूलि 'having lost (my) company.'

l. 16. अभयदान 'assurance of safety', lit. 'gift of freedom from fear.'

l. 17. हिलमिल 'on intimate terms', lit. 'moving conjointly.'

l. 19. झरी 'continuous pouring', 'incessant rain.' It also means 'a waterfall.'

जुर्यो 'could be procured.'

Page 121.

l. 4. आदि 'et cetera', lit. '(taken as a) beginning.'

l. 10. झुक 'bending', 'stooping.'

l. 16. जीवदान करना is 'to sacrifice one's own life.'

l. 20. मनुहार 'delightful (offer)', lit. 'mind-captivating.'

l. 21. फुसलाय 'having persuaded.'

Page 122.

l. 1. मो पै = मुझ से 'by me.'

l. 3. प्रजापति 'king', lit. 'the cherisher of the subjects.'

l. 7. दृढ़ता 'firmness.' मनुहार करि 'to please him.'

l. 11. उपदेस 'advice.' मनसा 'design', 'intention.' डिगै 'will shake.'

l. 13. निभी 'lasted', 'was preserved.'

l. 14. स्वामी के काज 'for the sake of the master', lit. 'to accomplish (one's) master's work.'

l. 18. साधै 'will accomplish.'

मेंडुक 'frog.'

l. 20. मन्दविष lit. 'weak-venomed.'

Page 123.

l. 1. मो अभागे 'me unfortunate.'

l. 2. आचार्य्य lit. 'religious preceptor', hence 'a holy person.'

l. 3. अवस्था lit. 'condition', hence 'whole history.'

l. 5. अभाग्य 'bad luck', 'misfortune.'

l. 6. सुसील lit. 'well-behaved.'

l. 8. समें असमें 'in prosperity and in adversity.' शुभ 'welfare.'

l. 9. इष्ट 'dear', lit. 'wished for.' सुधि लेना is 'to take notice of.'

l. 12. खेद करना is 'to grieve', 'to lament.'

l. 15. देहधारी lit. 'holder of a body', i.e. 'all living beings.'

l. 18. काची घट 'unburnt clay-pot.' जोबन properly यौवन 'youth.'

l. 19. ठकुराई 'mastery', 'chieftainship.'

l. 21. सोच करना is 'to grieve.'

l. 22. प्रवाह 'stream.'

l. 23. जेतो—तेतो 'as much—so much.'

PAGE 124.

l. 1. निवसतु 'continues', 'is permanent.'

l. 2. कहा चली 'what need we say of?'

l. 3. माया 'affection', 'attachment.' This word is also used in the sense of 'wealth.' Vide p. 26, l. 11.

l. 6. संगति 'association.'

l. 8. तीरथ 'pilgrimage.' जग properly यज्ञ 'sacrifice.'
द्रुम 'tree.'

l. 9. साध = साधु 'good man.'

l. 10. चाम के बंधन 'a leather thong.'

l. 14. गृहरूप कूप 'well in the form of house', i.e. 'within the narrow enclosure of a house.'

l. 16. अनुरागी 'one who has attachment for this world.' उदासी 'one who is indifferent to this world.'

l. 17. मोक्ष 'salvation', lit. 'release (from the bond of life and death).' फल 'fruit of action.'

l. 20. तपसी = तपस्वी 'an ascetic.'

l. 21. संतान कों 'for having a progeny.'

l. 23. संयम 'self-control.'
पुन्य तीर्थ 'sacred staircase.' तीर्थ here does not mean 'pilgrimage.'

PAGE 125.

l. 1. शील 'good conduct', 'modesty.' करार same as कड़ाड़ा 'banks.'
तरंग 'waves.'

l. 2. अंतःकरन 'mind', lit. 'the inner sense.'
जनम मरन व्याधि 'the disease of life and death', i.e. 'the trouble of repeated births and deaths.' To be released from that is to attain salvation.

l. 3. सार 'substantial', hence 'permanent.' सुख करि 'taking it to be pleasure.'

l. 4. बाहनिहारौ 'carrier.'

l. 8. बाहन 'carrier.' गृहस्थाश्रम 'the state of a householder.'
सन्यास धर्म 'the duties of an ascetic who has renounced the world.'

l. 13. चहुं थां 'the four sides.'

l. 16. सेना 'army.'

l. 21 लयै = लिये.

Page 126.

l. 3. कहनि न पायौ हो कि 'had not finished speaking when.'

l. 6. सुध लेना 'to take thought of', 'to take notice of.'

l. 7. मौन गहि रह्यौ 'remained silent'; cf. मौन साध रहें p. 78, l. 23.
मन में कह्यौ 'said to himself', 'thought (in his) mind.'

l. 8. होय न होय 'certainly', 'it must be so.'

l. 10. खेद 'having pursued.'

l. 11. बृथा 'in vain', 'for nothing.'
न गाजिये 'do not thunder', from Sk. गर्ज्जन 'to roar.'

l. 15. निभनौ 'to succeed.'

l. 18. न्यौर from Sk. नकुल 'mongoose.'

l. 21. जायौ 'brought forth', from the root जनना 'to bring forth.'

l. 22. न्हवे कों = नहने को 'to bathe.'

l. 23. बुलावैा 'call.'

Page 127.

l. 3. उतावल 'haste.'

l. 6. छोहरा 'child.'

l. 7. मौड़ा 'child.'

l. 10. चांडाल 'merciless wretch', lit. 'one of the lowest caste.'

l. 15. बापरे 'poor', 'innocent.'

l. 18. **पृथु** 'a mythological king, supposed to be the first king, from whom the earth received her name *Prithvī*.'

जन्मेजय 'the last known king of the lunar race, he was the son of king Parikshit, the grandson of Arjun.'

कुंभकरन lit. 'with jar-like ears.' The younger brother of Rāvaṇa.

l. 19. **परशुराम** lit. 'Rāma with the axe.' A celebrated Brahman warrior, son of Jamadagni. He is known as the sixth incarnation of Vishṇu.

l. 20. **अंबरीच** properly **अंबरीष** a king of the solar race who was celebrated as a worshipper of Vishnu.

Page 128.

l. 2. **उपाय** 'expedients (to be used by a king against an enemy).'

साम 'conciliatory measures.' **दान** 'bribery', lit. 'giving money.'

दंड 'punishment.' **भेद** 'dissension', 'sowing dissensions in an enemy's party and thus winning his men over to one's side.'

l. 6. **ब्रह्मा** 'the Creator.' The Hindus worship the Supreme Deity in His threefold aspects, *viz.* the Creator, the Preserver, and the Destroyer. **ब्रह्मा** is the Creator, **विष्णु** is the Preserver, and **शिव** is the Destroyer.

l. 8. **सर्वज्ञ** lit. 'all-knowing.'

l. 9. **करनी औ करतूत** 'deeds and actions.'

l. 10. **सुनि सुनिकै** 'hearing (from various sources).'

l. 14. **समाचार** 'news.'

l. 17. **संका** Sk. **शंका** 'fear.'

l. 18. **पुन्यात्मा** 'pure-souled', 'virtuous.'

Page 129.

l. 5. **उग्र** 'fierce', 'hot-tempered.'

l. 7. **निष्कपट** 'without deceit', 'guileless.'

l. 8. **कठिन** 'hard', 'difficult to get through.'

l. 9. **संसार** 'the world.'

दिन भरना is 'to pass one's days', lit. 'to fulfill one's days.'

1. 14. **धर्मावतार** 'incarnation of justice.'

1. 16. **न चलै** 'be of no avail.'

1. 17. **कपाल** 'a treaty of peace on equal terms.' The metaphor is taken from pottery. **कपाल** means 'the skull', hence the allusion is to the uniform skull-shaped halves of an unbaked water-jar.

उपहार lit. 'a gift', 'presents.' 'A treaty depending upon some indemnity.'

संतान lit. 'offspring.' 'A peace cemented by a family alliance, as by giving a daughter in marriage, etc.'

1. 18. **संगत** lit. 'united.' 'A peace concluded after friendship.'

उपन्यास lit. 'proposal', 'overtures.' 'A peace by some preliminary engagement.'

प्रतीकार lit. 'requital.' 'A treaty by which one party requites the services of the other.'

संयोग lit. 'joining together', 'association.' 'A treaty by which two kings become allies for some common object.'

पुरुषान्तर lit. 'another man', hence 'vicarious.' 'A treaty effected through others.'

अदृष्टनर lit. 'unseen man.' 'A treaty in which no third person is seen, that is, concluded by the parties themselves without a mediator.'

आदिष्ट lit. 'designed', 'intended.' 'A treaty by which one party cedes certain portions of his territory which the other party selects.'

1. 19. **आत्मामिष** lit. 'assuming a false appearance.' 'A treaty in which the king pretends to give up all control over his troops.'

उपग्रह lit. 'seizure.' 'A kind of peace purchased by giving over everything to the victorious enemy.'

परिक्रय lit 'purchase.' 'A kind of peace purchased with the payment of money.'

उच्छिन्न lit. 'cut off.' 'A kind of peace obtained by ceding valuable lands.'

परदूषन lit. 'disgracing another.' 'A treaty in which the stronger party takes the entire produce of the other's land.'

संधिगति 'modes of peace.'

1. 22. **दासी** 'slave-girls.'

Page 130.

l. 4. पैंडे में 'in the way', 'on the road.'

l. 8. सर्वस=सर्वस्व 'everything one's own.'

l. 12. सारभूमि 'fertile lands.'

l. 17. गांठि 'knot.'

l. 22. सबसृष्टि 'whole creation.' कुटुंब 'kin.'

Page 131.

l. 1. जीवन pl. of जीव 'a living being.' This word should be distinguished from the word जीवन 'life.'

जीव 'life.' This word is generally used in the sense of 'a living being.'

l. 4. छिनभंग from Sk. क्षणभंगुर lit. 'perishable in no time', hence 'mortal.'

देह कों 'for the body.'

l. 6. प्रतिबिंब 'reflection.' चंचल 'always moving.'

l. 8. माया 'affection', 'attachment.' कल्यान 'welfare.'

l. 12. अश्वमेध 'horse-sacrifice.' जोखिये 'if you weigh.'

l. 15. सांप मरै न लाठी टूटै 'the object will be accomplished without causing any harm to anybody.'

l. 17. दूरदर्शी 'far-sighted.'

l. 22. पान औ प्रसाद 'betel and favour'. Offering betel is a sign of favour.

Page 132.

l. 1. टेर सुनायौ 'addressing said', 'exclaimed to.'

l. 2. बांछा 'desire.' पूजी 'is fulfilled or accomplished.'

कुशल क्षेम 'in health and happiness.'

l. 4. राजधानी 'capital city', lit. 'the seat of Government.'

l. 9. अंग 'different parts', lit. 'limbs.' अज्ञान 'ignorance.'

Page 133.

लब्धप्रनाशः lit. 'loss of what has been acquired.'

l. 2. कठिनता 'difficulty', lit. 'hardness.'

l. 4. **अधूरे काम मांहिं** 'before (one's) work is done', lit. 'in the midst of an unfinished work.'
मनोरथ 'intention.'

l. 5. **मगरमछ** 'a crocodile', from Sk. **मकरमत्स्य**.

l. 7. **सफल** 'full of fruits.' The word is also used in the sense of 'fruitful', 'successful.'

l. 8. **रक्तमुख** lit. 'red-faced.'

l. 10. **मरकट** 'monkey.'

l. 11. **पाहुनो** 'guest.'

l. 14. **अतिथिधर्म** 'the duties of hospitality.'

l. 16. **उदार** 'noble-minded', 'generous.'

l. 20. **कंत** 'beloved', Sk. **कान्त**.

Page 134.

l. 3. **जो ये** 'he who', 'whoever.' **नित** = Sk. **नित्य** 'always', 'daily.'

l. 8. **माजायो** 'born of the same mother.' **सुखगायो** 'acknowledged.'
सहोदर 'brother of the same womb.'

l. 10. **उलंघना** is 'to transgress', 'to disregard.'

l. 12. **आसक्त** 'attached', 'devoted.'

l. 13. **अनुराग** 'affection.'

l. 15. **सिथिल** 'relaxed.'

l. 17. **सौन** a corruption Sk. **सपत्नी** 'a co-wife.'

l. 19. **दीन** 'humble.'

Page 135.

l. 1. **पायन को परवो** 'falling on (my) feet.' **उर** 'breast', 'heart.'
दाहतु 'burns.'

l. 2. **नेम** = **नियम** 'vow.'

l. 5. **र** is the contracted form of **अरु** = **और** 'and.'
तरुनि properly **तरुणी** 'a young lady.'

l. 6. **कीने ड** is the old form of **किये भी**.
कोटि lit. 'ten millions', but it is used in the sense of 'however much.'
उपाव = **उपाय** 'means', 'device', 'effort.'

l. 7. **बन्यो** 'am obliged to.'

l. 9. उद्वेगी 'full of anxious thought.'

l. 12. भाभी 'a brother's wife.'

कृतघ्नी 'ungrateful', lit. 'one who sets at naught anything done for him.'

l. 17. देवर 'husband's younger brother.'

l. 19. कंचन 'gold', Sk. काञ्चन. रत्न 'jewel.'

संवार 'having decorated.'

l. 20. पाटंबर 'silk cloth.' पकवान 'dressed food.'

विंजन = Sk. व्यञ्जन 'sauce', 'condiment.'

l. 21. उत्कंठित 'anxious', lit. 'with one's neck erect.'

PAGE 136.

l. 2. जीमनो 'to eat.' जिमावनो 'to feed.'

l. 6. असीस 'blessing', 'benediction.'

l. 7. कांठे 'on the coast.'

l. 9. पवित्र 'sanctified.'

l. 13. नीर 'water.' औंडे में 'into the deep.'

l. 14. तरंग 'wave.'

l. 16. तिल भर 'a bit.' तिल is 'a sesamum seed.'

l. 17. खिसकना is 'to slip.'

l. 18. इष्टदेव 'beloved god.' The Hindus worship numberless forms and phases of Divinity. In fact every family or even every individual has a particular form of the Deity reserved for its or his own. This form of god is called इष्टदेव, lit. 'the aspect of Divinity which is one's beloved or cherished object of love.'

जी में ठानि 'having decided in (his) mind.'

l. 19. बनचर 'forest animal.'

स्त्री के कहे 'at the instance of (my) wife.'

l. 20. विश्वासघात 'treachery', lit. 'striking down confidence.'

PAGE 137.

l. 4. साख = साखी 'witness.' It is the main feature of a Hindu marriage ceremony to make the bridegroom take the hand of the bride with a solemn vow, made before the sacrificial fire

that he will never act against her will and will remain faithful to her.

l. 7. उक्ति युक्ति lit. 'words and arguments', 'skill of speech.'

l. 8. तैं = तू 'you.'

l. 13. अगाध 'bottomless.'

l. 17. धरनी from Sk. धरित्री 'earth', lit. 'she who upholds everything.'

l. 18. शाखामृग lit. 'beast of the branch', an epithet of the monkey. कुलधर्म 'family custom.'

l. 19. खोलर 'hollow.' This is another form of the word खोडर in the line after next. This form shows the interchangeability of ड and ल.

PAGE 138.

l. 6. जु 'so that.'

l. 11. आगै 'then', 'after that.' पुन्य प्रताप सौं 'by the dint of his religious merit.'

l. 12. डगैं 'steps.'

l. 16. पाच कुपाच 'worthy and unworthy', lit. 'proper receptacle and the reverse.'

l. 21. अथाह 'bottomless.'

l. 23. परमार्थ lit. 'the best end', 'virtue.' पुरुषार्थ lit. 'the object of human existence', i.e. the acquisition of Dharma, Artha, Kām and Moksha.

PAGE 139.

l. 2. धिक्कार 'curse.'

l. 8. काज बिन भये 'without (my) object being fulfilled.'
कपट 'deceit.'

l. 10. दांव 'share.'

l. 20. वैर 'enmity.'
अरहट की माल 'the chain of the wheel (at the top of a well).'

l. 22. निष्कंटक lit. 'without thorns', i.e. 'without any cause of anxiety.'

PAGE 140.

l. 3. स्नेह 'affection.'

l. 4. पराक्रम 'strength.'

l. 5. अवश्य 'certainly', 'of necessity.'
ऐसें 'thus.'

l. 6. बिलद्वार 'entrance of the hole.' प्रियदरसन lit. 'whose sight is pleasing', 'one of lovely appearance.'

l. 11. शील 'disposition', 'nature.'
शील and सुभाव are synonymous. सुभाव is the corrupted form of Sk. स्वभाव lit. 'one's own condition.' बृहस्पति Jupiter, but here he is taken in his capacity as the teacher of the gods and hence the wisest of the wise.

l. 14. मंत्रबादी 'snake-charmer', lit. 'one who repeats charms.'

l. 16. टेरना is 'to call out.'

l. 18. सहायता 'help', lit. 'the work of one who keeps constant company.'

l. 19. अनमिल संग 'heterogeneous union', 'unnatural companionship.'

l. 21. नेरे 'near.'

PAGE 141.

l. 1. निरादर 'disgraced.'

l. 2. चुभना is 'to prick.' सूआ 'needle.'

l. 3. आसरो from Sk. आश्रय 'shelter', 'protection.'

l. 7. तौ तौ = तब तौ 'in that case.'

l. 10. बिगार 'injury.'

l. 11. भेदी 'one who knows secrets', 'a betrayer.'
सुगम 'easy', lit. 'accessible with ease.'

l. 12. लंका the island of Ceylon. The allusion is to the fact that Bibhīsan, the youngest brother of Rāvaṇa, the king of Ceylon, betrayed him, which rendered it possible for Rāma to defeat and kill Rāvaṇa. माल तें लागि 'clinging to its chain.'

l. 15. निचिंताई 'freedom from anxiety.' अवाल 'a hole or hollow in the wall.'

l. 16. चैन सों 'at ease.' मंगल गाना is 'to sing songs of rejoicing.'
तुम से आचार्य 'a protector like you.' आचार्य means a 'religious guide', hence 'a guide' or 'one who saves in difficulty.'

l. 17. गाढ़ 'difficulty.' This word when used as an adjective means 'deep', 'profound.'

l. 20. अपने कुल को अंगार 'the brand of his own family.'

PAGE 142.

l. 1. जीविका की वृत्ति 'means of livelihood.'

l. 6. धसे 'went into.'

l. 7. चीन्ह चीन्ह 'selecting.' बताये 'pointed out.'

l. 15. आनि = आकर 'having come.'

l. 18. लज्जा न कारे 'no delicacy is to be felt.'

l. 21. दिया 'a lamp', from Sk. दीप.

l. 22. सरबस 'the whole of one's property.'

l. 23. बगर = बगल 'surrounding place', 'compound.'

PAGE 143.

l. 2. बाखल 'house', 'quarters.'

l. 8. कुटुंब को पाप 'the sin of destroying your own kin.'

l. 10. परेखो कियो 'reflected upon (with regret).'

l. 13. छल 'pretext', 'deceit.'

l. 17. दूजो 'a second', 'another.'

PAGE 144.

l. 2. काल के गाल 'mouth of Death.'

l. 4. कितेक बेर लौं 'for some length of time.'

l. 5. बाट जोई 'remained expecting him', lit. 'looked his way.'

l. 7. मेरी डाढ़ तरे 'under my teeth.'

l. 8. नेक हूं न 'not even the least.'
अघाना is 'to be satisfied.'

l. 9. गोह = Sk. गोधा 'a kind of lizard.' संतुष्टता 'satisfaction.'

l. 11. ताल 'tank', 'lake.'

l. 16. द्रोह 'enmity.'

l. 17. किये कर्म 'good actions', lit. 'passed deeds.'
धोबी को नांद में परें 'may fall into the fuller's vat, i.e. may be spoiled.'

l. 21. पूरनवारो 'he who fulfills (everybody's wants), i.e. God.'

l. 23. निर्दई properly निर्दय 'merciless.'

Page 145.

l. 6. कृतघ्नदोष 'fault of ingratitude.' दूर करना is 'to remove from the mind.'

l. 7. तिहारे बार 'at your door.'

l. 8. मूढ़ 'fool.'

l. 11. करालकेश lit. 'of fierce manes.'

l. 12. धूसर lit. 'grey.'

l. 15. जंबुक 'jackal.'

l. 20. लंबकरन lit. 'long-eared.'

l. 21. मामा 'maternal uncle.'

l. 23. दुःख पाप गंवायो 'got rid of sorrows and sins.'

Page 146.

l. 2. भगिनीसुत 'sister's son.'

l. 3. अनाज 'grain', lit. 'food.'

l. 4. धूर मिश्रित 'mixed with dust.' तृन 'grass.'

l. 7. मरकत मनि 'emerald.'

l. 8. दूब 'a kind of grass.'

l. 12. नाज is a contraction of अनाज; cf. धेला for अधेला.

l. 15. भुजानि 'arms.'

l. 16. आजीविका 'livelihood.' The initial आ is redundant.

l. 17. पाहीं = पास 'near.'

l. 19. मुकतो 'much', 'plenty.'

l. 20. चंपावरनी 'of the colour of *champā* flower.'
काम की सताई 'afflicted with passion.'

Page 147.

l. 2. कामातुर 'afflicted with lust.'

l. 3. भानेज 'nephew', lit. 'sister's son.'

l. 11. पछताय पछताय 'regretting very much.'

l. 16. खेद 'pursuing.'

l. 21. सचेत 'alert.'

l. 23. बगदना 'to return.'

PAGE 148.

l. 2. **नीठ नीठ** 'with much difficulty.' **मीच** 'death.'

l. 3. **वज्र** 'thunderbolt.'

l. 4. **सुसकुरायकै** 'smilingly.'

l. 5. **अनुराग तें आतुर** 'distressed with love.' **आलिंगन** 'embrace.'

l. 6. **नपुंसक** 'impotent', lit. 'not a male.'

l. 7. **क्रीड़ा** 'amorous sport.'

l. 8. **ढीठ** 'forward.'

l. 11. **वरिहौं** 'will marry', lit. 'will select as my husband.'
लंघन करि करि 'starving continuously.'

l. 12. **बिरह** 'pangs of separation.'

l. 17. **महानर्क** 'most dreadful hell.'

l. 20. There is a pun on the word **नारी** in this line, which is a corruption of the word **नाड़ी** meaning 'pulse.' र and ड़ are interchangeable in Braj.

l. 22. **कामदेव** 'cupid', 'the god of love.'

l. 23. **खसोटना** is 'to pull the hair.'

PAGE 149.

l. 1. **पंचाग्नि** lit. 'five-fold fire.' This is a kind of penance in which the ascetic sits under the meridian sun with blazing fire on his four sides. The scorching sun is taken as the fifth fire.

l. 2. **कपाली** lit. 'one who wears a chain of human skulls around his neck.' This is an inferior class of Yogīs, supposed to possess supernatural powers.

आसन मारना is 'to sit in an attitude practised by the Yogīs. The Hindu ascetics practise particular ways of sitting for the concentration of their mind. As many as eighty-four kinds of *āsana* or manner of sitting are known to be practised.

ऊर्ध्वबाहु होना is 'to hold up one's arms for ever.' There is a class of Yogīs who are said to dedicate their hands to God and since they never use them. Such Yogīs are occasionally found in holy places such Benares, Gaya or Prayāg to wander in the streets with their hands raised and permanently stiffened, and their finger nails grown several inches

long. They never take or cannot take any food unless it is held to their mouth.

l. 8. खोटौ बात 'an evil.'

l. 9. खर 'ass.'

l. 12. ध्यान 'meditation.'
तर्पन 'a libation of water to the gods and the manes.' Lit. 'an act of pleasing.'

l. 13. चंडार 'vile.' This word is used with other nouns in the sense of 'wicked', 'vile'; by itself it means 'the meanest caste amongst the Hindus.'

l. 17. झूठौ 'leavings.'

PAGE 150.

l. 5. काल पर्यौ 'famine ensued.' काल is the contraction अकाल for this dropping of the initial अ; cf. p. 146, line 12.

l. 9. लिलार 'forehead', Sk. ललाट.

l. 11. सनमुख 'in front', 'in the fore part of the body.'

l. 13. सुभटन 'champion heroes.'

l. 14. रावत 'a hero.'

l. 18. उछाह 'festival', 'rejoicings.'

l. 19. मंडली 'assembly.'

l. 20. उखडना is 'to trip', 'to stumble.' ठीकरा 'a broken piece of earthenware.'

l. 23. धकाय काढ़ौं 'will drive him out with a push.'

PAGE 151.

l. 2. सर्वगुनसंयुक्त 'endowed with all the good qualities.'

l. 10. तुरत को जायौ 'only just brought forth.'

l. 12. हे नाथ 'my lord!'

l. 13. भद्रे 'O good lady!' सिगरौ दिन 'whole day.'

l. 16. पथ्य 'sick diet.' As the lioness was then recently delivered of cubs this word has a special significance here.

l. 18. बाला 'a young girl under sixteen.'

l. 23. जद 'when.'

PAGE 152.

l. 4. भजो 'fled.'

l. 14. कुल 'family.' वरन 'caste', lit. 'colour.'
घाट 'inferior.'

l. 16. एकांत 'aside', lit. 'at one end.'

l. 20. विरद्ध 'enmity.'

PAGE 153.

l. 1. प्रसंग 'story.'

l. 2. लोह...झेलै 'can bear the heat of iron (weapons).'

l. 8. माहात्म 'nobleness', 'self-respect.'

11. मुनिधर्म 'silence', lit. 'conduct of a *muni* or sage who has taken a vow of silence.'

l. 15. मनभायो 'pleasing', 'agreeable.'

l. 17. आपस्वार्थी 'selfish'; the prefix आप here is redundant.

l. 22. पिकबैनी 'cuckoo-like-sweet-voiced.' गजगौनी = गजगामिनी 'she who walks with the gait of an elephant.' All these adjectives are used to describe an ideal beauty of the Indian poet.

l. 23. नारंगी 'an orange.' Sometimes the woman breast is compared with pomegranates.

PAGE 154.

l. 1. हीरा की सी पांति 'like a row of diamonds.' Mark the position of सी.

l. 2. बिंबाफल 'the Vimba fruit which when ripe assumes beautiful red colour and plumpy softness.'

l. 3. करतार 'creator.'

l. 4. संवारी 'adjusted (her beauty).'
सांचे की ढारी 'cast in a mould.' ईर्षा खाना is 'to become jealous of.'

l. 10. सोधना is 'to search for.'

l. 14. आर्बल 'age', 'duration of life.' Sk. आयुर्बल.

l. 15. आचमन करना is 'to sip water uttering some sacred *mantra*.'
पवित्र 'purified.'

l. 18. सीधो 'uncooked food', 'articles of food.'

l. 19. **बारी** 'garden', 'orchard.' **पंगु** 'a cripple.'

l. 22. **चटक्यो** 'is attached.' **मनोरथ पूरो करना** is 'to satisfy (one's) desire.'

l. 23. **घरगई** 'houseless woman', perhaps meaning 'who has left her house', or 'who has no house to live in.'

PAGE 155.

l. 1. **दईमारे निगोड़े** 'cursed wretch'; here the word **निगोड़ा** may also have its literal meaning 'footless one.' **दईमारा** 'ruined by Fate.'

l. 3. **हत्या देना** is 'to make one responsible for another's murder.' Here the sentence means 'I will commit suicide and the sin of destroying my life will fall upon you.'

l. 7. **जिमायो** 'fed', 'entertained.'

l. 11. **लूलो** 'maimed.'
टहलुआ 'servant.'

l. 13. **देह निवाहनो** 'to support our own bodies.'

l. 20. **भोग करना** is 'to enjoy oneself.'

l. 22. **बड़ना** is 'to enter.'

PAGE 156.

l. 6. **चूंगी** 'handfuls of grain gathered daily from grain merchants.'

l. 8. **दई के** 'by chance of Fate.'
बनजारो 'merchant.'

l. 10. **आयु न पूरी होय** 'if one's lifetime have not come to an end', i.e. 'so long as one is destined to live.'

l. 19. **फटिक को पात्र** 'crystal vessel.'

PAGE 157.

l. 3. **पाछो दई** 'have given back.'

l. 4. **घट** 'body', lit. 'clay-pot.'

l. 5. **भैचक** corrupted form of **भयचकित** 'astonished at a sudden or unexpected event.'

l. 11. **पांडे** 'pundit.' A title of respect for Brahmans.

l. 16. **आंगन** 'courtyard.' **एड़ करना** is 'to strike with the heel', 'to spur (a horse).'

l. 17. चटकाना 'to crack (a whip).' गाथा गाना is 'to do what some other wants to be done', lit. 'to sing the song which some other wants (one) to sing', i.e. 'to serve another's will.'

l. 19. पंडियान fem. of पंडे another form of पांड़े.

l. 21. भद्र करना is 'to make clean by shaving the head and beard, etc.'

l. 22. रस रीति 'the ways of love.'

PAGE 158.

l. 3. बिन पर्व 'without (there being) a festive or sacred day.'

l. 4. बिचारि 'surmising.'

l. 5. हींसना is 'to neigh' from Sk. हेषा.

l. 17. युक्त 'proper.'

l. 23. सज्ञान 'wise', lit. '(endowed) with wisdom.'

PAGE 159.

l. 3. जार 'a paramour.'

l. 6. नितप्रति 'always.' परपुरुष lit. 'another man.'
हेरना is 'to be in the look-out for.'

l. 7. धाम 'house.'

l. 8. बित्त चित्त 'property and heart.'

l. 9. सुभलच्छन lit. 'auspicious looking.'

l. 15. जोबनवती lit. 'youthful', 'a lady in full bloom of her youth.'

l. 16. कदाचित 'perhaps', lit. 'at some time or other.'

l. 21. अपनी बाट etc. 'took his own way never to return.'

l. 22. बिभिचारिनी 'adulteress', lit. 'the woman who goes astray fro the path of virtue.'
नार 'stalk', here 'neck.'

l. 23. लौथरा 'a lump', 'a piece.'

PAGE 160.

l. 1. रेत पर 'on the sand.'

l. 10. साम दान etc. *vide* p. 128, l. 2.

l. 13. शोकसमुद्र 'sea of grief.'

l. 20. मनुहार करना is 'to please', lit. 'to steal (one's) heart.'

l. 21. **काज संवारना** is 'to gain (one's) object.'

l. 23. **छल बल करि** 'by deceit or force.' **नाखना** is 'to forsake.'

PAGE 161.

l. 4. **त्यांही** 'forthwith.'

l. 11. **गुमान सौं** 'boastingly.'

l. 14. **बघेला** contemptuously for 'a tiger', lit. 'a tiger's whelp.'

l. 15. **पीठ दई** 'fled', lit. 'showed his back.'

l. 20. **कलेवा करना** is 'to take lunch', here 'to break fast.'

l. 21. **अपनो...लाख** i.e. 'if I preserve myself I shall be able to eat flesh hundred thousand times.'

l. 23. **तेरे आड़े** 'screening you.'

PAGE 162.

l. 8-9. **जैसो...करिये** 'do what is proper for the occasion.'

l. 13. **स्वानन** 'dogs.' **अति मार** 'severe beating.'

l. 18. **कोऊ नाहीं** 'is in no way', 'is never.'

l. 20. **सकाम** 'full of lust.'

l. 21. **तुरंत बिलोयो** 'fresh churned.'

l. 22. **अवस्था प्रमान** 'according to age or condition in life.'

PAGE 163.

l. 2. **मांडना** is 'to decorate' from Sk. **मंडन**.

l. 5. **द्रव्य** 'wealth.'
भेट धरि 'offering as presents.'

l. 6. **पाय लाग** 'bowing down at his feet', lit. 'embracing his feet.'
नीतिमार्ग 'the way of polity', 'the manner prescribed in polity.'

PK
3741
H6B7
1915

Hitopadeśa
Rajniti

[redacted]

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY